श्रीकेदारकल्प ।

जगद्विख्यात महामहोपदेशक विद्यावारिधि अनेक ग्रंथोंके टीकाकार पण्डितज्वालाप्रसादमिश्रकृत—

भाषाटीकासहित ।

जिसको

श्री १०८ महाराजाधिराज राम नारायणसिंहजूदेव बहादुर पदुमा जि० हजारीबागकी सहायतासे

लोकोपकारार्थ

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयमें

मुद्रित प्रकाशित किया ।

भूमिका।

इस बातको सब भारतवासी जानते हैं कि, उत्तराखण्ड अतिपवित्र पुण्यभूमि और
तपस्याका परम स्थान है बड़ेबड़े राजा महाराजा ज्ञानी ध्यानी इसी उत्तराखण्डमें अपनी चरमावस्था
व्यतीत करते थे यहीं नरनारायणका पुण्यमय पवित्र आश्रम है। बद्रीनारायणका निवासस्थान
सहस्रों तीर्थोंका एक निकेतन है जिसमें कैलासस्थान तो महादिव्य परमपुण्यदायक है यहीं भगवान
भवानीपति अपने गणोसहित विराजमान होकर भक्तोंको अर्थ धर्म काम मोक्ष चारों पदार्थ प्रदान
करतेहैं। यद्यपि बद्रीकेदारनाथजीका दर्शन उत्तराखण्डके यात्री करतेहैं परन्तु साधन और जप
तप करनेसे साक्षात् शंकरका भी दर्शन होसक्ता है और भी बड़ेबड़े आश्चर्य यह प्राणी देखसक्ताहै
यद्यपि योगधारणा ध्यान समाधिसे कैलासनाथ प्रसन्न होते हैं पर सदेह कैलासजानेका मार्ग और
उसमें विघ्नोंकी निवृत्ति अन्य बातहै, यह बात इस केदारकल्प नामक महा गुप्त ग्रंथके द्वारा जानी
जाती है। इसमें कैलास जानेका मार्ग और उसके मार्गमें जो विघ्नहों उनके दूरकरनेके मंत्र इस
गुप्तग्रंथमें लिखे हुएहैं यह ग्रंथ सर्वत्र सुलभ नहीं हमको इसकी जितनी प्रति मिलीं सबही महा
अशुद्ध मिलीं जिससे अर्थकी संगति लगानी महाकठिन होगई और ग्रंथके शुद्धकरनेमें भी बहुत
परिश्रम हुआ। इस ग्रंथके पाठ करनेसे और इसका अर्थ विचारनेसे बड़ा पुण्य होता है कैलास-
मार्ग स्फुटित होजाता है बड़ेबड़े गुप्त और दिव्यमार्गजो कैलासमें हैं उनका भेद खुलजाताहै कैसे
साधकको भगवान शंकर दर्शन देतेहैं किस मनसे सदेह यह पुरुष कैलासपतिका दर्शन करसक्ता-
है यह सब कथाएँ माहात्म्य सहित इसमें लिखीहैं। पुराण ही हमारा धर्म, पुराण ही दिव्यज्ञान, दिव्यपथ
पुरावृत्तका प्रदर्शक है पुराणहीसे वेदार्थ प्रकाश होता है पुराणके अन्तर्गतही यह केदारकल्प है
सर्वसाधारणको अलभ्यलाभ पहुचानेके निमित्त इसपरमोत्तम ग्रंथका हमने श्रीमान् महाराज बहादुरकी
आज्ञासे भाषाटीका किया हमको पूरी आशाहै कि यह ग्रंथ अवलोकन कर सनातनधर्मी पाठकोंके
आनंदकी सीमा न रहेगी कैलास मार्गका भेद जाननेके उत्सुक पाठकवृन्द इसको अवश्य अवलो-
कनकर लाभ उठावेंगे और देवाधिदेव भगवान शंकरकी कृपा लाभकरेंगे इसकी टीका करनेमें
यथासाध्य शुद्धताकी चेष्टा की है कुछ रहगई हो तो दूसरी आवृत्तिमें वहसब ठीक होजायगी।

श्रीमान् गोब्राह्मण प्रतिपालक, प्रजाप्रिय, परमोदार श्री १०८ महाराजा रामनारायणसिंहजू
देव बहादुर पदुमा हजारीबाग बंगालको हम अनेक धन्यवाद देते हैं कि, जिनके विद्यावृद्धि और
धर्म उत्साहसे इस ग्रंथका भाषानुवाद हुआ है श्रीमान्के सद्गुणोंके उल्लेख करनेमें इतना ही बहुत
है कि, इस समय श्रीमान् विद्या और धर्मवृद्धिमें पूर्ण यत्नवान हैं. इसके अनंतर परमोदार श्रीमान्
धर्मार्ति सेमराज श्रीकृष्णदासजीको धन्यवाद देतेहैं जो कि अति प्राचीन ग्रंथोंका उद्धारकर जगत्
उपकार करतेहैं॥ आजकल श्रीमान्की आज्ञानुसार श्रीबद्रीनारायण भक्तिरसामृत-कार्य्यालयके
पं० महेश नन्द शर्म्मा भक्ति तथा वैद्यकके ३।४ ग्रंथोंकी भा० टी० करवाते हैं आशा है कि वे भी
शीघ्रही प्रकाशित होंगे॥

ज्वालाप्रसादमिश्र–दिनदारपुरा–मुरादाबाद।

॥श्रीगणेशाय नमः॥



श्रीकेदारेश्वराय नमः।

अथ केदारकल्पः।

भाषाटीकासहितः।

मङ्गलम्।

ॐ द्वे भार्य्ये सिद्धिबुद्धी तदनु सहचरे ऋद्धिवृद्धी गुणाढ्ये द्वौ पुत्रौ लक्षलाभौ सकलगुणमयौ मंडपे कल्पवृक्षः॥ गेहे यस्य प्रभुत्वं परममृतसमं मोदकाखंडमिश्रं भूयाद्भूतैर्गणेशः सकलगुणकुलानन्दकारी कुटुंबः॥ १॥ कण्ठे यस्य, लसत्करालगरलं गंगाजलं मस्तके वामांगे गिरिराजराजतनया जाया भवानी स्थिता॥ नंदिस्कंदगणाधिराजसहितः श्रीविश्वनाथः प्रभुः काशीमन्दिरसंस्थितो हि सकलं कुर्वीत नो मंगलम्॥ २॥ ॐ भालेऽब्जो-

दोहा—श्रीदेवी जगदम्बिका, श्रीशंकर भगवान।
वंदनकर टीका लिखूं, भक्तनको सुखदान॥

सिद्धि और बुद्धि जिनकी दो भार्या हैं। ऋद्धि और वृद्धि जिनकी, दो, दासी हैं। लक्ष्य और लाभ जिनके सकलगुण मंडित दो पुत्र हैं, जो भक्तोंका मनोरथ पूर्णकरनेको कल्पवृक्ष हैं। जिनके घरमें महान अमृत है जिनको मोदक और खांड प्रियहै। वह गणेशजी अपने गणोंके साथ कुटुम्बभरको मंगलकारी हों॥ १॥ जिनके कण्ठमें करालविष, मस्तकपर गंगाजल, वामअंगमें हिमालयकी कन्या पार्वती भवानी भार्यारूपसे स्थित हैं। नंदि स्कंद आदि अपने गणोंसे अधिष्ठित, प्रभु श्रीविश्वनाथ काशीधाममें

१ पुंस्त्वमार्गम्।

ऽथ गले करालगरलं गंगाजलं मस्तके वामांगे गिरिराजराजतनया सर्वांगभूतिः स्थिता ॥ ढुंढिस्कंदगणादिनंदिसहितः श्रीविश्वनाथः प्रभुः काशीमंदिरसंस्थितोऽखिलगुरुर्देयात्सदा मंगलम् ॥ ३ ॥ श्रीश्वर उवाच ॥ ॐ कैलासदर्शनं पुण्यं सर्वदैव न संशयः ॥ येन देहेन यत्कर्म क्रियते कर्मकर्तृभिः ॥ १ ॥ तद्देहे तेन लभ्यं स्यात्कल्पकोटिशतैरपि॥इदं देहायुतेनैव कर्मणो लभते फलम् ॥ २ ॥ अतोऽधर्मसमूहेन नैनं धर्मं तु लोपयेत् ॥ पद्मं त्वष्टदलं कुर्य्यात्तत्र पूजां समाचरेत् ॥ ३ ॥ ध्यायेच्छ्रीशंकरं तत्र पार्वतीवल्लभं हरम् ॥ उपचारैः पोडशभिः सर्वशक्तिसमन्वितैः ॥ ४ ॥ बलिप्रदानं कुर्वीत पुनः सर्वजनप्रियः ॥ वांछितांल्लभते कामान्भुक्तिमुक्ती च विन्दति ॥ ५ ॥ एवं सिद्धेन मंत्रेण साधयेत्स्वमनोरथम् ॥ यस्य कोपं समासाद्य कंपते देवता भयात् ॥ ६ ॥ इन्द्राद्या वशगा भूत्वा तं नमस्यंति साधकम् ॥ चक्रवर्त्ती भवेद्भूपो यदीच्छेच्छिववल्लभः ॥ ७ ॥ एतत्ते

स्थित हुए सदा हमारा मंगल करें ॥ २ ॥ जिनके मस्तकपर चन्द्रमा, कण्ठमे करालविष, मस्तकमें गंगाजी, वामअंगमें गिरिराजकी पुत्री और सब अंगमें विभूति स्थितहै, ढुंढिराज, स्कन्दादि, नंदिआदिके सहित समर्थ प्रभु विश्वनाथजी काशीके मन्दिरमें स्थित हुए सब जगत्के गुरु सदा सबको मंगलदें ॥३॥ ईश्वर बोले। सदाही सबको कैलासके दर्शनसे पुण्य होता है, इसमें सन्देह नहीं । कर्म करनेवाले जिस देहसे जो कर्म करतेहैं॥१॥सौकरोड कल्पोंमेंभी उसदेहसे वह कर्म प्राप्त नहीं होताहै।इस देहसेही कर्मोंका फल नहीं अगले जन्मोंमेंभी मिलताहै॥२॥ इससे धर्मसमूहमें पडकर इस शिवात्मक धर्मका लोप न करै। आठ दलका पद्म बनाकर उसमें शिवपूजन करै ॥ ३ ॥ पार्वतीके प्रिय भगवान शंकरका ध्यान धरै, अपनी शक्तिभर सोलह प्रकारसे भगवानका पूजन करै ॥ ४ ॥ फिर सब जगत्को प्रिय होनेवाली बलिदे। इससे मनवांछित फलकी प्राप्ति और भुक्ति मुक्ति मिलतीहै ॥५॥ इसप्रकार सिद्ध मंत्रसे अपने मनोरथोंको सिद्ध करै जिसके कोपके भयसे देवताभी कंपित होतेहैं ॥ ६ ॥ इन्द्रादिक सब देवता और साधक जिनको प्रणाम करतेहैं, जो शिवकी प्रियता चाहै वह चक्रवर्ती होजाताहै ॥७॥ हे

कथितं पुत्र महापथविचारणम् ॥ अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम् ॥ ८ ॥ इदं पुत्र तव स्नेहान्मया गुह्यं प्रकाशितम् ॥ न देयं धनलुब्धेभ्यो न देयं देवनिंदके ॥ ९ ॥ नास्तिके चैव दुर्बुद्धौ तथा चुम्बकवृत्तये ॥ १० ॥ ॥ॐ इति श्रीरुद्रयामले केदारकल्पे श्रीश्वरकार्त्तिकेयसंवादे अघोरमंत्रसाधनप्रकारे पंचयोगेन्द्रसाधनजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शने सदेहकैलासगमनं नाम प्रथमः पटलः ॥ १ ॥

पुत्र ! यह तुमसे महामार्गका विचार कहा अनित्य और सुखरहित इस लोकमें इस अभिप्रायको प्राप्त होकर मेरा भजन करो ॥ ८ ॥ हे पुत्र ! तुम्हारे स्नेहसे मैंने यह गुप्त बात प्रकाश की है। धनके लोभी देवनिंदकको यह कभी न देना ॥ ९ ॥ नास्तिक दुर्बुद्धि तथा चुम्बकवृत्तिवालेकोभी न देना ॥ १० ॥

इति श्रीरुद्रयामले केदारकल्पे भाषाटीकायां प्रथमः पटलः ॥ १ ॥

द्वितीयः पटलः ।

॥ श्रीश्वर उवाच ॥ ॥ ॐ अस्य श्रीअघोरमंत्रस्य अघोर ऋषिः बृहती छन्दः श्रीकालाग्निः रुद्रो देवता ह्रीँ बीजं हुँ फट् स्वाहा शक्तिः अघोरप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ इति संकल्पः ॥ अथ षडङ्गन्यासः ॥ ॐ ह्राँ अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रीँ तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रूँ मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रैँ अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रौँ कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ इति षडंगन्यासः ॥ अथ हृदयादिन्यासः ॥ ॐ ह्राँ हृदयाय नमः ॥ ॐ ह्रीँ शिरसे स्वाहा ॥ ॐ ह्रूँ शिखायै वषट् ॥ ॐ ह्रैँ कवचाय हुम् ॥ ॐ ह्रौँ नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ ह्रः

श्रीईश्वर बोले। इस अघोर मंत्रका अघोर ऋषि बृहती छन्द कालाग्नि रुद्रदेवता ह्रींबीज हुंफट्स्वाहाशक्ति अघोरप्रसाद सिद्धिके निमित्त जपमें विनियोग है ऐसा संकल्पकरके षडङ्गन्यास मूलके अनुसार करै। फिर हृदयादिन्यास करै। अथ ध्यान। कैलासके ऊपर स्थित चन्द्रकलासे स्फुरायमान जटामंडलसे संयुक्त

अस्त्राय फट् ॥ इति हृदयादिन्यासः ॥ अथ ध्यानम् ॥ ॐ कैलासासनमीश्वरं शशिकलास्फूर्जज्जटामंडलं नासालोकनतत्परं त्रिनयनं वीरासनाध्याश्रितम् ॥ मुद्राटंककरं च जानुविलसद्गौरी प्रसन्नाननं कक्षाबद्धभुजंगमं मुनिवृतं वन्दे महेशं परम् ॥ १ ॥ इति ध्यानम् ॥ अथ जपमंत्रः ॥ ॐ क्रौं हुँ फट् स्वाहा ॥ अथ जपसमर्प्पणम् ॥ ॐ गुह्याद्गुह्यतरं गुह्यं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ २ ॥ अनेन जपेन एतावत्संख्याकेन श्री अघोररूपो रुद्रः प्रीयताम् ॥ इति जपसमर्पणम् ॥ अथ स्तोत्रं पठेत् ॥ ईश्वर उवाच ॥ ॐ नमः कामाय रुद्राय नमो मोक्षवपुर्भृते ॥ नमो नादात्मने तुभ्यं नमो बिन्दुकलात्मने ॥ ३ ॥ नमोऽस्तु लिंगरूपाय लिंगातीताय ते नमः ॥ त्वं माता सर्वलोकान त्वमेव जगतः पिता ॥ ४ ॥ त्वं भ्राता त्वं सुहृन्मित्रं त्वं प्रियस्त्वं पितामहः ॥ नमस्ते भगवन्रुद्र भास्करामिततेजसे ॥ ५ ॥ नमो भवाय रुद्राय परमांबुमयाय च ॥ शर्वाय शितिरूपाय सदा सुरभिणे नमः ॥ ६ ॥ पशूनां पतये चैव पावकामिततेजसे ॥ अतिभीमाय सौम्याय अमृताय

योगसमाधिमें नासिकाको अवलोकन करते हुए तीननेत्र वीरासनपर स्थित मुद्राटंक करमें जानुसे शोभित पार्वतीसे प्रसन्नमुख,कक्षामें भुजंग बांधेहुए मुनिव्रतधारी महेश्वरको नमस्कार करताहूं॥१॥इति ध्यानम् । जपका मंत्र । ओं हुं फट् स्वाहा। जपका समर्पण कहते हैं।गुप्तसेभी गुप्त यह मेरा जप आप स्वीकार करें । हेदेव महेश्वर ! आपके प्रसादसे मुझको सिद्धिहो॥२॥इस इतनी संख्याके जपसे श्री अघोर रुद्र मुझसे प्रसन्नहो इति जपसमर्पण । अथ स्तोत्रपाठ । ईश्वर बोले कामरूप रुद्र मोक्षरूपी शरीरधारी नाद आत्मा बिन्दुकलायुक्त शंकरको नमस्कार है ॥ ३ ॥ लिंगरूप लिंगसे रहित आपके निमित्त नमस्कारहै। तुमही सबलोककी माता और जगत्के पिताहो ॥ ४ ॥ तुमही भाई तुमही सुहृद तुमही मित्र तुमही प्रिय और तुमही पितामह हो ॥ ५ ॥ भर्व रुद्र परम अम्बुमय शर्व शितिकंठ सुरभीरूप आपको नमस्कार है ॥ ६ ॥ पशुपति पावक अमिततेजस्वी, अतिभीम, अतिसौम्य

नमोनमः ॥ ७ ॥ उग्राय यजमानाय नमस्ते कर्मयोगिने ॥ पार्थिवानां तु लिंगानां यन्मया पूजनं कृतम् ॥ ८ ॥ तेन मे भगवान्रुद्रो वाञ्छितार्थं प्रयच्छतु ॥ इदं स्तोत्रं पठेद्यस्तु पूजाकाले विधानतः ॥ ९ ॥ चक्रवर्ती भवेद्राजा सोऽन्ते शिवपुरं व्रजेत् ॥ ॥ १० ॥ इति श्रीरुद्रयामले केदारकल्पे ईश्वरकार्तिकेयसंवादे पंचयोगेन्द्रसाधनजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शने सदेहकैलासगमने सदाशिवाघोरस्तोत्रं नाम द्वितीयः पटलः ॥ २ ॥

दर्शन, अमृतरूप आपको नमस्कार है॥७॥उग्र,यजमान कर्मयोगी आपको नमस्कार है। पार्थिवलिंगोंका जो मैंने पूजन कियाहै ॥ ८ ॥ इससे भगवान् रुद्र मुझे मन वांछित फलप्रदान करैं।पूजाके समय विधानसे जो कोई इस स्तोत्रको पढताहै ॥९॥ वह चक्रवर्ती राजा होकर अन्तमें शिवजीके लोकको जाताहै ॥ १० ॥

इति श्रीरुद्रयामले केदारकल्पे भाषाटीकाया शिवाघोरस्तोत्रवर्णनं नाम द्वितीयःपटलः ॥ २ ॥

तृतीयः पटलः ।

॥ श्रीश्वर उवाच ॥ ॐ अस्य श्रीसदाशिवकवचस्य भृगु ऋषिः अनुष्टुप्छंदः श्रीसदाशिवो देवता कैलासप्राप्त्यर्थे जपे विनियोगः ॥ इति संकल्पः ॥ अथ कवचम् ॥ ॐ शिवो मेऽग्रतः पातु शंभुर्वै पातु पृष्ठतः ॥ त्रिपुरारिर्वामपार्श्वे दक्षिणे मदनान्तकः ॥ ॥ १ ॥ ॐ ऊर्द्ध्वं पातु विशालाक्षो ह्यधः कनकपिंगलः ॥ पार्वतीवल्लभो जानू जंघे पश्वीश्वरः प्रभुः ॥ २ ॥ पादौ मे पातु

श्रीईश्वर बोले। इस श्रीसदाशिवकवचका भृगु ऋषि अनुष्टुपछन्द। सदाशिव देवता। कैलास प्राप्तिके अर्थ जपमें विनियोगहै ऐसा संकल्पकरके कवच पढे। ओं आगे शिव मेरी रक्षा करैं। पीठकी ओरसे शंभु रक्षा करैं।बाईं ओर त्रिपुरारी दक्षिण ओरसे मदनान्तक मेरी रक्षा करैं ॥ १ ॥ विशालाक्ष ऊपरकी ओरसे नीचेसे कनकपिंगल,जानुकी पार्वतीवल्लभ,जांघोंकी पश्वीश्वर प्रभु रक्षा करैं॥२॥ सर्वेश मेरे दोनों चरणोंकी,कालाग्नि रक्षक दोनों हाथोंकी।सर्वज्ञ मेरे शिरकी, देवे-

सर्वेशः करौ कालाग्निरक्षकः ॥ शीर्षं मे पातु सर्वज्ञः कर्णौ देवेश्वरः सदा ॥३॥ गुह्यं गुह्येश्वरः पातु हृदयं हृदयेश्वरः ॥ सर्वांगं सर्वदेवेशः कामिनीवल्लभः कटिम् ॥ ४ ॥ यदिदं कवचं वश्यं देवानामपि दुर्लभम्॥एतस्य पठनादेव भूतप्रेतपिशाचकाः॥५॥न हि संति सदा सर्वे योगिन्योविघ्नकारकाः॥इदं कवचमज्ञात्वा यस्तु मंत्रं शिवात्मकम्॥अघोरं जपतेऽवश्यं तस्य विघ्नः पदेपदे ६तस्मात्सर्वप्रयत्नेन यदीच्छेदात्मनो हितम्॥विज्ञाय कवचं पूर्वं पश्चाज्जपमुपाचरेत् ॥७॥ इतिश्रीकेदारकल्पे रुद्रयामलतंत्रे ईश्वरकार्त्तिकेयसंवादे पंचयोगेन्द्रसाधनजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शने सदेहकैलासगमने अघोरकवचं नाम तृतीयः पटलः॥३॥

श्वर सदा कानोंकी रक्षा करैं ॥ ३ ॥ गुह्येश्वर मेरे गुह्यस्थानकी सदा रक्षा करैं। सब देवताओंके ईश्वर मेरे सर्वांगकी रक्षा करैं । कामिनीवल्लभ मेरे कमरकी रक्षा करैं ॥४॥ जो जितेन्द्रिय होकर देवताओंकोभी दुर्लभ इस कवचका पाठ करतेहैं तो इसके पाठसे भूत प्रेत पिशाच ॥ ५ ॥ तथा योगिनी आदि कोई विघ्न नहीं करसकतेहैं । इस कवचको विना जाने जो शिवात्मक मंत्रको ॥ ६ ॥ अघोरसंज्ञक शिवात्मक मंत्रको जपतेहैं तो उनको पदपदमें विघ्न होताहै, इससे सब प्रयत्नोंसे अपना हित साधनकरैं ॥ ७ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे रुद्रयामले शिवकवचवर्णनं नाम तृतीयः पटल. ॥ ३ ॥

चतुर्थः पटलः ।

॥ अथ पार्थिवपूजाविधिः ॥ ईश्वर उवाच ॥ प्रथममासनमंत्रः ॥ ॐ पृथ्वीति मंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः कूर्म्मो देवता सुतलं छंदः

अथ पार्थिवपूजाविधि । ईश्वर बोले पहले आदिमें आसनमंत्र है विनियोग पढके पृथिवीति यह मंत्र पढे, हे पृथिवी तुमने लोक धारण किये हैं तुमको विष्णुनें

---

१ आत्मनेपदमार्षम् ।

आसनोपवेशे विनियोगः इति संकल्पः । पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता॥त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥ इति आसनमंत्रः ॥ ॐ अपसर्पंतु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ॥ ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यंतु शिवाज्ञया॥२॥ इति दिग्बंधः ॥ ॐ ह्राँह्रीं हराय नमः ॥ इति मृदाहरणम् ॥ ॐ ह्राँ ह्रीं महेश्वराय नमः ॥ इति संवटनम् ॥ ॐ ह्रांह्रीं शूलपाणये नमः॥इति स्थापनम् ॥ अथ ध्यानम्॥ध्याये नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचंद्रावतंसं रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ॥पद्मासीनं समंतात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥ १ ॥ इति ध्यानम् ॥ कैलासं ध्यात्वा ॥ वामनासापुटे अंजलिं समानीय पुष्पं क्षिपेत् ॥ ॐ पिनाकधृग्यावत्त्वां पूजयामि तावत्त्वं स्थिरो भव ॥ ॐ महादेवस्य प्राणाः,वाक्,मनः,सर्वेन्द्रियाणि, जीव,इह स्थिताः॥ॐआँह्रींक्रों हंसः त्वक्चक्षुःश्रोत्रघ्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा ॥ इति प्राणप्रतिष्ठा ॥ ॐ पिनाकधृक्

धारण कियाहै, हे देवि ! तुम मुझको धारणकरके आसनको पवित्र करो ॥ १ ॥ इति आसनम् । अब दिग्बंध कहतेहैं।अपसर्पन्त्विति।जो प्राणी इस स्थानपर हैं वे यहांसे चले जायँ और जो प्राणी विघ्नकरनेवाले हैं वे शिवकी आज्ञासे नष्ट हों।इति दिग्बंधः । ॐह्रीं हराय नमः। इससे मट्टीलावै । ॐह्रीं ह्रीं महेश्वराय नमः । इससे संघट्ट करै । ॐह्रीं ह्रीं शूलपाणये नमः । इससे प्रतिष्ठा स्थापन करै ।

अथ ध्यान-जो महेश रजतगिरिके सदृश, चारुचन्द्रभूषणवाले; रत्नभूषणकी सदृश उज्ज्वलांगयुक्त, हस्तमें परशु, मृग, अभय और वर धारण किये प्रसन्न रूप, पद्मासनपर बैठे हुये, सभी दिशावोंसे अमरगणोंसे स्तुत, व्याघ्राम्बर पहनेहुये, विश्वके आद्य, विश्वबीज, समस्त भयहरण करनेवाले हैं मैं उनको ध्यानगोचर करता हूँ ॥ इति ध्यानम् ॥ कैलासका ध्यान करै । वामनासापुटसे ध्यानकरै। फिर पुष्प छोडै । और कहै हे पिनाकधारिन् जबतक तुम्हारी पूजा करूं तबतक तुम यहीं स्थिर हो । महादेवके प्राण वाणी मन इन्द्रिय आत्मा सब इस मूर्तिमें स्थित हों । आंह्रींक्रींहंसः । यहमंत्र पढकर कहै । त्वचा चक्षु श्रोत्र घ्राण सब यहां

इह सन्निहितो भव ॥ १ ॥ ॐ शिवाय नमः॥ आवाहनम् ॥२॥ ॐ शिवाय नमः ॥ आसनम् ॥ ३ ॥ ॐ शिवाय नमः पाद्यम् ॥ ४ ॥ ॐ शिवाय नमः॥ पादावनेजनम् ॥ ५ ॥ ॐ शिवाय नमः अर्घ्यम् ॥ ६ ॥ ॐ शिवाय नमः॥ मधुपर्कः ॥ ७ ॥ ॐ ह्रांह्रीं पशुपतये नमः स्नानम् ॥ ८ ॥ ॐ शिवाय नमः ॥ आचमनीयम् ॥९॥ ॐ शिवाय नमः वस्त्रम् ॥ १० ॥ ॐ शिवाय नमः अलंकाराः ॥ ११ ॥ ॐ शिवाय नमः सुगंधः ॥ १२ ॥ ॐ ईशानाय नमः दीपः ॥ अथावरण पूजा ॥ ॐ शर्व्वाय क्षितिमूर्त्तये नमः ॥ १ ॥ ॐ भवाय जलमूर्त्तये नमः ॥ २ ॥ ॐ रुद्राय अग्निमूर्त्तये नमः ॥ ३ ॥ ॐ उग्राय वायुमूर्त्तये नमः ॥ ४ ॥ ॐ भीमाय आकाशमूर्त्तये नमः ॥ ५ ॥ ॐ पशुपतये यजमानमूर्त्तये नमः ॥ ६ ॥ ॐ महादेवाय सोममूर्त्तये नमः ॥७॥ ॐ ईशानाय सूर्य्यमूर्त्तये नमः ॥८॥ इति आवरणपूजा ॥ ॐ शिवाय नमः ॥ श्रीखण्डचन्दनं समर्पयामि ॥ २१ ॥ ॐ शिवाय नमः रक्तचन्दनं समर्पयामि॥२२॥अक्षतं समर्पयामि॥२३॥ ॐशिवाय नमः पुष्पं समर्पयामि ॥२४॥ ॐ शिवाय नमः अबीरगुलाले समर्पयामि ॥ २५ ॥ ॐ शिवाय नमः धूपं समर्पयामि ॥ २६ ॥ ॐ शिवाय नमः दीपं समर्पयामि ॥ २७॥ ॐ शिवाय नमः ॥ नैवेद्यं समर्पयामि ॥ २८ ॥ ॐ शिवाय नमः फलताम्बूले सम-

आकर सुखसे चिरकालतक निवास करें । इति प्राणप्रतिष्ठा । हे पिनाकधारिन् तुम यहां स्थित हो । ॐ शिवाय नमः । यह मंत्र पढकर आवाहन, आसन, पाद्य, अवनेजन, दीप, मधुपर्क दे, ह्रींपशुपतये नमः । इससे स्नान करावे । शिवाय नमः इससेही आचमन वस्त्र, अलंकार, गन्धसुगन्ध दे । फिर आवरणपूजा करै । शर्व्वाय क्षितिमूर्त्तये नमः । इत्यादि आठ आवरण पूजाके मंत्रहैं इनको पढै । इति आवरण पूजा । फिर शिवाय नमः । यह मंत्र प्रत्येकवार पढके चन्दन, लालचन्दन,अक्षत, पुष्प, अबीर, गुलाल, धूप, दीप, नैवेद्य, फल, ताम्बूल, आर्ति, नीराजन,प्रदक्षिणा

र्पयामि॥२९॥ॐ शिवाय नमः॥आरार्त्तिकं समर्पयामि॥३०॥ॐ शिवाय नमः नीरांजनं समर्पयामि ॥३१॥ ॐ शिवाय नमः ॥ प्रदक्षिणं समर्पयामि॥३१॥ॐ शिवाय नमः ॥ ध्यानं स्तुस्तिपाठं समर्पयायि ॥३३॥ ॐ शिवाय नमः ॥ अष्टोत्तरशतं मंत्रं जपेत्॥ जपसमर्पणम् ॥ विसर्जनम् ॥ ३४ ॥ इति श्रीरुद्रयामले केदारकल्पे ईश्वरपार्वतीसंवादे पंचयोगेन्द्रसाधनजीवन्मुक्तये परब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शने सदेहकैलासगमने शिवाघोरपार्थिवपूजाघोरमंत्रसाधनप्रकारो नाम चतुर्थः पटलः ॥ ४ ॥

ध्यान, स्तुति, पाठ समर्पण करै यह ३३ मंत्रपूर्वक करै फिर जप समर्पणकर विसर्जन करै ।

इति श्रीकेदारकल्पे ईश्वरपार्वतीसम्वादे पूजाविधिवर्णनो नाम चतुर्थः पटलः ॥ ४ ॥

पञ्चमः पटलः ।

श्रीश्वर उवाच ॥ ॐ शैलराजस्य पृष्ठे तु शृणु स्थानानि यानि वै ॥ अस्ति पुण्या महादेवी नदी वैतरणी. शुभा ॥१॥ पितॄणां तोयदानेन तृप्तिर्भवति पुष्कला॥तत्रापि परमं देवि पश्येद्रुद्रहिमालयम् ॥ २ ॥ हिमालये तु चेद्दत्तं त्रुटिमात्रं हि कांचनम् ॥ तेन दत्ता भवेत्सर्वा सप्तद्वीपा वसुंधरा ॥ ३ ॥ आत्मानं घातयेद्यस्तु भृगुपृष्ठेषु मानवः॥ इंद्रेण धारिते छत्रे रुद्रलोकं स गच्छति ॥४॥ गत्वा हिमालयं पुण्यं दृष्ट्वा माहेश्वरं पदम्॥ वासात्संतारयेत्सद्यो

शिवजी बोले हे देवि ! हिमाचल पर्वतके पृष्ठभागमें जितने स्थान हैं सो सुनो। तहां बड़ी शुभ पवित्र वैतरणी नदी है ॥ १ ॥ तहां जलदान करनेसे पितरोंकी सबप्रकार तृप्ति होती है । हे देवि ! और वहां बड़े हिमालय पर्वतका दर्शन करै ॥ २ ॥ उस हिमालय पर्वतपर त्रुटिमात्रभी सोना दान करै तो मानो उसने सातद्वीपवाली भूमि दानकी ॥ ३ ॥ जो मनुष्य पर्वतशिखरपरसे अपने आपको नष्ट करै वह इन्द्रसे छत्रधारण कराता हुआ रुद्रलोकमें प्राप्त होता है॥४॥ और पवित्र हिमालयको प्राप्त हो शिवजीके चरणारविन्दोंके दर्शनकर शीघ्र दश-

पूर्वान्दशापरान् ॥ ५ ॥ द्वितीयं मध्यमं स्थानं तत्र मध्ये कृतं मया ॥ तत्र या स्यान्नदी पूज्या महापुण्या सरस्वती ॥ ६ ॥ तत्तुंगे सा प्रणष्टापि प्रभाते तु प्रकाशिता ॥ सरस्वती महाध्याना देवगंधर्वसेविता ॥ ७ ॥ मध्यमं चोदकं पीत्वा गणो भवति मध्यमः ॥ ब्रह्ममन्त्रं समासाद्य सर्वपापप्रणाशनम् ॥ ८ ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ मनुष्याणां हितार्थाय मया पृष्टो महेश्वर ॥ तन्मे कथय देवेश यत्रैव संशयो महान् ॥ ९ ॥ स्वभावात्परमं धाम यथा पुण्यमहं प्रभो ॥ श्रोतुमिच्छामि तत्त्वेन युष्मद्वक्त्राद्विनिर्गतम् ॥ १० ॥ श्रीश्वर उवाच ॥ शृणु देवि यथातथ्यं तीर्थसद्भावमुत्तमम् ॥ यदहं संप्रवक्ष्यामि निखिलं तन्निबोध मे ॥ ११ ॥ तृतीयं तत्परं स्थानं केदारं चेति विश्रुतम् ॥ मच्छरीराद्विनिष्क्रांतं शुक्राख्यं पानमुत्तमम् ॥ १२ ॥ केदारमुदकं देवि ये पिबन्ति महाजनाः ॥ मम तुल्यबलाः सर्वे सर्वे स्वच्छन्दगामिनः ॥१३॥ त्रिशूलांकितहस्ताश्च सर्वे वै शूलपाणयः ॥ त्रिनेत्राश्च

पीढ़ी पिछले और दश पीढ़ी अगले वंशको तारताहै ॥ ५ ॥ और दूसरा मध्यमस्थान मने उस पर्वतके मध्यमें कियाहै, तहां बड़ी पवित्र सरस्वती नदी पूजनीयहै ॥ ६ ॥ उस ऊर्ध्वभूमिमें वह सरस्वती नदी नष्ट हुईभी प्रातःकाल प्रकाशित होती है और देवता गन्धर्वोंसे सेवितहै, उसके ध्यान करनेसे ॥ ७ ॥ तथा बीचमेंसे जलपान करे तो मध्यमगण होताहै, और सम्पूर्ण पापनाशक यज्ञोपवीतको धारण करे ॥ ८ ॥ देवी बोली हे महेश्वर ! मनुष्योंके हितकी कामनासे मैंने पूंछा है। हे देवि ! जहां २ मुझे संशय है सो मुझसे कहो ॥ ९ ॥ हे प्रभो ! जिस प्रकार यह परमधाम पवित्रहै सो विधिपूर्वक आपके मुखसे सुनना चाहती हूँ ॥ १० ॥ शिवजी बोले हे पार्वति ! इस उत्तम तीर्थकी श्रेष्ठ महिमाको ठीक २ श्रवण करो, जो मैं कहूंगा, सो सम्पूर्ण मुझसे सुनो ॥ ११ ॥ उससे आगे केदारनामक स्थानहै, वह मेरे शरीरसे निकला शुक्र है और पान करने योग्यहै ॥ १२ ॥ हे देवि ! जो महापुरुष केदारके उदक (जल) को पान करते हैं वे मेरे समान पराक्रमी हो सब स्वेच्छाचारी होते हैं ॥ १३ ॥ जिनके हाथोंमें त्रिशूल चिह्नितहै, और त्रिशूल हाथमें लिये तीन नेत्रवाले सब गण मेरी भक्ति-

गणा भक्त्या सर्वेऽपि मत्पराक्रमाः ॥ १४ ॥ मन्दाकिन्यां नरः स्नात्वा चार्चयित्वा वृषध्वजम् ॥ गणाधिपत्वं लब्ध्वा च कुलानामुद्धरेच्छतम् ॥ १५ ॥ तत्र मंदाकिनी पुण्या नदीनामुत्तमा नदी ॥ द्रावयेत्सर्वपापानि स्तुता भवतु वा नता ॥ १६ ॥ तस्यां स्वर्गाच्युतायां तु शुचिस्नातो हि मानवः ॥ यः पिबेत्तत्र देवेशि वामहस्तेन वै जलम् ॥१७॥ अंकितः स्यात्रिशूलेन ललाटे नयनेन च ॥ गणो हि च समस्तस्तु पुनर्नावर्त्तको भवेत् ॥ १८ ॥ सर्वधर्मपरां प्राप्य सत्यं तु लभते गतिम् ॥ गणपत्वमवाप्नोति यत्र तत्र मृतो नरः ॥१९॥ तस्यास्तोयं शरीरस्थं मम लिंगाद्विनिःसृतम् ॥ मृतो यत्र गतो वापि स्कंदस्य सदृशो भवेत् ॥ २० ॥ जन्मांतरसहस्रैस्तु बहुभिः शोधितो नरः ॥ ततो याति परं स्थानं केदारं तीर्थमुत्तमम् ॥ २१ ॥ केदारं प्रस्थितो देवि सर्वश्च म्रियते नरः॥सोऽपि सर्वो गणो मह्यं भवत्यमरतेजसा॥२२॥भस्मनो धारणं नित्यं शिवमंत्रः प्रदक्षिणम्॥ केदारो-

करनेसे मेरे समान पराक्रमी होते हैं॥१४॥मनुष्य मन्दाकिनी नदीमें स्नानकरके शिवजीको पूजकर उत्तम गणताको प्राप्त होके सौ कुलोंको उद्धार करता है॥१५॥ वहां बड़ी पवित्र नदियोंमें श्रेष्ठ मन्दाकिनी गंगाकी अनेक प्रकारकी स्तुतियोंसे ध्यान करै तो संपूर्ण पाप नष्ट होते हैं ॥ १६ ॥ स्वर्गसे गिरती हुई उस नदीमें स्नानकर पवित्र हो, जो पुरुष बाँएं हाथसे, जल पीवै ॥ १७ ॥ वह त्रिशूलसे तथा मस्तकपर नेत्रसे चिह्नित होवै उसको शिवका गण होना होता है। और वह फिर जन्म धारण नहीं करता ॥ १८ ॥ वह परमधर्मको प्राप्त हो सद्गति (मुक्ति) को प्राप्त होता है वह मनुष्य चाहे जहां मरै शिवजीका उत्तम गण होता है ॥ १९ ॥ मेरे लिङ्गसे निकला केदारका जल जिसके शरीरमें स्थितहो वह मनुष्य जहां कहींभी मरजाय तो स्वामिकार्त्तिकेयकी समान होता है ॥ २० ॥ अनेक सहस्रों जन्मोंसे शुद्ध हुआ मनुष्य उत्तम केदार तीर्थको प्राप्त होताहै ॥ २१ ॥ हे देवि ! केदारतीर्थपर जो कोईभी मरजाय वे सब देवताके समान तेजस्वी मेरे गण होते हैं ॥ २२ ॥ नित्यविभूतिका शिवमन्त्र दक्षिणा सहित धारण करना; केदारमें जलपान करनेकी सोलहवीं कलाको भी

दकपानस्य कलां नार्हति षोडशीम् ॥२३॥ अनेकानि सहस्राणि
क्रतूनां सुविशेषतः ॥ कलौ कृत्वा गतिर्नैषा केदारेण तु या भवेत्
॥ २४ ॥ दिव्यवर्षसहस्राणि तपस्तप्त्वा तु पुष्करे ॥ न लभ्यते
गतिर्मर्त्यैः केदारेण तु या भवेत्॥२५॥भूतं भव्यं भविष्यं च सर्व-
लोकस्य यद्भवेत्॥सर्वं विधिवदस्माकं तद्भवेत्तीर्थमीदृशम्॥२६॥
केदारमुदकं पीत्वा यत्र देशे प्रपद्यते ॥ सोऽपि देशो भवेत्पूज्यः
किं पुनस्तस्य बांधवाः ॥ २७ ॥ आत्मा वै पुत्रनाम्ना तु ब्राह्मणो
वेदवान्भवेत् ॥ अंकितास्तु त्रिशूलेन ते पूज्याः सर्व्वदैवतैः ॥२८॥
पृथिव्यां यानि तीर्थानि पुण्यान्यायतनानि च ॥ केदारोदकपा-
नस्य कलां नार्हति षोडशीम् ॥ २९॥ वसेदीशानमासाद्य हिम-
पूर्णमहागिरौ ॥ यावत्तत्क्रमते च्छाया दृष्टिमात्रं तथा पुनः॥३०॥
अंते वा यदि वा मध्ये ये मृता हिमवद्गिरौ ॥ तावत्ते दिवि तिष्ठंति
यावदिन्द्राश्चतुर्दश ॥ ३१ ॥ आत्मानं घातयेद्यस्तु प्रत्यक्षं च
हुताशने ॥ न तां गतिमवाप्नोति केदारेण तु या भवेत् ॥ ३२ ॥

नहीं पहुंचताहै ॥ २३ ॥ कलियुगमें अनेक सहस्रों यज्ञ विधिपूर्वक करके वह गति नहीं प्राप्त होतीहै जो केदारतीर्थसे मिलतीहै ॥ २४ ॥ मनुष्य पुष्करमें दिव्यसहस्रवर्ष तप करके वैसी गति नहीं पाताहै जैसी केदारके दर्शनसे मिलती है ॥ २५ ॥ संसारमें भूत, भविष्य जो कुछ है वह मुझे विदितहै ऐसा कोई उत्तम तीर्थ नहीं है ॥ २६ ॥ केदारके जलको पीकर मनुष्य जिस देशमें चला जाय, वह देशतक पूजनीय होताहै फिर उसके बांधवोंकी क्या कहैं ॥ २७ ॥ आत्मा पुत्र नामसे प्रसिद्धहै ब्राह्मण वेदज्ञाता होवे यदि त्रिशूलसे अंकित हो तो विना वेदके पढ़ेभी वह देवताके समानहैं ॥ २८ ॥ पृथ्वीपर जितने पुण्य तीर्थ और देवमंदिर हैं वे सम्पूर्ण केदारमें जलपानकरनेके सोलहवें भागकोभी नहीं पाते हैं ॥ २९ ॥ सुवर्णसे पूर्ण इस महापर्वतपर ईशानकी ओर जबतक छाया चली जाय उतनी दृष्टि मात्रही निवास करे॥३०॥हिमालय पर्वतपर अन्तमें वा मध्यमें जो पुरुष मरजांय तो वे तबतक स्वर्गमें रहतेहैं जबतक चौदह इंद्र रहतेहैं॥३१॥ जो मनुष्य प्रत्यक्ष अग्निमें अपने आपको गिराय नष्ट करै वहभी वैसी गतिको नहीं प्राप्त होता जैसी केदारतीर्थसे मिलतीहै ॥ ३२ ॥ केदारके जलको एकबार पीकर तथा

सकृत्पीत्वा तु कैदारं वाराणस्यां सकृद्गतौ ॥ ब्रह्मविद्यां सकृज्जप्त्वा न भवेत्पुनरालये ॥ ३३ ॥ विषमं दुर्गमं घोरं प्रविश्य हिमवद्गिरौ ॥ केदारस्योदकं पीत्वा मृतेनापि न शोच्यते ॥ ३४ ॥ सकृत्पीत्वा तु कैदारं मम तुल्यबलो भवेत् ॥ अदृश्यः सर्वभूतानां विचरेच्च यदृच्छया ॥ ३५ ॥ दिव्यांतरिक्षपातालं यत्र यत्र यथेच्छति ॥ मम देवि प्रसादेन क्रीडते कामरूपधृक् ॥३६॥ केदारस्य कथां दिव्यां पवित्रां पापनाशिनीम् ॥ ये स्मरन्ति सदा भक्त्या ते चैव दिव्यदेवताः ॥ ३७ ॥ यावत्प्रधानात्पुरुषो यावच्चाहं महेश्वरः ॥ मम देहस्वरूपेण यत्राहं तत्र ते मृताः ॥ ॥ ३८ ॥ एतच्च परमं गुह्यं तव देवि ह्युदाहृतम् ॥ यस्तु धारयते नित्यं यश्चैव शृणुयान्नरः ॥ ३९ ॥[१]मुच्यते सर्वपापेभ्यो रुद्रलोकं स गच्छति ॥ ४० ॥

इति श्रीरुद्रयामलये केदारकल्पे श्रीश्वरदेवीसंवादे पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शने सदेहकैलासगमनं नाम पंचमः पटलः ॥ ५ ॥

एकवार काशीमें जाके और एकवार ब्रह्मविद्या (अध्यात्मविद्या) को जपकर फिर जन्म नहीं होताहै ॥ ३३ ॥ कठिन तथा घोर दुर्गम प्रकारसे हिमालय पर्वतपर जाकर केदारके जलको पीकर मरकेभी नहीं शोकको प्राप्त होताहै ॥ ३४ ॥ एकवार केदारके उदक (जल)को पीकर मेरे समान बली होताहै सब प्राणियोंमें अदृष्ट होकर अपनी इच्छासे भ्रमण करताहै ॥ ३५ ॥ हे देवि ! स्वर्ग, अन्तरिक्ष तथा पाताल लोकको वा जहां कहींभी वह जाना चाहताहै मेरे प्रसादसे इच्छाचारी हो विचरता है ॥ ३६ ॥ जो मनुष्य केदारमाहात्म्यकी दिव्य पवित्र पापनाशक कथाको भक्तिपूर्वक स्मरण करते हैं, वह दिव्यदेवता हैं ॥ ३७ ॥ जबतक प्रधान पुरुषहैं । जबतक में महेश्वर हूँ, मेरे भक्त मरके मेरे स्वरूपमें हो जहां मैंहूँ तहांही प्राप्त होतेहैं ॥ ३८ ॥ हे देवि ! यह परम गोपनीय वार्ता तुमसे कही, जो मनुष्य इसको नित्य सुनै अथवा धारण करै॥ ३९ ॥ वह संपूर्ण पापोंसे छूटताहै और शिवलोकको प्राप्त होताहै ॥ ४० ॥

इति श्रीकेदारकल्पे शिवपार्वतीसम्वादे भाषाटीकाया पंचमः पटलः ॥ ५ ॥

---

१ इडभावआर्षः ।

षष्ठः पटलः ।

देव्युवाच ॥ ॐ क्षेत्राणां परमं क्षेत्रं तीर्थानां चैव यत्स्मृतम् ॥ प्रमाणं तस्य क्षेत्रस्य श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ॥ १ ॥ श्रीश्वर उवाच॥दक्षिणोत्तरतश्चैव पंचयोजनमायतः॥पूर्वपश्चिमतश्चैव योजनत्रयमायतः ॥२॥ तस्मिंस्तु पर्वते देवा ऋषयश्च तपोधनाः ॥ क्षेत्रस्य बाह्यतः सर्वे तपः कुर्वंति पुंगवाः॥३॥सिद्धगंधर्वयक्षाश्च किन्नराद्यप्सरोगणाः॥केदारकांक्षिणः सर्वे समाराधनतत्पराः॥४॥ न लभंते सुरा देवा ये चान्ये दिव्यजातयः॥यक्षैस्तु रक्षितं स्थानं नंदिस्कंदपुरोगमैः ॥ ५ ॥ विनायको महाकाल ईशानश्च महाबलः ॥ जया च विजया चैव मोहिनी स्तंभिनी तथा ॥ ६ ॥ मम रूपधराः सर्वे क्षेत्रं रक्षंति सर्वदा ॥ षष्टिकोटिगणानां च क्षेत्रपालाः प्रकीर्त्तिताः ॥७॥ नंदी चैव महाकालः सततं क्षेत्ररक्षकौ॥ अहं तत्र स्थितो देवि त्वया सह वरानने ॥८॥ दृष्प्राप्यं चैव केदारं देवानामपि दुर्लभम् ॥ क्षेत्राणां परमं क्षेत्रं तीर्थानां तीर्थमुत्तमम् ॥ ९ ॥ तत्र स्नात्वा दिवं यांति मुक्ताः संसारबंधनात् ॥ अक्षयाः

पार्वती बोली, क्षेत्रोंमें बड़ा क्षेत्र तीर्थोंमें उत्तमतीर्थ कहाहै ? तथा उसक्षेत्रके प्रमाणको सुननेकी इच्छाहै ॥ १ ॥ शिवजी बोले केदारक्षेत्र दक्षिण और उत्तरसे पांचयोजन विस्तृतहै, और पूर्वपश्चिमसे तीनयोजन विस्तृत है ॥ २ ॥ उस पर्वतपर तपस्वी, देवता और ऋषि, रहतेहैं और क्षेत्रके बाहरभी तप करतेहैं ॥३॥ और सिद्ध, गंधर्व, यक्ष, किन्नरादिक तथा अप्सरायें संपूर्ण केदारको इच्छा करते हुए आराधनामें तत्परहैं ॥ ४ ॥ देवता और जो दिव्यजातिहैं वेभी केदारको नहीं प्राप्त होते यह केदारस्थान स्कन्दआदि यक्षोंसे रक्षा किया हुआ है॥५॥ विनायक, महाकाल, ईशान, महाबल और जया, विजया, तथा मोहिनी, और स्तंभिनी,॥६॥मेरे स्वरूपको धारण किये सब निरंतर क्षेत्रकी रक्षा करतेहैं, और साठकरोड क्षेत्रपालगण कहेहैं ॥ ७ ॥ और नंदी व महाकाल यहभी क्षेत्रकी रक्षा करतेहैं हे देवि ! हे वरानने ! मैं तेरे साथ तहां स्थितहूं ॥८॥ देवतोंकोभी दुष्प्राप्य और दुर्लभ केदारक्षेत्र क्षेत्रोंमें उत्तम,तथा तीर्थोंमें श्रेष्ठ कहाहै ॥९॥ वहां

परमाश्चैव मत्प्रसादाद्भवंति ते ॥ १० ॥ ब्रह्महत्याकृतश्चैव ये चान्ये पापकारिणः॥न पश्यंत्यशुभं देवि शुद्धाश्चापि भवन्ति ते ॥ ११ ॥ येषु येषु च कार्य्येषु यांति मामपि सुव्रते ॥ तेषु तेषु च योगेषु जायंते मत्प्रसादतः ॥ १२ ॥ तावत्ते बहवो वर्णाः सर्वे केदारकांक्षिणः ॥ केदारं चैव संप्राप्ताः सर्वे वर्णा द्विजातयः ॥ १३ ॥ रश्मिभिर्मम संस्पृष्टा अनङ्गातास्तु ये नराः॥ तत्र यांति परं देवि पूर्वं शप्तास्तु ते मया ॥ १४ ॥ पूर्वशप्तास्तु ये देवि ते भवंति गणेश्वराः ॥ तेषां च निर्मितं देवि केदारोदकमुत्तमम् ॥ १५॥ तेन पीतेन मुच्यन्ते जन्मसंसारबंधनात्॥त्रिनेत्राः शूलहस्ताश्च शशांकांकितमूर्द्धजाः ॥१६॥ व्याघ्रचर्मधराः सर्वे मम पुत्रा महाबलाः॥ मम वीर्यसमुत्पन्ना सत्र ते मत्पराक्रमाः ॥१७॥ये पिबंति नराः सर्वे ते भवंति गणेश्वराः॥ गाणपत्ये तु केदारे तेन तीर्थं तदुत्तमम् ॥ १८ ॥ न तेन सदृशं पुण्यं त्रिषु लोकेषु विद्यते ॥ पृथिव्यां यानि तीर्थानि पुण्यान्या-

ध्यान करके संसारबंधनसे छूटकर स्वर्गलोकको सिधारतेहैं, और वे मेरे प्रतापसे अक्षय और बडे होतेहैं ॥ १० ॥ हेदेवि ! जो पुरुष ब्रह्महत्यारे तथा किसी पापके करनेवालेहों उनके पाप नष्ट होकरके वे शुद्ध होतेहैं ॥ ११ ॥ हे सुव्रते ! जिन २ कामोंके अर्थ मुझको प्राप्त होतेहैं उन २ कामोंमें मेरे प्रतापसे सिद्धि होतीहै ॥ १२ ॥ तभीतक ब्राह्मणादि अनेक वर्णहैं जबतक केदारकी अभिलाषा नहीं करते, और केदारतीर्थपर प्राप्त हुए संपूर्णवर्ण द्विजाति होतेहैं ॥१३॥मेरी कान्तिसे स्पर्श किये जो मनुष्य स्पर्शवाले होतेहैं हे देवि! उनमेंसे पहले सात मुझसे प्राप्त होतेहैं ॥ १४ ॥ हे देवि ! पहले सात गणेश्वर होते हैं उनके निमित्त उत्तम केदार का जल है ॥१५॥ उसके पान करनेसे जन्म संसार बंधनसे छूटते हैं जो तीन नेत्रवाले त्रिशूल हाथमें लिये मस्तकपर चन्द्रमासे चिह्नित हैं ॥१६ ॥ व्याघ्रकी खाल धारण किये वे, सब मेरे पुत्रहैं और मेरे वीर्यसे उत्पन्न हैं वे मेरे समान पराक्रमी होतेहैं॥ १७ ॥ जो मनुष्य केदारके जलको पीतेहैं वे सब गणोंके स्वामी होतेहैं गाणपत्य केदारमें यह उत्तम तीर्थ है ॥ १८ ॥ उसकी समान पुण्यतीर्थ तीनों लोकोंमें नहीं हैं पृथ्वीपर जितने पुण्यतीर्थ और देवस्थान

१ सम्बन्धविवक्षया षष्ठी ।

यतनानि च ॥ १९ ॥ केदारस्य तु तोयस्य कलां नार्हंति षोड-
शीम्॥इष्टक्षेत्रं समासाद्य चैकरात्रिं वसेत्तु यः ॥२०॥ वासस्तस्य
भवेद्देवि नित्यकालं शिवालये ॥ मंदाकिन्यां नरः स्नात्वा पितृ-
पुण्योदकं ददत् ॥ २१ ॥ तारितास्तेन ते चैव कुलान्येकोत्तरं
शतम् ॥ इदं क्षेत्रं परं देवि देवानामपि दुर्लभम् ॥ २२ ॥ दृष्ट्वा
पीतं जलं चात्र संसारभयभेदकम्॥ येऽपि प्रदक्षिणं कुर्यात्तस्थानं
पुरुषोत्तमः ॥ २३ ॥ प्रदक्षिणा कृता तेन सप्तद्वीपा वसुंधरा ॥
यत्फलं सर्वतीर्थानां सर्वयज्ञेषु यत्फलम् ॥ २४ ॥ यत्फलं
लभ्यते यज्ञैः साश्वमेधैः सदक्षिणैः ॥ तत्फलं कोटिगुणितं लभते
नात्र संशयः ॥ २५ ॥ तप्तकांचनवर्णाभाः सर्वालंकारभूषिताः ॥
विचरंति गणा देवि सर्वभूतविमर्दकाः ॥ २६ ॥ ऋषीणां चैव
दैत्यानां यक्षगंधर्वरक्षसाम् ॥ ग्रहाणां भूतसिद्धानां ये च केचि-
द्विरोधकाः ॥ २७ ॥ इन्द्रो वा यदि वा ब्रह्मा विष्णुर्वापि प्रजा-
पतिः ॥ एतेषां चैव सर्वेषां स वध्यो नात्र संशयः ॥ २८ ॥

हैं ॥१९॥ केदारके उदक (जल)के सोलहवें भागकोभी नहीं प्राप्त होते जो मनुष्य इस प्रिय केदारक्षेत्रको प्राप्त होकर एकरात्रि टिके ॥ २० ॥ हे देवि ! उसका निवास नित्य शिवालयमें होताहै, जो मनुष्य मंदाकिनी नदीमें स्नान करके पितरोंको पवित्र जलदान करतेहैं ॥ २१ ॥ उन्होंने एकसौ एक कुलको तार दिया हे देवि ! यह पवित्र क्षेत्रहै देवताओंकोभी दुर्लभहै ॥ २२ ॥ इस क्षेत्रके दर्शन करके तथा यहां संसारके भयके नष्ट करनेवाले जलको पीवें तथा जो पुरुषोंमें श्रेष्ठ इस स्थानकी प्रदक्षिणा करतेहैं ॥ २३ ॥ मानो उन्होंने सातद्वीपवाली पृथिवीकी परिक्रमा की संपूर्ण तीर्थोंमें जो फलहै, और जो फल सब यज्ञोंमें है ॥२४॥वह फल मनुष्योंको यहां स्नानसे प्राप्त होताहै दक्षिणासहित अश्वमेध करनेसे जो फल मिलताहै उससे करोडगुना फल प्राप्त होताहै, इसमें कुछ संशय नहींहै ॥ २५ ॥ वे मनुष्य तप्त सुवर्णकी समान कान्तिवान् संपूर्ण आभूषणोंसे भूषित गण होकर सब जीवोंको पराभव करते हुए विचरतेहैं ॥ २६ ॥ ऋषियोंके और दैत्योंके यक्ष और राक्षस गंधर्व इनके ग्रह भूत सिद्धके जो कोई विरोधी हैं ॥२७॥ इन्द्र हो वा ब्रह्मा अथवा विष्णु वा प्रजापति इन सबोंका कोई विरोधी हो उसका

हे देवि मम भक्ताश्च मृताः केदारचिंतकाः ॥ ते पि सर्वे गणा मह्यं भवंत्येव न संशयः॥२९॥ एककालं द्विकालं वा त्रिकालं नित्यमेव च ॥ ये स्मरन्ति च केदारं शिवभक्त्या जितेन्द्रियाः ॥३०॥ न तेषां विद्यते पापं सहस्रगुणितं फलम् ॥ यत्फलं लभते यज्ञैः साश्वमेधैः सदक्षिणैः ॥ ३१ ॥

इति श्रीरुद्रयामले केदारकल्पे श्रीश्वरदेवीसंवादे पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शने सदेहकैलासगमनं नाम षष्ठः पटलः ॥ ६ ॥

वध होताहै इसमें कुछ संशय नहीं है ॥ २९ ॥ एककाल वा दोनोंकाल वा तीनों काल वा नित्य जो पुरुष केदारको शिवभक्तिसे जितेन्द्रिय होकर स्मरण करतेहैं ॥ ३० ॥ उनसे पाप कदापि नहीं होताहै दक्षिणासहित अश्वमेध यज्ञोंसे जो फल मिलताहै सो केदारतीर्थसे प्राप्त होताहै ॥ ३१ ॥

इति केदारकल्पे शिवपार्वतीसंवादे भाषाटीकायां षष्ठः पटलः ॥ ६ ॥

सप्तमः पटलः ।

श्रीश्वर उवाच ॥ ॐ अतः परं प्रवक्ष्यामि केदारस्य तु यत्फलम्॥ मम वीर्यस्थितं देवि केदारं तीर्थमुत्तमम् ॥ १ ॥ तत्र गत्वा न शोचंति जन्मसंसारबंधनात् ॥ तीर्थगो दुर्गतिं देवि न लभ्येत कदाचन ॥ २ ॥ इदं तीर्थमिदं तीर्थं किं भ्रमंति च साधकाः ॥ सकृत्पीत्वा तु कैदारं भवेयुर्मम सन्निभाः ॥३॥ आहूतास्ते च वै शुभैर्ब्रह्मविष्णुमहेश्वरैः ॥ न तेषां पतनं चैव मम तुल्यान्विभा-

शिवजी बोले हे देवि ! इसके आगे केदारके फलको कहताहूं यह उत्तम तीर्थ मेरे वीर्यसे स्थित हुआहै॥१॥तहां (उदक) जल पीकर शोक नहीं प्राप्त होता जन्म संसार बंधनसे रहित होकर कदापि तीर्थज्ञाता बुरी गतिको नहीं प्राप्त होताहै २॥ यह तीर्थहै२यह जानकर सिद्धलोग क्यों भ्रमण करतेहैं ? केदारके जलको एकबार पीकर मेरे समान होतेहैं ॥ ३ ॥ ब्रह्म, विष्णु, महेश्वर, इन सबोंसे वह शुभ विमानोंमें बुलाया जाताहै उन विमानोंसे पतन नहीं होताहै, उस मनुष्यको मेरी

१ षष्ठ्यर्थे चतुर्थी ।

वयेत्॥४॥तथैव मम भक्ता ये मत्कथारंजिताश्च ये॥ कदारमुदकं पीत्वा न तेषां विद्यते भयम् ॥ ५ ॥ यथाहं सर्वलोकेषु पूज्य-मानः सुरासुरैः॥तथा तेपि विशालाक्षि पूज्यंते दिवि दैवतैः॥६॥ न जन्मान्येव दुःखानि बंधः कश्चिन्न जायते ॥ सततं तर्पिता देवि मम तोयेन पुत्रकाः ॥ ७ ॥ यथा स्कंदश्च नंदी च महा-कालो विनायकः ॥ तथा ते मम पुत्राश्च विचरंति न संशयः ॥ ८ ॥ क्रीडंते सर्वदा देवि गणैः सार्धं वरानने ॥ कामरूपधरा ये ते वर्धंते मम तेजसा ॥ ९ ॥ यत्राहं ते गणास्तत्र विचरंति न संशयः ॥ अहमेव वरारोहे गणैः परिवृतः सदा ॥ १० ॥ तीर्थानां परमं तीर्थं गतीनां परमा गतिः ॥ ज्ञानिनां परमं ज्ञानं मोक्षाणां मोक्ष उत्तमः ॥ ११ ॥ अपूर्वं सर्वतीर्थानां मनसोऽ-भीष्टदायकम् ॥ क्षेत्रं तु परमं देवि केदारं तीर्थमुत्तमम् ॥ १२ ॥ एकदापि जनो यस्मात्केदारेऽत्र विनिश्चितः ॥ तेन शोधित आत्मा वै कुलानां चोद्धृतं शतम् ॥ १३ ॥ कालंजरे महाकण

समान जाने ॥ ४ ॥ और मेरे भक्त जो मेरी कथामें मग्नहैं, केदारमें जलपान करके वे निर्भय होतेहैं ॥ ५ ॥ जिसप्रकार मैं सब लोकोंमें सुर और असुरोंसे पूजितहूं हे विशालाक्षि! इसी प्रकार वे भक्तभी दिव्य देवतोंसे पूजे जातेहैं॥ ६ ॥ उसको जन्ममें दुःख और बंधन नहीं होते हे देवि ! वह पुत्र मेरे जलसे निरन्तर तृप्त किया जाताहै ॥ ७ ॥ जैसे स्कंद और नंदी महाकाल और विनायक उसी प्रकार वे मेरेपुत्र सर्वत्र विचरतेहैं इसमें कुछ संशय नहीं ॥ ८ ॥ हे वरानने ! वे कामरूप (इच्छानुकूलस्वरूप) धारण किये गणोंके साथ खेलतेहैं और मेरे समान तेजस्वी हो बढतेहैं॥९॥जहां मैं रहताहूं वहांही वे गण विचरतेहैं इसमें कुछ संशय नहीं मैं श्रेष्ठ नंदी वृषभपर चढा गणोंसे चारों ओर घिरा रहताहूं ॥१०॥ तीर्थोंमें परमतीर्थहै और गतियोंमें परम गतिहै और ज्ञानोंमें परमज्ञानहै मोक्षोंमें परममोक्ष है॥ ११ ॥ हे देवि ! समस्त तीर्थोंमें यह तीर्थ अपूर्व है मनकी कामनाका दायकहै और क्षेत्रोंमें परमक्षेत्ररूप यह केदार उत्तम तीर्थहै ॥ १२ ॥ एक वारभी मनुष्य केदारमें निश्चित गमन करे तो उसने एकसौ आठ कुलसहित अपनी आत्मा शुद्धकी ॥ १३ ॥ कालिंजरमें महाकर्णपर तथा वाराणसीपर शिवके मंदिरमें मत

वाराणस्यां हरालये ॥ अनाशेन मृतानां च यत्फलं परिकीर्त्तितम् ॥ १४ ॥ सर्वावस्थां गतस्यापि भुंजतो विषयानपि ॥ त्रिकालमश्नतो वापि केदारं तु फलप्रदम् ॥ १५ ॥ अन्यतीर्थसमायोगे यस्तु प्राणान्परित्यजेत् ॥ न तां गतिमवाप्नोति केदारेण तु या भवेत् ॥ १६ ॥ पंचाग्नीन्धारयेन्नित्यमन्यक्षेत्रेषु मानवः ॥ स वामकरपानो वा गतिं प्राप्नोति चोत्तमाम् ॥१७॥ इति श्रीरुद्रयामले केदारकल्पे ईश्वरदेवीसंवादे पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शने सदेहकैलासगमनं नाम सप्तमः पटलः ॥ ७ ॥

रखने अथवा मरनेसे जो फल कहाहै ॥ १४ ॥ संपूर्ण अवस्थामें प्राप्त हुए, वा विषयोंकोभी भोगते हुए तीनों कालमें, केदारतीर्थही महाफलदायी है ॥ १५ ॥ और तीर्थपर यदि प्राणोंको त्यागन करें तो उस गतिको नहीं प्राप्त होते जो केदारसेवनसे प्राप्त होतीहै ॥ १६ ॥ मनुष्य और क्षेत्रोंमें पंचाग्निको सेवन करें उससे भी उत्तमगति वामहाथसे जल पानकरनेसे यहां भक्ति प्राप्त करतेहैं १७॥

इति श्रीकेदारकल्पे शिवपार्वतीसंवादे भाषाटीकायां सप्तमः पटलः ॥ ७ ॥

अष्टमः पटलः ।

श्रीईश्वर उवाच ॥ ॐ अतः परं प्रवक्ष्यामि केदारस्य महत्फलम् ॥ सारात्सारं समुद्धृत्य क्षेत्रं यत्तत्कृतं मया ॥ १ ॥ देवतानां यथा मध्ये प्रधानत्वं वरानने ॥ त्रयोदशत्रयोमूर्तेर्महाँश्चानन्दवृत्तिषु ॥ २ ॥ सिद्धानां च क्षमा यद्वल्लवणं भोजने यथा ॥ तद्वत्सर्वेषु तीर्थेषु केदारोदकमुत्तमम् ॥ ३ ॥ धेनूनां

शिवजी बोले ! अब यहांसे आगे केदारतीर्थका बडा फल कहताहूं सारमेंसे सार, निकालकर यह क्षेत्ररूप मैंने बनायाहै ॥ १ ॥ हे वरानने ! जैसे संपूर्ण देवताओंमेंसे मेरा अधिक होना कहाहै, उसीमकार सब तीर्थोंमें उत्तम केदार है ॥ २ ॥ जिस प्रकार स्वाभाविक, साधुओंमें क्षमाहै, और भोजनमें श्रेष्ठ लवणहै उसीप्रकार समस्त तीर्थोंमें केदारका जल उत्तमहै ॥ ३ ॥ जैसे

कामगौर्यद्वत्सर्वासामुत्तमोत्तमा ॥ सर्वरत्नेषु वै सारं कौस्तुभस्तु यथोत्तमम् ॥ ४ ॥ तद्वत्सर्वेषु तीर्थेषु केदारं परिकीर्त्तितम् ॥ यस्य स्मरणमात्रेण मुच्यते भवबंधनात् ॥ ५ ॥ दक्षयज्ञे महाभागे त्वन्निमित्तेन ये पुरा॥ पूर्वं शप्ता मया देवि ते भवन्ति गणेश्वराः ॥ ६ ॥ घृतं सारं यथा दध्नः पुष्पसारं यथा मधु ॥ वेदानां सामवेदश्च यथा वै मुख्य उच्यते ॥ ७ ॥ संक्षेपेण मया प्रोक्तं केदारसलिलं तथा ॥ मुच्यते सर्वपापेभ्यो रुद्रलोकं स गच्छति ॥ ८ ॥

इति श्रीरुद्रयामले केदारकल्प ईश्वरदेवीसंवादे पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शने सदेहकैलासगमनं नामाष्टमः पटलः ॥ ८ ॥

उत्तम कामधेनु और जैसे संपूर्ण रत्नोंमें कौस्तुभमणि सारहै ॥ ४ ॥ उनकेही समान समस्त तीर्थोंमें केदार उत्तमहै जिसके स्मरण मात्रसे संसारबंधनसे प्राणी छूटते हैं ॥ ५ ॥ हे महाभागे ! पूर्वकालमें तुम्हारे निमित्त जो दक्षके यज्ञमें थे, वे पहले सात गणेश्वर हुए ॥ ६ ॥ जैसे दधिसे घी सारहै और पुष्पोंका सार मधु (शहत) है और वेदोंमें सामवेद जैसे मुख्य कहाहै वैसे तीर्थोंमें केदारहै ॥७॥ सो संक्षेपसे मैंने वर्णन किया ऐसेही केदारका जलभी सारहै पानकर्ता पुरुष समस्तपापोंसे छूटकर रुद्रलोकको प्राप्त होताहै ॥ ८ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे शिवपार्वतीसंवादे भाषाटीकायामष्टमः पटलः ॥ ८ ॥

नवमः पटलः ।

श्रीदेव्युवाच ॥ ॐ अप्राप्तास्तु गृहे वापि यत्र तत्र गताश्च ये ॥ ये मृता हिममुद्दिश्य श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ॥ १ ॥ पर्वतो नैव दृष्टो यैर्नैव पीतं तु तज्जलम्॥तेषां गतिः का देवेश ब्रूहि तत्त्वेन

पार्वती बोलीं तीर्थकी कामनाकरता हुआ जो मनुष्य तीर्थमें न जाकर घरमें वा और कहीं उक्त देवताके उद्देशसे मरजाय तो उसकी गतिको विधिपूर्वक सुनना चाहतीहूं ॥ १ ॥ हे देवेश ! जिन्होंने यह पर्वत नहीं देखा और उसका जल

शंकर ॥ २ ॥ श्रीश्वर उवाच ॥ शृणु देवि यथातत्त्वं केदारं तीर्थमुत्तमम् ॥ तत्र पीत्वा तु मुच्येत जन्मसंसारबंधनात् ॥ ३ ॥ अप्राप्ता मां मृता ये च पथि देशान्तरे तथा ॥ ते भवन्ति गणा मह्यं मम लोके सुरेश्वरि ॥ ४ ॥ पर्वते क्षणमात्रेण सर्वपापक्षयो भवेत् ॥ पीतमात्रे जले देवि गणो भवति शूलभृत् ॥ ५ ॥ अवध्यः कामरूपी च सर्वभूताभयप्रदः ॥ गच्छतीश्वरलोकेषु हेमकुंडलमंडितः ॥ ६ ॥ अन्यक्षेत्रेषु यत्पुण्यं केदारे तु न तादृशम् ॥ अध्वराणां सहस्रेषु विधिवद्विहितेषु च ॥ ७ ॥ न लभ्यते गतिर्मर्त्यैः केदारेण तु या भवेत् ॥ जन्मांतरसहस्रेषु यत्फलं यज्ञयाजिनाम् ॥ ८ ॥ केदारोदकपानेन तत्फलं परिकीर्तितम् ॥ त्रिकालं परिभुंजानः क्रीडते त्रिदशैरपि ॥ ९ ॥ केदारोदकपानेन ये भ्रमंति सुपंडिताः ॥ तेषां पुण्यफलं जन्म कृतार्थास्ते नरोत्तमाः ॥ १० ॥ विकर्माणि चरन्त्येव मम भक्तास्तु

नहीं पान किया हे शिवजी ! उनकी क्यागति होगी ? सो तत्त्वपूर्वक कहो ॥ २ ॥ शिवजी बोले हे देवि ! केदारतीर्थ परमश्रेष्ठहै सो यथार्थसे सुनो तहां मनुष्य जलपान करके जन्म संसार बंधनसे छूटताहै ॥ ३ ॥ हे सुरेश्वरि ! जो पुरुष मुझे विना प्राप्तहुएही मार्गमें तथा किसी देशमें मरजाँय वे मेरे लोकमें गण होतेहैं॥४॥ पर्वतके दर्शन मात्रसे समस्त पाप नाशको प्राप्त होतेहैं हेदेवि ! जलके पीतेही त्रिशूलको धारण करनेवाला गण होताहै ॥ ५ ॥ और वह अवध्य (किसीसे न मारनेयोग्य) तथा इच्छानुकूलरूप धारण करनेवाला और समस्त जीवोंको भयदेनेवाला सुवर्णके कुंडलसे शोभित हो शिवलोकमें प्राप्त होताहै ॥ ६ ॥ और क्षेत्रोंमें जो पुण्य कहाहै वैसा न्यूनपुण्य केदारमें नहीं होता सहस्रों यज्ञ विधिपूर्वक करनेपर ॥ ७ ॥ मनुष्य वैसी गति नहीं पाता जैसी केदारतीर्थसे मिलतीहै सहस्र जन्मोंमें यज्ञ करनेवालोंको जो फल होताहै ॥ ८ ॥ वह फल केदारमें केवल जलपान करनेसे मिलताहै, और तीनों काल देवताओंके सहित भोगोंको भोगताहै ॥ ९ ॥ जो चतुर मनुष्य केदारके जलपान करनेके निमित्त भ्रमण करतेहैं उनका जन्म पुण्यके फलवालाहै और वे मनुष्य कृतकृत्य हैं ॥ १० ॥ जो मेरे

ये नराः ॥ यत्र तत्र गता वापि लभन्ते गणपालताम् ॥ ११ ॥ न केदारात्परं गुह्यं परं धामप्रदायकम् ॥ देवि दत्ताभयं यच्च मम लिंगाद्विनिःसृतम् ॥ १२ ॥ ये पिबंति नरा भक्त्या मनः कृत्स्न सुयंत्रितम् ॥ तेऽपि गच्छंति वै मुक्तिं संसारभयबंधनात् ॥१३॥ पीतमात्रेण देवेशि यथा मे वचनं भवेत् ॥ तथा तेषां विशालाक्षि न भयं विद्यते क्वचित् ॥ १४ ॥ स्वच्छन्दगामिनो नित्यं रमंते देवतैः प्रिये ॥ देवदानवभूतेषु पूजनीयाः समंततः ॥ १५॥ तीर्थमात्रमिदं गुह्यं तव देवि प्रकाशितम् ॥ अतः परं महातीर्थं न भूतं न भविष्यति॥१६॥ यथैवेक्षुरसो मध्ये दध्नो घृतमिवोद्धृतम्॥ सर्वलोके हि श्रीर्यद्वत्तद्वत्केदारमुत्तमम् ॥ १७ ॥ तिलेषु च यथा तैलं पुष्पेषु च यथा मधु ॥ तद्वत्केदारतीर्थं च सर्वसारसमुच्चयम् ॥ १८ ॥ मृतके सूतके चैव पाचितं पापकर्मणाम् ॥ रजस्वलादिभिः स्पृष्टं भोजनं परिवर्ज्जयेत् ॥ १९ ॥ ये न रक्षंति

भक्तजन कुत्सित कर्मकरनेकी रक्षा करते हैं जहां कहीं प्राप्त होकर वे गणोंके स्वामी होनेके फलवाले हैं ॥ ११ ॥ केदारसे अधिक गुप्तस्थान कोई नहीं है प्राणियोंको अभय देनेवाला मेरे लिंगसे उत्पन्न हुआ केदारका जल ॥ १२ ॥ जो मनुष्य भक्तिसे सावधान चित्तहो पानकरते हैं वे, मुक्तिको प्राप्त होतेहैं और ससार बंधनसे छूटतेहैं ॥ १३ ॥ हे देवेशि ! उदक पीनेही मात्रसे मेरे वचनके अनुसार उनको कहींभी भय नहीं प्राप्त होता ॥ १४ ॥ हे प्रिये ! वे इच्छापूर्वक गमन करते हुए देवतोंके साथ रमण करतेहैं, और देवता व राक्षसोंसे चारों ओर सन्मानित होतेहैं ॥ १५ ॥ हे देवि ! यह तीर्थ परम गोपनीय तुमसे प्रकाशित किया इससे अधिक कोई तीर्थ न हुआ और न होगा ॥ १६ ॥ जैसे इक्षु-(ईख)के मध्यमें रस, दहीके मध्य घी, और जिसप्रकार सब संसारमें लक्ष्मी उत्तमहै तिसप्रकार केदार उत्तम कहाहै ॥ १७ ॥ जिसप्रकार तिलोंके मध्य तेल और पुष्पोंमें मधु तद्वत् यह केदार तीर्थोंका सारहै ॥ १८ ॥ मृतकमें और सूतकहोनेपर और पाप कर्ममें बनाया भोजन तथा रजस्वलास्त्री आदिसे स्पर्श किया भोजन त्यागे ॥ १९ ॥ हे वरारोहे ! जो मनुष्य पापोंसे रक्षा नहीं करता या सब

पापेभ्यो सर्वावस्थां गता अपि॥मृत्युकालं वरारोहे गता गृह्णन्ति तज्जलम् ॥ २० ॥ रक्षंति च प्रयत्नेन पापकर्मणि भोजनम् ॥ तेषां रक्षामि तं देहं शुचि प्रयतमानसः ॥ २१ ॥ यस्तु रत्नवतीं दद्यात्सागरांतां वसुंधराम् ॥ न लभेत गतिं तां तु केदारेण हि या भवेत् ॥ २२ ॥ केदारं तु पिवेत्तोयं षण्मासञ्च सुयंत्रितः ॥ तेन क्षीणं भवेद्देवि संसारभयबंधनम् ॥ २३ ॥ भूमिशायी ब्रह्मचारी चैकभुक्तिश्च तिष्ठति ॥ नित्यस्नायी विधानेन ध्यायते[1] जपते सदा ॥ २४ ॥ अथवापि च षड्रात्रं शिवतीर्थे प्रकारयेत् ॥ तेन सर्वं कृतं देवि कृतकृत्येन निश्चितम् ॥ २५ ॥ दुष्प्राप्यं[2] देवि केदारं मानुषस्य वरानने ॥ ये व्रजंति नरास्तत्र कृतज्ञास्ते न संशयः ॥ २६ ॥ सर्वतीर्थेषु यत्पुण्यं सर्वयज्ञेषु सुन्दरि ॥ तदेकत्र कृतं चैव केदारं तु तथा कृतम् ॥ २७ ॥ दृष्ट्वा चैव तु पीत्वा च गच्छंति परमां गतिम् ॥ एतत्ते कथितं सर्वं महाख्यानं

अवस्थाओंमें प्राप्त होके और मृत्युके समय जाकर, केदारके जलको ग्रहण करताहै ॥ २० ॥ और पापकर्मोंसे यत्नपूर्वक भोजनकी रक्षा कीहो तो मैं दत्तचित्त होकर पवित्र देहसे उसकी रक्षा करताहूं ॥ २१ ॥ जो मनुष्य समुद्रपर्यन्त पृथिवीको दान करै तौभी उस गतिको नहीं पाता, जैसी केदारसे प्राप्त होतीहै॥२२॥ हे देवि ! जो सावधान चित्तहो छैमास पर्य्यन्त केदारके जलको पीवै तो, संसारबंधनसे मुक्त होजाताहै ॥ २३ ॥ भूमिमें शयन करनेवाला वा ब्रह्मचारि एकभुक्तिसहित हो अथवा नित्य स्नान करनेवाला हो, तथा सदा विधानसे ध्यान करता हो, वा जप करता हो ॥ २४ ॥ तथा छै रात्रि पर्यन्त इस शिवतीर्थपर जागरण प्रकाशित करे । हे देवि ! उसने सब कुछ कृतकृत्य मनसे कर लिया ॥ २५ ॥ हे वरानने ! मनुष्यको केदार कठिनतासे प्राप्यहै, जो मनुष्य वहां गमन करतेहैं वे कृतकृत्यहैं इसमें कुछ संशय नहीं ॥ २६ ॥ हे सुन्दरि ! संपूर्ण तीर्थोंमें अथवा समस्त यज्ञोंमें जो पुण्यहै सो सब एकत्र किया हुआ यह केदारहै ॥२७॥ इसका दर्शन करके और जलपान करके मनुष्य परमगतिको पहुंचताहै, हे वरा-

१ आत्मनेपदमार्षम् । २ इहापि तथा ।

वरानने ॥ २८ ॥ तीर्थराजप्रभावस्तु मया ते समुदाहृतः ॥ केदारस्य तथा ख्यातं स्वर्गारोहणमुत्तमम् ॥ २९ ॥ य इदं शृणुयान्नित्यं यश्चेदं पठते नरः ॥ मुच्यते सर्वपापेभ्यो रुद्रलोकं स गच्छति ॥ ३० ॥

इति श्रीरुद्रयामले केदारकल्पे श्रीश्वरदेवीसंवादे पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शने सदेहकैलासगमनं नाम नवमः पटलः ॥ ९ ॥

नने ! यह संपूर्ण कथा तुमसे कही ॥ २८ ॥ तीर्थराज केदारका प्रभाव मैंने कहा यह तीर्थ स्वर्गका चढ़ानेवाला है ॥ २९ ॥ जो मनुस्य इस माहात्म्यको नित्य श्रवण करे, अथवा पढ़े वह सब पापोंसे छूट जाताहै और रुद्रलोकमें प्राप्त होताहै ॥ ३० ॥

इति श्रीकेदारकल्पे शिवपार्वतीसंवादे भाषाटीकायां नवमः पटलः ॥ ९ ॥

दशमः पटलः ।

श्रीश्वर उवाच ॥ ॐ अतः परं प्रवक्ष्यामि केदारफलमुत्तमम् ॥ तत्पीत्वा यद्भवेत्पुण्यं तन्मे निगदतः शृणु ॥१॥ एककालं द्विकालं वा नित्यं केदारचिंतकाः ॥ न ते पापेन लिप्यंते पद्मपत्रमिवांभसा ॥ २ ॥ न केदारात्परं स्थानं न केदारात्परं तपः ॥ न केदारात्परो मोक्षः स्वयं देवेन भाषितम ॥ ३ ॥ पृथिव्यां यानि लिंगानि ससमुद्रचराचरम् ॥ केदारस्य तु सर्वाणि कलां नार्हंति षोडशीम् ॥ ४ ॥ कामयेत्स्त्री सहस्राणि पिबेत्केदार

शिवजी बोले इसके आगे केदारका उत्तमफल कहताहूं । उसके जलको पीकर जो पुण्य होताहै वह मुझसे सुनो ॥ १ ॥ जो पुरुष एक समय वा दो अथवा तीनोंकाल नित्य केदारका स्मरण करतेहैं जैसे जलसे कमलपत्र लिप्त नहीं होता उसी प्रकार वे पापसे लिप्त नहीं होते ॥ २ ॥ केदारसे उत्तम स्थान नहींहै और न केदारसे अधिक तपहै । न केदारसे अधिक मोक्षहै । यह स्वयम् शिवजीने कहाहै ॥ ३ ॥ समुद्रपर्यन्त चर और अचरवाली पृथिवीपर जितने लिंगहैं वे-दारके सोलहवें भागकोभी नहीं पहुंचते ॥ ४ ॥ सहस्रों स्त्रियोंकी कामना कर-

शम्वरम् ॥ पीतमात्रे जले देवि किमर्थं परितप्यते ॥ ५ ॥ ज्ञानशक्त्यापि संस्पृष्टो लीयते परमे पदे॥कालेवा यदि वा काले किं करिष्यति तच्छृणु॥६॥जन्मांतरसहस्रेषु लक्षकोटिशतेषु च ॥ प्राप्नोति धर्मयुक्तात्मा शिवभक्तिं तु मानवः॥७॥मासे तथा श्रावणे च शुक्ले शम्भुतिथिर्यदा ॥ मध्यं दिनं गते सूर्ये तदा शुष्यति तज्जलम् ॥ ८ ॥ शुष्के वै जलरेखा तु दृश्यते चतुरंगुला ॥ इदं स्रोतः प्रवृत्तं तु चैत्रे सितदले शिवे ॥ ९ ॥ शिवरेतो जलं तत्र प्रत्यक्षं कुंडमध्यतः ॥ आषाढे श्रावणे चैव कार्त्तिके च तथैव च ॥ १० ॥ त्रिभिर्मासैर्महापुण्यं कथितं तव सुव्रते ॥ स्नात्वा मंदाकिनीं पुण्यां पितृभ्यः पिंडमावहेत् ॥ ११ ॥ ईशानायतनं गत्वा अर्चयित्वा वृषध्वजम् ॥ स्थित्वा कुंडसमीपं च भावयुक्तेन चेतसा ॥ १२ ॥ तच्चारु प्राप्नुयाद्यस्तु शास्त्रदृष्टेन कर्म्मणा॥पंचरत्नसमायुक्तं तरुंमानसमन्वितम्॥१३॥उदकेन च मिश्रं यत्ततः पंचात्मकं परम्॥आचार्यैः सर्वशास्त्राणां न्यासं कुर्या-

नेवाला केदारके उत्तम जलको पीवे । हे देवि ! उदक पीनेहीमात्रसे क्यों दुःखी होताहै? अर्थात् दुःखी नहीं रहता ॥५॥ ज्ञानके विना सामर्थ्यसेभी जलका स्पर्श करै तो वह परम पदमें लय होताहै । और वहु कालमें वा अकालमें क्या करैगा यहभी सुनो ॥ ६ ॥ सहस्रों जन्मोंसे लक्ष वा शतकोटि जन्मोंसे वह मुक्त आत्मा पुरुष शिवभक्तिको प्राप्त होताहै ॥ ७ ॥ श्रावणमासकी शुक्लपक्षकी चतुर्दशीके दिन मध्याह्न समय तथा उस जलके सूख जानेपर ॥ ८ ॥ शुष्क जलमें चार अंगुल जलकी रेखा दीखै और वह नदी शुक्ल पक्षके वीत जानेपर आधे स्रोतवाली रहतीहै ॥ ९ ॥ वह शिवके वीर्यसे उत्पन्न हुआ जल कुंडके मध्यमें प्रत्यक्ष दिखाई देताहै आषाढ तथा श्रावण और कार्त्तिक मासमें ॥ १० ॥ हे सुव्रते ! इन तीन मासमें वह जल वडा पवित्रहै और पवित्र मंदाकिनी नदीपर स्नान कर पितरोंको पिंडदान करै ॥ ११ ॥ ईशान दिशाकी ओर जाकर शिवजीका पूजनकर प्रेमयुक्त चित्तसे कुंडके समीप स्थित हो ॥ १२ ॥ शास्त्रकी विधिके अनुसार वहुत मानपूर्वक पंचरत्न सहित वृक्षका स्थापन करै ॥ १३ ॥ जलसे मिला हुआ वह पंच-

द्विधानतः॥१४॥दशाक्षरीं पठेद्विद्यां परमाक्षरसंयुताम्॥तेनाभिमंत्रितं तोयं ददाति ज्ञानमुत्तमम्॥१५॥ज्ञात्वा देवं तथा देवि नंदिस्कंदविनायकान्॥जयं च विजयं चैव मोहिनीः स्तंभनीस्तथा॥ ॥१६॥ ईशानाभिमुखो भूत्वा पिबेद्वामेन पाणिना॥ दक्षिणेन च तत्पीत्वा पातासौ वृषभो भवेत् ॥ १७ ॥ भूमिभागं स्वजानुभ्यां हस्तयुग्मं प्रसार्य च॥पक्षमात्रं त्रिवारं चांगुलि स्फोटं तु कारयेत् ॥ १८ ॥ अहं ब्रह्माप्यहं विष्णुरहं रुद्रस्तथैव च॥ इत्थं पीत्वा नरा यांति विधिना परमं पदम् ॥ १९ ॥ ईशानं तु नमस्कृत्य कृतांजलिपुटो नतः॥ पीत्वा तु लभते ज्ञानं तीर्थस्नानं परां गतिम् ॥ २० ॥

इति श्रीरुद्रयामले केदारकल्पे श्रीश्वरदेवीसंवादे पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शने सदेहकलासगमनं नाम दशमः पटलः॥ १० ॥

रत्न है उससे शास्त्र विधानके अनुसार न्यास आदि करना योग्यहै ॥ १४ ॥ और दश अक्षरवाले मंत्रको पढै, उस मंत्रसे जल उत्तम ज्ञानको देताहै ॥१५॥ हे देवि ! शिव देवको तथा नन्दीस्कंद विनायक इनको जानकर जय विजय मोहिनी तथा स्तंभिनीको स्मरणकर ॥ १६ ॥ ईशानकी ओर होकर वाम हाथसे जलको पीवै, और दाहिने हाथसे जो पीवे तो बैल होताहै ॥ १७ ॥ भूमिपर प्राप्त होकर जंघासे दोनों हाथ फैलाकर (अंगुलीसे) तीनवार तीनस्फोटकरै ॥ १८ ॥ मैंही ब्रह्मा हूं मैंही विष्णु, और मैं महेश्वरहूं यह जाने इस प्रकार मनुष्य जलको विधिसे पीकर परम पदको प्राप्त होतेहैं ॥ १९ ॥ ईशान दिशामें अंजलि बांधके नमस्कार करके जलपीकर ज्ञानको प्राप्त होताहै तीर्थमें स्नान करनेसे परमगति मिलतीहै ॥ २०॥

इति श्रीकेदारकल्पे शिवगौरीसंवादे भाषाटीकाया दशमः पटल. ॥ १० ॥

एकादशः पटलः।

श्रीश्वर उवाच ॥ ॐ अतः परं प्रवक्ष्यामि केदारफलमुत्तमम् ॥ किमधीतैस्तपोवेदैर्यज्ञैर्बहुसदक्षिणैः ॥ १ ॥ किं ततेनापि तपसा किं व्रतेन जपेन वा ॥ किं च तीर्थाभिषेकेन किं वेन्द्रियदमेन च ॥ २ ॥ पीत्वा कैदारमुदकं स्वच्छन्दं क्रीडते सदा ॥ यस्य देशस्य मध्ये तु पुण्यभागे स गच्छति ॥ ३ ॥ सोऽपि देशो भवेत्पुण्यः किं पुनस्तस्य बांधवाः ॥ एतत्ते कथितो देवि केदारस्य च संभवः ॥ ४ ॥ ज्ञातेन यत्फलं तेन तत्सर्वं कथितं तव ॥ न मुच्यंते नरा देवि न दैत्या न च राक्षसाः ॥ ५ ॥ न नागा नापि गंधर्वा न यक्षा नैव किन्नराः ॥ विद्याधरगणा देवि योगिन्योऽप्सरसां गणाः ॥ ६ ॥ सिंहेन पालिताः सर्वे सप्तकोटिगणेश्वराः ॥ न तेषां मोचनार्थाय दर्शितं तीर्थमुत्तमम् ॥ ७ ॥ इति श्रीरुद्रयामले केदारकल्पे श्रीश्वरदेवीसंवादे पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शने सदेहकैलासगमनं नामैकादशः पटलः ॥ ११ ॥

ईश्वर बोले-अब केदारका श्रेष्ठ फल कहताहूं वेद पढने तथा अधिक दक्षिणा देनेवाले यज्ञोंसे क्या फलहै और तपोंके तपनेसे क्या फलहै ॥ १ ॥ व्रत और तपस्यासे क्याफलहै तीर्थस्नान दान शान्ति और इन्द्रिय दमनसे क्या फल है ॥ २ ॥ केदारका जलपान करनेसे प्राणी स्वच्छन्द विचरताहै वह पुण्यात्मा जिस देशमें जाताहै ॥ ३ ॥ वह देश पवित्र होजाताहै फिर उसके बांधवोंकी तो बातही क्याहै हे देवि यह तुमसे केदारका फल कहा ॥ ४ ॥ इसके जाननेसे जो फल होताहै तुमसे वह सब कहा हे देवि ! उस पुण्यात्माको मनुष्य दैत्य राक्षस ॥ ५ ॥ नाग गंधर्व यक्ष किन्नर कोईभी नहीं मार सकतेहैं हे देवि उसको विद्याधर योगी तथा अप्सरा कोई नहीं सतासक्ते ॥ ६ ॥ सातकरोड गणेश्वर सिंहसे पालितहैं उनके बचानेके निमित्त यह उत्तम तीर्थहै ॥ ७ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे शिवपार्वतीसंवादे भाषाटीकायामेकादशः पटलः ॥ ११ ॥

द्वादशः पटलः ।

श्रीदेव्युवाच॥ॐ कीदृशी चापि सा विद्या चाक्षराणि कति प्रभो॥ आख्याहि देवदेवेश रहस्यं परमं महत् ॥ १ ॥ श्रीश्वर उवाच ॥ ॐकारद्वयसंयुक्ता क्षूंकारत्रयभूषिता ॥ रूंकारपंचकोपेता दशबिन्दुप्रपूरिता ॥ २ ॥ ॐ अथ शिवाघोरमंत्रः॥ ॐ रूं क्षूं रूं क्षूं रूं क्षूं रूं रूं ॐ अथ मंत्रन्यासः ॥ अंगन्यासं प्रवक्ष्यामि शृणु देवि यथाविधि ॥ वामांगुष्ठात्समारभ्य न्यस्येद्बीजेर्दशांगुलीः ॥ ३ ॥ करन्यासो मया प्रोक्तो ह्यंगन्यासं ततः शृणु ॥ ॐ शिखायाम्॥ रूं शिरसि॥क्षूं नेत्रयोः रूं वक्रे॥क्षूं भ्रुवोः॥रूं हृदये॥क्षूं नाभौ॥रूं बाह्वोः ॥ रूं गुह्ये॥ॐ रूं पादयोः ॥ अंगन्यासो मया प्रोक्तो दिक्षु न्यासमिमं शृणु ॥ ४ ॥ ॐ कारं पूर्वदिग्भागे रूमाग्नेये तथैव च ॥ क्षूंकारं दक्षिणे चैव रूं नैर्ऋते ततो न्यसेत्॥५॥ क्षूंकारं वारुणे चैव रूंकारं वायुगोचरे ॥ क्षूंकारमुत्तरे चैव रूमैशान्यां च वै न्यसेत् ॥ ६ ॥ रूंकारं चाधः क्षिप्य क्षिपेदोंकारमूर्द्धतः ॥ दिक्षु न्यासो मया प्रोक्तो येन धर्मस्थितिर्भवेत् ॥ ७ ॥ कुंडन्यासं प्रवक्ष्यामि ये वै कुर्वंति साधकाः ॥ ॐकारं कुंडमध्ये च

देवी बोली, कि प्रभो ! वह विद्या कैसी है ? और कौन कितने अक्षरहैं ? हे देवदेवेश ! सो परमगुप्त वार्ता कहो ॥ १ ॥ शिवजी बोले दो ओंकार सहित और तीन क्षूंकार तथा पांच क्षूंकार और दस बिन्दुसे पूर्ण विद्या जाननी अर्थात ॐ रूं क्षूं रूं क्षूं रूं क्षूं रूं रूं ॐ यह मंत्र है ॥ २ ॥ हे देवि अब अंगन्यास को कहताहूं विधिपूर्वक सुनो बाएं अंगूठेसे लेकर दस अंगुलियोंमें ॥ ३ ॥ करन्यास करै अब अंगन्यास सुनो शिखामें ॐ शिरमें रूं, नेत्रमें क्षूं मुखमें रूं भौंमें क्षूं हृदयमें रूं,नाभिमें क्षूं दोनों भुजामें रूं गुह्येन्द्रयमें रूं ॐ रूं चरणोंमें यह अंगन्यास तुझसे कहा अब दिशान्यास सुनो ॥ ४ ॥ ॐकार पूर्वदिशाके भागमें रूं आग्नेय कोणमें क्षूं दक्षिण दिशामें रूं नैर्ऋत कोणमें न्यासकरे ॥ ५ ॥ क्षूं को पश्चिममें और रूं को वायु कोणमें क्षूंकार को उत्तरमें रूंको ईशान दिशामें रक्खै ॥ ६ ॥ रूंको पाताल ॐ को ऊपर रक्खै दिशाओंका न्यास कहा,जिससे धर्मकी स्थितिहो ॥ ७ ॥ अब कुंडन्यासको कहताहूं जो साधक करतेहैं ॐ कारको

रूंकारं पूर्वतो न्यसेत् ॥ ८ ॥ क्षूंकारं चाग्निदिग्भागे रूंकारं याम्यतो न्यसेत् ॥ क्षूंकारं नैर्ऋते न्यस्य रूंकारं वारुणे न्यसेत् ॥ ॥ ९ ॥ क्षूंकारं वायुकोणे तु रूंकारमुत्तरे न्यसेत् ॥ ईशानकोणे तु रूंकारमोंकारं व्यापकं न्यसेत् ॥ १० ॥ एतत्कृत्वा विधानेन कैदारं सलिलं पिबेत् ॥ कृष्णाष्टम्यां चतुर्दश्यामेवं विद्याभिमंत्रितम् ॥ ११ ॥ यः पिबेदुदकं देवि केदारसदृशो भवेत् ॥ अज्ञात्वा च पिबेद्देवि विद्याहीनस्तु मानवः ॥ १२ ॥ विद्यायुक्तो भवेद्देवि नात्र कार्या विचारणा ॥ मंदाकिन्यां तु तत्तोयं पिबन्वै वेदविद्भवेत् ॥ १३ ॥ कैदारमुदकं पीत्वा गृहे चैव समागतान् ॥ क्षमापयित्वा वाचार्याञ्छास्त्रदृष्टेन कर्मणा ॥ १४ ॥ मुद्रिकां छत्रिकं चैव पादुकां तत्र दापयेत् ॥ यः स्नात्वान्यमना भूत्वा दद्याद्गां च पयस्विनीम् ॥ १५ ॥ तांबूलं च विशेषेण ततो दत्वा क्षमापयेत् ॥ त्वत्प्रसादात्कृतार्थोहं भवे जन्मनि जन्मनि ॥ १६ ॥ दद्याच्छक्त्यनुसारेण विना शाठ्यं न कारयेत् ॥ तस्मिंस्तुऽष्टेप्यहं

कुंडके मध्यमें और रूंको पूर्वकी ओर धरे ॥ ८ ॥ आग्नेय दिशाकी ओर क्षूंको, रूंको दक्षिण दिशाकी ओर क्षूंकारको नैर्ऋत भागमें रखकर रूंको पश्चिमकी तरफ धरै ॥ ९ ॥ क्षूंको वायुकोणमें रूंको उत्तरमें धरै ईशान कोणमें रूंको ॐ कारको व्यापकमें रक्खै ॥ १० ॥ इस न्यासको विधिपूर्वक समाप्त करके केदारके जलको पीवै कृष्णपक्षकी अष्टमीको वा चतुर्दशीको पूर्वोक्त विद्यासे अभिमंत्रित ॥ ११ ॥ जलको जो मनुष्य पीताहै हे देवि ! वह केदारकी समान होजाताहै जानकरके विद्याहीन पुरुष जलको न पीवै॥१२॥ हे देवि ! वह विद्या युक्त होताहै इसमें कुछ संशय नहीं मंदाकिनीमें जो मनुष्य जलपान करै वह वेदवेत्ता होताहै ॥ १३ ॥ केदारके जलको पीकर अपने घर लौट आवे तो आचार्योंसे प्रार्थना करके शास्त्रकी विधिपूर्वक ॥ १४ ॥ मुद्रिका (अंगूठी) छत्री खडाऊं यह देवै और शक्तिका अनुसार वस्त्रालंकारादि दे दूध देनेवाली गाय देवै ॥१५॥ पानको देकर विशेष आचार्यसे प्रार्थना करै कि-आपकी प्रसन्नतासे मैं जन्म जन्ममें कृतार्थ हुआ ॥ १६ ॥ शक्तिके अनुसार दान देवै

१ आत्मनेपदमार्षम् ।

तुष्टो मम तुल्यो ह्यसौ यतः ॥१७॥ तस्मिन्दत्तं हुतं जप्तं सर्वं चाक्षयमाविशेत् ॥ पश्चात्संपूजयेद्देवि शिवभक्तिपरायणम् ॥ ॥ १८ ॥ एष देवो यथाशक्त्या प्रीयतां मे त्रिलोचनः ॥ कुर्याद्वित्तानुसारेण शास्त्रदृष्टेन कर्मणा ॥ १९ ॥ एतत्सर्वं यथान्यायं कथितं तव सुव्रते ॥ केदारस्य महाख्यानं मद्भावप्रदमुत्तमम् ॥ २० ॥ यस्त्विदं पठते नित्यं यश्चैव शृणुयादपि ॥ मुच्यते सर्वपापेभ्यो रुद्रलोकं स गच्छति ॥ २१ ॥

इति श्रीरुद्रयामले केदारकल्पे ईश्वरदेवीसंवादे पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शने सदेहकैलासगमनं नाम द्वादशः पटलः ॥ १२ ॥ श्लोकाः २३९ ॥

शास्त्रके प्रतिकूल न करै उस आचार्यके संतुष्ट होनेपर मैं सन्तुष्ट होताहूं और वह दानकर्ता मेरे तुल्य होताहै ॥ १७ ॥ उसको दानदिया हवन तथा जप किया यह संपूर्ण अक्षय हो प्रवेश होताहै पीछे भक्तिपूर्वक शिवको पूजे ॥ १८॥ हे त्रिलोचन ! यथाशक्ति पूजा करनेसे मुझपर प्रसन्न हूजिये अपने धनके अनुसार तथा शास्त्रके अनुकूल दान करना चाहिये ॥ १९ ॥ हे सुव्रते ! यह केदार माहात्म्य जो मेरे प्रेम व पदका पात्रहै वह संपूर्ण न्यायपूर्वक तुमसे कह सुनाया॥२०॥जो इसै नित्य पढै वा सुनै वह समस्त पापोंसे छूटकर शिवलोकको प्राप्त होताहै ॥ २१ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे शिवगौरीसम्वादे भाषाटीकायां द्वादशः पटलः ॥ १२ ॥

त्रयोदशः पटलः ।

श्रीदेव्युवाच ॥ अप्राप्यैव मृता देव गृहान्निर्गम्य मानवाः ॥
नैव दृष्टा च केदारं नैव पीतं तु तज्जलम् ॥ १ ॥

देवी बोली हे देव!अपने घरसे केदार तीर्थके निमित्त निकलकर मार्गमेंही जो मनुष्य मरजाय, और केदारके दर्शन न करसके तथा उसका जल न पियाहो॥१॥

१ इत्यमाव आर्षः ।

तेषां च का गतिर्देव श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ॥ श्रीश्वर उवाच ॥ अप्राप्ता ये मृता देवि गृहान्निर्गत्य मानवाः ॥ २ ॥ विचिन्त्य हृदि केदारं क्रोशमात्रं च भक्तितः ॥ तेऽपि देवि नराः सर्वे भुंजते परमं पदम् ॥ ३ ॥ संसारं नोपपद्यंते जन्ममृत्युविवर्जि ताः ॥ त्रिनेत्रा वृषभारुढा यथाहं शंकरः स्वयम् ॥ ४ ॥ गच्छंति रुद्रभवने हेमकुंडलमंडिताः ॥ मद्विधास्ते गणाः सर्वे शशांकांकितशेखराः॥५॥यदा संदृश्यते देवि मत्समानो नरोत्तमः ॥तदा सर्वाणि चिह्नानि लक्ष्यन्तेऽस्य सुरेश्वरि ॥६॥ पूर्ववृत्त कथां देवि तथा च कथयाम्यहम् ॥ कश्चिद्विप्रः पुरा देवि धनधान्यसमृद्धिमान् ॥ ७ ॥ तस्य पुत्रो महाभक्तश्चिंतयंस्तु दिवानिशम् ॥ केदारं हि गमिष्यामि तच्च संभाव्यते सदा ॥ ८ ॥ न मन्यते पिता नैव तदा माता विशेषतः ॥ हृदयेनैव केदारं व्रजाम्येष न पश्यतु ॥ ९ ॥ एतद्विचिन्तयामास गतोऽसौ मनसा गिरिम् ॥ ततः संसारविरतः प्रस्थितो रात्रिमध्यतः ॥

उनकी क्या ? गति होतीहै ? सो तत्त्वसे सुनना चाहतीहूं शिवजी बोले हे देवि ! केदारमें विना पहुँचे जो पुरुष घरसे निकल के मरजाय ॥ २ ॥ हृदयमें केदारका स्मरण करके एक कोस तकभी आये हुए हों वे मनुष्यभी परम पदको भोगतेहैं ॥ ३ ॥ और जन्म तथा मृत्युसे वर्जित हो संसारमें नही आते, और तीन नेत्र वाले हो वृषभपर चढकर जिस प्रकार स्वयम् शंकर तैसे ॥ ४ ॥ सुवर्ण के कुंडलोंसे शोभायमान हो शिवलोकमें प्राप्त होतेहैं और वे संपूर्ण गण मेरी समान मस्तकपर चन्द्रमाको धारण करतेहैं ॥ ५ ॥ हे देवि ! जब वह पुरुषश्रेष्ठ दीखताहै तो हे सुरेश्वरी !समस्त चिह्न मेरे समान ही उसमें होतेहैं॥६॥हे देवि ! पुरातन वृत्तान्तवाली कथाको कहताहूं कोई ब्राह्मण धन धान्य और समृद्धि वाला, ॥ ७ ॥ उसका बडा भक्तिमान् पुत्र था वह रातदिन विचारता, और सदा कहता था कि–मैं केदारको जाऊंगा ॥ ८ ॥ परन्तु उसका पिता और माता नहीं मानती थीं वह मनसे यह विचारता था कि–केदारको ज्ञा। विना देखेही ॥ ९ ॥ निश्चय कर वह कैलास जानेके निमित्त,

॥१०॥दृष्टोऽसौ कोटपालेन हतो वै स शरेण च ॥ सोऽथ दृष्टोऽप्यभिज्ञातस्तत्क्षणाद्ब्राह्मणीसुतः ॥ ११ ॥ तेन भीतेन देवेशि तदोपायं विचिन्वता ॥ प्राकारस्य समीपे तु श्वविष्ठायामपश्यताम् ॥ १२ ॥ स्थापितोऽसौ यदा विप्रः कोटपालेन धीमता ॥ ततः प्रभाते विमले पुत्रोऽसौ च न दृश्यते॥१३॥ तत्र दुःखेन संततौ ब्राह्मणी ब्राह्मणश्च तौ ॥ इतश्चेतश्च धावन्तौ तौ गृहाश्रमवीक्षकौ ॥ १४ ॥ पृच्छंतौ पथिकाल्लोकाँन्पुत्रपुत्रेति वादिनौ ॥ स्मृत्वा पुत्रस्य वाक्यं तु केदारगमने सदा ॥ १५ ॥ विप्रास्ताभ्यां विसृष्टाश्च पुत्रान्वेषणकारणात् ॥ पुत्रमाता पिता द्वौ च यथा दुःखं न लभ्यते ॥१६॥ पृच्छंतस्ते तथा विप्राः केदारे च महापथे ॥ न दृष्टो न श्रुतश्चायं निराशैस्तैर्विसर्जितः॥१७॥संप्राप्ते मोक्षमार्गे च केदारेथ नभोध्वनिः ॥ सर्वे च स्वगृहं प्राप्ताः श्रुतस्तैस्तावदध्वनि ॥ १८॥ तावत्कस्यापि भूतस्य ध्वनिर्दृष्टैकक द्विजम् ॥ भूत उवाच॥ कथयस्व महा-

रात्रिको चल पडा ॥ १० ॥ तब इसको कोतवालने रातके विषे देखा, और बाणसे मार दिया उस समय निकट आकर उसने जाना कि यह ता ब्राह्मणका पुत्रहै ॥ ११ ॥ उस भयभीत कोतवालने यह उपाय विचारा कि-खाईके समीप जहां कुत्तेकी विष्ठा पड़ी थी ॥ १२ ॥ तहां बुद्धिमान कोतवालने इस मरे हुएको दबादिया, प्रातःकाल उस ब्राह्मणका पुत्र न दीखपडा ॥ १३ ॥ उसके दुःखसे ब्राह्मण और ब्राह्मणी अति दुःखी हुए इधर उधर घर और आश्रमोंमें देखते, दौडते, फिरते थे॥१४॥और मार्गमें! पुत्र, पुत्रऐसा कहते हुए लोगों से पूंछते थे, तब पुत्रके पिछले वाक्यको याद करके केदार जानेके निमित्त ॥ ॥ १५ ॥ उन दोनोंने ब्राह्मणोंको अपने पुत्रके ढूंढनेके लिए वहां भेजा और पुत्रकी माता तथा पिता अतिदुःखी थे ॥ १६ ॥ तब उन ब्राह्मणोंने केदारके मार्ग में पुत्रका वृत्त पूंछा तो कहा कि–न देखा, न सुना, यह समाचार पाय, वे निराश होकर लौटते हुए ॥ १७ ॥ तभी मोक्षमें प्राप्त हुए उस ब्राह्मणके विषयकी उन घरको आते ब्राह्मणोंने मार्गमें ऐसी ध्वनी (शब्द) सुनी ॥ १८ ॥ उसी समय किसी मृतकी ध्वनिवाला पुरुष ब्राह्मणसे बोला, भूत बोला हे महाभाग! किस

भाग प्रेषितः केन कर्मणा ॥ १९ ॥ विप्र उवाच ॥ प्रेषितोऽस्मि द्विजेनात्र कार्यं भूयस्ततः शृणुः ॥ ब्राह्मणस्य सुतो नष्टस्तस्यान्वेषण आगताः ॥ २० ॥ भूत उवाच ॥ को दृष्टः केन चैवात्र कस्यासौ ब्राह्मणः सुतः ॥ विप्र उवाच ॥ न दृष्टो न श्रुतश्चैव मृतो भस्मनि कुत्र सः ॥ २१ ॥ पुत्र उवाच ॥ स्वर्गे तिष्ठाम्यहं विप्र गंधर्वगणसेवितः ॥ रुद्रकन्यामहाभोगभोगी च सततं स्थितः ॥ २२ ॥ अक्षयं च पदं प्राप्तं हृदि केदारचिंतनात् ॥ विप्र उवाच ॥ केन कर्मविपाकेन संप्राप्तमक्षयं पदम् ॥ २३ ॥ पुत्र उवाच ॥ अहं केदारकं चात्र प्रस्थितो रात्रिमध्यतः ॥ दृष्टोऽस्मि कोटपालेन हतो रात्रौ शरेण च ॥ २४ ॥ तत्क्षणान्मे गताः प्राणास्ततो रूपं प्रवर्त्तते ॥ सद्यो विमानमारुह्य द्वादशादित्यभास्वरम् ॥ २५ ॥ अप्सरोगणसंकीर्णं सर्वाभरणभूषितम् ॥ तेन कर्मविपाकेन संप्राप्तोऽस्मि शिवालयम् ॥ २६ ॥ एकोत्तरं कुलशत समस्तं तारितं मया ॥ मातरः पितरश्चैव तथा स्वजन

कर्मके निमित्त भेजे गएहो ॥ १९ ॥ ब्राह्मण बोला एक ब्राह्मणके कार्य के निमित्त आयेहैं वह कार्य यहहै सो सुनो कि-एक ब्राह्मणका पुत्र नष्ट होगयाहै उसके ढूंढनेको आएहैं ॥ २० ॥ भूत बोला किसने देखाहै, और किस ब्राह्मणका यह पुत्र है ब्राह्मण बोले न देखा न सुना कहां मर गया ॥२१॥ पुत्र बोला हे ब्राह्मणो ! मैं शिवके गण और गंधर्वों सहित स्वर्ग लोकमें रहताहूं और शिव लोककी कन्याओंके सहित बडे भोगोंको भोगता हुआ स्थितहूं ॥ २२ ॥ केदारको मनसे चिंतन (स्मरण) मात्रसे यह अक्षय पद पाया, है ब्राह्मण बोला किस कर्मफलसे अक्षय पद पाया ॥ २३ ॥ पुत्र बोला मैं रात्रिके विषय केदारको चल पडा, उस समय कोतवालने देखा, रात्रि होनेके कारण उसने बाणसे मुझे मारा ॥ २४ ॥ उसी समय मेरे प्राण निकल गए और अपना रूप बदलगया, शीघ्रही बारह सूर्यके समान कान्तिवानेहो, विमानपर चढ कर ॥ २५ ॥ अप्सराओंसे व्याप्त तथा संपूर्ण गहनोंसे भूषित, उस केदार चिंतन कर्मके फलसे शिवके पदको प्राप्त हुआ ॥ २६ ॥ मैंने एकसो एक कुलतारदिये, माता, पिता, कुटुम्बी, और बंधुगण

बांधवाः ॥ २७ ॥ तथा ह्यशीतिमान्याश्च बंधून्वाक्यमुदीर-
येत् ॥ ममोपरि द्विसहस्रमुद्धरेत्तु कुलं तथा ॥ २८ ॥ अत्रैव
च मया दृष्टं यादृशं सर्वमेव तु ॥ अन्यन्मातुश्च मे वाच्यं मा
दुःखं करु चाम्बिके ॥ २९ ॥ मया समुपभोगार्थ संप्राप्तः काम
उत्तमः ॥ मृत्युशोको न मे कार्य्य एतत्सर्वं वदाम्यहम् ॥ ३० ॥
विप्र उवाच ॥ यदि पुत्रस्य वाच्यं तु तन्मे सत्यं प्रकाशय ॥
ज्ञातिज्ञानं दर्शय त्वं येन निःसंशयो भवेत् ॥ ३१ ॥ तदहं प्रत्य-
यिष्यामि पितरं ते समंततः ॥ पुत्र उवाच ॥ न चेत्पिता विश्व-
सिति तदाख्येयो द्विजोत्तम ॥ ३२ ॥ ज्ञानस्य च परा भूतो मम
देहे समुद्भवः ॥ केदार प्रस्थितोऽहं निशि मध्ये यदा ततः
॥३३॥दृष्टोऽस्मि कोटपालेन निहतस्तच्छरेण च ॥ दृष्टस्तावदहं
तेन तदा विस्मयचेतसा ॥ ३४ ॥ निक्षिप्तः सहसा चैव प्राका-
रस्य समीपतः ॥ अग्नौ निःक्षिप्य देहं मे दहन्तु मुदिता-
जनाः ॥ ३५ ॥ यतंतं पितरं विप्र शीघ्रं दर्शय मामृत॥कुरुते येन
संसार अग्निदाहं हुताशने ॥ ३६ ॥ मध्ये यं कथयित्वेदं तस्य

॥ २७ ॥ मेरे माता, पिता और बांधवोंसे यह वचन कहना कि मेरे स्नेहसे तुम सब उद्वेग (चिंता) मत करो ॥ २८ ॥ और जो कुछहै सो सब यहां मैंने देखा और मेरी मातासे कहना कि–हे मातः, दुःख मतकरो ॥ २९॥ मैंने संभोगके अर्थ स्वर्गकी कामनाकी,मृत्युलोकके भोगसे मेरा कुछ काम नहींहै यह सब मैं कहताहूं ॥ ३० ॥ ब्राह्मण बोला यदि पुत्रका वचनहै तो मुझसे सत्य २ प्रकट करो और जाति तथा ज्ञानका परिचय दो जिससे संदेह दूर होवै ॥ ३१ ॥ तब मैं तुम्हारे पितासे तथा और चारोंतरफ कहूंगा, पुत्र बोला हे द्विजोत्तम ! यदि पिता न विश्वास करैं तब उनसे कहना कि ॥ ३२ ॥ मेरे शरीरसे ज्ञान उत्पन्न हुआ इस कारण केदार जानेके निमित्त रात्रिके मध्यमें चला ॥ ३३ ॥ कोतवालने मुझे देखा और बाणसे मारा और मुझे मरा देख ब्राह्मण जान और आश्चर्य युक्त चित्त से देखा ॥ ३४ ॥ एक साथ गढके समीप कुतियाके विष्ठाके समीप चकित हो फेंकदिया ॥ ३५ ॥ हे ब्राह्मण! यह विश्वास कराके मेरे पिताको यह शव दिखाना जिससे यह अग्निदाह संस्कार करैं ॥ ३६ ॥ मेरा यह वचन पितासे कहना, इस

विप्रस्य पश्यतः ॥ विमानवरमारुह्य भानु कोटि समद्युतिम् ॥ एवं पुत्रो गतः स्वर्गे कथयित्वा यथार्थतः ॥३७॥ नानाविधान्महाभोगान्भुंक्ते हरपुरे महान् ॥ एकोत्तरशतं देवि मयापि सहितो दिवि ॥ ३८ ॥

इति श्रीरुद्रयामले केदारकल्पे ईश्वरदेवीसंवादे पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शने ब्राह्मणपुत्रमोक्षप्राप्तिः सदेहकैलासगमनं नाम त्रयोदशः पटलः॥१३॥

प्रकार कहकर वह ब्राह्मणका पुत्र स्वर्गको गया ॥ ३७ ॥ वहां शिवलोकमें अनेक प्रकारके भोगोंको भोगकर उसने एकसौएक कुलोंको तारा और मेरे साथ निवास किया ॥ ३८ ॥

इति श्री केदारकल्पे शिवगौरीसंवादे भाषाटीकायां त्रयोदश पटलः ॥ १३ ॥

चतुर्दशः पटलः ।

श्रीदेव्युवाच ॥ यदि कोऽप्यजानानः शास्त्रमुक्तं यथाविधि ॥ अगम्यागमनं कुर्यात्तत्फलं वद शंकर ॥ १ ॥ श्रीशंकर उवाच ॥ यावत्पृच्छसि देवेशि तत्सर्वं कथयामि ते ॥ कोऽपि सर्वत्र भोक्ता तु ब्राह्मणो ज्ञानिसत्तमः ॥ २ ॥ सदैव मम भक्तो हि ध्यात्वा सर्वांगमीश्वरम् ॥ तेन विप्रेण सुश्रोणि संसारभयभीरुणा ॥ ३ ॥ केदारगमनं कृत्वा ह्यहं दृष्टो न संशयः ॥ पुनश्चैव गृहं प्राप्त इष्टैः सह तु तिष्ठति ॥ ४ ॥ अथासौ राजसदनं कदाचिच्च गतोऽभ-

पार्वती बोलीं हे शिवजी ! यदि कोई पुरुष शास्त्रविधिको न जानताहुआ विषयके अयोग्य स्त्रीके साथ विषय करै तो उसका फल कहो ॥ १ ॥ शिवजी बोले हे देवि ! जो तुमने पूंछा सो सब तुमसे कहताहूं कोई ब्राह्मण उत्तमज्ञानको छोडकर ॥ २ ॥ सर्वांग ईश्वरका ध्यान करनेवाला निरंतर मेरा भक्त था, उस ब्राह्मणने संसारके भयसे ॥ ३ ॥ केदारमें गमन करके मेरा दर्शन किया और फिर आया मित्रों सहित रहनेलगा ॥ ४ ॥ किसी दिन वह ब्राह्मण राजाके घरको

वत् ॥ आशीर्वादपरो विप्रो दानं लब्धा पुनः पुनः ॥ ५ ॥ तेन दृष्टा श्वपाकी च मधुरध्वनिशोभिता ॥ तस्या गीतध्वनिं श्रुत्वा सुस्वरं कर्णशीतलम् ॥ ६ ॥ मोहितो ब्राह्मणो देवि दृष्ट्वा म्लेच्छीं स्वरूपवान् ॥ मूर्च्छिता चेतना तस्य सद्यो नारी निरीक्षणात् ॥ ७ ॥पुनरालोक्य तां सोऽपि कामान्धः पतितो भुवि ॥ विसर्जितेन गीतेन नृपवृंदे गृहङ्गते ॥ ८ ॥ ब्राह्मणस्तेन मार्ग्गेण गतो म्लेच्छी स्वमंदिरे ॥ म्लेच्छी सा प्रार्थिता तेन भार्या मम भव स्वयम् ॥ ९ ॥ म्लेच्छ्युवाच ॥ दृश्यते ब्राह्मणं रूपं कुत्सितं तव भाषितम् ॥ सर्ववर्णमहाश्रेष्ठं सर्वशास्त्रविशारदम् ॥ ॥ १० ॥ भाषसे विगुणं विप्र महतां लोमहर्षणम् ॥ नीचाहं सर्ववर्णानां वर्णानां ब्राह्मणो गुरुः ॥ ११ ॥ प्रसंगो नैव कर्त्तव्यो म्लेच्छ्यहं ब्राह्मणो भवान् ॥ ब्राह्मण उवाच ॥ विवादो नैव कर्त्तव्यो ह्यस्मिन्काले मया प्रिये ॥ १२ ॥ यद्दोषो जायते देहे सर्वस्वमपि तिष्ठति ॥ तेन सा कामलुब्धेन मधुरालापवा-

और आशीर्वाद देकर दानको लेकर ॥ ५ ॥ उसने अपने समीप मधुरध्वनि युक्त वेश्या देखी, उसके गीतकी ध्वनि जो कानोंको सुखदेनेवाली अच्छी सुरेली थी ॥ ६ ॥ हे देवि ! उस सुन्दर रूपवती म्लेच्छीको ब्राह्मण देखकर मूर्छित चेतना रहित हो दिशाओंकी ओर देखताहुआ ॥ ७ ॥ फिर उस म्लेच्छीने उस ब्राह्मण की तरफ देखा तो काममें अंधा होकर भूमिपर गिरपडा गीत नृत्यके विसर्जन होनेपर सब समुदाय राजाके दरबारसे घरको गया ॥ ८ ॥ ब्राह्मण उसी मार्गसे उस म्लेच्छीके घर गया ब्राह्मणने म्लेच्छीसे प्रार्थना की कि-तू मेरी स्त्री हो ॥ ९ ॥ म्लेच्छी बोली तेरा रूप ब्राह्मणकेसा दीखताहै तेरा कहना बहुत बुराहै तू सब वर्णोंमें उत्तम और संपूर्ण शास्त्रोंमें निपुणहै ॥ १० ॥ हे ब्राह्मण ! तू यह बडे लोमहर्षण वचन कहताहै मैं संपूर्ण वर्णोंमें नीचहूं और ब्राह्मण सब वर्णोंका गुरुहै ॥ ११ ॥ मुझसे प्रसंग (विषय) करना उचित नहीं है क्योंकि मैं म्लेच्छीहूं और तुम ब्राह्मणहो ब्राह्मण बोला हे प्रिये ! इस समय मेरेसाथ विवाद करना उचित नहीं है ॥ १२ ॥ जो कुछ दोषहो वह सब मुझको होवे काममें लुब्ध

दिना ॥१३॥ म्लेच्छी वशीकृतास्ते च विप्रेणात्यादरेण तु ॥ गृहे वासगता तेन म्लेच्छी सा सह मोदते ॥ १४ ॥ तत्रासौ गृहिणी जाता सर्वलक्षणसंयुता ॥ यथा प्राता उर्वशी च दृश्यते चारुलोचना ॥ १५ ॥ सुप्रतिष्ठितपादास्या करपल्लवसुप्रभा ॥ सुरूपा च सुजघाभ्यां कदलीस्तंभसन्निभा ॥ १६ ॥ क्षामोदरी सुकन्या च विस्तीर्णहृदया तथा ॥ चलत्प्रदक्षिणावर्त्तमध्यत्रिवलिसंयुता ॥ १७ ॥ स्तनद्वयभरक्रान्ता बाहुभ्यां विसरुग्धरा॥मुखं पूर्णेन्दु संकाशं कामराजांबुजप्रभम् ॥ १८ ॥ तां दृष्ट्वा लोकललनां सर्वलक्षणलक्षिताम् ॥ विप्रस्य तस्य लुब्धस्य गतं जन्म तया सह ॥ १९ ॥ ततः प्रभूतकालेन जरा तस्याभवत्तदा ॥ अतिज्वरेण तत्तस्य मृत्युश्च तदनंतरम् ॥ २० ॥ ततो विप्रपिता यत्र म्लेच्छी तद्भवनं गता॥प्रणाममकरोत्तस्य म्लेच्छी विप्रस्य सन्निधौ ॥२१॥ तव पुत्रो हि मे भर्ता ज्वरेण गतजीवनः ॥ अग्निदाहं कुरुष्वास्य यद्ययं प्राणवल्लभः ॥ २२ ॥ विप्र उवाच ॥ न मे कार्यं सुतेनात्र

हुए उस मधुर आलाप वाले ब्राह्मणने ॥ १३ ॥ उस म्लेच्छीको वशमें किया, ब्राह्मणने आदरसे म्लेच्छीसहित घरमें वास किया और आनंद पाया ॥ १४ ॥ तहां सब लक्षणोंसे संयुक्त वह सुन्दर नेत्रवाली उर्वशीके समान उसकी स्त्री हुई ॥ १५ ॥ सम भागवाले चरणोंसे युक्त सुन्दर हथेली गौर वर्ण शोभित रूपवाली जंघाओंसे केलेके खंभकी समान ॥ १६ ॥ सूक्ष्म उदर, विस्तीर्ण हृदयवाली प्रदक्षिणावर्त मध्यमें त्रिवली युक्त ॥ १७ ॥ दोनों सुन्दर स्तनवाली भुजाओंमें और हाथोंसे शोभित मुखसे पूर्ण चन्द्रमाकी समान और कामदेवकी समान कान्तिवाली ॥ १८ ॥ उस लोक सुन्दरी तथा सब लक्षणोंसे सुशोभित स्त्रीको देख उस ब्राह्मणका जन्म उसके साथ रहते बीत गया ॥ १९ ॥ तब अधिक समयके पीछे उस ब्राह्मणको ज्वर आया और अति पीडित हो मृत्युको प्राप्त हुआ ॥२०॥ तिसके मरन पीछे वह म्लेच्छी ब्राह्मणके पिताके घर गई और ब्राह्मणके पास जाकर प्रणाम किया ॥ २१ ॥ कहा कि तुम्हारा पुत्र जो मेरा स्वामी था वह ज्वरसे मृत्युको प्राप्त हुआ है यदि तुम्हारा प्राणप्रिय है तो उसका अग्निदाह संस्कार करो ॥ २२ ॥ ब्राह्मण बोला मुझे पुत्रसे

तथा चैवमतः शृणु ॥ चांडालकर्मतां यातः कर्मचंडाल उच्यते॥
॥ २३ ॥ ईश्वर उवाच ॥ तच्छ्रुत्वा सा गता गेहं म्लेच्छी शोक-
प्रपीडिता ॥ गृहोपस्करणं त्यक्त्वा तस्य दाहं चकार ह ॥ २४ ॥
स्वगृहस्तु तथा दग्धो धूमा जाताः सुदारुणाः ॥ तत्स्थाने वट-
वृक्षस्य शाखायामाललम्बिरे ॥२५॥ तत्र वृक्षे समारूढं भूतानां
शतपंचकम् ॥ धूमेन चावृतो वृक्षो भूतैश्च समधिष्ठितः ॥ २६ ॥
स्वर्गलोकं गता भूता वटवृक्षेण संयुताः ॥ क्रीडंति चाक्षयं कालं
रुद्रलोके समुद्धताः ॥ २७ ॥ एको भूतो गतोऽन्यत्र भोज्यं
लब्ध्वा स गोत्रतः ॥ तत्र यावच्च संप्राप्तो वटस्थानं न दृश्यते
॥ २८ ॥ तदा विस्मयमापन्नं रुदंतं द्विज उत्तमः ॥ कस्त्वं खिद्य
सि दुःखार्तो ह्यत्र स्थाने वदस्व मे ॥ २९ ॥ भूत उवाच ॥ किं
त्वं पृच्छसि मां विप्र परित्राणं कुरुष्व मे ॥ विप्र उवाच ।
हेतुना केन भूतस्त्वं क्रंदसे दारुणं वद ॥३०॥ भूत उवाच ॥ गत
केदारको विप्र सोऽस्मिन्स्थाने प्रतिष्ठितः॥सोऽपि म्लेच्छीसमा

कुछ काम नहीं है क्योंकि वह चांडालके कर्मको प्राप्त हुआ और कर्मसे चां
कहाता है ॥ २३ ॥ शिवजी बोले यह सुन कर वह म्लेच्छी शोकसे व्याकुल
अपने घरको गई और घरके काम धंधेको छोड़ उसके दाहकी चिन्ता क
भई ॥ २४ ॥ तब सामग्री इकट्ठी कर उसने घरमें आग लगादी जब घ
बडा धुआं फैला, उस स्थानपर एक बडका वृक्षथा जिसकी शाखाओंका उ
न था ॥ २५ ॥ उस वृक्षके ऊपर पांचसौ भूत रहते थे वह भूतोंसे सेवित
धुएँसे व्याप्त होगया ॥ २६ ॥ वे भूत उस वृक्षके सहित स्वर्ग लोकको प्राप्त
और शिवलोकको पाय अक्षय कालतक क्रीड़ा करते रहे ॥ २७ ॥ उनमेंसे
भूत अपने गोत्रके भोजनसे लुब्ध हो अन्यत्र गया था तहां जबतक लौटकर अ
तो वह बडका पेड न देखा ॥ २८॥ तब विस्मय करते हुए तथा रोते हुए उस
देख ब्राह्मण बोला कि तुम कौनहो ? क्यों दुःखीहो ? क्योंकर व्याकुल होतेहे
सो मुझसे कहो ॥ २९ ॥ भूत बोला हे ब्राह्मण ! तुम क्या पूंछतेहो ? मेरी र
करो !!! ब्राह्मण बोला हे भूत !तुम किस हेतुसे कठिन रुदन करतेहो ? सो क
॥ ३० ॥ भूत बोला केदारको जानेवाला ब्राह्मण इस स्थानपर रहताथा

सक्तो गृहदास्यां यदास्थितः ॥ ३१ ॥ तस्य जाता तदा कन्या सुरूपा च सुलक्षणा ॥ तस्यां सोऽपि रतो विप्रो गतं जन्म तया सह ॥ ३२॥ न्यग्रोधो यो गृहद्वारे भूतानां शतपंचकम् ॥ आरुह्य सेवते चैकं म्लेच्छीभूतं महाद्रुमम् ॥ ३३ ॥ तत्क्षणात्प्रातमृत्युश्च वह्निदाहस्तया कृतः ॥ तेन भूता गताः स्वर्गं वटवृक्षेण संयुताः॥ ॥ ३४ ॥ अक्षयं च पदं प्राप्तांस्तद्धूमेन द्विजोत्तम ॥ अहं पापी दुराचारो ह्यन्यकार्य्यव्यवस्थितः ॥ ३५ ॥ तेन दुःखेन संततः क्रंदयामि पुनः पुनः ॥ विप्र उवाच ॥ ॥ यदि किंचित्प्रकर्त्तव्यं मया प्रीत्या प्रसादनम् ॥ ३६ ॥ कथयस्व महाभूत येनाहं प्रकरोमि तत् ॥ भूत उवाच ॥ ॥ यदि मे वचनं श्रोतुं श्रद्धा कर्त्तुं च ते द्विजे ॥ ३७ ॥ मन्यसे विप्र यद्येवं सुमहत्पापहारकम् ॥ तत्क्षणात्कुरु विप्रेन्द्र मैत्रं कार्यं सुवत्सलम् ॥ ३८ ॥ तस्य विप्रस्य या कन्या सुरूपा च सुलक्षणा ॥ तस्याः कृत्ये भवेन्मोक्षः करणीयं द्विजोत्तम ॥ ३९ ॥ विप्र उवाच ॥ ॥

म्लेच्छीसे आसक्त हो उसके साथ घरमें रहताथा ॥ ३१ ॥ उसके सुन्दर रूपवाली शुभलक्षण युक्त कन्या उत्पन्न भई उसके होनेपर वह ब्राह्मण मृत्युको प्राप्त हुआ ॥ ३२ ॥ उसके घरके द्वारपर वडका वृक्ष था जिसपर पांचसौ भूत रहते थे म्लेच्छी वृक्षपर चढ़कर उसे सेवन करती थी ॥ ३३ ॥ उसी समय वह मृत्युको प्राप्त हुआ उस म्लेच्छीने अग्निदाह करादिया उसके धुएँसे सपण भूतगण उस वडके वृक्षसहित स्वर्गको प्राप्त हुए ॥ ३४ ॥ और अक्षय पद प्राप्त किया उसके धुएँसे हे ब्राह्मण ! मैं पापी दुराचारी वंचित रहा कारण कि औरही कार्यमें संलग्न था ॥ ३५ ॥ उस दुःखसे व्याकुल हो वारम्वार रोताहूं । ब्राह्मण वोला यदि इच्छा पूर्तिके अर्थ मुझे जो कुछ करना योग्य हो ॥ ३६ ॥ सो हे भूत ! मुझसे कहो जिसे मैं पूर्ण करूं भूत वोला यदि मेरा वचन सुनते हो ॥ ३७ ॥ और मेरा पाप हरण करना मानते हो तो इसी समय मित्रका कार्य करो ॥ ३८ ॥ उस ब्राह्मणकी अच्छी रूपवती शुभलक्षणवाली कन्या है उसके द्वारा मेरा मोक्ष हो सकता है वह यहां काष्ठ एकत्रकर अग्नि लगावै ॥ ३९ ॥ ब्राह्मण वोला. यदि

यदि मोक्षो भवेत्तुभ्यं शीघ्रं तत्प्रकरोम्यहम् ॥ श्रीश्वर उवाच ॥ तेन विप्रेण दग्ध्वा च स्थाने चैव हुताशने ॥ ४० ॥ तद्धूमो विहितस्तेन पतितः सर्वभूतकः ॥ पावके तु प्रज्वलिते विप्राज्ञागृहमध्यतः ॥ ४१ ॥ तत्क्षणाद्दिव्यदेहस्तु त्रिनेत्रस्स चतुर्भुजः ॥ कुंडलाभरणो भूत्वा शशाङ्कधर एव च ॥ ४२ ॥ प्रणम्य हृष्टपुष्टात्मा प्रोवाच गगनस्थितः ॥ त्वत्प्रसादाद्द्विजश्रेष्ठ स्वर्गं गच्छामि चाक्षयम् ॥ ४३ ॥ तस्य भूतस्य रूपं हि तत्क्षणात्तेन वीक्षितम् ॥ विप्रोऽपि पतितः सोऽपि तत्र मध्ये हुताशने ॥ ॥ ४४ ॥ सोऽप्यगच्छत्तदा देवि यत्राहं शंकरः स्वयम् ॥ अक्षयं च पदं प्राप्तो रुद्रत्वमनिवर्त्तकम् ॥ ४५ ॥

इति श्रीरुद्रयामले केदारकल्पे श्रीश्वरदेवीसंवादे पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शने सदेहकैलासगमने पंचशतभूतवटवृक्षमोक्षो नाम चतुर्दशः पटलः ॥ १४ ॥ श्लोकाः ॥ ३१८ ॥

तुह्मारी मोक्ष होगी तो मैं ऐसा शीघ्र करताहूं । शिवजी बोले उसी स्थानपर उस ब्राह्मणके अग्नि जलानेपर ॥ ४० ॥ उस धूमसे व्याप्त भूत उसमें गिरा और अग्नि के प्रज्वलित होनेपर ब्राह्मणके घरमेंसे ॥ ४१ ॥ उसी समय दिव्य शरीरधारी त्रिनेत्र और चारभुजा धारण करके वह कुंडल आभूषणोंसे भूषित चन्द्रमा मस्तकपर धारण करे ॥ ४२ ॥ प्रणाम करके हृष्ट पुष्ट आत्मा हो, आकाशमें स्थित होके बोला हे द्विज ! तुम्हारे प्रसादसे अक्षय स्वर्गको प्राप्त होता हूं ॥ ४३ ॥ उस समय ब्राह्मणने भूतके उस रूपको देखा तब वहभी उस अग्निके मध्यमें गिरगया ॥ ४४ ॥ हे देवि ! वह तहां प्राप्त हुआ जहां मैं स्वयं स्थित हूं और अक्षय स्थान पाया जहां जाकर नहीं लौटते ॥ ४५ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे ईश्वरपार्वतीसंवादे भाषाटीकायां चतुर्दशः पटलः ॥ १४ ॥

पंचदशः पटलः ।

श्रीदेव्युवाच ॥ ॥ ॐ तेनोदकेन पीतेन किं चिह्नं देहजं भवेत् ॥ कथं मोक्षपरिज्ञानं चित्तसंयतिकारणम् ॥ १ ॥ एतदेव ममाख्याहि मानवानां हिताय च ॥ श्रीश्वर उवाच ॥ ॥ पीतमात्रे जले देवि रौद्रो भवति वै गणः ॥ २ ॥ गर्जितो बहु शब्देन महोत्साहो गजन्द्रवत् ॥ तावद्रुद्रविमानेन प्रयाति त्रिदिवं जनः ॥ ३ ॥ अप्सरोगणसंकीर्णे नानादेवीसमावृतः ॥ गायंति तत्र गंधर्वा नृत्यंति गणनायकाः ॥ ४ ॥ महारागं प्रकुर्वंति रुद्रकन्याः समंततः ॥ तावत्तत्र ध्वनिं श्रुत्वा क्षणेनैव निरीक्षते ॥ ५ ॥ क्षणात्पश्यति स स्वर्गं विमानवरमास्थितः ॥ सूक्ष्मगीतध्वनिं श्रुत्वा क्षणेनैव स पश्यात ॥६॥ आत्मानं चित्तसुभगं पूज्यमानं महेश्वरम् ॥ जटामुकुटसंवीतं चन्द्रार्द्धेन विभूषितम् ॥ ७ ॥ त्र्यक्षं चतुर्भुजं चैव कुंडलद्योतिताननम् ॥ श्रीदेव्युवाच ॥ तस्यसंभवता लिंगं कथं चैव स पश्यति ॥ ८ ॥ एतं

पार्वती बोलीं उस जलके पीनेसे देहसे उत्पन्न हुआ क्या चिह्न होताहै और किसप्रकार मोक्षका ज्ञान चित्तको परिचय देनेवाला होता है?॥ १॥ यह मनुष्योंके हितार्थ मुझसे कहो शिवजी बोले हे देवि ! मनुष्य जलके पीनेही मात्रसे रुद्रका गण होता है ॥ २ ॥ और बडे शब्दके साथ उत्साहपूर्वक सिंहक समान गर्जता हुआ मनुष्य रुद्रके विमानपर चढ़ स्वर्गको जाताहै ॥ ३ ॥ अप्सराओंसे व्याप्त और अनेक देवताओं सहित क्रीडा करताहै, तहां गंधर्व गान करते हैं, गण, नायक नृत्य करतेहैं ॥ ४ ॥ और रुद्रकन्या चारों ओर बडे २ रागोंको गातीहैं तहां ध्वनिको सुनकर वह क्षणमात्र देखता है ॥ ५ ॥ क्षणमात्रमें वह स्वर्गको अवलोकन करता है और क्षणमेंही नहीं देखता सूक्ष्मगीतकी ध्वनिको सुनकर ॥ ६ ॥ अपने आपको सुभगचित्त, पूज्यमान महेश्वर जटा मुकुटधारी मस्तकपर चन्द्रमा धारण किये जानता है ॥ ७ ॥ त्र्यक्षधारी चतुर्भुज तथा कुंडलसे प्रकाशित मुखवाला होताहै । देवी बोली उसका लिंग शरीर होता है सो किस प्रकार वह देखता है ॥ ८ ॥ हे देव ! यह मुझे संशयहै सो कहो । शिवजी बोले हे

म संशयं देव कथयस्व महेश्वर ॥ श्रीश्वर उवाच ॥ ॥ शृणु देवि कथां दिव्यां सर्वपापप्रणाशिनीम् ॥ ९ ॥ कुल महात विप्रस्य दुहिताभूत्पतिव्रता ॥ कालेन विहिता सा च विधवा पूर्वकर्मणा ॥ १० ॥ तदा साचिंतयत्कर्म केदारगमनं प्रति ॥ यास्याम्यहं च केदारं शीघ्रमन्वेषणाय च ॥ ११ ॥ तया भ-क्त्या तदा सा च गता वै हिमपर्वते ॥ दृष्ट्वा चैव तु केदारमीशानममराधिपम् ॥ १२ ॥ रेतोवारि ततः पीत्वा पुनरेवागता गृहम् ॥ आमंत्रयित्वा सा विप्रान्भोजयामास मन्दिरे ॥ १३ ॥ कामारं यौवनं कृत्वा भ्रातृभिः स्वजनैर्वृता ॥ प्रागभावविनिवृत्त्यै च दान दत्वाक्षमापयत् ॥ १४ ॥ तावत्सा धर्मसंयुक्ता व्रतं नि-यममाचरत् ॥ यावत्तस्यास्तदा भ्राता चकार कलहं प्रिये ॥ ॥ १५ ॥ महद्भिर्दुष्टवचनैर्देवदूषणतत्परैः ॥ यादृशी तादृशी त्वं हि केदारगमने रता॥१६॥हृदये संभवेन्नैव लिंगं नेदं कदाश्रुतम्॥ श्रुत्वा च शोकसंतप्ता दुःखं कृत्वा ह्यहर्निशम् ॥ १७ ॥ केदारं

देवि ! ससारके मध्य दिव्य कथाको सुनो ॥ ९ ॥ एक ब्राह्मणकी बडी कुलीन-पुत्री बडी पतिव्रता थी समयके फरस पूर्व कर्मयोगके कारण वह विधवा होगई ॥ १० ॥ तब उसने केदार जानेकी इच्छाकी और कहा कि मैं शीघ्र अन्वेषण करनेके अर्थ केदारको जाऊंगी ॥ ११ ॥ उस भक्तिसे वह हेमपर्वतपर गई, तहां केदारके देवस्वामी ईशान (शिव) का दर्शन करके ॥ १२ ॥ वीर्यसे उत्पन्न हुए (केदारके) जलको पीकर फिर घरको आई और भक्तिसे तपोधन ब्राह्मणों को बुला ॥ १३ ॥ यौवन अवस्थाको मदकर भाई और कुटुम्बियों सहित ब्राह्मणको दान देकर प्रार्थनाकी ॥ १४ ॥ जब वह धर्ममें तत्पर तथा व्रत और नियममें लगरही थी उस समय उसका भाई लडाई (कलह) करने लगा॥१५॥ और देवताका दोष लगानेवाले बडे निंद्य वचनोंसे कहता था कि तू ऐसीहै, वैसीहै,और केदारके जानेमें तत्पर हुई॥१६॥तू कहती है हृदयमें शिवलिंग प्रगट होताहै हमने यह किसीसे नहीं सुना यह वचन सुन वह शोकसे व्याकुल तथा रातदिन दुःखी रही ॥ १७ ॥ और हृदयमें केदारको चिन्तनकरती थी क्या यह

हृदये चिंत्य किमेवमुदकात्फलम् ॥ शोचन्ती निशि सा दीर्घे निद्रां याता च तत्क्षणात् ॥ १८ ॥ तावत्पश्यति देवं च जटामुकुटधारिणम् ॥ देवतादर्शनं लब्ध्वा ब्राह्मणी प्रणतस्थिता ॥ १९ ॥ अब्रवीत्पादलग्ना सा देवदेवं महेश्वरम् ॥ किमर्थं तु जलं पीत भ्राता म वाक्ति भाषितम् ॥ २० ॥ एतत्कथय देवेश त्वद्यात्रा च न निष्फला ॥ श्रीकेदार उवाच ॥ ॥ मा शोची-स्त्वं महादेवि सफलं जन्म तत्तव ॥ २१ ॥ त्वद्धृदि प्रभवेल्लिंगं कंठमात्रं प्रसादतः ॥ प्रभाते विमले प्राप्ते चाह्वयस्व सहोदरम् ॥ ॥ २२ ॥ अपरेषां तथाग्रे च गोदोहं पिब सुंदरि ॥ अंगुलीं च मुखे दत्वा शुद्धिं कृत्वा च तत्क्षणात् ॥ २३ ॥ तन्मध्ये च महालिंगं पश्येत्कंठसमप्रभम् ॥ प्रपश्यंतः सर्वलोका निश्चयो जायते ध्रुवम् ॥ २४ ॥ ॥ श्रीश्वर उवाच ॥ प्रभाते तादृशं कर्म सर्वलोकैर्विलोकितम् ॥ लिंगभेदभयाद्भीता ब्राह्मणी च ततोऽभवत् ॥ २५ ॥ हाहाकारः कृतः सर्वैर्द्विजैस्तद्भ्रातृनिश्चिते ॥ पापिष्ठा

जल पीनेका फल है ? हे देवि ! जबहीं वह ऐसा शोककर रहीथी कि उसे निद्रा आगई ॥ १८ ॥ तब जटा मुकुट धारी देवको देखा, और ब्राह्मणीने पृथ्वीपर प्रणाम किया ॥ १९ ॥ रोतीहुई देवताओंके देव महेश्वरके चरणोंमें पडकर बोली कि मेरे भाईने कहा कि तूने क्यों केदारका उदक (जल) पिया ॥ २० ॥ हे देव ! क्या आपकी यात्रा निष्फलहै ? सो यह कहो। केदार बोले हे ब्राह्मणी ! तू शोक मत कर तेरा जन्म सफल होगया है ॥ २१ ॥ कंठ मात्रमें प्रसादसे तेरे हृदयमें लिंग उत्पन्न हुआ है प्रातःकाल अपने भाईको बुलाकर ॥ २२ ॥ तथा अन्य स्वजनोंके आगे गायको दुहकर अपनी अंगुलीको मुखमें देना उसी समय प्रगटरूप ॥ २३ ॥ उसके मध्यमें सुवर्णकी समान कान्तिवाले उस लिंगको देखना, तथा संपूर्ण मनुष्य देखेंगे. तो निश्चय विश्वास होगा ॥ २४ ॥ शिवजी बोले प्रातःकाल यह पूर्वोक्त दृश्य सब पुरुषोंने देखा तो उस लिंगभेदके भयसे वह ब्राह्मणी चकित हुई ॥ २५ ॥ और सबोंने हाहाकार किया, भाईके निश्चय होनेपर लोगोंने कहा

१ स्वर्णः ।

भ्रातरो ह्यस्या दुर्मदाः कुलपांसनाः ॥२६॥ भगिनीनिंदका मूढा देवताप्रभुद्वेषिणः ॥ एत एव महाघोरे पतंति नरकार्णवे ॥ ॥ २७ ॥ लिंगभेदेन ते सर्वे भगिनीशब्दकारकाः ॥ ततोऽसौ ब्राह्मणी विप्रैरुक्ता लिंगं त्वमाहर ॥२८॥ गोदोहनं च प्रपिबेद्येनेदं संनिवर्त्तयेत् ॥ पीतेदुग्धे तदा याता ब्राह्मणी क्षीणदुष्कृता ॥ ॥ २९ ॥ संतोष्यब्राह्मणान्प्रीत्या प्राप्ता तत्परमं पदम् ॥ अहं पापी दुराचारःपापात्मा च विशुद्धये ॥ ३० ॥ इति भ्राता भवत्तस्याः प्रायेणात्मविशुद्धये॥ तदा निष्पादितं विप्रैस्तस्य पापस्य शोधनम् ॥३१॥ महाकृच्छ्रं त्रिरात्राणि परमानशनादयम् ॥ एतत्ते कथितं देवि लिंगमाहात्म्यमुत्तमम् ॥ ३२ ॥ इदं गुह्यं महापुण्यं ये शृण्वंति पठंति च॥ सर्वपापविनिर्मुक्ताः शिवलोकं व्रजन्ति च३३॥

इति श्रीरुद्रयामले केदारकल्पे श्रीश्वरदेवीसंवादे पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शने सदेहकैलासगमने विधवाब्राह्मणीमोक्षप्राप्तिर्नाम पंचदशः पटलः ॥ १५ ॥ श्लोकाः ॥ ३५१ ॥

कि यह भाई दुर्मद और पापी कुलका मल है ॥ २६ ॥ तथा बहिनकी निन्दा करने वाला मूर्ख, देवताका द्वेषी है इसको महाघोर नरक प्राप्त होगा ॥ २७ ॥ लिंगके भेद होनेसे वे सब बहिन बहिन ऐसा शब्द करनेलगे । तब ब्राह्मणोंने उस ब्राह्मणी से कहा कि लिंगको लोप करो ॥ २८ ॥ फिर गायको दुहकर पी, जिससे यह लिंग अदृष्य हो, तब उसने दुग्धको दुहकर पिया ॥ २९ ॥ और ब्राह्मणीने उन ब्राह्मणोंको संतुष्ट करके परम पद (मोक्ष) को पाया, भाईने भी कहा मैं पापी दुराचारी हूं ॥ ३० ॥ इस प्रकार अपने पापकी शुद्धिके निमित्त विचारा तो ब्राह्मणोंने उसके पाप दूर होनेका उपाय यों कहा ॥ ३१ ॥ कि तीनरात्री निराहार हो महाकृच्छ्र व्रत करो । हे देवि ! यह लिंग माहात्म्य तुमसे कहा ॥ ३२ ॥ इस गोपनीय बडे पवित्र इतिहासको जो मनुष्य पढते हैं तथा सुनते हैं वे सब पापोंसे छूटकर शिवलोकमें प्राप्त होते हैं ॥ ३३ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे शिवपार्वतीसंवादे भाषाटीकायां पंचदशः पटलः ॥ १५ ॥

षोडशः पटलः ।

श्रीकार्तिकेय उवाच ॥ ॥ ॐ मेरुपृष्ठे सुखासीनं देवदेवं जगद्गुरुम् ॥ प्रासादयञ्जगन्नाथं सर्वपूर्णं महेश्वरम् ॥ १ ॥ अप्राक्षमहमीशानं साधकानां हिताय च ॥ महापथेन पश्यंति कया शक्त्या च मानवाः ॥ २ ॥ तदर्थं च फलं ब्रूहि सत्यं देव सदाशिव ॥ गच्छंति साधकाः सर्वे स्वयं देहेन शंकर ॥ ३ ॥ श्रीश्वर उवाच ॥ ॥ मनसा कर्मणा वाचा सप्तजन्मनि किल्बिषम् ॥ विनश्यति कृतं तेषां ये शृण्वंति महापथम् ॥ ४ ॥ महापथः परो धर्मस्त्रिषु लोकेषु विश्रुतः ॥ रुच्यते यदि लोकानां गतीनां परमा गतिः ॥ ५ ॥ मया स्नेहेन ते नूनं कथ्यते यदि कौतुकम् ॥ पथां मध्ये महापथाः पदानां पदमुत्तमम् ॥६॥ पथां चैव हि सर्वेषा महाज्ञानं समुत्तमम् ॥ उद्धर्तुं सर्वजंतूनां केदारं तीर्थदुर्लभम् ॥ ७ ॥ दुर्लभं देवतानां च दुर्लभ्यमितरैर्जनैः ॥ दुर्लभं गणगंधर्वैर्यच्च शास्त्रं वदाम्यहम् ॥८॥ रम्यं च दिव्यशास्त्रेषु भुक्तिमुक्तिप्रदायकम्॥श्रुत्वा विघ्ना विनश्यंति पापानि सकलानि च॥९॥

श्री कार्तिकेय सुमेरु पर्वतके ऊपर सुखसे बैठे हुए देवताओंके देव जगद्गुरु महेश्वरको प्रसन्न करके बोले ॥ १ ॥ कि हे ईश ! मैं साधकोंके हिताथ पूंछता हूं कि मनुष्य किस शक्तिसे बडे मार्ग (महापंथ) को देखते हैं ॥ २ ॥ हे सदाशिव! उनके अर्थ सत्य ॥२॥ उस फलको कहो जिससे संपूर्ण साधक सदेह उस परमपंथको पावैं ॥ ३ ॥ शिवजी बोले जो महापंथके महत्वको श्रवण करते हैं उनके मानसिक कायिक वाचिक सात जन्मोंके पाप नष्ट होते हैं ॥ ४ ॥ महापंथ परम धर्म और तीनों लोकोंमें विख्यात है, यदि सबलोकोंमें परम गतिकी रुचि हो ॥ ॥ ५ ॥ तो मैं निश्चय तुमसे स्नेहके कारण कहता हूं कि समस्त पंथोंके मध्यमें उत्तम महापंथ है ॥ ६ ॥ समस्त ज्ञानोंमें ब्रह्मज्ञान उत्तमहै और सब प्राणियोंके उद्धारको केदार तीर्थ है ॥ ७ ॥ वह, देवता, मनुष्य, गण तथा गंधर्व इन सबोंको दुष्प्राप्य है । जो शास्त्रमें कहताहूं ॥ ८ ॥ वह सब शास्त्रोंमें रम्य तथा भुक्ति मुक्ति का दायक है जिसको श्रवण करके समस्त विघ्न और पाप नष्ट होते हैं ॥ ९ ॥

श्रुतश्च पठितश्चैव कल्पो यच्छेन्महापथम् ॥ पदे पदे महापुण्यं गंगास्नानं दिनेदिने ॥ १० ॥ अधर्मेण समायुक्ता न पश्यंति महापथम्॥ पश्यंति योनिमार्गं तु जनाः पापेन मोहिताः ॥ ११ ॥ मानुपाश्च महासेन पापं कृत्वा विशेपतः ॥ केदारदृष्टिमात्रेण पापराशिर्विनश्यति ॥ १२ ॥ यत्र तिष्ठति कल्पश्च तत्र तिष्ठंति देवताः ॥ अष्टपष्ट्यादितीर्थानि ख्यातानि भुवनत्रये ॥ १३ ॥ ब्रह्मविष्णुमहेशानां सुरेन्द्रस्त्रिदशाधिपः ॥ देवतासहितस्तत्र इन्द्रस्तिष्ठति नित्यशः ॥ १४ ॥ स्वर्ग मर्त्ये च पाताले ग्रहनक्षत्रतारकाः ॥ यत्र तिष्ठति कल्पस्तु सर्वे तिष्ठंति तत्र वै ॥ ॥१५॥ पवित्रं वै सदाकल्पं ये शृण्वंति पठंति च॥राजद्वारे यमद्वारे भय तत्र न विद्यते ॥ १६ ॥ पवित्रं वै महापुण्यं यत्र कल्पो महापथः ॥ सदेशो रुद्रतुल्यो वै विशेषो यस्य मन्दिरे ॥ १७ ॥ गृहे ये तु सदा कल्पं शृण्वंति च पठंति च॥ घोर संकट आरण्ये न भयं विद्यते क्वचित् ॥ १८ ॥ वाराणस्यां कुरुक्षेत्रे गयायां

ापंथ कल्पको सुनकर अथवा पढ़कर पद २ में गंगास्नान करनेके समान अधिक य होता है ॥ १० ॥ अधर्मसे युक्त जो मनुष्य महापंथ (कल्प) को नहीं देखते े पापी योनि मार्ग (जन्ममृत्यु) को देखते हैं ॥ ११ ॥ हे स्वामिकार्त्तिकेय ुष्य विशेष पापको भी करके केदारके दर्शन करै तो पापोंका समुदाय नष्ट होता । १२ ॥ जहां कल्प स्थित होता है तहां देवता नित्य रहते हैं अडसठ ६८ तीर्थ नों लोकमें विख्यात हैं ॥ १३ ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश बृहस्पति आदि देवताओंके हेत वहां इन्द्र नित्य स्थित रहताहै ॥ १४ ॥ स्वर्ग मृत्यु और पातालमें जितने : नक्षत्र तारे हैं वे जहां पर कल्प पुराण स्थित जानते हैं तहां सब स्थित रहते ॥ १५ ॥ जो मनुष्य पवित्र कल्पको सदा सुनते हैं अथवा पढ़ते हैं राजद्वारमें र यमके द्वारमें उनको भय नहीं रहता ॥ १६ ॥ जिस मनुष्यके घर महाकल्प स्थित होताहै वह बडा पवित्र है, वह पुरुष शिवके तुल्य विशेषहै ॥ १७ ॥ जो अपने घरपर नित्य कल्पको श्रवण करतेहैं और पढतेहैं उनको घोर ट तथा वनमें कहीं भय नहीं होता ॥ १८ ॥ काशी कुरुक्षेत्र प्रयाग और य

च प्रयागके ॥ यत्फलं प्राप्यते येन तत्फलं प्रतिपूजनात्॥१९॥
वसंति तानि तीर्थानि गृहे यस्य महापथः ॥ महापथं महाकल्पं
सर्वकालं पठंति ये ॥ २० ॥ फलं केदारयात्रायां ते लभंते गृहे
स्थिताः ॥ पूर्वजैः सहिताः सर्वे ह्यन्ते यांति शिवालयम् ॥२१॥
न तेषां पुनरावृत्तिः कल्पकोटिशतैरपि ॥ शंकरस्य प्रसादेन
विष्णोश्चैव विशेषतः ॥ २२ ॥ गच्छंति शिवसान्निध्यं भुंजते
विपुलां श्रियम् ॥ तेषां तुष्टो महादेवो गौर्य्या सार्द्धं त्रिलोचनः ॥
॥ २३ ॥ ते लभंते महाकल्पं देवदानवदुर्ल्लभम् ॥ विना रुद्रप्र-
सादेन न लभंते महापथम् ॥ २४ ॥ एतानि च महासन सत्यं
सत्यं वदाम्यहम् ॥ यस्मिन्नेव नराः पूर्वमर्चयित्वा महेश्वरम् ॥
॥ २५ ॥ राज्यं स्वर्गं च मोक्ष च संलभंते युगेयुगे ॥ मह्यां चैव
प्रतिष्ठंते यानि वृक्षतृणानि च ॥ २६ ॥ समुद्राशीतिलक्षाणा-
मभ्रच्छाया गृहे तथा॥तेषां संख्यां च जानामि हेमपुण्यं वदा-
म्यहम् ॥ २७ ॥ हेममंदरसंकासः प्रासादाः शिवशाशने ॥ तेषां

जानेसे जो फल प्राप्त होताहै वह एक केदारके पूजनसे उपलब्ध होताहै ॥ १९ ॥
जिसके घर महापथकल्प होताहै तहां संपूर्ण तीर्थ स्थित रहते हैं, जो महापंथ
कल्पको सब समय पढतेहैं ॥ २० ॥ वे केदारकी यात्राके फलको घरपर स्थित
हुएही पातेहैं और अन्त समय अपने पूर्वजों (पुरुषाओं) सहित शिव लोकको
प्राप्त होतेहैं ॥ २१ ॥ और उनकी पुनरावृत्ति (पुनर्जन्म) करोडों कल्पोंमेंभी
नहीं होतीहै. शिवके प्रसादसे विष्णुकी ॥ २२ ॥ तथा शिवकी समीपताको पाते
हैं, और अधिक लक्ष्मीको भोगते हैं इसीसे पार्वती सहित शिवजी संतुष्ट होतेहैं ॥
॥ २३ ॥ वेही, देवता और राक्षसोंमें दुर्लभ महाकल्पको पातेहैं, विना शिवकी
कृपासे यह कल्प नहीं मिलता ॥ २४ ॥ हे महासेन ! यह सत्य २ मैं कहताहूं कि,
जो पहले केदारपर महेश्वरको पूजतेहैं ॥ २५ ॥ वे प्रति युगमें राज्य, स्वर्ग, मोक्ष,
को प्राप्त करतेहैं, और पृथ्वीपर वेलके पेड होकर स्थित होतेहैं ॥ २६ ॥ और
चौरासीलाख मेघोंकी छाया जितने घर पर होतीहै उतनी संख्याको जानकर केदा-
रके पुण्यको कहताहूं ॥ २७ ॥ सुमेरु पर्वतकी जैसे योजनकी संख्या नहीं है वै

संख्यां च० ॥२८॥ आकाशात्पतितं तोयं पृथिव्या परितिष्ठति ॥ तस्य संख्यां च०॥२९॥समुद्राशीतिलक्षाणि तारकाणि स्थितानि च ॥ तेषां संख्यां च० ॥ ३० ॥ सागरे च महासेन ह्यनला विपुला मताः ॥ तेषां संख्यां च० ॥ ३१ ॥ नरा नार्य्यश्च यत्रोर्व्यां तिष्ठंति च गृहेगृहे ॥ तेषां संख्यां च० ॥ ३२ ॥ देवदानवदैत्याश्च यक्षराक्षसकिन्नराः ॥ तेषां संख्यां च जानामि हेमपुण्यं वदाम्यहम् ॥ ३३ ॥ सर्वभूताश्च तिष्ठंति स्वस्थिता भुवनत्रये ॥ तेषां संख्यां च जानामि हेमपुण्यं वदाम्यहम् ॥ ३४ ॥ महापथे महापुण्यो महारुद्रभयंकरम्॥स्वामिन्पथेन कल्पेन दर्शने च महाशुभम् ॥ ३५ ॥ तेन मार्गेण गंतव्यमभेद्यो देवदुर्लभः॥भयशंका न कर्त्तव्या गंतव्यश्च हिमालयः॥ ३६ ॥ महापथे महासेन विघ्नो नास्ति कदाचन ॥ तस्य कल्पप्रसादेन सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ ३७ ॥ स्वर्गः सोपानमार्गेण मया तात विनिर्मितः ॥

ही हिमालय पर्वतके पुण्यकी संख्या नहीं है ॥ २८ ॥ आकाश परसे गिराहुआ जल पृथ्वीपर गिरताहै उसके कणोंकी संख्या नहींहै चाहै यह संख्या होजाय पर केदारकी पुण्यकी संख्या नहींहै॥२९॥चौरासी लाख तारा गणोंकी संख्या होसकती है परंतु हिमालय पर्वतके पुण्यकी सीमा नहींहै॥३०॥ हे महासेन समुद्रमे वडवानल अग्नि अधिकहै उसकी संख्याहै परंतु इस पुण्यकी संख्या नही है ॥३१ ॥संपूर्ण नर नारी तीनों लोकमें अपने २ घरपर स्थितहै उनकी संख्याहै और इस पुण्यकी नहीं॥३२॥देवता दैत्य यक्ष राक्षस किन्नर इन सबकी संख्याको जानताहूं परंतु इस पुण्यकी संख्याको नहीं जानता॥३३॥संपूर्ण जीव जो तीनो लोकमे स्थितहै उनकी संख्याको जानताहूं पर इस पुण्यकी संख्या नहीं जान्ता॥३४॥महापंथमे वडा पुण्यहै महारौद्र और भयंकरहै स्वामीके पंथ तथा कल्पके दर्शनसे अधिक कल्याण होता है ॥ ३५ ॥ उस मार्गसे जाना चाहिये जो अभेद्य और देवतोंको दुर्लभहै उस महापन्थमें गमन करनेको भयकी शंका नहीं करनी चाहिये ॥ ३६ ॥ हे महासेन उस महापंथमें कदापि विघ्न नहीं होते उस कल्पके प्रतापसे यह सत्य २ कहताहूं ॥ ३७ ॥ हे तात ! मैंने सोपानके मार्गसे स्वर्ग निर्माण कियाहै जो मनुष्य उसे

मानुषा नैव पश्यंति संसारे किमुपार्जितैः ॥ ३८ ॥ ब्रह्मघाती तथा गोघ्नो मातृघ्नः पितृघातकः ॥ बालवृद्धा युवानो वा हीन-सत्त्वास्तथालसाः ॥ ३९ ॥ अगम्यागमने शक्ता वेदशास्त्रार्थ-वर्जिताः ॥ अधर्मेण समायुक्ता भुवि तिष्ठंति मानवाः ॥ ४० ॥ जन्मांतरसहस्रेषु क्रियते पापकर्म यैः ॥ केदारोदकपानेन भस्मी-भवति तत्क्षणात् ॥ ४१ ॥ संसारे मानवा अंधाः पापराशिसम-न्विताः ॥ कल्पश्रवणमात्रेण ते यांति शिवशासने ॥ ४२ ॥ करे कल्पो भवेद्यस्य सर्वास्तस्यार्थसिद्धयः ॥ यत्कृतश्च मया-कल्पः साधकानां हिताय च ॥४३॥ प्रत्यक्षे च कृते दीपे अंधाः कूपे पतंति च ॥ संसारे ये नराः सर्वे मोहिताः कर्मबंधनैः॥४४॥ केदारं ये न जानंति वृथा तेषां जनुर्ध्रुवम् ॥ संसारे सागरे घोरे दुस्तरे नरकार्णवे ॥ ४५ ॥ विना कल्पं महासत्त्वैः स्पंदितुं न च शक्यते ॥ रचितः स्वर्गसोपानो नौर्वा संसारसागरे ॥ ४६ ॥ उत्तारणाय लोकानां मृत्युलोकेऽवतारिता ॥ जलं च बुद्बुदा-

कारं यथा संसारिणस्तथा ॥ ४७ ॥ अभ्रच्छाया यथा सेनं तथा संसारिणो जनाः॥जलमध्ये यथा मत्स्याः धिम्रेजालैश्च रोधिताः॥ ॥ ४८ ॥ संबद्धा मोहपाशेन नैव गच्छंति मत्पुरे ॥ संसारमोहपाशेन बद्धा यांति च नारकम् ॥ ४९ ॥ महापथं महाशास्त्रं देवदानवदुर्लभम् ॥ स्वर्गशास्त्रं महारम्यं सर्वपापविनाशनम् ॥५०॥ प्रसादो मंदिरं छत्रं शिवस्य परिकीर्त्तनम् ॥ तस्य रुद्रपदे वासो यावदिन्द्राश्चतुर्दश ॥ ५१ ॥ केदारं च महानाम ये वदंति गृहे स्थिताः ॥ संवत्सरकृतं पापं मुच्यते नात्र संशयः॥ ५२ ॥ ध्यायंतो मनसा लोका ये गच्छंति हिमालये ॥ सप्तजन्मकृतं पापं तेषां नश्यति तत्क्षणात् ॥ ५३ ॥ केदारगमनं ये च वाचयंति वदंति च ॥ रविदिव्यप्रकाशेन गच्छंति शिवशासने ॥ ५४ ॥ कर्मणा च महासेन गताः केदारदर्शनम् ॥ केदारदर्शनं कृत्वा रेतोनीरं पिबंति ये ॥ ५५ ॥ कल्पकोटिसहस्राणि कल्पकोटि-

तक संसारके मनुष्यहैं '॥ ४७ ॥ हे महासेन ! मेघकी छायाकी समान संसारी मनुष्यहैं जैसे जलके मध्यमें मछली धीमरोंके जालसे फंसीहैं ॥ ४८ ॥ तैसे ही मोहके फांससे बंधे हुए मनुष्य मेरे पुरमें नहीं जाते संसारके मोहपाशमें फंसे मनुष्य सदा नरकमें पडतेहैं ॥ ४९ ॥ महापंथका यह कल्परूप महाशास्त्र देव तथा दानवोंमें दुर्लभहै तथा यह स्वर्गीय शास्त्र सब पापोंको नष्ट करनेवालाहै ॥ ५० ॥ जो शिवका प्रसाद तथा मंदिर और छत्र धारण करै.उसका शिवपुरमें निवास तबतक रहताहै जबतक चौदह इन्द्र रहतेहैं ॥ ५१ ॥ जो मनुष्य अपने घरपर स्थित होकर केदारके नामका स्मरण करतेहैं वे एकवर्षके पापोंसे छूटतेहैं इसमें कुछ संदेह नहींहै ॥ ५२ ॥ मनसे ध्यान करनेपर अथवा हिमालय पर्वतपर जानेसे, सात जन्मका संचितपाप तत्क्षणही नष्ट होताहै ॥५३॥ जो पुरुष केदारके गमनको कहलातेहैं अथवा स्वयम् कहतेहैं दिव्य सूर्यके प्रकाशसे वे शिव लोकको प्राप्त होतेहैं॥ ॥ ५४ ॥ हे महासेन ! सुकर्मसे मनुष्य केदारके दर्शनोंको जातेहैं और केदारके दर्शनका करके तीर्थसे उत्पन्न हुए जलको पीते हैं ॥ ५५ ॥ वे करोड़ों कल्प

१ हे महासेन यथाऽत्र सेनशब्दः दसो देव इतिवत् । २ धीवरे रुद्धोऽयम् ।

शतानि च ॥ सहितः पितृभिस्तेऽपि गच्छंति शिवशासने॥५६॥ यत्र स्थाने सुराः सर्वे गंधर्वाश्च गणैः सह ॥ तत्र स्थाने तदा तेऽपि भुंजते विपुलां श्रियम् ॥ ५७ ॥ वसंति मानुषास्तत्र गर्भवासं पुनः पुनः ॥ केदारं नैव पश्यंति संसारे निष्फला गताः ॥ ॥ ५८ ॥ अज्ञानान्नैव जानंति न गच्छंति शिवालयम् ॥ ततः कृत्यं महासेन कथयामि शृणुष्व तत् ॥ ५९ ॥ भावभक्तिसमायुक्तं मंत्रशास्त्रे यथोदितम् ॥ स्थापितं यैर्महालिंगं शृणु तेषां च यत्फलम् ॥६०॥ यावद्भूरचलो मेरुर्दिव्यस्वर्गे सुरोत्तमाः ॥ भावभक्तिसमायुक्तं मंत्रशास्त्रं यथात्मनः ॥ ६१ ॥ पितृभिः सहितास्तेऽपि शिवलोके वसंति च ॥ सर्वधर्मचये व्यग्रा गुर्व्वतिथ्योः प्रपूजने ॥ ६२ ॥ यावत्स्वर्गे महादेवो यावन्नीरं च सागरे ॥ सहिताः पितृभिस्तेऽपि शिवलोके वसंति च ॥ ६३ ॥ सर्वदेव समाः सिद्धा भुंजते विपुलां श्रियम्॥भुक्त्वा च विपुलान्भोगाँल्लर्भ-

पर्यन्त तथा सैकडों कल्पतक अपने भाई बांधवोंके सहित शिवलोकको पाते हैं ॥ ५६ ॥ जिस स्थानमें संपूर्ण देवता तथा गंधर्व गणों सहित स्थित हैं उसी स्थानमें अधिक भोगोंको भोगते हैं ॥ ५७ ॥ जो मनुष्य केदारको नहीं देखते हैं वे मनुष्य वारंवार गर्भाशयमें निवास करते हैं, उनका जन्म संसारमें निष्फल गया ॥ ५८ ॥ वे अज्ञानसे नहीं जानते कि शिव महिमा कैसी है और जो शिवके आलय (केदार) को जाते हैं हे महासेन ! उनका कृत्य कहताहूं सो सुनो ॥ ५९ ॥ प्रेम और भक्तिके सहित जैसा मंत्रशास्त्रमें कहाहै उस प्रकार जिन्होंने महालिंग स्थापित कियाहै, उनका फल सुनो ॥ ६० ॥ जबतक पृथ्वी अचल है तथा सुमेरु और स्वर्गमें देवता हैं भावभक्तिपूर्वक तथा मंत्र शास्त्र विधिके अनुसार ॥ ६१ ॥ पितरों सहित वहभी शिवलोकमें निवास करताहै, अतिथि सत्कार गुरुसेवा करना आदि धर्ममें जो मनुष्य तत्पर हैं ॥ ६२ ॥ जबतक स्वर्गमें महादेव और समुद्रमें जल है वेभी पितरोंके सहित शिवलोकमें निवास करतेहैं ॥६३॥ और संपूर्ण देवताओंके सहित विपुल भोगोंको भोगते हैं, और उन भोगोंको

१ आमेनेरदमारंम् । निशामयेति वा पा० ।

ते चाक्षयां गतिम् ॥ ६४ ॥ शंकरस्य प्रसादेन लभंते रुद्रता
नराः ॥ इच्छाभोगो भवेत्तेषां भुंजते विपुलां श्रियम् ॥ ६५ ॥
अमृतं च परित्यज्य विषं लोकाः पिबंति च ॥ कौतूहलं मया
दृष्टं क्षीरं त्यक्त्वा विषं पिबेत् ॥ ६६ ॥ सागरे च यथा नौका
संसारे कल्प एष च ॥ विनिर्मितो महासेन मनुष्योत्तरणाय च
॥ ६७ ॥ न पश्यंति मूर्तिं दिव्यां मायामोहसमाकुलाः ॥ बहु-
कामप्रपूर्णाश्च क्रोधपापैश्च पूरिताः ॥ ६८ ॥ एतैस्तु दोषैः
सहिता जात्यंधा मानुषा भुवि ॥ स्थाने तत्र न पश्यंति यत्र
दिव्यो महापथः ॥ ६९ ॥ योनिमार्गे सहस्रे च ह्यधमोत्तममध्यमाः
॥ गच्छंति मानुषाः सर्वे नैव गच्छंति मत्पुरे ॥ ७० ॥ गृहद्वारं
परित्यज्य ये गच्छंति महापथम् ॥ ऊर्द्धस्थाने तु जायंते यत्र
देवो महेश्वरः ॥ ७१ ॥ एकचित्ताश्च ये केचिच्छिवलोकं व्रजं-
ति च ॥ एवं रम्यं महाशास्त्रं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ॥ ७२ ॥
स्वर्गशास्त्रं महारम्यं दृष्ट्वा स्कन्दस्तमब्रवीत् ॥ स्कन्द उवाच ॥

भोगकर अक्षय गति (मोक्ष) को पाते हैं ॥ ६४ ॥ और शिवके प्रसादसे रुद्रके गणोंकी पदवीको पाते हैं और उसको इच्छानुकूल भोग मिलता है ॥ ६५ ॥ हा ! लोक अमृतको त्यागकर विष पान करते हैं यह मैंने कौतूहल (आश्चर्य) देखा कि दूधको छोड विषको पीते हैं ॥ ६६ ॥ समुद्रमें जैसे नौका है इसी प्रकार संसारमें कल्प मैंने मनुष्योंके पार जानेके अर्थ निर्माण किया ॥ ६७ ॥ माया और मोहसे युक्त मनुष्य दिव्य मार्गको नहीं देखते और जो पूर्ण कामसे भरे तथा क्रोध और पापोंसे पूरित हैं ॥ ६८ ॥ इन दोषोंके सहित मनुष्य जातिमें अंधे हुए हैं वहां उस स्थानको नहीं देख सकते जहां दिव्य महापंथ है ॥ ६९ ॥ और हजारों वार योनि मार्गमें अधम मध्यम उत्तम मनुष्य प्राप्त होते हैं जो मेरे पुरको नहीं जाते ॥ ७० ॥ जो घरके द्वारको छोड महापंथको जाता है वह ऊपर स्थानमें प्राप्त होता है जहां महेश्वर देव हैं ॥ ७१ ॥ जो एकचित्त हुए मनुष्य हैं वे शिवलोकमें जाते हैं यह रम्य महाशास्त्र (कल्प) तीनों लोकोंमें दुर्लभ है ॥ ॥ ७२ ॥ स्वर्ग शास्त्रको देखकर स्कन्दने मुझसे पूछा स्कन्द बोले कि हे देव !

पुनः पृच्छाम्यहं देव वचो मे शृणु शंकर ॥ ७३ ॥ पुरा मार्गं च पश्यंति साधकानां हिताय च ॥ नराणामूर्द्ध्वनाथाय केदारं तीर्थमुत्तमम् ॥ ७४ ॥ कैलासपीठमध्ये तु योगगम्य महेश्वर ॥ ब्रह्मविष्णुसुराः सर्वे सिद्धविद्याधराश्चये ॥ ७५ ॥ एवं मम हि तं दृष्ट्वा विस्मयं परमं गतः ॥ महापथः कथं देव क स्थाने च महापथः ॥ ७६ ॥ येन गच्छंति मार्गेण संसारभयपीडिताः॥ ब्रूहि वाक्यं महादेव त्रिदशेश्वरपूजित ॥ ७७ ॥

इति श्री० श्रीकेदारकल्पे विख्यातपुराणे ईश्वरकार्त्तिकेय संवादे पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शने सदेहकैलासगमने कल्पप्रशंसा-नाम षोडशः पटलः ॥१६॥ श्लोकाः ४२०॥

में फिर इच्छा करता हूं ॥ ७३ ॥ और साधकोंके हितके कारण उस पुरातन पंथको देखा मनुष्योंके उद्धार करनेको केदार उत्तम तीर्थ है ॥ ७४ ॥ कैलास पर्वतके ऊपर योगसे मिलने योग्य शिवजी हैं ब्रह्मा विष्णु सिद्ध विद्याधर आदि वहां स्थित हैं ॥ ७५ ॥ इस प्रकार कठिनताको देखकर स्कंदने कहा हे देव! महापंथमें किस प्रकार और किस स्थानमें श्रमपूर्वक ॥ ७६ ॥ जिस मार्ग के द्वारा संसारके भयसे पीडित मनुष्य जावें सो मार्ग कृपा करके आप मुझे सुनावें ॥ ७७ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे शिवपार्वतीसंवादे भाषाटीकायां षोडशः पटलः ॥ १६ ॥

सप्तदशः पटलः।

श्रीश्वर उवाच ॥ ॥ ॐ शृणु स्कंद महाप्राज्ञ महायोगिन्महातपः ॥ गच्छंति शिवसांनिध्यं केदारं तीर्थमुत्तमम् ॥१॥ निर्भयेन महामार्गो गंतव्यश्च हिमालयः ॥ अघोरेण च मंत्रेण ब्रूट

शिवजी बोले हे महाबुद्धिमान् महायोगी महातपस्वी स्कंद ! उत्तम केदार तीर्थमें शिवके समीप प्राप्त होतेहैं ॥ १ ॥ निर्भय हो हिमालय पर्वतपर महापंथ-

पष्ठविनिर्मितः ॥२॥ अघोरश्च महामंत्रो महासिद्धिकरो नृणाम्॥ महाविघ्नहरो नित्यं महामोक्षप्रदायकः ॥ ३ ॥ आश्विने चैव मासे वै गंतव्यश्च महापथः ॥ अघोरेण च मंत्रेण ये स्मरन्ति च नित्यशः ॥ ४ ॥ प्रथमं तत्र गंतव्यं ललिता यत्र तिष्ठति ॥ स्नात्वा मंदाकिनीतीर्थे ह्युपवासं च कारयेत् ॥ ५ ॥ मंदाकिनीसंगमे च ह्येकरात्रप्रजागरात् ॥ महारुद्रप्रसादेन प्राप्तव्यो मार्ग उत्तमः ॥ ६ ॥ रुद्रेश्वरो महातीर्थे दृष्टो हरति पातकम् ॥ पूर्वजन्मकृतैनांसि नश्यंति शिवदर्शनात् ॥ ७ ॥ केशत्यागश्च कर्त्तव्यस्तत्र स्थाने महाबुधैः ॥ मालाया धारणं कृत्वा स्नात्वा मंदाकिनीजले ॥ ८ ॥ तुष्टा वरप्रसादेन तेऽपि यांति परां गतिम् ॥ लोकैर्दृष्ट्वा च मार्गेण गंतव्या चोत्तरा ककुप् ॥ ९ ॥ विघ्नेश्वरप्रसादेन गुरुधर्मबलेन च ॥ पश्चात्तत्रैव गंतव्यं केदारं प्रथमाश्रमः ॥ १० ॥ संप्राप्य तत्र स्थाने च केदारं परमेश्वरम्॥

को जाना चाहिये अघोर मंत्रसे जो आठ तथा छै अक्षरोंसे निर्माण कियाहै ॥ ॥ २ ॥ अघोर महामंत्र मनुष्योंको सिद्धि कारकहै और बडे विघ्नोंको हरण करने वालाहै तथा बडे मार्गको देनेहाराहै ॥ ३ ॥ आश्विन मासमें महापंथमें जाना योग्यहै जो पुरुष अघोर मंत्रसे नित्य स्मरण करतेहैं ॥ ४ ॥ पहले वहां जावे जहां ललिता स्थितहै, मंदाकिनी तीर्थपर स्नान करके उपवास करें ॥ ५ ॥ मंदाकिनीके संगममें एक रात्रि जागरण करें । शिवके प्रसादसे फिर उत्तम मार्गको प्राप्त हों ॥ ६ ॥ रुद्रेश्वर महातीर्थमें शिवके दर्शन करनेसे पूर्वजन्मके पाप नष्ट होतेहैं ॥ ७ ॥ और बुद्धिमान् पुरुष उस स्थानपर केशत्याग (मुंडन) करावें और मंदाकिनीके जलमें स्नान करके माला धारण करें ॥८॥ उन शिवके प्रसाद से वह तृप्त होकर परम गतिको प्राप्त होतेहैं मनुष्य देखकर उस: मार्गसे उत्तर दिशाकी ओर जावें ॥ ९ ॥ विघ्नेश्वरके प्रसादसे और गुरुसेवा रूप धर्मके बलसे फिर तहांही केदारके पहले आश्रममें जाना चाहिये ॥ १० ॥ उस स्थानमें के-

---

१ दर गमो शान्तमर्त्ता स्वर्दितिम्ह् ।

तृप्ताश्च पितरस्तत्र हंसतीर्थेषु साधकाः ॥ ११ ॥ पूजयित्वा यथा शक्त्या केदारं पापनाशनम् ॥ संप्राप्तं च महामार्गे केदारे पापनाशने ॥ १२ ॥ सप्तकोटिसहस्राणि रक्षंति च गणोत्तमाः ॥ मनुष्याणां हितार्थाय स्वयं देवेन निर्मिताः ॥ १३ ॥ देवदानवदैत्याश्च यक्षराक्षसकिन्नराः ॥ न लभंते जलं स्कंद ये चान्ये पापिनो जनाः ॥ १४ ॥ पितृदेवगणाः सर्वे स्नात्वा मंदाकिनीजले ॥ भवेयुर्निर्मलाः स्कंद ये चान्ये पापकारिणः ॥१५॥ तुष्टा वरं प्रयच्छंति ततो यांति परां गतिम्॥देवस्य दक्षिणे पार्श्वे रेतःकुंडं व्यवस्थितम् ॥१६॥ इह जन्मकृतं पापं दृष्टमात्रे निहंति तत् ॥ स्पर्शनाच्छुक्रकुंडस्य सप्तजन्मकृतं व्रजेत् ॥१७॥ यानि कानि च तीर्थानि विख्यातानि महीतले ॥ रेतःकुंडस्य तान्येव कलां नार्हंति षोडशीम् ॥ १८ ॥ कुंडस्य दक्षिणे भागे उत्तराभिमुखः स्थितः ॥ वामहस्तेन पूर्वस्यास्त्रीन्वारान्प्रापिबेज्जलम् ॥ ॥१९॥ दक्षिणस्यां च वारांस्त्रीन्पिबेदञ्जलिनोदकम्॥गोमुखे तत्र

दार परमेश्वर स्थितहैं वहां पितरोंको तर्पण करके ॥ ११ ॥ पापनाशक केदार को अघोर महामंत्रसे पूजन करके पाप नष्ट करनेवाले केदारमें महापंथका मार्ग प्राप्त होताहै ॥ १२ ॥ वहां सातसहस्रकोटिगण रक्षा करतेहैं क्योंकि मनुष्योंके हित करनेके निमित्त वह स्वयम् शिवने अपनीदेहमें निर्माण कियाहै ॥ १३ ॥ तहां देवता दैत्य यक्ष राक्षस किन्नर रहतेहैं और पापी मनुष्य इसके जलको नहीं पी सक्तेहैं ॥ १४ ॥ पितर तथा देवतागण संपूर्ण मंदाकिनीके जलमें स्नान करतेहैं हे स्कन्द ! पापी मनुष्य भय करतेहैं ॥ १५ ॥ प्रसन्न हुए शिव वरको देतेहैं तो परम गति मिलतीहै और केदारके दाहिनी ओर रेतकुंड स्थितहै ॥ ॥ १६ ॥ इसके दर्शन करनेसे इस जन्मके पाप नष्ट होतेहैं तथा इस कुंडके स्पर्श करनेसे सात जन्मके पाप नष्ट होतेहैं ॥ १७ ॥ भूमिपर जितने तीर्थ प्रसिद्धहैं वे इस रेतकुंडके सोलहवें भागकोभी नहीं पाते ॥ १८ ॥ और कुंडके दाहिनी ओर उत्तरको मुँह करके स्थित हुआ पहले वाम हाथमें तीनवार जल पीवे ॥ १९ ॥ और तीन वार दक्षिणमें अंजलीमें जलको पीवे तहां गोमुखीसे

पीत्वा च त्रिनेत्रो जायते नरः ॥ २० ॥ ब्रह्मसूत्राभिमंत्रितं शत-
मष्टोत्तरं स्मृतम् ॥ जलं च कंठगं तेषां लिंगं भवति देहिनाम् ॥
॥ २१ ॥ तृणाग्रे बिन्दुमात्रेण ब्रह्मसूत्रेण वेष्टितम् ॥ मृत्युलोके
न तत्प्राप्तिस्त्रिनेत्रो जायते नरः ॥ २२ ॥ श्रीकार्तिकेय उवाच ॥
रेतोविद्यां महादेव कथयस्व प्रसादतः ॥ अक्षराणि च कानीह
कति मात्राः प्रकीर्त्तिताः ॥ २३ ॥ श्रीश्वर उवाच ॥ अथ
मंत्रोद्धारः ॥ ॐकारद्वयसंयुक्तं क्षूंकारत्रयभूषितम् ॥ पंचरेफसमा-
युक्तं दशबिन्दुमहाद्भुतम् ॥ २४॥ ॐ कारश्च स्वयं ब्रह्म क्षूंकारो
विष्णुरुच्यते ॥ रूंकारश्च स्वयं रुद्रो दशबिन्दुसमाश्रितः॥२५॥
एषा विद्या महासेन मम देहेन निर्मिता ॥ शृणु स्कंद महाप्राज्ञ
सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ २६ ॥ यत्र यत्र पिबेत्तोयमनया शु-
क्रविद्यया ॥ केदारदर्शयात्रायाः फलं प्राप्नोति मानवः ॥ २७ ॥
अथ मंत्रः ॥ ॐ रूं क्षूं रूं क्षूं रूं क्षूं रूं रूं ॐ ॥
॥ १० ॥ नवभांडे महासेन रेतोविद्याभिमंत्रितम् ॥ शालिधान्यं
गृहीत्वा च गंतव्यं ह्युत्तरामुखैः ॥ २८ ॥ नवभांडं करे

जल पीकर मनुष्य त्रिनेत्र होताहै ॥२०॥ यज्ञोपवीत पहन कण्ठतक जलमें जा
कर एकसौ आठ बार मंत्रको जपै तो वह लिंगस्वरूप होताहै ॥ २१ ॥ तृणके
अग्र भाग मात्र जल पान सहित यज्ञोपवीतके धारण करनेसे मनुष्य मृत्युकाल-
के प्राप्त होनेपर त्रिनेत्र होताहै ॥ २२ ॥ कार्तिकेय बोले हे महादेव ! अपनी
प्रसन्नतासे रेतविद्याका वर्णन करो उसमें कितने अक्षरहैं और कितनी मात्रा
कहीहैं ॥ २३ ॥ शिवजी बोले दो ओंकार तथा तीन क्षूंकारसे भूषित और पांच
रूंकार तथा दशबिन्दुओंसे संयुक्तहै अर्थात ॐ रूं क्षूं रूं क्षूं रूं क्षूं रूं रूं ॐ यह मंत्र
है ॥ २४ ॥ ॐ कार स्वयम् ब्रह्मस्वरूपहै, क्षूंकार विष्णु तथा रूंकार शिव दश
बिन्दुओंके सहित कहाहै ॥ २५ ॥ हे कार्तिकेय यह विद्या मेरे शरीरसे उत्पन्न
हुईहै मैं सत्य २ कहताहूं सो सुनो ॥ २६ ॥ इस रेतविद्याको पढकर चाहैं
जिधरसे जलको पीवै वह मनुष्य केदारकी दर्शयात्राके फलको पाताहै ॥ २७ ॥
हे कार्तिकेय ! नवे पात्रमें रेतविद्या पढनी कहीहै शाल्य (तंडुल)धान्यको लेकर
उत्तरकी ओर जावै ॥ २८ ॥ नव पात्र हाथमें लेकर जलमें धोके उत्तरकी ओर

धृत्तोदकमध्यप्रक्षालितम् ॥ उत्तराभिमुखैश्चैव रेतोविद्याभिमंत्रितम्॥२९॥तत्र तिष्ठति सा देवी गौरी नाम महातपाः ॥ तस्या अग्रे जलं चैव रेतो विद्याभिमंत्रितम् ॥ ३० ॥ गृहीत्वा गम्यते तत्र ह्यपामार्गस्य तंडुलान् ॥ अपामार्गस्य चाभावे शालिकस्य च तंडुलाः ॥ ३१ ॥ साधयित्वा चरुं तत्र ह्यघोरेणाभिमंत्रितम्॥ पंचब्रह्मसमायुक्तं चरुं यत्नेन साधयेत् ॥ ३२ ॥ यंरंवंलंहं ॥५॥ एतैः कृत्वा चरुं तत्र चतुर्भागं तु कारयेत् ॥ प्रथमो देवतानां च द्वितीयो वह्नये तथा ॥ ३३ ॥ तृतीयश्चापि गौर्य्यै च चतुर्थो ह्यात्मतप्पणः ॥ प्राश्य सम्यक् चरुं तत्र पानीयं प्रपिवेत्ततः ॥ ॥ ३४ ॥ पश्चाच्छिवाय गौर्यै च स्तुतिं कुर्य्यात्प्रयत्नतः ॥ अचिंत्यरूपचरिते परमादित्यरुपिणि ॥ ३५ ॥ क्षमस्व मेऽपराधं च जननि त्वं सदाम्बिके ॥ त्वं माता सर्वलोकस्य क्षंतव्यं परमेश्वरि ॥ ३६ ॥ संसारभयभीतोऽहं मार्गं देहि महेश्वरि ॥ तस्या देव्याः प्रभावेण लभ्यते मार्ग उत्तमः ॥ ३७ ॥ नमस्कारं शिवे कुर्य्याद्गुरुदेवं प्रणम्य च ॥ गौरीशानपथा स्कन्द गंतव्या ह्युत्तरा ककुब् ॥ ३८ ॥ गोदंडमयमात्रश्च दृश्यते मार्ग

मुख करके रेतविद्याको पढ॥२९॥तहां हे महातप ! गौरीनाम देवी स्थित है उसके आगे रेतविद्यामंत्रको पढके जल छोडे॥३०॥तहां अपामार्गके(चिरचिटा)चांवल लेकर जावे अपामार्गके न होनेपर धानके चावल होवें ॥ ३१ ॥ तहां अघोरमंत्रसे चरुको बनावे पांच ब्रह्मसहित चरुको यत्नपूर्वक साधे ॥ ३२ ॥ यंरंवंलंहं ५ तहां चरु करके चार भाग करे पहला भाग देवताओंको दूसरा अग्निको ॥ ३३ ॥ तीसरा पार्वतीको, चौथा अपने लिये है, तहां उस चरुको भोजन करके जलपान करे ॥ ३४ ॥ पश्चात् शिव तथा गौरीकी स्तुति करे। हे अचिन्त्य रूपे ! हे परमादित्यरूपिणि ॥ ३५ ॥ हे जननि ! हे अम्बिके ! मेरे अपराधको क्षमा करो। तुम सब संसारकी माताहो। हे परमेश्वरि ! क्षमा करो ॥ ३६ ॥ हे महेश्वरि ! मैं संसारके भयसे डरा हुआ हूं मुझे मार्ग दो, उस देवीके प्रसादसे महापन्थ प्राप्त होताहै ॥ ३७ ॥ शिवको नमस्कार करके गुरु देवताको नमस्कार करे, गौरीकुण्डके ईशान मार्गसे उत्तर दिशाको जावे ॥ ३८ ॥ गोदंडमात्र (क्षण) मे वह

उत्तमः ॥ प्रमाणं तस्य मार्गस्य द्वात्रिंशदंगुलान्तरः ॥ ३९ ॥
दर्शितः शंभुना मार्गः सिद्धानां स्वर्गकांक्षिणाम् ॥ एतस्यात्रि-
विधा वर्णाः श्वेतः १ कृष्णस्तु २ पीतकः ३ ॥ ४० ॥ मध्ये च
भवेत्पीत इति शास्त्रस्य निश्चयः ॥ धन्वन्तरिशतार्धेन तत्र चिह्नं
तु दृश्यते ॥ ४१ ॥ मृगेन्द्रसदृशाकाराः शिलास्तिष्ठंति सम्मु-
खाः ॥ तस्य संदर्शनं कृत्वा भयभीताश्च साधकाः ॥ ४२ ॥
अघोरोऽस्य महामंत्रो महासिद्धिकरो नृणाम् ॥ अथ मंत्रः ॥ हुँ
फट् स्वाहा ॥ ५ ॥ अघोरं जपमानस्तु सर्वविघ्नक्षयंकरम् ॥४३॥
तस्य प्रदक्षिणं कृत्वा गंतव्या चोत्तरा ककुब् ॥ बुधैर्धर्मार्थतत्त्व-
ज्ञैर्विलम्बो नात्र युज्यताम् ॥ ४४ ॥ अर्द्धचन्द्रनिभश्चैव शैल-
स्तिष्ठति चोर्द्ध्वगः ॥ त एव शैलं पश्यंति आचार्य्या विस्मयं
गताः॥४५॥भयशंका न कर्त्तव्या अघोरमक्षरं जपेत् ॥अथ मंत्रः॥
ॐ हुंफट्स्वाहा तस्य विघ्नं नकर्त्तव्यं शतं शैलसमीपगम् ॥
॥ ४६ ॥ तस्य प्रदक्षिणं कृत्वा गंतव्यं चोत्तरादिशि ॥ धन्वंतरी-

उत्तम मार्ग दीख पड़ता है उस मार्गका प्रमाण बत्तीस अंगुल विस्तृत है ॥ ३९ ॥
स्वर्गकी इच्छा करनेवाले सिद्धोंको शिवजी मार्ग दिखाते हैं इसके श्वेत, कृष्ण,
तथा पीत, तीन वर्ण हैं ॥ ४० ॥ मध्यमें पीत वर्ण है, यह शास्त्रका निश्चय है।
धन्वन्तरी शतकसे किया तहां चिह्न दीखता है ॥ ४१ ॥ और सिंहके आकार
वाली शिला सन्मुख दीखती है साधक उसको देख भयभीत होते हैं ॥ ४२ ॥
अघोर महापंथ मनुष्योंको सिद्धि कारक है ॐ हू फट् स्वाहा अघोर मंत्रके जपनेसे
संपूर्ण विघ्न दूर होते हैं ॥ ४३ ॥ उसकी परिक्रमा करके उत्तर दिशाको जावै तहां
धन्वन्तरी शतकसे कृत चिह्न दीखता है ॥ ४४ ॥ और पर्वतकी उंचाई चन्द्रमाके
आधे मार्गतक है, उस पर्वतको देख आचार्य भी विस्मयको प्राप्त हुए ॥ ४५ ॥
तहां भयकी शंका न करे, और अघोर मंत्रको जपै उसमें विघ्न नहीं करना पर्वतके
समीप प्राप्त हो ॥ ४६ ॥ उसकी प्रदक्षिणा करके उत्तर दिशाको जावै तहां तीनसौ

१ आत्मनेपदमार्षम् ।

शतत्रीणि आत्मानं चैव गम्यते ॥४७॥ लिंगं हेममयं तत्र स्थितं दृश्येत साधकैः ॥ श्वेतरक्तं कृष्णपीतं तस्य वर्णं च दृश्यते ॥ ॥ ४८ ॥ नाना रत्नसमाकीर्णं ज्वलंतं पद्मरागवत् ॥ आत्महस्तेन लिंगे च स्पृष्ट्वात्मानि विलेपयेत् ॥ ४९ ॥ अघोरेणैव मंत्रेण आत्मरक्षां च कारयेत ॥ प्रथमं जपित्वा मंत्रं च पश्चाच्चैव सुसंगतः ॥ ५० ॥ तस्य लिंगप्रभावेण वज्रांगं च भविष्यति ॥ आचार्याः साधकाः सर्वे प्रणम्य च पुनः पुनः॥५१॥अथ मंत्रः ॥ ॐ हुंफट्स्वाहा ॥ ५ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे विख्यातपुराणे श्रीश्वरकार्त्तिकेयसंवादे पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवनमुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शने सदेहकैलासगमने सिद्धिप्राप्तियोगो नाम सप्तदशः पटलः ॥ १७ ॥ श्लोकाः ॥४८१ ॥

धन्वन्तरीकी आत्मा जासकर्ताहै ॥ ४७ ॥ तहां सुवर्णके लिंगकी स्थिति अवलोकन होतीहै और उसका वर्ण श्वेत, रक्त, कृष्ण, पीत, दीखताहै ॥ ४८ ॥ अनेक रत्नोंसे जटित, पद्मराग मणिकी समान कान्तिमान, उस लिंगको अपने हाथसे स्पर्श करके अपने शरीरमें लेपन करे ॥ ४९ ॥ और अघोर मन्त्रसे अपनी रक्षा करे प्रथम मंत्र जपकर पश्चात् समीपमें जावे ॥ ५० ॥ उस लिंगके प्रभावसे वज्रके अंगवाला होताहै - संपूर्ण आचार्य और साधक वारंवार नमस्कार करें ॥ ५१ ॥

इति श्री केदारकल्पे शिवगौरीसंवादे भाषाटीकायां सप्तदशः पटलः ॥ १७ ॥

अष्टादशः पटलः ।

श्रीश्वर उवाच ॥ ॥ ॐ शृणु स्कंद महाप्राज्ञ वज्रं भवति देहिनाम् ॥ अघोरेण च मंत्रेण महाविघ्नः प्रणश्यति ॥ १ ॥ खड्ग-

ईश्वर बोले हे महाप्राज्ञस्कंद ! इससे मनुष्योंका शरीर वज्र होताहै और अघोर महामंत्रसे बडे विघ्न नष्ट होतेहैं ॥ १ ॥ हे देवि ! षडंग महामंत्र देवता

तुल्यो महामंत्रो देवदानवदुर्लभः ॥ तस्य लिंगप्रभावेण हिमेनैव स बाध्यते ॥ २ ॥ धन्वंतारिशतत्रीणि ह्येकचित्तो व्रजेत्पुनः ॥ तत्र चैव पुरी रम्या दृश्यते च मनोरमा ॥ ३ ॥ तत्र हेमप्रभा दीप्ता दृश्यते चोत्तरा हरित् ॥ दृष्ट्वा शक्रपुरीं तत्र ब्रह्मविष्णुपुरीं ततः ॥४॥ सूर्य्यकोटिसमं तेजो ह्युदीच्यां दिशि दृश्यते ॥ इन्द्रनीलमहानीलपद्मरागोपशोभितम् ॥ ५ ॥ तस्माच्छंकरपूजायां दृश्यते शिखरे ध्वजः॥मनोहरश्च दिव्यश्च मंगलादपि मंगलम्॥६॥ दृश्यते च महासेन प्रतोल्यां धवलं गृहम् ॥ नित्योत्सवसमाकीर्णा दृश्यते चोत्तरा हरित् ॥७॥ एकविंशतिसंख्याताः पुर्य्यः कांचनसन्निभाः ॥ पश्चाच साधकाः सर्वे गताश्च चोत्तरां दिशम् ॥ ८ ॥ नदी च दृश्यते तत्र साक्षादेवी सरस्वती ॥ हंसकारंडवाकीर्णा-चक्रवाकोपशोभिता ॥ ९ ॥ नानाद्रुमलताकीर्णा नानापक्षिसमाकुला ॥ हरंति सर्वपापानि सप्तजन्मार्जितानि वै ॥ १० ॥ कुमुदोत्पलपद्मैश्च शोभितं सर उत्तमम् ॥ तत्रैव प्रविवेत्तोयं पूजयित्वा

और दैत्योंको दुर्लभहै, इस सत्य लिंगके प्रभावसे हिमालय पर्वतपर बाधा नहीं होती ॥ २ ॥ धन्वन्तरि शतत्रयको एकचित्त होकर जावै तहां मनोहर रम्या पुरीके दर्शन होतेहैं ॥ ३ ॥ वहां सुवर्णकी कान्तिकी समान प्रकाशित इन्द्रपुरी दीखतीहै फिर उत्तर दिशाकी ओर ब्रह्मपुरी और विष्णुपुरी है ॥ ४ ॥ उत्तर दिशा करोडों सूर्यकी समान कान्तिवान है । यह इन्द्रनील और महानील, तथा पद्मराग मणियोंसे शोभित है॥५॥और कैलासके शिखरपर शंकर पुरी है सो अति मनोहर और मंगलसे भी मंगल है॥६॥ हे महासेन!प्रतोलीसे स्वच्छ घर दीखता है उत्तर दिशा नित्य उत्सवोंसे शोभायमान है ॥ ७ ॥ तहां सुवर्णकी समान देदीप्यमान इक्कीस पुरी हैं पीछेसे साधक लोग उत्तर दिशाको जावैं ॥८॥ तहां सरस्वती नदी है जो हंस चकोर तथा चकवोंसे शोभित है॥९॥ अनेक वृक्ष तथा अनेक प्रकारके पक्षियोंसे व्याप्त है यह मनुष्यके सात जन्मके पापको हरण करती है सदा॥१०॥श्वेत कमल,तथा नील कमलोंसे शोभित सरोवर हैं, तहां शंकरको

च शंकरम् ॥११॥ पितृवंश्यागताः स्वर्गे मातृवंश्यसमन्विताः॥ शिवस्य च प्रसादेन पितॄणां चाक्षया गतिः ॥ १२ ॥ उत्तराभिमुखो भूत्वा नद्यास्तीरं व्रजेत्ततः॥योजनार्द्धे ततो गत्वा ह्याश्रमं वीक्षते महान् ॥ १३ ॥ शक्रेण स्थापितं लिंगं हेमपीठकभूषितम् ॥ योजनार्द्धं च विस्तीर्णा पुरी शक्रेण निर्मिता ॥ १४॥ पताकाध्वजसंयुक्ता हेमप्राकारवेष्टिता ॥ देवगंधर्वसंकीर्णा चाक्षया श्रीमती शुभा ॥१५॥ देवकन्यासमाकीर्णा वंशवादेनवादिता ॥ गायंत्यप्सरसस्तत्र देवगंधर्वयोषितः ॥ १६ ॥ वेदं सध्वनिनिर्घोषं पठंति मुनयो मुहुः ॥ स्नात्वा सरस्वतीतीर्थे ह्यर्चयित्वा च शंकरम् ॥ १७ ॥ कुशास्तरणकं कृत्वा चैकरात्रं वसेत्ततः ॥ एकरात्रे व्यतिक्रान्ते नमस्कृत्वा जगद्गुरुम् ॥१८॥ सरस्वती नदीतीरं गंतव्यं योजनत्रयम् ॥ अग्रतो दृश्यते तत्र सिद्धचारणसेविता ॥ १९ ॥ नानारत्नविचित्रैश्च हेमकूटा वसुंधरा ॥ इन्द्रनीलमहानीलपद्मरागोपशोभिता ॥ २० ॥ दृश्यो-

पूजन करके उसके जलको पीवै ॥११॥ माताके वंशके पुरुष तथा पिताके वंशके पितरोंकी शिवके प्रसादसे अक्षय गति होती है ॥१२॥ उत्तरकी ओर मुख करके नदीके किनारे जावै, फिर आधे योजनपर आगे जाकर एक बड़ा आश्रम दीख पडता है ॥१३॥ तहां इन्द्रसे स्थापित लिंग और सुवर्ण जटित सिंहासन है,और आधे योजन विस्तारवाली पुरी इन्द्रने निर्माण की है॥१४॥सो प्रवाल्य तथा धवल मणियोंसे जटित भवनोंसे शोभित सुवर्णकी दीवारोंसे घिरी हुई और देवता गंधर्वोंसे व्याप्त अक्षय गतिवाली है॥१५॥देवकन्याओंसे युक्त बांसुरी वाद्यसे गुंजार हुई जहां अप्सराएँ देवता और गंधर्वोंकी स्त्रियां गान करती हैं ॥१६॥ और मुनिगण वेदध्वनि सहित श्रुतियोंको पढते हैं । तहां सरस्वतीके किनारे स्नान करके शिवकी पूजा करके॥१७॥ एक रात्रि कुशाओंको बिछाकर निवास करै।एक रात्रि बीतनेपर जगद्गुरु शंकरको नमस्कार करके ॥१८॥ सरस्वती नदीके किनारे किनारे, तीन योजन जावै, तहां सिद्ध चारण (हाथी) से सेवित भूमि है॥१९॥ और अनेक प्रकारके विचित्र रत्नोंसे जडित सुवर्णसे ढकी पृथ्वी है, इन्द्रनील, महानील, पद्मराग मणियोंसे, शोभायमान है ॥ २० ॥ वह सुवर्णसे शोभित

जनविस्तीर्णा पुरी कांचनशोभिता ॥ विष्णुना स्थापितं लिंगं तत्र देवो महेश्वरः॥२१॥वापीकूपतडागाश्च प्रासादालय उत्तमः॥ चूतचंदनसंयुक्तः कदलीखंडमंडितः ॥ २२ ॥ पताकाध्वजसंयुक्तो द्वारशाखासुशोभितः॥ देवकन्यासमाकीर्णो वंशवादित्रनादितः ॥ २३ ॥ भेरीमृदंगशब्देन शंखतूर्यरवेण च ॥ गीतं गायंति गंधर्वा अप्सरोगणसेविताः ॥२४ ॥ तस्य मध्ये महालिंगं विष्णुना स्थापितं पुरा ॥ स्नात्वा सरस्वतीतीर्थे पश्चेते तत्र साधकाः ॥२५॥अर्चयित्वा महेशानमेकरात्रं च जागरम् ॥ नमस्कृत्य च देवेशं गंतव्या चोत्तरा हरित् ॥ २६ ॥

इति श्री केदारकल्पे विख्यातपुण्ये श्रीश्वरकार्त्तिकेयसंवादे पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शने सदेहकैलासगमने हेमलंघनं नामाष्टादशः पटलः ॥ १८ ॥ श्लोकाः ५०७॥

पुरी दसयोजन विस्तारवाली है तहांपर विष्णुने महेश्वर देवके लिंगको स्थापन किया है ॥ २१ ॥ और वाउडी, कूप, सरोवर, उत्तम भवन, आमके वृक्ष, तथा चंदनके वृक्ष, तथा केलेके वृक्षोंसे शोभायमान है ॥ २२ ॥ प्रवाल्य ध्वजा मणियोंसे युक्त द्वारशाखा (वंदरवाल) से शोभित, और देव कन्याओंसे व्याप्त वंश वाद्य, ध्वनिसे गुंजारित ॥ २३ ॥ भेरी, मृदंग, तथा शंख, वीन आदि वाजोंके शब्द सहित गंधर्व गान करते हैं, और अप्सरागण नृत्य करती हैं ॥ २४ ॥ पूर्वकालमें विष्णुने तहां शिवलिंग स्थापन किया है सरस्वती तीर्थपर स्नान करके साधक ॥ २५ ॥ महेश्वरका पूजन करके तथा एक रात्रिभर जागरण करै और देवको प्रणाम करके फिर उत्तरदिशाको जावै ॥ २६ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे शिवपार्वतीसंवादे भाषाटीकायामष्टादशः पटलः ॥ १८ ॥

एकोनविंशतिः पटलः ।

श्रीश्वर उवाच ॥ ॐ सरस्वतीनदीतीरे आश्रमो दृश्यते महान् ॥ वासुकिप्रमुखाश्चैव दृश्यंते पन्नगोत्तमाः ॥ १ ॥ महापालो गयश्चैव शंखपालश्च कर्कटः ॥ अनंतजयनामा च आस्तीकः परमो मुनिः ॥ २ ॥ दृश्यते शेषनागश्च तक्षको धरणीधरः ॥ तिष्ठंति पन्नगाः सर्वे राजा चैव विरोचनः ॥ ३ ॥ वितिष्ठते वासुकिश्च सभायां परिवेष्टितः ॥ सिंहासनानि दिव्यानि हेमरत्नकृतानि च ॥ ४ ॥ तत्र तिष्ठंति राजेन्द्र पन्नगप्रवरास्तथा ॥ वासुकिर्दृश्यते तत्र वाद्यते बहु नैकधा ॥ ५ ॥ भेरीमृदंगशब्देन काहलैः शंखमर्दलैः ॥ वाद्यंते तादृशाश्चैव वीणापणवझर्झराः ॥ ॥ ६ ॥ वाद्यंते च तथा सर्वे यथा मेघविगर्जितम् ॥ स्थानं तत्र पुरे रम्ये नानारत्नविभूपितम् ॥ ७ ॥ शतयोजनविस्तीर्णं हेमप्राकारवेष्टितम् ॥ द्वादशादित्यतेजश्च नागकन्यासमाकुलम् ॥ ८ ॥ युवत्यस्ता मदोन्मत्ता विद्युत्तेजःसमप्रभाः ॥ मृगाक्ष्यो हंसगामि-

शिवजी बोले ! सरस्वती नदीके किनारेपर एक बडा आश्रम दीखता है, तहां वासुकी आदि सर्प श्रेष्ठके दर्शन होते हैं ॥ १ ॥ महापाल, गय, शंखपाल, कर्कट, तथा अनंतजय, नामक परम आस्तिक हैं ॥ २ ॥ शेषनाग जो पृथ्वीको धारण कर रहे हैं वह तथा संपूर्ण तक्षक (सर्प) व, विरोचन राजा स्थित है ॥ ३ ॥ उनसे वासुकी उस सभामें घिरे हुए शोभित होते हैं और सुवर्ण तथा रत्नजडित सिंहासन बिछा है ॥ ४ ॥ उन सिंहासनोंपर राजेन्द्र सर्पराजा वासुकी विराजमान हैं उस स्थानपर अनेक प्रकारके बाजे, बजते हैं ॥ ५ ॥ भेरी, मृदंग, तथा शंखके शब्दसे वहांके मृगभी वीणाकी समान शब्द करते हैं ॥ ६ ॥ और ऐसा शब्द करते हैं जैसे मेघकी गर्जना होती हो और उस नगरमें अनेकप्रकारके रत्नोंसे भूपित स्थान हैं ॥ ७ ॥ सौ योजन विस्तारवाला सुवर्णकी दीवारोंसे घिरा हुआ तथा बारह सूर्यकी समान प्रकाशित और नाग कन्याओंसे व्याप्त है ॥ ८ ॥ जो कन्या यौवनसे उन्मत्त हैं व बिजलीकी समान तेजवाली और मृगके समान

न्यो नपुरारावसंकुलाः ॥ ९ ॥ करकंकणसंयुक्ता हारकेयूरभू-
षिताः ॥ संपूर्णचन्द्रवदना दिव्यवस्त्रपरिच्छदाः ॥ १० ॥ मृदु-
कोमलदेहाश्च वदंति कोकिलस्वरैः ॥ शीर्षेण पुष्पसुगंधेन नाग-
वल्लीविभूषिताः ॥ ११ ॥ सर्वलक्षणसंपूर्णा रूपयौवनगर्विताः ॥
सर्वा गुणसमायुक्ताः कुंडलाभरणोज्ज्वलाः ॥ १२ ॥ दिव्य-
प्रसूनशिरसो दिव्यगंधानुलेपनाः ॥ साधकाश्च गतास्तत्र सर्वे
ते विस्मयं गताः ॥ १३ ॥ तत्र दृष्ट्वा महाप्राज्ञ पुरं सर्वगुणा-
न्वितम् ॥ रम्यं मनोहरं दिव्यं वह्निज्वालासमप्रभम् ॥ १४ ॥
उत्तुंगशिखराकारैः प्राकारैस्तोरणैश्चितम् ॥ रत्नमौक्तिकवैदूर्य्यवि-
स्फुरत्किरणान्वितम् ॥ १५ ॥ कपाटागारसंयुक्तं वेष्टितं च
पुरोत्तमम् ॥ इन्द्रनीलमहानीलपद्मरागोपशोभितम् ॥ १६ ॥
तस्मिन्नेव पुरे रम्ये हेमबद्धा वसुंधरा ॥ सौवर्णकेतकीजाता ह्या-
सते राजचंपकाः ॥ १७ ॥ सौवर्णकास्तत्र वृक्षा नानापक्षिस-

नेत्रवाली बिछुए पायजेबोंसे भूषित हैं ॥ ९ ॥ हाथमें कंकन, हार तथा बाजूबंदसे शोभित पूर्ण चन्द्रमाके समान मुखारविन्दवाली तथा दिव्य वस्त्र धारण किये हैं ॥ १० ॥ अतिमृदु और कोमल शरीरवाली कोयलके समान स्वरसे बोलती हैं सिरपर पुष्पोंकी सुगन्धि, और मुख पानसे भूषित ॥ ११ ॥ संपूर्ण शुभ लक्षणोंसे लक्षित और रूप यौवनमें संयुक्त समस्त गुणोंसे अलंकृत कुंडल आभूषणोंसे उज्ज्वल ॥ १२ ॥ दिव्यपुष्प (सीसफूल) सिरपर बंधा और सुन्दर सुगंध लेपन किये स्थित हैं इस स्थानपर संपूर्ण साधक लोग गये तो वे विस्मयको प्राप्त हुए ॥ १३ ॥ हे महाप्राज्ञ ! वहां सर्व गुण आगार पुरको देखकर जो सब प्रकार रमणीक और मनोहर है अग्निकी लपटकी समान कान्तिवान् ॥ १४ ॥ ऊंच २ शिखर तथा दीवार और बंदरवारोंसे संयुक्त, रत्न मोती वैदूर्य मणियोंकी कान्ति से मिश्रित ॥ १५ ॥ और फाटक तथा मृमले सहित इस प्रकार वह उत्तम नगर घिरा हुआ है और इन्द्रनील और महानील तथा पद्मराग मणियोंसे शोभित है ॥ १६ ॥ उस रम्य पुरमें सुवर्णसे पृथ्वी आच्छादित है और सुवर्णके केतकी और राजचंपकके वृक्ष हैं ॥ १७ ॥ और यहां सुवर्णके वृक्ष और अनेक प्रकारके

माकुलाः ॥ फलैर्विनिर्मिताः साक्षात्कूष्मांडसदृशोद्गतैः ॥ १८ ॥ वकुलैः शतपत्रैश्च विल्ववृक्षैश्च पाटलैः ॥ वापीकूपतडागादिप्रासादैश्च गृहैस्तथा ॥ १९ ॥ ध्वजमालाकुलं दिव्यं शिखरैश्चापि शोभितम् ॥ चूतचंदनसंयुक्तं कदलीखंडमंडितम् ॥ २० ॥ राजवृक्षसमाकीर्णं विवाहोत्सवसंकुलम् ॥ रम्यं मनोहरं दिव्यं चोदितार्कसमप्रभम् ॥ २१ ॥ जलमध्ये यथा पद्मं नक्षत्राणां यथा शशी ॥ तथा नागपुरीणां च तत्पुरो शोभते भृशम् ॥२२॥ मणिमध्ये यथा पद्मं दिनमध्ये यथा रविः ॥ तथा नागपुरी चैव शोभते च मनोरमा ॥ २३ ॥ साधकाश्च गतास्तत्र दृष्ट्वा च कुलवल्लभाम् ॥ निशि वह्नेर्यथा तेजो दृश्यते च तथा पुरम् ॥ ॥ २४ ॥ गीतज्ञास्तत्र गायंति नृत्यंते नर्त्तकोत्तमैः ॥ ब्राह्मणा वेदनिर्घोषैः सर्वशास्त्रं पठंति च ॥ २५ ॥ शिवालयं समाकीर्णं नानालिंगसमाकुलम् ॥ तस्य मध्ये महाराजा आसते पन्नगो-

पक्षीगण निवास करतेहैं फलोंसे सजित जो कुम्हडा (गोलकद्द) के समानहैं संपूण शाखा भर रही हैं ॥ १८ ॥ केसर कमल, तथा वेलपत्र आदिके वृक्षोंसे तथा वाउडी कूप तालाव आदि और भवन; प्रासादोंसे व्याप्त ॥ १९ ॥ और ध्वजा (पताका) मालाओंसे शोभित, सुन्दर शिखरोंसे शोभित, आम, चंदनके वृक्षोंसे संयुक्त तथा केलेके खंभोंसे शोभायमान ॥ २० ॥ सप्तवर्ण वृक्षोंसे संयुक्त तथा विवाहोत्सवोंसे शोभायमान और रमणीक मनोहर दिव्य उदय हुए सूर्यकी समान कान्तिमान ॥२१॥ जलके मध्यमें जैसे कमल, और तारागणोंमें जैसे चन्द्रमा, है उसी प्रकार नागपुरीयोंके मध्य वह नगरी शोभित होरहीहै॥२२॥ संपूर्ण मणियोंके मध्यमें जैसे पद्मरागमणि और दिनके मध्यमें जैसे सूर्यहै उसी प्रकार यह नागपुरी मनोहर शोभायमान है ॥ २३ ॥ तहां साधक लोग पहुँचे और उस प्रियनगरीको देखकर जैसे रातमें अग्निका तेजहो तैसे वह पुर दीखताहै ॥ २४ ॥ वहां गीतगानेवाले गायन करतेहैं और नृत्य करनेवाले नाचते हैं तथा ब्राह्मण लोग वेदध्वनि करतेहैं और संपूर्ण शास्त्र पढतेहैं ॥ २५ ॥ और शिवके मंदिर अनेक लिं-

त्तमाः ॥ २६ ॥ दिव्यवस्त्रपरीधाना दिव्यगंधानुलेपनाः ॥ दिव्यपुष्पशिरोवद्धा दिव्यतेजःसमप्रभाः ॥ २७ ॥ दिव्यदेहा महाकन्याः सर्वाभरणभूषिताः ॥ सर्वा गुणसमायुक्ता दिव्यभोगसमावृताः ॥२८॥ दृष्ट्वा च साधकाः सर्वे वदंति स्वागतं प्रिये ॥ राजोवाच ॥ क्वागता भुवनात्सिद्धाः क्व स्थानं चैव लभ्यते ॥ ॥ २९ ॥ एतद्ब्रूहि महाचार्य साधकोपरि चेष्टितम् ॥ साधक उवाच ॥ कथयामि महाराज शृणु मे वचनं शुभम् ॥ आगता मृत्युलोकाद्वै तैः प्राप्यः शंकरालयः ॥ ३० ॥ राजोवाच ॥ शृण्वन्तु साधकाः सर्वे मम वाक्यं सुनिश्चितम् ॥ पश्चाच्च साधकाः सर्वे गच्छाचार्य्य यथासुखम् ॥ ३१ ॥ साधक उवाच ॥ किमर्थं भोग्यमायुष्यं पश्चाच्च किं भविष्यति ॥ एतद्ब्रूहि महाराज कुत्र स्थानेषु गम्यते ॥ ३२ ॥ राजोवाच ॥ शतैकपंचकं कन्या दीयंते च पृथक्पृथक् ॥ वर्षपंचशतं ह्यायुः कामरूपा महाबलाः ॥३३॥ आचार्य्यसाधकाः सर्वेऽभुजन्भोगान्यथेप्सितान्॥

गौंसे भरे हैं उसके मध्यमें सर्प विराजतेहैं ॥ २६ ॥ सुन्दर २ वस्त्र तोशक तकिये अवलंबन किये तथा सुन्दर सुगंध लगाए, सिरपर दिव्य पुष्प (सीसफूल) बांधे और दिव्य तेजकी समान कान्तिवाली ॥ २७ ॥ दिव्यदेह धारण किये सुन्दर शरीर वाली समस्त आभूषणोंसे भूषित सब गुणोंसे अलंकृत दिव्य भोगों को भोगती हुई ॥ २८ ॥ सम्पूर्ण कन्याओंने देखकर साधकोंको बोले हे प्रिय ! स्वागतहै राजाबोला हे सिद्धो ! कहांसे आए हो और किस स्थानको जातेहो ॥ ॥ २९ ॥ सो हे महाचार्य साधक ! हमसे कहो । साधक बोला हे महाराज ! मैं कहताहूं मेरा वचन सुनो हम मृत्युलोकसे आएहैं और शंकरके स्थानको जातेहैं ॥ ३० ॥ राजा बोला । हे साधको ! मेरा वचन संपूर्णसिद्ध सुनो पीछे से सुखपूर्वक सब लोग जाना ॥ ३१ ॥ साधक बोला भोग और आयु किस लिये हैं और पीछे क्या होना है ? हे महाराज ! और किनस्थानोंमें जाते हैं यह सब वर्णन करो ॥ ३२ ॥ राजा बोला पांचसौ कन्या पृथक् २ प्राप्तहोंगी और पांचसौ वर्षकी आयु और इच्छानुकूल स्वरूप धारण करोगे ॥ ३३ ॥ तुम संपूर्ण आचार्य साधक यथेप्सित भोगोंको भोगकर दिव्यवस्त्र धारण करके तथ

दिव्यवस्त्रपरीधाना दिव्याभरणभूषिताः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नेव पुरे रम्ये बहुकन्यासमाकुले ॥ अस्मिन्स्थाने महाभोगास्ते भोगा-देवदुर्लभाः ॥ ३५ ॥ दिव्यपुष्पशिरोबद्धा विमानारूढसाधकाः ॥ यत्र स्थाने महावीरा यथेच्छा तद्धि गम्यते ॥ ३६ ॥ तिष्ठंतु साधकाः सर्वे भुंजतां विपुलां श्रियम्॥एते मत्कथिता भोगा भोक्तव्याः साधकैः सह ॥ ३७ ॥ पश्चाच्च साधकाः सर्वे मृत्युलोकं व्रजंति च ॥ सर्वकामसमृद्धाश्च जायंते विपुले कुले ॥ ॥ ३८ ॥ सर्वे गुणसमायुक्ता राजानोऽपि भवंति हि ॥ साधक उवाच ॥ मृत्युलोके मया चांते गंतव्यं च महानृप ॥ ३९ ॥ मृत्युलोकभयाद्भीता राजन्नत्रागता वयम् ॥ कोऽत्र स्थाने महाराज पश्येन्नैव च शंकरम् ॥ ४० ॥ अस्माभिस्तत्र गंतव्यं यत्र ब्रह्मा हरो हरिः ॥ त्वया यदुदितं राजन्हृदेय नैव रोचते ॥४१॥ अवश्यं तत्र गंतव्यं यत्र देवो महेश्वरः ॥ ४२ ॥ राजोवाच ॥ सिद्धसिद्ध महाप्राज्ञ क्षणमेकं च तिष्ठतु ॥ करसंपुटितं कृत्वा राजा तेषां वदेत्ततः ॥ ४३ ॥ भक्षित्वा फलमेकैकं देवदानव-

दिव्य आभूषण पहने ॥ ३४ ॥ अधिक कन्याओंसे व्याप्त इस रमणीक स्थानमें ऐसे भोगोंको भोगो जो देवताओंकोभी दुर्लभहैं ॥ ३५ ॥ शिरपर दिव्य पुष्पोंको धारण करके विमान पर चढके जिस २ स्थानमें जाना चाहोगे तहां तहां जा सकतेहो ॥ ३६ ॥ हे साधको ! तुम सब यहां निवास करो और अधिकभोगोंको भोगो यह भोग हमने कहे ॥ ३७ ॥ पश्चात् सब साधक मृत्युलोकमें प्राप्तहोंगे संपूर्ण कामनाओंसे पूर्ण और श्रेष्ठ कुलमें उत्पन्न होतेहैं ॥ ३८ ॥ वे सब गुणों से परिपूर्ण तथा राजा होतेहैं साधक बोला हे महानृप ! मृत्युलोकमें बडा दुःख है तहां नहीं जांयगे ॥ ३९ ॥ हे राजन् ! हम लोग मृत्युलोकके भयसे डरे हुए यहां पर आए हैं। हे महाराज ! इस स्थानमें कौन शंकरहै ? हमने नहीं देखा॥ ॥ ४० ॥ हम लोग वहां जांयगे जहां ब्रह्मा शिव विष्णुहैं । हे राजन् तुमने जो भोग कहे सो नहीं रुचते ॥४१॥ अवश्य वहां जावेंगे जहां महेश्वर देवहैं ॥४२॥ राजा बोला हे सिद्ध ! हे सिद्ध !एक क्षणमात्र यहां ठहरो इस प्रकार हाथ जोडकर राजाने उनसे कहा ॥ ४३ ॥ भक्तिका रोपण करके एक २ फल सबने

दुर्लभम् ॥ पश्चाच्च साधकाः सर्वे भवंतु ह्यजरामराः ॥ ४४ ॥ फलस्य भक्षणं कृत्वा ह्यमृतं प्रपिबंति च ॥ पश्चाच्च साधकाः सर्वे गताश्चैवोत्तरामुखे ॥ ४५ ॥

इति श्रीरुद्रयामले केदारकल्पे निख्यातपुराणे श्रीश्वरकार्त्तिकेयसंवादे पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शने सदेहकैलासगमने नागपुरीवर्णनं नामैकोनविंशः पटलः ॥ १९ ॥
॥ श्लोकाः ॥ ९९२ ॥

भक्षण किया जो देवता और दैत्योंको दुर्लभहै पश्चात् सब साधक अजर अमर होगए ॥ ४४ ॥ उन्होंने फलोंको भक्षण किया और अमृतकोभी पिया पश्चात् सब साधक उत्तरदिशाकी ओर चलदिये ॥ ४५ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे शिवपार्वतीसंवादे भाषाटीकायामेकोनविंशः पटलः ॥ १९ ॥

विंशतिः पटलः ।

श्रीश्वर उवाच ॥ ॐ अग्रतो दृश्यते तत्र हेमबद्धा वसुंधरा ॥ अस्मिन्स्थाने पुरं रम्यं नानारत्नविभूपितम् ॥ १ ॥ अर्द्धयोजनविस्तीर्णं प्रासादैरूपशोभितम् ॥ वासितं च ततः सर्वैर्महागंधैः सुगंधिनाम् ॥ २ ॥ इन्द्रनीलैर्महानीलैर्विस्फुरत्तन्महापथम् ॥ मौक्तिकैश्चन्द्रकांतैश्च वैदूर्य्यमणिभिश्चितम् ॥ ३ ॥ इन्द्रजाल

शिवजी बोले आगे सुवर्णसे आच्छादित भूमि देखपडी, इस स्थानमें अति रमणीक नगरथा जो अनेक प्रकारके रत्नोंसे शोभितहै॥१॥और आधे योजन भर चौडा और भवनोंसे शोभायमानहै वहां बडे २ सुगंधित वृक्षोंकी सुगंधिसे सब लोक सुगंधित होगये ॥ २ ॥ इन्द्रनील और महानील, मणियोंसे वह मार्ग प्रकाशित होताथा, और मोतियोंसे, तथा चंद्रकांता, और वैदूर्य मणियोंसे शोभित था ॥ ३ ॥ रत्नजटित जालोंसे शोभायमान, तथा चित्र कर्मसे शोभित

परिक्षिप्तं चित्रकर्मोपशोभितम् ॥ रम्यं मनोहरं दिव्यं चन्द्रादित्यसमप्रभम् ॥ ४ ॥ उत्तुंगशिखराकारं दीपमालाविभूषितम् ॥ तत्र स्थाने महादिव्यो बहुगंधादिवासितः ॥ ५ ॥ नानारत्नसमाकीर्णः प्रासादस्तत्र शोभते ॥ तस्य मध्ये महारम्यं गतास्ते सर्वसाधकाः ॥ ६ ॥ ब्रह्मणा स्थापितं लिंगं तत्र देवो महेश्वरः॥ साधकाश्च गतास्तत्र नमस्कृत्य जगद्गुरुम् ॥ ७ ॥ स्वर्गस्थानं गताः सर्वे ह्यागता गणकोटयः ॥ गंधर्वाश्च गताः सर्वे अर्चयित्वा पृथक्पृथक् ॥ ८ ॥ पूजां कृत्वा ततः सेन स्वर्गे ता गणकन्यकाः ॥ भेरीमृदंगशब्देन शंखकाहलमर्दलैः ॥ ९ ॥ वीणातालमहाशब्दैर्वादनैर्विविधैरपि॥घंटादुंदुभिनिर्घोषैरप्सरोनृत्यगायनैः ॥ १० ॥ प्रेक्षणं च प्रकुर्वंति लिंगस्य पुरतः स्थिताः ॥ मधुरस्वरगंधर्वा गीतं कुर्वन्ति योषितः ॥ ११ ॥ आगता दह्यमाने च तथा च हरिचन्दने ॥ पठंति विविधं स्तोत्रं मुनयो देवसंयुताः ॥ १२ ॥ आरार्त्तिकं प्रकुर्वाणाः कर्प्पूरेण समन्विताः ॥

अतिरम्य मनोहर दिव्य चन्द्रमा और सूर्यकी समान कान्तिवान् था ॥ ४ ॥ ऊंचे २ शिखरोंपर दीपक समुदाय रक्खेथे । उस स्थानपर अधिक सुगंधित द्रव्योंसे सुगंध आतीथी ॥ ५ ॥ और अनेक रत्नोंसे जटित मकान शोभायमानथे, उस नगरके मध्यमें वे संपूर्ण साधक गये ॥ ६ ॥ जहां ब्रह्माजीने महेश्वरदेवका लिंग स्थापित कियाथा साधकोंने वहां जाकर जगत् गुरु शिवको नमस्कार किया ॥ ७ ॥ तहाँ कोटिगण स्वर्गस्थानमें प्राप्त हुए हैं और गंधर्वभी पृथक् २ शिवका पूजन करके चले गए ॥ ८ ॥ हे स्वामिकार्तिकेय स्वर्गलोकमें वहगण और कन्या पंच कृत पूजाको करके भेरी, मृदंग, शंख आदिकको कोलाहलके शब्दों सहित स्थितथी ॥ ९ ॥ वीणा आदि अनेक बाजे बजते थे और घंटा डमरूके शब्दोंसे सहित अप्सराएं नृत्य करती थीं ॥ १० ॥ शिवलिंगके आगे, स्थित होकर अवलोकन करतीहुई गंधर्वस्त्रियां मधुरवाणीसे गान करतीथीं ॥ ११ ॥ और अगर कर्पूर जलाकर चंदन चढा, देवतों सहित मुनिगण अनेक प्रकारके स्तोत्र पढतेहैं ॥ १२ ॥ और कर्पूरकी आर्ती करतेहैं, उस

तस्मिन्स्थाने महातीर्थे धर्मकर्मसमागमः ॥ १३ ॥ गुरूपदेश-
मार्गेण पूजयित्वा महेश्वरम् ॥ स्तोत्रमंत्रैर्महादेवं वेदसिद्धान्त-
मध्यगैः ॥ १४ ॥ तस्मिन्स्थाने महातीर्थे निवसेचैकरात्रकम् ॥
आचार्यसाधकाः सर्वे निद्रावशमुपागताः ॥ १५ ॥ अर्द्धरात्रे
भवेन्निद्रा स्थाने तस्मिन्महाबुधेः ॥ स्वप्ने च दृश्यते तत्र रुद्रदेवो
महेश्वरः ॥ १६ ॥ जटामुकुटधारी च चंद्रार्द्धकृतशेखरः ॥ नी-
लकंठो वृषारूढशूलपाणिर्महाबलः ॥ १७ ॥ त्रिनेत्रो दशहस्तश्च
भस्मगात्रविलेपनः ॥ सिद्धवाक्यं वदेत्तत्र सिद्धाश्चैवोपदेशिनः ॥
॥ १८ ॥ देवस्य पश्चिमे भागे तिष्ठंति फलिता द्रुमाः ॥ तत्फलै-
रानताः शाखाः कूष्मांडसदृशैर्भुवि ॥ १९ ॥ कूष्मांडफलरूपेण
त्वमृतं तत्र तिष्ठति ॥ आचार्यसाधकाः सर्वेऽप्यागत्य द्रुमसान्नि-
धिम् ॥ २० ॥ गृहीत्वा फलमेकैकं गताश्चैव शिवालयम् ॥
पंचैते साधकास्तत्र पूजयित्वा महेश्वरम् ॥ २१ ॥ फलं चार्द्धं
च नैवेद्यमर्धभक्षणमेव च ॥ स्वप्ने चैवं समाख्याता पुनर्निद्रा

महातीर्थ स्थान पर बडे धर्म कर्म होतेहैं ॥ १३ ॥ और गुरुके उपदेश किये मार्गके द्वारा शिवको पूज, तथा वेदके सिद्धान्तोंके अनुकूल स्तोत्र मंत्रोंसे अर्च-ना करके ॥ १४ ॥ उस महातीर्थपर एक रात जागरण कर फिर संपूर्ण आचार्य साधक निद्राके वशीभूत हुए ॥ १५ ॥ आधीरातके विषय जब संपूर्ण साधकोंको निद्रा आगई, उस समय महेश्वरदेव स्वममें दीखे ॥ १६ ॥ जो जटा मुकुट धारण किये थे, और मस्तक पर आधा चन्द्रमा विराजताथा, नीलकंठ नाँदिये (बैल) परचढे त्रिशूल हाथमें लिये थे ॥ १७ ॥ तीन नेत्र और दशहाथ भस्म शरीरमें लगीहुई थी, तब सिद्धोंसे वाक्य बोले और उनको उपदेशदिया ॥ १८ ॥ इन शिवदेवके पश्चिम भागमें फलित हुए वृक्ष लग रहे थे, कुम्हडा (गोलकद्द) के समान फलोंसे वृक्ष झुकरहेथे ॥ १९ ॥ कूष्मांड फलके रुपमें अमृत स्थित था, संपूर्ण आचार्य साधक उन वृक्षोंके समीप आए ॥ २० ॥ और एक २ फल ग्रहण, करके शिवालयको गये यह पांचो साधक महेश्वर देवको पूजकर ॥ २१ ॥ आधा-फल और नैवेद्य देवताको चढाया तथा आधा भक्षण किया इस प्रकार स्वम देख

हि तद्गता ॥ २२ ॥ विबुधा विस्मयं गत्वा मुखं पश्यंति सत्व-
रम् ॥ साधका विस्मयं जग्मुः स्वप्ने दृष्ट्वा महेश्वरम् ॥ २३ ॥
आचार्य उवाच ॥ ॥ मयोक्तं हि पूर्वमिदं शास्त्रं सर्वत्र दर्शनम् ॥
अद्य वै प्रकटेद्यत्र दृश्यते च महेश्वरः ॥ २४ ॥ तत्र दृष्ट्वा महा-
देवं हर्षं यांति मुहुर्मुहुः ॥ अद्य मे सफलं जन्म चाद्य मे सफलं
तपः ॥ २५ ॥ अद्य मे सफलं जाप्यं यदि दृष्टो महेश्वरः ॥ श्री-
श्वर उवाच॥भो भोः सिद्धा महाभागा तुष्टो वो हि त्रिलोचनः ॥
॥ २६ ॥ गुरुभक्तिप्रभावेण मार्गं पश्यंति सत्वरम् ॥ तस्य
तद्वचनं श्रुत्वापृच्छंस्ते सर्वसाधकाः ॥ २७ ॥ आचार्य साधका
सर्वे क्षणमेकं च तिष्ठतं ॥ दृश्यते च पुरं श्रेष्ठं नातिदीर्घं न ह्र-
स्वकम् ॥२८॥सुपक्वामृतगंधं च फलं कांचनसन्निभम् ॥ गृहीत्वा
फलमेकैकं गताश्चैव शिवालयम् ॥ २९ ॥ स्नात्वा भक्त्या
च ते सिद्धाः पूजयित्वा महेश्वरम् ॥ अर्द्धं च शिवनैवेद्यमर्द्धभक्ष-
णमाचरन् ॥ ३० ॥ फलभक्षणमात्रेण मूर्छां गच्छंति साधकाः

फिर वे सब निद्रासे छूटे ॥ २२ ॥ वे पंडितलोग विस्मय को प्राप्तहोकर मुखोंको देखते हुए साधक गण स्वप्न देखकर विस्मयको प्राप्त हुए ॥ २३ ॥ आचार्य बोला मैंने पहलेही शास्त्रमें सुनायाथा कि, दर्शन होगा। आज शिव देवने प्रकट होकर दर्शन दिया ॥ २४ ॥ उस समय महादेवको देखकर वे लोग वारंवार हर्षको प्राप्त हुए और कहा आज हमारा जन्म और तप सफल हुआ ॥ २५ ॥ आज हमारा जप महेश्वरके दर्शनसे सिद्ध हुआ। ईश्वर बोले, हे सिद्धो ! तुमसे त्रिलोचन शिव संतुष्ट हुए ॥ २६ ॥ गुरुभक्तिके प्रतापसे शीघ्र सुमार्गको देखते हैं उनका यह वचन सुनकर संपूर्ण साधक पूंछने लगे ॥ २७ ॥ क्षणमात्र उन आचार्य साधकोंके स्थित होनेपर एक नगर जो न बहुत बडा न बहुत छोटा ॥ ॥ २८ ॥ जो सुन्दर २ पके हुए फल और सुगंधसे शोभायमान और सुवर्णके समान देदीप्यमान था तहां से प्रत्येक साधक एक २ फलको ग्रहण करके शिवके स्थानको गए॥२९॥और उन्होंने स्नान करके शिवका पूजन किया,आधा२फल शिवको चढ़ाया आधा स्वयम् भोजन किया॥३०॥फलके भक्षण मात्रसे साधक विस्मय

तावत्तिष्ठंति ते सिद्धा यावद्गोदोहमात्रकम् ॥३१॥ चिंतकाः स्थितिमात्रेण स्मरंति परमेश्वरम् ॥ सर्वव्याधिविनिर्मुक्ता जरामृत्युविवर्जिताः ॥ ३२ ॥ दिव्यदेहा महाकाया मलगंधविवर्जिताः॥ अशेषवेदवक्तारः सर्वशास्त्रविशारदाः ॥ ३३ ॥ देवद्विजप्रसादेन गुरुधर्मबलेन च ॥ भवंति साधकास्तत्र रुद्रतुल्यपराक्रमाः ॥ ॥ ३४ ॥ बहुज्ञानात्ततः सिद्धा जाता जातिस्मरा ध्रुवम् ॥ पश्यंति साधकाः सर्वे स्वर्गं मृत्युं रसातलम् ॥ ३५ ॥ महावीरा महावेगा महाबलपराक्रमाः ॥ रूपवंतो महातेजा जायंते तत्र साधकाः ॥ ३६ ॥ पश्यंति गगने रम्ये कैलासशिखरालयम् ॥ सर्वे पुरीं प्रपश्यंति आचार्यः साधकाश्च ये ॥ ३७ ॥ दिव्यचक्षुर्भवेत्तेषां दीर्घदृष्टिस्ततो भवेत् ॥ इच्छया कुर्वते सृष्टिमिच्छया घ्नंति ते जगत् ॥ ३८ ॥ त्रीनपीमान्पुनर्लोकान्कुर्वंते ते च लीलया ॥ सहस्रं योजनं गत्वा पुनरायन्ति ते ध्रुवम् ॥ २९ ॥ नवकोटिगजानां च बलं प्राप्य दिवं गताः ॥ तेषां संख्या न कर्त्तं-

(मूर्छा)को प्राप्त हुए और गोदोहन(क्षण)मात्र वे इस दशामें रहे॥३१॥ फिर सचेत होकर परमेश्वरको स्मरण करने लगे और सब व्याधि और जरामरण से रहित हुए ॥ ३२ ॥ दिव्य देह को धारण कर जो मल दुर्गंधसे रहितहैं चारों वेदके कहनेवाले तथा संपूर्ण शास्त्रोंमें निपुण हुए ॥ ३३ ॥ देवता और ब्राह्मणोंके प्रसादसे तथा गुरुभक्तिके बलसे तहांपर वे साधक शिवके समान पराक्रमी होगये ॥ ३४ ॥ तब उन सिद्धोंको अधिक ज्ञानसे जातिका स्मरण होगया और सब साधकोंने स्वर्गमृत्यु रसातलको देखा ॥ ३५ ॥ वे चंड शूर वीर तथा महातेजस्वी; पराक्रमी, और सुन्दर रूपवाले साधक हैं ॥ ३६ ॥ रम्य आकाशसे शिखरों सहित कैलास पर्वतको और संपूर्ण पुरोंको देखतेहैं ॥ ३७ ॥ उनके दिव्यनेत्र होतेहैं और दीर्घदृष्टि होतीहै,अपनी इच्छासे सृष्टि कर सकते हैं तथा इच्छासेही हरण करसकते हैं ॥ ३८ ॥ क्षणमात्रमें तीनों लोकोंमें भ्रमण करसकतेहैं और सहस्रों योजन जा करके फिर आसकतेहैं ॥ ३९ ॥ नौ करोड हाथियोंका बल पाकर स्वर्गको प्राप्त

१ धारन्त यमाः॥ ।

व्या देवदानवराक्षसैः ॥ ४० ॥ स्वर्गं मृत्युं च पातालं लंघेरन्गोष्पदं यथा ॥ एवं देहे बलं तेषां सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ ४१ ॥ तत्र ते साधकाः सर्वे भवंतु ह्यजरामराः ॥ सिद्धाचार्यसमायुक्ता आत्मानं शोधयंति हि ॥ ४२ ॥ मनुष्यजन्मसंभूता स्थितास्ते-नरकार्णवे ॥ विहायैतन्महाशास्त्रं महामार्गं भयानकैः ॥ ४३ ॥ न पश्यंति परं दिव्यमंधास्ते ज्ञानमोहिताः ॥ अनेनैव च देहेन स्वर्गो यैर्नाधिगम्यते ॥४४ ॥ ये वदंति च आचार्यः सिद्धाश्च विस्मयं गताः॥तत्र ते साधकाः सर्वे गतास्ते चोत्तरां दिशम्॥४५॥

इति श्रीकेदारकल्पे विख्यातपुराणे श्रीश्वरकार्त्तिकेय संवादे पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शने सदेहकैलासगमने स्वप्ने शंकरप्राप्तिः प्रत्यक्ष दर्शनञ्च नाम विंशः पटलः ॥२०॥श्लोकाः॥५९७॥

होतेहैं उनके पराक्रमकी देवता तथा दैत्य, गणना नहीं करसकते ॥ ४० ॥ स्वर्ग मृत्यु तथा पाताल लोकको गोपदकी समान उल्लंघन करसकते हैं इस प्रकार उन के देहमें बल होताहै ॥४१॥ और वहांपर वे सब साधक अजर अमर होतेहैं सिद्ध और आचार्यों सहित अपनी आत्माको पवित्र करतेहैं ॥ ४२ ॥ मनुष्य जन्मकी स्थिति नरकार्णवमें हैं जो महाशास्त्र तथा महापंथ कल्पको नहीं पढतेहैं ॥ ४३ ॥ वे दिव्यमार्गको नहीं देखते वे अंधे हैं और अज्ञानसे मोहित हैं, इसही देहसे जो स्वर्गको नहीं जातेहैं ॥ ४४ ॥ वे अज्ञानीहैं यह वचन सुनकर वे आचार्य सिद्ध विस्मयको प्राप्त हुए तब वे साधक उत्तर दिशाको गमन करने लगे ॥ ४५ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे शिवपार्वतीसंवादे भाषाटीकायां विंशः पटलः ॥ २० ॥

एकविंशः पटलः ।

श्रीश्वर उवाच॥ॐकृत्वा शिवनमस्कारं सर्वज्ञाने विचक्षणाः॥पुरा पश्यंति ते सिद्धा नदीं पुलिनगामिनीम् ॥१॥ व्रजंति स्वर्गभवनं

शिवजी बोले उन सिद्धोंने शिवको नमस्कार करके आगे नदी देखी जो पुलिनवाली ॥ १ ॥ और दशयोजन विस्तारवाली अतिरमणीक और मनोहर थी,

प्राप्य वेगमनुत्तमम्॥शोभते विमलं नीरं दृश्यते च मनोरमम्॥२॥
सरस्वती महाभागा पवित्रं पुरमुत्तमम्॥तस्य मध्ये निरीक्ष्यास-
न्परमानंदमास्थिताः॥३॥ बहूनि पद्मपत्राणि परीतानि समंततः॥
तृप्तिं ते साधका यांति महागंधसुगंधिभिः ॥४॥ आनन्दतोपिताः
सिद्धाः परं निर्वाणमास्थिताः॥महानद्यास्सरस्वत्याः सिद्धास्तीर-
मुपेत्य ते ॥ ५ ॥ दृष्ट्वा ते चोत्तमां शोभां हर्षं यांति पुनः पुनः॥
दशयोजनविस्तीर्णा अतिरम्या मनोहरा ॥६॥ लहरीतुंगगंभीरा-
नेकावर्त्तसमाकुला ॥ मणिरत्नसमाकीर्णा पुष्पाकारा सुवालुका
॥ ७ ॥ शंखमुक्तासमायुक्ता हंससारसशोभिता ॥ चक्रवाकयुगो-
पेता मत्स्यकूर्मसमाकुला ॥८॥ कर्पूरगंधवत्तोयमतिस्वादु सुशी-
तलम् ॥ अनेकपुष्पसौगंधपद्मनीलोत्पलैरपि ॥ ९ ॥ अप्सरो-
देवगंधर्वविद्याधरवरस्त्रियः ॥ जलक्रीडार्थमागत्य पूजयंति सदा-
शिवम् ॥ १० ॥ एवं पश्यंति ते सिद्धाश्चंद्रवेगां सरस्वतीम् ॥ तत्र

और उसमें निर्मल जल शोभायमान होरहा था ॥ २ ॥ हे महाभाग ! उसका नाम सरस्वती नदी, और नगर बडा श्रेष्ठ था, उसके मध्यमें स्नान करके परम आनंदको प्राप्त हुए ॥ ३ ॥ उसमें अधिक कमलपत्र खिल रहे थे, साधक बडी सुगंधियोंसे संतुष्ट ॥ ४ ॥ और आनंदसे पूर्ण वे सिद्ध बडी शान्तिको प्राप्त हुए और महानदी सरस्वतीके तीरपर जाकर ॥ ५ ॥ बडी शोभा देखी वारंवार हर्षको प्राप्त हुए। वह नदी दशयोजन विस्तृत थी, बडी मनोहर और रमणीय ॥ ६ ॥ लहर और तरंगों तथा तटोंसे संयुक्त मणि तथा रत्नोंसे शोभायमान और जिसकी वालू पुष्पोंकी समान थी ॥ ७ ॥ शंख और मोतियोंसे संयुक्त हंस और सारस पक्षियोंसे शोभित चकवोंसे वासित और मत्स्य कछुए इनसे भरी हुई थी ॥ ८ ॥ और जल कपूरकी समान सुगंधित और बडा स्वादिष्ट शीतल और अनेक प्रकारके पुष्पोंसे सुगंधित और रक्त कमल और नील कमलोंसे व्याप्त थी ॥ ९ ॥ और उसका तट अप्सरा देवता गंधर्वोंसे संयुक्त था, वे जलक्रीडाको करते और सदाशिवका पूजन करते थे ॥ १० ॥ इस प्रकार उन सिद्धोंने चन्द्रमाकी समान स्वच्छ और वेगवती सरस्वती नदीको देखा । हे महासेन ! उस महास्थानमें

स्थाने महासेन पंथाश्चैव न दृश्यते ॥ ११ ॥ गंधर्वाणां ध्वनिं श्रुत्वा सम्मुखे यांति साधकाः ॥ पश्यंति च महास्थानमतिरम्यं मनोहरम् ॥ १२ ॥ अत्युच्छ्रितं महादिव्यं शंकुपालपुरं महत् ॥ संप्राप्ताः साधकास्तत्र ह्यानंदो यत्र तिष्ठति ॥ १३ ॥ प्राकारैर्गोपुराद्यैश्च निर्मितं दिव्यकांचनैः ॥ प्रविस्फुरन्महारत्नैर्दिव्यजालैश्च शोभितम् ॥ १४ ॥ ध्वजमालाकुलं दिव्यं चित्रकर्मोपशोभितम् ॥ भेरीमृदंगशब्दैश्च शंखतूर्यसुवेणुकैः ॥ १५ ॥ शतैश्च शतपत्रैश्च लक्षकोटिभिरेव च ॥ एकविंशतिगुणोपेतो दृश्यते धवलो गृहः ॥ १६ ॥ नानापुष्पगणोपेता नानागंधमनोहरा ॥ देवतासंदृशी दिव्या नानारत्नविभूषिता ॥ १७ ॥ द्वादशादित्यतेजस्का मगलादपि मंगला ॥ पुरी रम्या महादिव्या तप्तकांचनसन्निभा ॥ १८ ॥ पीतरक्तसितश्यामनानावर्णक्रमेण च ॥ पंचवर्णपताकाश्च दृश्यंते पवनेरिताः ॥ १९ ॥ स्तंभा हेममयाः सर्वे सोमकांतिसमप्रभाः ॥ सपक्वफलसंपूर्णा नानाद्रुमसमाकुलाः २० ॥

मार्गभी नहीं देख पडता था ॥ ११ ॥ गंधर्वोंकी ध्वनिको सुनकर साधकगण उनके सन्मुख चले और उस स्थानको बडा रमणीक देखा ॥ १२ ॥ वह बडा सुन्दर दिव्य शंकुपाल पुर था । साधक लोग तहांपर प्राप्त हुए जहां वह आश्रम था ॥ १३ ॥ वह दिव्य सुवर्णकी दीवारोंसे और गोमहाल बना हुआ और बडे २ रत्नोंसे प्रकाशित तथा सुन्दर २ जालोंसे सुशोभित ॥ १४ ॥ पताका और मालासे व्याप्त सुन्दर चित्र कर्मोंसे शोभित और भेरी मृदंग शंख वेणु आदि बाजोंसे निनादित था ॥ १५ ॥ सैकडों तथा लक्ष कोटि कमलोंको इक्कीसगुना करनेसे जो हो इतने कमलोंसे युक्त स्वच्छ गृह दीख पडते थे ॥ १६ ॥ अनेक प्रकारके फूलोंसे और नाना प्रकारकी गंधोंसे मनोहर और देवताओंके समान, अनेक रत्नोंसे भूषित ॥ १७ ॥ बारह सूर्यके समान तेजयुक्त मंगलसे भी सुमंगल तप्त सुवर्णकी समान चमकीली वह मनोहर पुरी थी ॥ १८ ॥ और श्वेत लाल पीली श्याम तथा अनेक वर्णक क्रमसे छैप्रकारके वर्णवाली पताकाओंसे जो पवनसे प्रेरित होती हुई शोभायमान थी ॥ १९ ॥ सुवर्णके खंभे जो चन्द्रमाकी समान कान्तिवाले.

चूतचंदनसंयुक्तं कदलीखंडमण्डितम् ॥ देवगंधर्वसंकीर्णं वंशवादित्रनादितम् ॥ २१ ॥ हेमरत्नसमायुक्तं प्रासादैश्च गृहैस्तथा ॥ शतयोजनविस्तीर्णं शंकुपालपुरं महत् ॥ २२ ॥ हेम्नैव रचिता भूमिरुद्यदर्कसमप्रभा ॥ इन्द्रनीलमहानीलैः पद्मरागैश्च शोभितः ॥ २३ ॥ अर्द्धयोजनविस्तीर्णः शंकुपालस्य मंडपः ॥ स्तंभा हेममयास्तत्र चन्द्रकांतिसमप्रभाः ॥ २४ ॥ विशेषेण च तिष्ठंति दीपमालासमाकुलाः ॥ रत्नमालासमायुक्तं पुष्पमालाभिरावृतम् ॥ २५ ॥ नानारत्नसमायुक्तं शोभितं धवलैर्गृहैः ॥ स्वस्तिकै रत्नपुंगैश्च कुंकुमैर्यक्षकर्दमैः ॥ २६ ॥ नित्योत्सवसमाकीर्णं द्वारे च गणशोभितम्॥ तस्य मध्ये महाश्रेष्ठं शंखपालं नृपोत्तमम् ॥ २७ ॥ सिंहासनानि दिव्यानि हेमरत्नमयानि च ॥ तत्र तिष्ठंति राजेन्द्रं शंखपालं नृपोत्तमम् ॥ २८ ॥ अप्सरोगणगंधर्वास्तिष्ठंति ह्यत्र नेकधा ॥ संप्राप्तास्साधकास्तत्र

और अनेक प्रकारके वृक्ष फलोंसे लद रहे थे ॥ २० ॥ आम तथा चंदनके वृक्षोंसे व्याप्त, केलोंके वृक्षोंसे शोभायमान, देवता और गंधर्वोंसे युक्त, बांसुरी आदि बाजोंसे शब्दायमान ॥ २१ ॥ सुवर्ण तथा रत्नजटित प्रासाद और गृहोंसे युक्त, वह शंकुपाल नगर सौयोजन विस्तारवाला है ॥ २२ ॥ और भूमी सुवर्णसे रचना कीहुई उदय हुए सूर्यकी समान कान्तिवाली है और इन्द्रनील तथा महानील पद्मराग मणियोंसे शोभायमान ॥ २३ ॥ शंकुपाल नगरका मंडप (घेरा) आधे योजन है, तहांपर सुवर्णके खंभे चन्द्रमाकी समान कान्तिमान हैं ॥ २४ ॥ और दीपकोंके समुदायसे व्याप्त, और रत्नमाला तथा फूलोंकी मालासे चारों ओर घिरे हुए ॥ २५ ॥ और अनेक प्रकारके रत्नोंसे जटित स्वच्छ घर शोभित होरहे हैं रत्नों और कुंकुम, केसर, तथा कस्तूरीसे पूर्ण हैं ॥ २६ ॥ नित्यके उत्सवोंसे शोभायमान, और द्वारपर गण विराजमान हैं, उसके मध्यमें महाश्रेष्ठ शंखपाल राजा है ॥ २७ ॥ और दिव्य सिंहासन सुवर्ण व रत्नोंसे जटित हैं उनके ऊपर राजर्षि शंखपाल विराजमान है ॥ २८ ॥ और तहां अप्सरागण गंधर्व आदि रहते हैं ॥

१ दर्शेति भाव. ।

ह्याश्रमो यत्र तिष्ठति ॥ २९ ॥ प्राकारैर्गोपुराट्टालैर्निर्मितं सर्वकांचनैः ॥ प्रस्फुरत्तन्महारत्नैर्वेष्टितं च पुरोत्तमैः ॥ ३० ॥ ध्वजमालाकुलोपेतं चित्रकर्मोपशोभितम् ॥ भेरीमृदंगशब्दैश्च शंखतूर्य्यरवान्वितम् ॥ ३१ ॥ दुंदुभ्युत्तालनिर्घोषैर्वंशवादित्रनादितम् ॥ तत्र स्थानं महादिव्यं गताः सर्वे च साधकाः ॥ ३२ ॥ तत्र तिष्ठंति वै कन्याः सर्वाभरणभूषिताः ॥ दिव्यवस्त्रपरीधाना दिव्यगंधानुलेपनाः ॥३३॥ शोभिताः शिरपुष्पैश्च तांबूलमुद्गिरंति च ॥ मृगाक्ष्यो हंसगामिन्यः कुंडलाभरणोज्ज्वलाः॥३४॥ संपूर्णचन्द्रवदना वदंत्यः कोकिलस्वरम् ॥ करकंकणसंयुक्ता हारकेयूरभूषिताः ॥ ३५ ॥ दिव्यदेहा महाकाया विद्युत्तेजःसमप्रभाः ॥ अशोकपल्लवा हस्ता रूपयौवनगर्विताः ॥ ३६ ॥ जानुबाहू तथा सेन कदलीस्तंभसन्निभौ॥कमलोदरसंपूर्णा रूपशोभायुताः स्त्रियः ॥ ३७ ॥ काश्चिद्गजसमारूढाः सर्वाः स्वच्छंदगा

साधक लोग वहां गए जहां आश्रम था ॥ २९ ॥ प्राकार, गोपुर और अट्टालोंसे जो सुवर्णके से बने थे और बडे रत्नोंसे प्रकाशित और घिरा हुआ था ॥ ३० ॥ पताका और मालाओंसे व्याप्त चित्र कर्म (चित्रकारी) से शोभायमान भेरी मृदंगके शब्द और शंखतोरईकी ध्वनिसे गुंजारता हुआ ॥ ३१ ॥ दुंदुभि तथा तालके और बांसुरीके बाजेसे शब्दायमान उस दिव्य स्थानमें साधक गये ॥३२॥ तहांपर संपूर्ण आभूषणोंसे भूषित कन्या स्थित हैं जो दिव्य वस्त्रोंको धारण किये हैं और दिव्य गंधको लेपन किये हैं ॥ ३३ ॥ सीस फूलोंसे शोभायमान हुई और तांबूलको चाबती हैं और मृगकी समान नेत्रवाली हंसकी समान गमनशील, कुंडल आभूषणोंसे उज्ज्वल ॥ ३४ ॥ पूर्ण चन्द्रमाके समान मुखारविन्दवाली कोयलके समान बोलतीं हाथमें कंकन पहने हार बाजूबंद धारण किये ॥ ३५ ॥ दिव्य देहवाली, बिजलीकी समान तेज और कान्तिवालीं अशोक वृक्षके कोमल पत्तोंके समान हाथवालीं, रूप और यौवनसे गर्वित हैं ॥ ३६ ॥ हे महासेन! जंघापर्यन्त लम्बायमान भुजावाली केलेके खंभके सदृश सुन्दर कमलके समान उदरवाली, पूर्ण शोभायुक्त स्त्रियां ॥ ३७ ॥ कोई हाथीपर चढ़ीं स्वतन्त्रता-

१ अदतलमानम् ।

मताः ॥ काश्चिद्विमानसंरूढाः काश्चिच्च शिविकाधिगाः ॥ ३८॥ मत्तमातंगगामिन्यः सर्वा यौवनगर्विताः ॥ ३९ ॥ इच्छावाहनमारूढा गच्छंति ललना गतिम् ॥ शंकुपालसुताः सर्वा रमंते च पठंति च ॥ ४० ॥ सुधांशुनिभवक्त्रास्ता रमंते प्रचरंति च ॥ वर्धमानलताकाराः पद्मनालभुजोपमाः ॥ ४१ ॥ नानाच्छंदा मदोन्मत्ताः पठंति पाठयंति च ॥ सर्वा लक्षणसंयुक्तास्तपंति च परं तपः ॥ ४२ ॥ आपगा चंचलाकारा पद्मनालैस्सकंटकैः ॥ क्षणं शुक्ला क्षणं कृष्णा क्षणं दर्पणसंनिभा ॥ ४३ ॥ शंखपाल सुताः सर्वाः कैर्मुखं चुम्बयन्ति ताः ॥ चन्द्रवेगातटश्चैव वहुपुष्पोपशोभितः ॥ ४४ ॥ तस्य मध्ये महावृक्षःसुवटो नाम नामतः ॥ तस्मिंस्तु दोलिता दोला घंटाचामरभूषिताः ॥ ४५ ॥ रत्नमुक्ताप्रवालैश्च कांचनै रचितालयाः ॥ हिंदोलयंति ताः कन्याः गायंति क्रीडयंति च ॥ ४६ ॥ फलपुष्पसमाकीर्णास्तस्य शाखा विलंविताः॥नानापुष्पसमाकीर्णः सुपक्वफलसंयुतः॥४७॥

पूर्वक गमन करनेवाली, कोई विमानपर चढ़ी कोई पालकीपर चढ़ी हुई थीं॥३८॥ सब गजगामिनी हाथीपर चढ़ी हुई ॥ ३९ ॥ तथा अपने इच्छानुकूल वाहनपर चढ़कर मनोहर गतिवाली, शंकुपालकी कन्या पढ़ती और रमण करती थीं ॥ ४० ॥ चंद्रमाकी समान मुखवाली, विचरती और रमण करती बढ़ती हुई बेलोंके समान लंबी कमलदंडी (भसींडा) के समान भुजावाली ॥ ४१ ॥ नाना प्रकारके छन्दोंको उन्मत्त होकर पढ़ती और पढ़ाती थीं, सब लक्षणोंसे लक्षित तपस्विनी तप करती थीं ॥ ४२ ॥ और चंचल आकारवाली नदी है जो कमल दंडी और कांटोंमें क्षणमात्रमें शुक्ल, क्षणमें कृष्णवरणकी तथा क्षणमें दर्पणकी समान स्वच्छ भान होती है ॥ ४३ ॥ शंखपालकी कन्यायें, किसके निमित्त दीजायें ? चन्द्रवेगा नदीके किनारे अधिक पुष्प शोभायमान हैं ॥ ४४ ॥ उसके मध्यमें एक सुवट नामक वृक्ष है, उस वृक्षमें आनन्दमय घंटा बजता है ॥४५ ॥ रत्न, मोती, मूंगा, मनि आदिसे मंदिर बना है, और वहां कन्या झूलतीं, गातीं, और क्रीड़ा करती हैं ॥ ४६ ॥ उस वृक्षकी शाखाएँ फल फूलोंसे झुकीं और

अर्द्धयोजनविस्तीर्णं उच्छ्रायो दशयोजनम् ॥ तस्य शाखाः प्रमाणैः स्वैर्गताश्चैव दिशो दश ॥ ४८ ॥ दिव्यवर्णो महाकायश्छाया तस्य सुशीतला॥रम्यो मनोहरो दिव्यश्चन्द्रादित्यसमप्रभः ॥ ४९ ॥ तत्र तिष्ठंति ताः कन्याः सर्वाभरणभूषिताः॥ पंचलक्षाश्च तिष्ठंति शंखपालसुतास्तथा ॥ ५० ॥ साधकाश्च गतास्तत्र यत्र तिष्ठति सा पुरी ॥ दृष्ट्वा ताश्च ततः कन्याः साधका विस्मयं गताः ॥ ५१ ॥ आगताः स्वागताः सिद्धाः कन्यास्तत्र वदंति च ॥ आचार्यसहितास्तत्र मूर्छां गच्छंति साधकाः ॥ ५२ ॥ कन्यकानां कृते चान्ते आचार्यसहितास्तु ते ॥ शंकुपालसुतानां च नित्यं यानैर्व्रजंति ते ॥ ५३ ॥ कन्याः सर्वे निरीक्ष्यैवमूचुराचार्यसाधकाः ॥ अमृतं तासु सरति शंखपालसुतासु च ॥ ५४ ॥ नखाग्रात्संरते नित्यं ह्यमृतं बहुशीतलम् ॥ कामयित्वा महासेन पतंति साधकोपरि ॥ ५५ ॥ क्षणं

लम्बायमान हैं। अनेक प्रकारके फूल और पके हुए फलोंसे युक्त हैं ॥ ४७ ॥ वह आधे योजन विस्तृत है और दश योजन ऊंचा है उसकी शाखाके प्रमाणसे मानों दशों दिशा आगई ॥ ४८ ॥ उसका दिव्य वरण और बडा शरीर है और छाया अतिशीतल है रम्य मनोहर दिव्य और चंद्रमा सूर्यके समान कान्तिवाला है ॥ ४९ ॥ तहांपर संपूर्ण आभूषणोंसे युक्त वहां कन्या विश्राम करती हैं, पांच लाख शंखपालकी सुता हैं ॥ ५० ॥ साधक वहां गए, जहां यह नगरी थी, तहां उसको और कन्याओंको देखकर विस्मयको प्राप्त हुए ॥ ५१ ॥ और वहां कन्या आगत स्वागतकर ईस प्रकार उन साधकोंसे कहती हैं आइये बैठिये ! उस समय साधक आचार्योंके सहित मूर्च्छाको प्राप्त हुए ॥ ५२ ॥ कन्याओंके समीप होनेपर वे साधक आचार्योंके सहित हाथको स्पर्श करते हुए ॥५३॥ कन्याओंने आचार्य सहित साधकोंसे संभाषण किया और शंखपालकी कन्याओंने अमृत छिडका ॥ ५४ ॥ नखोंके अग्रभागसे अतिशीतल अमृत टपकाया, हे महासेन ! तब वे कामनाकरके साधकोंके ऊपर गिरीं ॥ ५५ ॥ क्षणमात्र वहां उन कन्याओंने उनके

१ आत्मनेपदमार्षम् ।

तत्र च भाषंते संवादे सह साधकैः ॥ सिंहासनं महादिव्यं हेमरत्नविभूषितम् ॥ ५६ ॥ तत्र तिष्ठति चाचार्यः साधकैः परिवेष्टितः ॥ अर्घ्यं पाद्यं प्रकुर्व्वंति तेषां ताः कन्यकास्ततः ॥ ५७ ॥ करसंपुटितं कृत्वा कन्यास्तत्र वदंति च ॥ दिव्यवस्त्रपरीधाना दिव्यगंधानुलेपना ॥ ५८ ॥ दिव्यपुष्पशिरोवद्धा दिव्याभरणभूषिताः ॥ स्वागता भो महासिद्धाः क्षणमेकं च तिष्ठत ॥ ॥ ५९ ॥ साधुसाधु महाप्राज्ञा दर्शनं वोऽत्र दुर्लभम् ॥ कन्यका ऊचुः ॥ क्वागता भुवनात्सिद्धाः क्व स्थाने चैव गम्यते ॥ ६० ॥ एतद्ब्रूहि महाचार्य साधकैः परिवेष्टित ॥ सिद्धा ऊचुः ॥ कथयामि महायक्ष्यः शृणुतेदं वचो मम ॥ ६१ ॥ आगता मृत्युलोकाच्च गंतव्यं शंकरालये ॥ कन्यका ऊचुः ॥ पितास्माकं गतः सिद्धा वाटिकां पुष्पकारणात् ॥ ६२ ॥ क्षणार्द्धं स्थीयतां तावद्यावत्तातो न चाव्रजेत् ॥ ६३ ॥ यावद्वदंति ताः कन्याः शंखपालः समागतः ॥ जटामुकुटधारी च दिव्यदेहश्च मूर्त्तिमान् ॥ ६४ ॥ दिव्यवस्त्रपरीधानो दिव्यगंधानुलेपनः ॥

साथ संभाषण किया, और जो महादिव्य सुवर्णरत्नोंसे भूषित सिंहासन था॥५६॥ वहां साधक आचार्यो सहित बैठ गए तब उन कन्याओंने उनका अर्घ्यपाद्य किया ॥ ५७ ॥ और हाथ जोड कन्या उनसे बोलीं जो दिव्य वस्त्र और सुन्दर गंधसे लिप्त थीं ॥ ५८ ॥ सुन्दर सीस फूल धारण किये और सुन्दर गहने पहने थीं उस समय बोलीं हे सिद्धो !! क्षणमात्र यहां ठहरो ॥ ५९ ॥ हे महाबुद्धिमान ! आपका दर्शन बडा दुर्लभ है । कन्या बोलीं । हे सिद्धो ! कहांसे आए हो और कहांको जाते हो ? ॥ ६० ॥ हे आचार्यो ! सिद्धोंके सहित यह कहो। सिद्ध बोले। हम कहते हैं सुनो ॥ ६१ ॥ मृत्युलोकसे आये हैं और शंकरके स्थानको जाते हैं कन्या बोलीं हे सिद्धो !!! हमारा पिता फूल लेनेको बागमें गया है ॥ ६२ ॥ जबतक पिता नहीं आवे क्षणमात्र स्थित रहो ॥ ६३ ॥ जबही कन्या ऐसा कह रहीं थीं तभी उनका पिता शंखपाल आगया जो जटा मुकुट धारण किये हुआ, दिव्य देह और मूर्तिमान था ॥ ६४ ॥ और दिव्य वस्त्र धारण किये, सुगंध लिप-

१ दुष्पाभिरिति पाठः ।

दिव्यपुष्पशिरोबद्धो रूपवांश्च महानृपः ॥ ६५ ॥ महाराजेन तेनाथ दृष्टा वै पंचसाधकाः ॥ हृष्टपुष्टस्ततो भूत्वा राजा तानवदत्ततः ॥ ६६ ॥ साधकानां मुखं दृष्ट्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ अद्य मे सफलं जन्म चाद्य मे सफलं तपः ॥ ६७ ॥ अद्य मे सफलं राज्यमद्य मे सफलाः क्रियाः ॥ पुष्पकाण्डं ततस्त्यक्त्वा राजा तानभ्यवोचत ॥ ६८ ॥ शंखपाल उवाच ॥ पुष्पाणि शिवपूजायां समर्प्य च शिवालये ॥ कृताञ्जलिपुटो भूत्वा साधकांश्च नमस्यति ॥ ६९ ॥ क्वागता भुवनात्सिद्धाः क्व स्थाने चैव गम्यते ॥ ७० ॥ साधक उवाच ॥ कथयामि महाराज शृणु मे वचनं शुभम् ॥ आगता मृत्युलोकाच्च गंतव्यं शंकरालये ॥ ॥ ७१ ॥ राजोवाच ॥ अस्मिन्नेव पुरे रम्ये बहुकन्यासमाकुले ॥ पश्याचार्य इमाः कन्याः सर्वालंकारभूषिताः ॥ ७२ ॥ स्तनौ तालफलाकारौ सर्वास्ता मदविह्वलाः ॥ तिष्ठंति पंचलक्षा वै कन्यकाश्च ममालये ॥ ७३ ॥ क्रीडंतु कन्यकाः सार्द्धमाचार्य

टाये सुन्दर फूल सिरपर बांधे अतिरूपवान्था॥ ६५॥ तहांपर उसने पांचों साधकोंको देखा। प्रसन्न होकर राजा उनसे वचन बोला ॥ ६६ ॥ हे साधको !! आपके दर्शनसे सब पाप मुक्त होते हैं आपके दर्शनोंसे मेरा जन्म तथा तप सफल हुआ ॥ ६७ ॥ आज मेरा राज्य सफल हुआ और सब क्रिया सफल हुई, राजाने पुष्पसमूहको रखकर उनको प्रणाम किया ॥ ६८ ॥ शंखपाल बोला, (पुष्पोंको शिवपूजामें समर्पणकर) अंजलि बांधकर साधकोंको नमस्कार किया ॥ ६९ ॥ हे सिद्धो ! किस स्थानसे आये हो ? और किस स्थानमें जाते हो ? ॥७०॥ साधक बोले। हे महाराज ! हमारा वचन सुनो हम कहते हैं। मृत्युलोकसे आये हैं शंकरके मंदिरमें जाते हैं ॥ ७१ ॥ राजा बोला। इन रमणीक, कन्याओंसे पूर्ण नगरमें रहो। हे आचार्य ! इन संपूर्ण आभूषणोंसे शोभित कन्याओंको देखो ॥ ७२ ॥ स्तन तालके फलके समान हैं, और सब मदोन्मत्त पांचलाख कन्या हिमालयपर रहती हैं ॥ ७३ ॥ हे साधक आचार्यो ! इन कन्याओंके साथ क्रीडा करो हे महा-

साधकैरिह ॥ भुंजते विपुलान्भोगान्साधकाश्च महारथाः ॥
॥ ७४ ॥ साधक उवाच ॥ अस्मिन्नेव पुरे रम्ये कति वर्षाणि
जीवति ॥ पश्चाच्च कां गतिं गच्छेदिति नो वद सत्वरम् ॥ ७५ ॥
शंखपाल उवाच ॥ सहस्रत्रयकन्यानां दीयते च पृथक्पृथक ॥
संवत्सरसहस्रं च ह्यायुरत्र विधीयते ॥ ७६ ॥ भुक्त्वा च विपु-
लान्भोगान्मृत्युलोके हि गम्यते ॥ सर्वकामैः समृद्धे च जायंते
विपुले कुले ॥ ७७ ॥ सर्वे गुणगणोपेता राजानोऽपि भविष्यथ॥
चंद्रास्याश्च स्त्रियः प्राप्याभुंक्त भोगान्यथेप्सितान् ॥ ७८ ॥
धन्या माता पिता धन्यो धन्यो देशो नृपस्तथा ॥ धन्यो ग्रामः
पुरी धन्या चोत्पन्ना यत्र साधकाः॥७९॥ उत्थिता गमने सिद्धा-
स्त्वरंते च महापथम्॥तस्य तद्वचनं श्रुत्वा पुनश्चिंतांति साधकाः॥
॥ ८० ॥ साधका ऊचुः ॥ आचार्य वदनं पश्य प्रत्यक्षं चैव
दृश्यते ॥ किमत्र पांडुगात्राणि,कन्यानां च महामुने ॥ ८१ ॥
राजोवाच ॥ केतकीनां सुगंधेन लिप्तास्ताः पद्मरेणुभिः ॥
आनन्देनोच्चकैः कन्याः पद्मानां धूलिलेपनात् ॥ ८२ ॥

रथो ! अधिक भोगोंको भोगो ॥ ७४ ॥ साधक बोले इस नगरमें रहकर कितने वर्ष जीते हैं और पीछे किस गतिको पाते हैं ? यह शीघ्र कहो ॥ ७५ ॥ शंखपाल बोला पृथक २ तीन सहस्र कन्याओंके संहित यहां एक हजार वर्षको आयु दी जायगी ॥ ७६ ॥ और अत्यन्त भोगोंको भोगकर मृत्यु लोकमें प्राप्त होते हैं सब कामना पूर्ण होती हैं और उत्तमकुलमें जन्म होताहै ॥ ७७ ॥ और सब गुणोंसे अलंकृत राजा भी होता है । चन्द्रमाकी समान मुखवाली कन्या और लक्ष्मीको पाकर यथेप्सित भोगोंको अनुभव करो ॥ ७८ ॥ वे माता पिता धन्य हैं । धन्य वह देश और धन्य वह राजा तथा ग्राम देश धन्य है, जहांपर साधक उत्पन्नहुए॥७९॥ साधकोंने उठके महापथके जानेकी शीघ्रता करी, उनका यह वचन सुनकर साधक फिर विचार करने लगे ॥ ८० ॥ साधक बोले हे आचार्य ! देखो इन कन्याओंके शरीर पांडु (पीले) वरणके क्यों हैं ? जो प्रत्यक्ष दीखतेहैं ॥ ८१ ॥ राजा बोला केतकीके सुगंध सहित कमलकी धूलिके लिप्त होनेसे ॥ ८२ ॥

कामरागमपन्नाश्च तेन पांडुरतां गताः॥ अत्र स्थाने महावीरा भुं-
जंतु विपुलां श्रियम् ॥८३॥ साधका ऊचुः॥ शंखपाल महाराज
गंतव्यं शंकरालये॥ तेषां तद्वचनं श्रुत्वा भूयो वचनमब्रवीत् ॥
॥ ८४ ॥ राजोवाच॥ कथं भूयो न रोचंते कथं चैवात्र आगताः॥
मृत्युलोके महाभोगान्कथमेतान्ब्रवीमि वः ॥ ८५ ॥ नानाभोगा-
न्परित्यज्य मृत्युलोकादिहागताः ॥ नार्यश्च विविधाश्चापि
त्यक्ता यौवनगर्विताः ॥ ८६ ॥ मृत्युलोके महाभोगान्कथयामि
ततः शृणु ॥ शालिमुद्गघृतं क्षौद्रं पयोऽन्नं गुडशर्कराः ॥ ८७ ॥
चंदनादिमहाभोगाः केतकीराजचंपकाः ॥ जातयः शतपत्राणि
बकुलाः पाटलैस्सह ॥८८॥ मृत्युलोके महापीडा वायुवेगास्तु-
रंगमाः॥ गजो रथस्सुखं चेति पूर्णचंद्रमुखाः स्त्रियः ॥ ८९ ॥
मृगाक्ष्यो हंसगामिन्यः कुंडलाभरणोज्ज्वलाः ॥ करकंकणसंयुक्ता
हारकेयूरमेखलाः ॥ ९० ॥ संपूर्णनागलतिकाः कर्पूरेण सम-
न्विताः॥ इच्छाभोगाश्च सर्वेऽमी मृत्युलोके च साधकाः॥ ९१ ॥

कामराग अपने शरीरमें लगायाहै, इसकारण पांडुवरण होगया है सो हे महावीर! इस स्थानमें अधिक भोगोंको भोगो ॥ ८३ ॥ साधक बोले हे शंखपाल महाराज ! हम शंकरके स्थानको जायँग, इसप्रकार साधकोंका वचन सुन फिर वह ॥ ८४ ॥ राजा बोला, क्यों आप इच्छा नहीं करते ? और क्यों यहां प्राप्त हुए मृत्युलोकमें जो २ भोगहैं उनको तुमसे कहताहूं ॥ ८५ ॥ कि जो अनेक प्रकारके भोगोंको त्यागकर यहां आए और तुमने अनेक प्रकारकी यौवनवती स्त्रियां त्यागीं ॥ ८६ ॥ मृत्युलोकमें जो महाभोगहैं उनको तुमसे कहतेहैं सुनो ! धान, मूंग- घी, शहत, दुग्ध. शर्करा, ॥ ८७ ॥ चंदन, केतकी, राजचंपक, आदिके अनेक संभारहैं और कमलकेसर पाढल आदिके अनेक वृक्षोंमे शोभायमान ॥ ॥ ८८ ॥ मृत्युलोकमें पवनकी समान वेगवाले घोडे हाथी रथ और पूर्णचन्द्रमुखी स्त्रियोंका सुखहै ॥ ८९ ॥ जो मृगनयनी हंसगामिनी कुंडलआदि आभूषणों से शोभितहैं और हाथमें कंकणधारे हार और बाजूबंद मेखला (कौंधनी) पहरे ॥ ९० ॥ कर्पूरसहित पानको चावे हैं इस प्रकार मृत्युलोकमें संपूर्ण इच्छानुकूल

नानाफलसमाकीर्णो नानापुष्पसमाश्रितः कदलीफलसंयुक्तो नारिकेलैश्च चूतकैः ॥ ९२ ॥ नानावृक्षसमाकीर्णो नानापक्षिसमाकुलः ॥ मृत्युलोको महाचार्य साधनैः परिवेष्टितः ॥ ९३ ॥ भुंजतां साधकाः सर्वे स्वर्गतुल्यो न संशयः ॥ भुक्त्वा च विपुलान्भोगान्क्रीडंतश्च यथासुखम् ॥ ९४ ॥ साधका ऊचुः ॥ मृत्युलोके महादुःखं कथयामि ततः शृणु ॥ मातृपितृसुतानां च बांधवानां तथैव च ॥ ९५ ॥ वियोगेन महादुःखं तस्मात्स्थातुं न शक्यते ॥ गर्भवासभयाद्भीता राजन्नत्रागता वयम् ॥ ९६ ॥ संसारः स्वप्नमात्रश्च चलाः प्राणा धनं तथा ॥ चिन्ता बहुतरा तत्र क्षुधा तत्र पुनःपुनः ॥ ९७ ॥ एवं दुःखभयाद्भीता राजन्नत्रा गता वयम् ॥ एवंदुःखे महादुःखं मृत्युलोके व्यवस्थितम् ॥ ॥ ९८ ॥ कथयामि पुनर्दुःखं शृणु तत्तन्महानृप ॥ अष्टोत्तरशतं देहं व्याधयः पीडयन्ति हि ॥ ९९ ॥ सागरश्च जलैस्तद्वत्संसारो दुःखपूरितः ॥ सुखं तत्र न पश्यामि दुःखं तत्र दिनेदिने ॥ १०० ॥

भोगहैं ॥ ९१ ॥ अनेक प्रकारके फल लगेहैं नानाप्रकारके पुष्प लहलहातेहैं केलेके फल और नारियल तथा आम आदिसे संयुक्तहैं ॥ ९२ ॥ अनेक प्रकारके वृक्षोंसे तथा नाना प्रकारके पक्षियोंसे व्याप्तहैं। ऐसे मृत्युलोकमें साधकों सहित ॥ ९३ ॥ सब भोगोंको भोगो, कारण कि वह स्वर्गके तुल्यहै, इसमें कुछ संशय नहीं है, अधिक भोगोंको भोगके सुखपूर्वक क्रीडा करो ॥ ९४ ॥ साधक बोले। मृत्युलोकमें बडे दुखहैं, सुनो ! माता, पिता, पुत्र तथा भाइयोंके ॥ ९५ ॥ वियोगसे महादुःख होताहै इस कारण वहां स्थित होनेको हम समर्थ नहींहैं हे राजन्! गर्भमें रहनेके भयसे यहां आएहैं ॥ ९६ ॥ यह संसार स्वप्नमात्रहै। प्राण और धन नाशवानहैं, वहां अधिक चिन्ताहै और वारम्वार क्षुधा लगती है ॥ ९७ ॥ इस प्रकारके अनेक भयोंसे भीत हुए हम इस स्थानमें प्राप्त हुए हैं मृत्युलोकमें उपरोक्त दुखहैं ॥ ९८ ॥ हेराजन्! और मैं मृत्युलोकके दुःखवर्णन करता हूं कि शरीरके मध्यमें एकसौ आठ व्याधि (रोग) पीडा देतीहैं ॥ ९९ ॥ जिस प्रकार समुद्र जलसे पूर्ण है तैसेही संसार दुःखोंसे पूर्णहै, वह

तत्रैव विपुलान्भोगानायुर्हीनांश्च मानवान् ॥ इन्द्रजालमयं दृष्ट्वा संसारं सरितो यथा ॥ १०१ ॥ महादुःखं नृपश्रेष्ठ मया दृष्टं पुनःपुनः ॥ मृत्युलोके महादुःखं सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ ॥ १०२ ॥ अल्पं सुखं च संसारे पुनर्दुःखं गता वयम् ॥ प्रथमं गर्भमध्ये हि ऊर्द्ध्वपादमधोमुखम् ॥ १०३ ॥ द्वितीयं जन्मकाले च महादुःखं प्रवर्त्तते ॥ तृतीयं यौवने दुःखं कामांधा मदविह्वलाः ॥ १०४ ॥ पश्चाद्दुःखं महादुःखजर्जरीकृतदेहिनाम् ॥ तत्र संकुचितं गात्रं जरया पांडुरं वपुः ॥ १०५ ॥ पुत्रदारास्तथा वंधुर्नैव कुर्वंति किंचन ॥ नासानेत्रजलश्रावा मुखे लाला च जायते ॥ १०६ ॥ अभ्रमध्ये च पश्यंति चंचलां विद्युतां गतिम्॥ क्षणं दृष्टा च नश्यंति तथा संसारिणो जनाः ॥ १०७ ॥ तस्मिन्काले महादुःखं पश्चाद्रूपं विनश्यति ॥ एवं दुःखभयाद्भीता राजन्नत्रागता वयम् ॥ १०८ ॥ अहं ते कथयिष्यामि पुनर्दुःखं महानृप ॥ शंखपाल महाराज श्रूयतां वचनं मम ॥ १०९ ॥

सुख कुछ नहीं प्रतिदिन दुःखकोही देखताहूं ॥ १०० ॥ वहां भोगतो अधिकहैं परन्तु मनुष्य आयुहीन हैं इन्द्रजालकी वनी हुई नदीके समान संसार है ॥ १०१ ॥ हे नृपश्रेष्ठ ! मैंने दुःख वारम्वार देखा सत्य २ कहताहूं कि-मृत्युलोक दुःखका सागरहै ॥ १०२ ॥ क्षणिक सुखवाले संसारमें फिर दुःखको प्राप्त हुए, पहले तो गर्भके वीचमें ऊपरको पैर और नीचको मुख किया ॥ १०३ ॥ दूसरे जन्मके समय वडा दुःख होताहै तीसरे युवा अवस्थामें दुःखको कामांध और मदसे विह्वल हुए भोगतेहैं ॥ १०४ ॥ पीछेसे वुढापेमें जव शरीर जर्जरीभूत होजाताहै तव महादुःख होताहै और उस अवस्थामें सव शरीर सुकड और पांडुवरणका होताहै ॥ १०५ ॥ पुत्र स्त्री वांधवगण कुछभी नहीं करसकते, नासिका नेत्र मुखमेंसे जल टपकताहै ॥ १०६ ॥ जैसे मेघोंके वीच विजली चंचल दिखाई पड़तीहै, क्षणमात्रमें नहीं दीखती इसी प्रकार संसारी मनुष्य हैं ॥ १०७॥ उस जीवनके समय महादुःख होताहै, पश्चात् रूपभी नष्ट होताहै, हे राजन् ! इस प्रकारके दुःखोंसे डरे हुए हम यहां आयेहैं ॥ १०८ ॥ हे शंखपाल ! मैं और

यथा हि कूपमध्ये च घटमाला भ्रमंति च॥ गमागमौ हि पश्यामि तद्वत्संसारिणो जनाः॥११०॥जले च बुद्बुदो यद्वत्तद्वत्संसारिणो जनाः॥मया दृष्टा महाराज सत्यं सत्यं वदाम्यहम्॥१११॥निमग्नो जलमध्ये तु प्राप्तस्तत्र रसातलम् ॥ संसारेषु तथा लोका भयं दृष्ट्वा पुनःपुनः ॥ ११२॥ स्वकर्म्मणा समायुक्ताः पुनर्गर्भे पतंति च ॥ तेन दुःखभयाद्भीताः श्रूयतां वचनं मम ॥ ११३ ॥ गिरेश्च शिखरे यद्वन्निर्मलं वर्षते जलम् ॥ मोघं चैव हितं तोयं तथा संसारिणो जनाः ॥ ११४ ॥ लोचने च महाराज निमेषपरिपूरिते ॥ मया दृष्टा महाराज तद्वत्संसारिणो जनाः ॥ ११५ ॥ चपलं सर्वसंसारमहं दृष्ट्वा पुनः पुनः ॥ एवं दुःखभयाद्भीता राजन्नत्रागता वयम् ॥ ११६ ॥ संसारस्य महाघोरैर्महादुःखैः प्रपीडिताः ॥ महाकष्टं श्रिता राजंस्तस्मात्संसारिणो जनाः॥११७॥ तस्य तद्वचनं श्रुत्वा राजा वचनमब्रवीत् ॥ राजोवाच ॥ मंदिरं

भी बडे दुःखको वर्णन करताहूं मेरा वचन सुनो ॥ १०९ ॥ जिस प्रकार कूपके मध्यमें घटोंका समुदाय घूमताहै आना जाना सा दीख पडताहै तद्वत् संसारी मनुष्यहैं ॥ ११० ॥ और जलमें जैसे बुद्बुदे रहतेहैं तैसे संसारी मनुष्य क्षणभंगुर हैं ऐसा मैंने देखा सो सत्य २ कहताहूं ॥ १११ ॥ जैसे जलके मध्यमें गिरकर पातालको प्राप्त होताहै इसीप्रकार प्राणी संसारमें आकर बार २ दुःख (भय) देखताहै ॥ ११२॥ अपने कर्मके अनुसार फिर गर्भमें प्रविष्ट होतेहैं, वे दुःख और भयसे ग्रस्त होतेहैं यह मेरा वचन सुनो ॥ ११३ ॥ जैसे पर्वत शिखरपर वर्षामें निर्मलजल वर्षताहै परन्तु क्षणमें नहीं दीखता, इसी प्रकार संसारीजन हैं ॥ ११४ ॥ हे महाराज ! जैसे नेत्र एक क्षणमात्र पलक मारते हैं इस पलकके समान संसारियोंका जीवनहै ॥ ११५ ॥ यह सब जगत् चलायमानहै ऐसा मैंने बारम्बार देखाहै, हे राजन इस दुःखके भयसे भीतहुए हम इस स्थानपर आएहैं ॥ ११६ ॥ संसारके महाघोर दुःखसे दुखीहुओंका महाकष्ट सुनो ॥ ११७ ॥ उसका ऐसा वचन सुनकर राजा बोला, मेरा मंदिर देखो फिर

१ [illegible]

मम द्रष्टव्यं यथेच्छसि तथा कुरु ॥ ११८ ॥ शंखपालेन सहिता गतास्ते नृपमन्दिरम् ॥ आचार्य्यसहिताः कन्या वदंति च परस्परम् ॥ ११९ ॥ सिद्धा ऊचुः ॥ क्व माता क्व पिता वोऽद्य भ्रातरो वः क्व च प्रियाः ॥ कामिन्यो ब्रूत तत्सर्वं यत्पृच्छामो वयं च वः॥१२०॥कन्यका ऊचुः॥वयं च कथयिष्यामो मद्वचः शृणुतादरात् ॥ शंखपालसुताः सिद्धा दोलिते दोलितास्तथा ॥ ॥ १२१ ॥ कथयिष्यामहे वो वै शृणुतेमानि वचांसि नः ॥ शंखपालसुता एता बलाढ्या मदविह्वलाः ॥ १२२ ॥ सिद्धा ऊचुः ॥ कामिन्यस्तत्त्वतो वाक्यं शृणुत ब्रूमहे वयम् ॥ शंखपालस्य राजर्षेः कथ्यंते कति पुत्रिकाः ॥ १२३ ॥ कन्यका ऊचुः ॥ पंचलक्षैकपुत्रीणां सप्तलक्षैकपुत्रकाः ॥ अर्द्धलक्षैक नारीणामेवं सिद्धाः कुटुंवता ॥ १२४ ॥ सिद्धा ऊचुः ॥ ॥ रथाश्च कति तिष्ठंति कति संति तुरंगमाः॥ गजाश्च कति तिष्ठंति कति योधाश्च भृत्यकाः ॥ १२५ ॥ कन्यका ऊचुः ॥ ॥ दश कोटिगजाश्चैव षोडशकोटितुरंगमाः ॥ त्रिंशत्कोटी रथानां च पद्मकोटिश्च भृत्यकाः ॥ १२६ ॥ सिद्धा ऊचुः ॥ ॥ रोचते

जैसी इच्छा हो वैसा करना ॥ ११८ ॥ फिर सब साधक शंखपालके साथ उसके मंदिरको गये, तब आचार्यसहित कन्या आपसमें संभाषण करती हुई ॥ ॥ ११९ ॥ सिद्ध बोले हे प्रिये! तुम्हारे माता और पिता तथा भाई कहां गयेहैं हे कामिनी! यह सत्य २ कहो ॥ १२० ॥ कन्या बोलीं हे महातप! हे सिद्धो! सुनो हम कहतीहैं। कि हम सब शंखपालकी पुत्री झूलेमें झूलनेवालीहैं ॥ १२१॥ हे महामते! हे महातप ! सुनो यह सब कन्या पूर्वकर्मसे मदमें मोहित हुई ॥ १२२ ॥ सिद्ध बोले हे कामिनियो! सुनो हम कहतेहैं कि शंखपाल राजर्षिके कितनी पुत्रीहैं ॥ १२३ ॥ कन्या बोलीं पांच लाखपुत्र, सातलाख पुत्री और आधे लाख स्त्रियांहैं इसप्रकार राजाका कुटुम्बहै ॥ १२४ ॥ सिद्ध बोले रथ और कितने घोडेहैं?कितने हाथी कितने योद्धा और कितने नौकरहैं?॥१२५॥कन्याबोलीं बारह करोड़ हाथी सोरह करोड़ घोडे तीस करोड़ रथ पद्मकोटि भृत्यहैं॥१२६॥सिद्धबोले

नात्र वै स्थाने वासो नो मृगलोचनाः ॥ अनेकव्यसनोपेते नानाभोगसमाकुले ॥ नानाविचित्रचित्राढये नानावस्त्र-सुवासिते ॥ १२७ ॥ मृत्युलोके यदि पुनर्गतव्यं च महानृप ॥ अस्मभ्यं रोचते नेदं यदि भोगा ह्यनेकधा ॥ १२८ ॥ राजोवाच न रोचंते यदा भोगा रोचंते न च कन्यकाः ॥ गच्छगच्छ महा-मार्गं साधकैः परिवेष्टित ॥ १२९ ॥ अद्य मे सफलं जन्म चाद्य मे सफलं तपः ॥ अद्य मे सफलं राज्यं मया दृष्टाश्च साधकाः ॥ १३० ॥ अद्य मे सफलं कर्म चाद्य मे सफलाः क्रियाः अद्य मे सफलं सेवा मया दृष्टाश्च साधकाः ॥ १३१ ॥ अद्य मे सफला भूमिरद्य मे सर्वसाधनम् ॥ तत्रैवं साधकाः सर्वे गतास्ते चोत्तरां दिशम् ॥ १३२ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे विख्यातपुराणे श्रीश्वरकार्त्तिकेय संवादे-पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शने सदेहकैलासगमने शंखपालराजपुरी-वर्णनं नामैकविंशः पटलः ॥ २१ ॥

इस अनेक भोगोंसे व्याप्त स्थानमें रहनेकी रुचि नहींहै, जो स्थान अनेक चित्रोंसे विचित्र और अनेक वस्त्रोंसे सुवासितहै ॥ १२७ ॥ हे महानृप ! यहांसे फिरभी मृत्युलोकमें प्राप्त होतेहैं इस कारण यह अनेक प्रकारके भोग नहीं रुचते ॥१२८॥ राजा बोला. यदि भोग तथा कन्या नहीं रुचती तो महापथ (शिवालय) को जाओ ॥ १२९ ॥ आज हमारा जन्म, तप, राज्य सब सफल हुआ, कि-जो आप साधकोंके दर्शन हुए ॥ १३० ॥ आज मेरा कर्मकांड, तथा सब क्रिया, सेवा आदि सब सफल हुई ॥ १३१ ॥ आज मेरी भूमि तथा हे साधको आज मेरा सब सफल हुआ, फिर वे साधक उत्तर दिशाकी ओरको गए ॥ १३२ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे शिवपार्वतीसंवादे भाषाटीकायामेकविंशः पटलः ॥ २१ ॥

द्वाविंशः पटलः ।

श्रीश्वर उवाच ॥ ॥ ॐ तस्मात्ते साधकाः सर्वे गताश्चैवोत्तरामुखम् ॥ अग्रतो दृश्यते तत्र ह्यप्रमादो महागिरिः ॥ १ ॥ अप्रमादपुरो दृश्यो ज्ञानाह्वः पर्वतोत्तमः ॥ पर्वतद्वयमध्ये च क्षीराब्धिसदृशप्रभः ॥ २ ॥ अप्रमादस्य सोपानो हेमरत्नविभूषितः ॥ तदा तेनैव मार्गेण गंतव्यं साधकैः सह ॥ ॥ ३ ॥ तस्य शृंगे परा रम्या अतिदिव्या मनोरमाः ॥ शतयोजनविस्तीर्णा बालार्कसदृशप्रभाः ॥ ४ ॥ प्रतोलीद्वारसंयुक्ता हेमप्राकारवेष्टिताः ॥ तत्र गच्छंति मार्गे च साधकाः सत्वरं ततः ॥ ५ ॥ प्रासादगृहसंकीर्णास्तरणैरुपशोभिताः ॥ हेम्ना विरचिता भूम्यो वह्निज्वाला समप्रभाः ॥ ६ ॥ पुष्पप्रकरसंपूर्णं चित्रकर्मोपशोभितम् ॥ अर्द्धयोजनविस्तीर्णं मंदिरे तत्र मण्डपम् ॥७॥ सिंहासनानि दिव्यानि रत्नैश्च जटितानि च ॥ तत्र तिष्ठति राजेन्द्रः श्रुतपालो महानृपः ॥ ८ ॥ सर्वलक्षणसंपूर्णो महाबल-

वे साधक उस स्थानसे उत्तर दिशाको गए। वहां सन्मुख अप्रमादनामक बडा पर्वत देख पड़ा॥१॥उसके आगे ऊंचे उत्तुंग शृंगवाला ज्ञान पर्वतदीखा,और दोनों पर्वतोंके मध्यमें बडा क्षीर सागरथा ॥२॥ अप्रमाद पर्वतके सोपान(सीढ़ीयों)पर सुवर्ण और रत्न जड़े हुए थे उस समय उस मार्गसे साधकोंके सहित आचार्य चले ॥ ३ ॥ उस शिखरके ऊपर परम मनोहर दिव्य और सौ योजन विस्तीर्णवाले सूर्यकी समान कान्तिवाली ॥ ४ ॥ प्रतोली और द्वारसे संयुक्त सुवर्णके प्रकार (परकोटे) से घिरी हुई नगरी देखी वहां साधक शीघ्र गये ॥ ५ ॥ वह प्रासाद और घरोंसे व्याप्तथी और वन्दरवालोंसे शोभायमान और सुवर्णसे रचित भूमि और अग्निकी लपटकी समान कान्तियी ॥ ६ ॥ फलोंके परकोटे और चित्रकर्मसे शोभित और उसका मंडप आधे योजन विस्तार वालाथा ॥ ७ ॥ और दिव्य सिंहासन रत्नजटितथे, उनपर राजेन्द्र श्रुतपाल विराजमान था ॥ ॥ ८ ॥ जो संपूर्ण लक्षणोंसे सुन्दर और महाबली पराक्रमी था, और प्रकाशमान

पराक्रमः ॥ दीप्तदेहा महाकन्या दिव्याभरणभूषिताः ॥ ९ ॥ दिव्यवस्त्रपरीधाना दिव्यगंधानुलेपनाः ॥ संपूर्णचन्द्रवदनाः सर्वालंकारभूषिताः ॥ १० ॥ साधकाश्च गतास्तत्र दृष्ट्वा वै नृपमन्दिरे ॥ साधकैः सह चाचार्यमालिंगंति परस्परम् ॥ ११ ॥ राजोवाच ॥ आगता भवनात्कस्मात्क स्थाने चैव गच्छत॥ सत्यं ब्रूत महासिद्धा ममाग्रे कार्यविस्तरम् ॥ ॥ १२ ॥ सिद्धा ऊचुः ॥ शृणु राजन्मद्वाक्यं वृत्तांतः कथयिष्यते ॥ आगता मृत्युलोकाच्च गंतव्यः शंकरालयः॥ १३ ॥ राजोवाच ॥ पृथिव्यां च रुचिर्नैव किमर्थं चागतः प्रभो ॥ सत्यं ब्रूहि महाचार्य साधकैः परिवेष्टित ॥ १४ ॥ सिद्ध उवाच ॥ संसारः स्वप्नसदृशो ह्यपारो दुःखसागरः ॥ महादुःखतरो राजञ्छोकचिन्ताप्रपीडितः ॥ १५ ॥ जननीगर्भमध्ये च महादुःखं प्रवर्त्तते ॥ भोक्तव्यो नरको घोरो महादुःखेन पीडितैः ॥ १६ ॥ गर्भाग्निज्वालया दग्धैर्मलज्वालादिभिर्नवैः ॥ भोक्तव्यं च महा-

शरीर महाकन्यायें सुन्दर आभूषणोंसे भूषित॥९॥ सुन्दर वस्त्र पहने दिव्य सुगंध लगाए पूर्ण चन्द्रमाकी समान मुखवाली सब गहनोंसे अलंकृतथीं ॥ १० ॥ उस राजाके मंदिरको देख कर साधक लोग वहां गए तब साधकों सहित आचार्यको परस्पर आलिंगन करती हुईं ॥ ११ ॥ राजा बोला हे सिद्धो ! कहांसे आतेहो और कहांको जाओगे ? यह विस्तारपूर्वक मेरे आगे कहो ॥ १२ ॥ सिद्ध बोले हे राजन् ! सुनो सब वृत्तान्त कहतेहैं हम मृत्यु लोकसे आए और शंकरके मंदिरको जाते हैं ॥ १३ ॥ राजा बोला हे प्रभो ! पृथ्वीपर तुम्हारी रुचि नहीं है ? क्या किसलिये आएहो ? हे आचार्यो ! साधकों सहित सत्य २ कहो ॥ १४ ॥ सिद्ध बोले संसारतो स्वप्न मात्रहै और अपार दुःखोंका सागरहै हे राजन् !संसारी मनुष्य महादुःखी और शोक चिन्तासे पीडितहैं ॥ १५ ॥ माताके गर्भके मध्यमें बडा दुःखहै मनुष्य बडे दुःखोंसे पीडित हुए घोर नरकको भोगतेहैं ॥ १६ ॥ गर्भरूप अग्निसे तथा मलरूप अग्निसे महा कष्ट भोगना होता है और अति दुःख

१ अस्माभिरिति शेषः ।

कष्टमतिदुःखं प्रवर्त्तते ॥ १७ ॥ पश्चादुत्पद्यते भूमौ महाप्रसव-
वेदना ॥ काले तस्मिन्न जानंति सुखं दुखं च ते जनाः ॥ १८ ॥
तुच्छमायुर्मनुष्याणामर्द्धं गृह्णाति शर्वरी ॥ तस्यार्द्धं च वियोगेन
शेषं बालं च यौवनम् ॥ १९ ॥ एतद्दुःखभयाद्भीता राजन्नत्रा-
गता वयम् ॥ मृत्युलोके महादुःखं सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥२०॥
इन्द्रजालं यथा स्वप्नः संसारश्च तथा नृप ॥ विह्वलः सर्वसंसारो
ह्यतिकष्टेन पीडितः ॥ २१ ॥ मायामोहमहालोभतृष्णाव्याकुल-
चेतसः ॥ कुर्वते मनुजाः कर्म दैवोपहतबुद्धयः ॥चपलः सर्वसंसारो
मया दृष्टः पुनःपुनः ॥ २२ ॥ चपलं च धनं तत्र चपलं तत्र
यौवनम् ॥ स्वजनैर्भृत्यवर्गैश्च धनैर्हीनं च मंदिरम् ॥ २३ ॥
एतत्सर्वं मया दृष्टं चपलं च महानृप ॥ अतिकष्टं च संसारे
महानरकपूरिते ॥ २४ ॥ एतद्दुःखभयाद्भीता राजन्नत्रागता
वयम् ॥ पितृबन्धून्परित्यज्य स्वजनानि च नैकधा ॥ २५ ॥
पुत्रदारास्तथा सर्वे त्यक्त्वा ह्यत्रागता वयम् ॥ वैभवं धनराज्ये
च भूमिं वैडूर्यमौक्तिकान् ॥२६॥ सर्वस्वं च मया त्यक्तं नाना-

होताहै ॥ १७ ॥ पश्चात् भूमिपर उत्पत्तिकी पीडा उत्पन्न होतीहै, उस समय वे मनुष्य सुख और दुःखको नहीं जानतेहैं ॥ १८ ॥ प्रथमतो मनुष्योंकी आयुही कितनीहै ? आधी रात्रि ग्रहण करतीहै उसकी आधी वियोगसे शेष बालक और जवान अवस्थामें व्यय होतीहै ॥ १९ ॥ हे राजन् ! इस दुःख भयसे डरे हुए हम यहांपर आएहैं मृत्युलोकमें महा कष्टहै यह सत्य २ कहतेहैं ॥ २० ॥ हे नृप ! जैसे इन्द्रजाल और स्वप्नहै उसी प्रकार यह संसारहै, संपूर्ण संसारी विह्वलहैं और अति कष्टसे पीडित होतेहैं ॥ २१ ॥ माया, मोह, लोभ, और तृष्णा, में मनुष्य फँस जातेहैं यह सब संसार चंचलहै, ऐसा बार २ देखा ॥ २२ ॥ उसमें धन और यौवन चपलहै, कुटुम्बीलोग नौकर भाई मकान ॥ २३ ॥ हे राजन् ! यह सब चंचलहै और बडे नरकोंसे पूर्ण इस संसारमें अति कष्टहै ॥ २४ ॥ इस भयसे डरे हम यहां आए और पिता बंधु स्वजन आदि ॥ २५ ॥ पुत्र स्त्रियोंको त्याग कर यहां आएहैं ऐश्वर्य धन राज्य मणि वैडूर्य मोतीरो ॥ २६ ॥ हे राजन् !

देशो महानृप ॥ गजाश्वाश्वरथास्तत्र तिष्ठंति च गृहे मम ॥ ॥ २७ ॥ उष्ट्रश्च वाहनं चैव शुभं शिविकया सह ॥ तिष्ठंति मंदिरे सर्वैर्गंतव्यो हि शिवालयः ॥ २८ ॥ सर्वमेतत्परित्यज्य राज्यं चैव मनोरमम् ॥ चलं सर्वं तथा दृष्ट्वा तस्मादत्रा गता वयम् ॥ २९ ॥ एतद्दुःखं च संसारे श्रूयतां वचनं मम ॥ तत्र तिष्ठति रम्यं च यत्र देवो महेश्वरः ॥ ३० ॥ तत्र स्थाने महासेन विमानेन गता बहु ॥ आगताश्च सुरास्तत्र विमानैश्च मनोरमैः ॥ ३१ ॥ आरूढाश्च सुराः सर्वे वामाश्चैव समागताः ॥ तथैवाप्सरसो दिव्या देवगंधर्वयोषितः ॥ ३२ ॥ सुरेन्द्रसहितास्सर्वे देवाश्चैव समागताः ॥ आगताश्च ततः सर्वा रंभाद्याः सकलाः स्त्रियः ॥ ३३ ॥ देवता दिव्यकन्याश्च सर्वभूषणभूषिताः ॥ आगताश्च तथा सिद्धाः वाद्यंते च ह्यनेकधा ॥ ३४ ॥ इन्द्र उवाच ॥ साधुसाधु महाप्राज्ञ आचार्य साधकैः सह॥ विमानैश्च शतैर्वीराः शिवलोके च गच्छत ॥ ३५ ॥ अहं च प्रेषितः सिद्धा ब्रह्मविष्णुमहेश्वरैः ॥ युष्मासु तुष्टो देवेश उमासहित-

नाना प्रकारके देश आदि सबही हमने छोंड, हाथी घोडा रथ आदि सब मेरे घरपर स्थितहैं, ॥ २७ ॥ ऊंट, वाहन, सुखीन, पालकी, आदि सब मेरे घर स्थितहैं, सबको त्याग शंकरके आलयको जातेहैं ॥ २८ और मनोहर राज्यभी त्यागाहै हे राजन् ! यह सब हमने चपल देखा, इस कारण इस स्थानमें प्राप्त हुए हैं ॥ २९ ॥ यह अनेक प्रकारके दुःखहैं संसारमें, हम तहांपर स्थित होंगे जहां महेश्वर देवहैं ॥ ३० ॥ हे महासेन ! उस समय वहां पर बहुतसे देवता मनोहर विमानोंपर चढे हुए आए ॥ ३१ ॥ सब देवता और स्त्रियां तथा अप्सरा और देवता गंधर्वोंकी स्त्रियां आईं ॥ ३२ ॥ इन्द्रसहित संपूर्ण देवता और रंभा मेनका आदि समस्त अप्सरा प्राप्तहुईं ॥ ३३ ॥ देवता और सुन्दरी कन्या संपूर्ण आभूषणोंसे शोभायमान थीं और सिद्ध भी आए थे तथा अनेक प्रकारके बाजे बजतेथे ॥ ३४ ॥ इन्द्रबोले, हे महाप्राज्ञ ! हे साधु हे साधु ! आप साधकों सहित विमानों द्वारा शिव लोकमें चलिये ॥ ३५ ॥ हे सिद्धो ! हमको ब्रह्माविष्णु और

शंकरः ॥ ३६ ॥ उत्थाय गम्यतां सिद्धा गंतव्यः शंकरालयः ॥ विमानसहितास्तत्र आगताः स्युरनेकधा ॥ ३७ ॥ शंखदुंदुभिनिर्घोषैः काहलैर्भेरिमर्दलैः ॥ पटहैर्वेणुवंशैश्च वादयंति ह्यनेकधा ॥ ३८ ॥ आगताश्च ततः कन्या रूपयौवनगर्विताः ॥ संपूर्णचन्द्रवदना वदंत्यः कोकिलस्वरम् ॥ ३९ ॥ मृगाक्ष्यो हंसगामिन्यः कुंडलाभरणोज्ज्वलाः ॥ विद्युत्तेजोनिभाः सर्वा नूपुरारावसंकुलाः ॥ ४० ॥ दिव्यवस्त्रपरीधाना दिव्यगंधविलेपनाः ॥ शिरस्सुशोभिताः पुष्पैर्नागवल्लीविभूषिताः ॥ ४१ ॥ स्वर्णकंकणसंयुक्ता हारकेयूरभूषिताः ॥ सर्वलक्षणसंपूर्णाभानुबिंबसमप्रभाः ॥ ४२ ॥ कन्यकासहिता देवा विमानारूढसंपदः ॥ चामरैर्वीज्यमानाश्च च्छत्रैरुपरि शोभिताः ॥ ४३ ॥ इन्द्रस्य वचनं श्रुत्वा आचार्यो वदते तदा ॥ आचार्य उवाच ॥ शृणु राजन्वचः शक्र एकचित्तो व्यवस्थितः ॥ न रोचते विमानं मे

महेश्वरने भेजाहै क्योंकि पार्वती समेत शिवजी बडे सन्तुष्टहैं॥ ३६ ॥ हे सिद्धो ! उठो शंकरके स्थानको चलो अनेक प्रकारके विमानोंपर चढे हुए देवता आए ॥ ॥ ३७ ॥ शंख, दुन्दुभिका कोलाहल भेरी मृदंगके शब्द तथा पटह, वेणु, बाँसुरी आदि अनेक प्रकारके बाजे बज रहेथे ॥ ३८ ॥ तत्पश्चात् रूपवती यौवनवाली कन्यां आई जो पूर्ण चन्द्रमाके समान मुख वाली थीं, और कोयलकी समान स्वरसे बोलतीथीं ॥ ३९ ॥ मृगकी समान नेत्र, और हंसके समान चालवाली, कुंडल,आभूषणोंसे प्रकाशित, बिजलीकी समान कान्तिवाली, पायजेबोंको धारण किये थीं ॥ ४० ॥ सुन्दर वस्त्र पहने और सुगंध लिपटाये सीसफूलोंसे शोभायमान पान चाबे हुए ॥ ४१ ॥ हाथमें कंगन धारे, हार, बाजूबंद, पहरे सब लक्षणोंसे श्रेष्ठ सूर्यकी किरणोंके समान कान्तिवाली थीं ॥ ४२ ॥ कन्याओंके सहित देवता विमानोंपर चढके आए जिनके चौर ढुर रहेथे ऊपर छत्र लगेथे ॥ ४३ ॥ तब इन्द्रका वचन सुन आचार्यने कहा आचार्य बोले, हेमहाशक्र ! हेमहाराज !

---

१ इत्यार्षः । २ आत्मनेपदमार्षम् ।

सत्यंसत्यं वदाम्यहम्॥४४॥विमाना नैव रोचंते गुरुधर्मबलेन च॥ अहं चात्रागतो देवालं विमानैर्न संशयः ॥ ४५ ॥ शंकरस्य प्रसादेन विमानं नैव रोचते ॥ विमानैर्न च मे कार्यं शृणु शक्र महाप्रभो ॥ ४६ ॥ विमानं च नमस्कृत्य आचार्यः साधकैः सह ॥ गतानि च विमानानि यत्र ब्रह्मा हरो हरिः ॥ ४७ ॥ श्रुतपाल उवाच ॥ ॥ शृणु साधक तत्त्वेन मम वाक्यं तु निश्चितम् ॥ अस्मिन्स्थाने महारम्ये भुंक्ष्वभोगान्यथेप्सितान् ॥ ४८ ॥ साधक उवाच[1] ॥ मह्यं भोगा न रोचंते राज्यं च विपुलं धनम् ॥ यत्र स्थाने महादेव उमासहितशंकरः ॥ ४९ ॥ तत्र स्थाने महाराज गंतव्यं साधकैः सह ॥ भोगल्लोभो न मे राजल्लोभः शंकरदर्शने ॥ ५० ॥ आगताश्च ततः कन्याः श्रुतपालस्य वै सुताः ॥ सर्वारूढविमानाश्च गजैश्चैव रथैस्तथा ॥ ५१ ॥ रूपयौवनसंपूर्णाः सर्वाभरणभूपिताः ॥ भूतिमत्यः प्रधानाश्च कन्या लक्ष्मीसमप्रभाः॥५२॥ सर्वा लक्षणसंयुक्ताः सकामा मदविह्वलाः॥

एकाग्र चित्तहो सुनो हमें विमान नहीं रुचता, आपसे सत्य २ कहतेहैं ॥ ४४ ॥ हम सब शिवके प्रसादसे तथा गुरुभक्तिके बलसे यहांतक आए कुछ विमानको नहीं आएहैं ॥ ४५ ॥ शिवके प्रसादसे विमान नहीं रुचता, हे महाप्रभो ! हे शक्र ! मुझे विमानसे कुछ कार्य नहींहै ॥ ४६ ॥ आचार्य और साधकोंने विमानको नमस्कार किया विमान वहां गए जहांपर ब्रह्मा शिव विष्णु थे ॥ ४७ ॥ श्रुतपाल बोला हे साधक ! मेरे वचनको यथार्थसे सुनो कि इस स्थानपर रहकर यथेच्छा भोगोंको भोगो ॥ ४८ ॥ साधक बोले हमको भोग राज्य और अधिक धन नहीं रुचता, जिस स्थानमें पार्वती सहित शंकरहैं॥ ४९॥ हे राजन् ! उस स्थानको साधकों सहित जानाहै हे राजन् ! भोगका लोभ मुझे कुछ नहींहै, केवल शंकरका दर्शन करनाहै ॥ ५० ॥ तब श्रुतपालकी कन्या विमान रथ हाथियों पर चढी हुई आई ॥५१॥ जो रूप और यौवन तथा आभूषणोंसे सजी हुईथीं और समृद्धिवती साक्षात् लक्ष्मीके सदृश थीं ॥ ५२ ॥ और सुन्दर लक्षणोंसे

[1] भुंक्ष्व भोगान्यथासुखम् । इति वा पाठः ।

ईदृश्यश्चागताः कन्या मायिनामपि मोहिकाः ॥ ५३ ॥ कन्यका ऊचुः ॥ ॥ अस्मिन्स्थाने वरं लब्ध्वा भुंक्ष्व भोगान्यथेप्सितान् ॥ किं करिष्यति कैलासः किं करिष्यति शंकरः ॥ ५४ ॥ देवा अस्मान्वरिष्यंति ह्युमासहितशंकरम् ॥ किमर्थं वृण्वते सिद्धाः किमर्थं न सुखे रतिः ॥ ५५ ॥ रूपपात्रं ततः कन्याः पूर्णचन्द्रनिभाननाः ॥ दिव्यवस्त्रपरीधानाः सर्वाभरणभूषिताः ॥ ॥ ५६ ॥ पंचलक्षा महासेन श्रुतपालस्य वै सुताः ॥ दिव्यदेहा महाकाया महाबलपराक्रमाः ॥ ५७ ॥ राजोवाच ॥ ॥ अस्मिन्नेव पुरे रम्ये स्वर्गतुल्ये न संशयः ॥ इच्छ यां यां च साचार्य संवरिस्यति सत्वरम् ॥ ५८ ॥ इच्छावस्त्रपरीधाना दिव्यगंधानुलेपनाः ॥ अस्मिन्स्थाने महाभोगा ये भोगा देवदुर्लभाः ॥ ॥ ५९ ॥ आचार्य्य उवाच ॥ ॥ किमत्र भोग्यमायुष्यं कति कन्याः प्रदास्यसि ॥ पश्चात्र का गती राजन्सत्यं कथय सुव्रत ॥ ६० ॥ राजोवाच ॥ ॥ कन्याः पंचसहस्राणि दीयंते च पृथक्पृथक् ॥ संवत्सरायुतं सिद्धा आयुरत्र विधीयते ॥ ६१ ॥

परिपूर्ण कामना सहित और मदमें विह्वल थीं चन्द्रमाके समान और मायीकोभी मोहित करनेवाली थीं ॥ ५३ ॥ कन्या बोलीं हे वीरो ! इस स्थानपर निवास करके यथेच्छित भोगोंको भोगो कैलास, और शंकर क्या ? करेंगे ॥ ५४ ॥ हे देव ! हमको वरण करो पार्वती सहित शिवको किस अर्थ वरण करतेहो ? मनुष्य देहमें किस अर्थ प्रीतिहै ? ॥ ५५ ॥ रूपवती चन्द्रमुखी कन्या जो दिव्य वस्त्र धारण किये संपूर्ण आभूषणोंसे भूषितहैं ॥ ५६ ॥ हे महासेन ! पांच लाख श्रुतपालकी पुत्री सुन्दर शरीरवाली अति बलपराक्रमवालीहैं ॥ ५७ ॥ राजा बोला, इस स्वर्गतुल्य रमणीक पुरमें विमानपर चढकर जो इच्छाहो सो भोगो ॥ ॥ ५८ ॥ इच्छाके अनुसार वस्त्र बिछौने सुगंध आदि लगाओ । इस स्थानपर महा भोगोंको भोगो, जो देवताओंको भी दुर्लभहैं ॥ ५९ ॥ आचार्य बोले यहां पर कितना भोग और कितनी आयु, और पीछेसे क्या गति मिलतीहै ? सो सत्य २ कहो ॥ ६० ॥ राजा बोला, एक सहस्र कन्या पृथक् २ दी जांयगी और

भुक्त्वा च विपुलान्भोगान्मृत्युलोकं व्रजंति च ॥ सर्वकामसमृद्धे च जायंते विमले कुले ॥ ६२ ॥ चक्रवर्त्ती महाराजो भवेद्भूयो न संशयः ॥ मृत्युलोकान्महाप्राज्ञ पुनरायाति चात्र वै ॥ ॥ ६३ ॥ आचार्य उवाच ॥ मृत्युलोको यदि पुनर्गन्तव्यश्च मया नृप ॥ मृत्युलोकभयाद्भीता राजन्नत्रागता वयम् ॥ ६४ ॥ रोचते गर्भवासो न तस्माद्भोगा निरर्थकाः ॥ अवश्यं तत्र गंतव्यं यत्र ब्रह्मा हरो हरिः ॥ ६५ ॥ अस्मिन्नेव पुरे रम्ये रुचिर्नैव महानृपः प्रत्यक्षं यत्र दृश्यंते ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ ६६ ॥ अस्मिन्स्थाने न मे कार्यं राज्यं च विपुलं नृप ॥ मया च तत्र गंतव्यं यत्र देवो महेश्वरः ॥ ६७ ॥ पतिहीना च या नारी नासिकाहीनमास्यकम् ॥ शर्वरी चन्द्रहीना च रविहीनं दिनं यथा ॥ ६८ ॥ नृपहीनं यथा सैन्यं शिवहीनं पुरं तव ॥ तस्मान्न रोचतेऽस्माकं गमिष्यामो न संशयः ॥ ६९ ॥ राजोवाच ॥ ॥ यदा न रोचते

दश सहस्र वर्षकी अवस्था प्राप्त होगी ॥ ६१ ॥ और पूर्ण भोगोंको अनुभव करके फिर मृत्यु लोकमें जाना होगा सब कामनाओंसे पूर्ण और निर्मल कुलमें जन्म होगा ॥ ६२ ॥ और चक्रवर्ती महाराजा होतो इसमें कुछ संशय नहीं, और फिर मृत्युलोकसे यहां आना होगा ॥ ६३ ॥ आचार्य बोले हे महानृप ! यदि फिरभी मृत्युलोकमें जाना पडताहै तो हम मृत्युलोकके भयसे व्याकुल हुए यहां पर आएहैं ॥ ६४ ॥ गर्भमें निवास होना नहीं चाहते, इस कारण यह सारे भोग निरर्थकहैं, अवश्य वहां जायगे जहांपर साक्षात् ब्रह्मा, शिव, विष्णुहैं ॥ ६५ ॥ हे महानृप ! इस नगरमें रहनेकी रुचि नहींहैं तहांकी इच्छाहै जहां ब्रह्मा, विष्णु महेश्वर प्रत्यक्ष दीखते हैं ॥ ६६ ॥ हे राजन् ! इस स्थानमें अधिक राज्यसे मुझे कुछ काम नहीं है, मुझे तो तहांपर जाना है जहांपर महेश्वर देव विराजमान हैं ॥ ६७ ॥ जैसे पति हीन स्त्री, विना नासिकाके मुख, चन्द्रमाके विना रात्रि सूर्यके विना दिन है ॥ ६८ ॥ और जैसे विना राजाके सेना है उसी प्रकार शिवके विना तुम्हारा पुर है इस कारण हमें नहीं रुचता इससे अब हम जाते हैं ॥६९॥ राजा बोला हे सिद्धो ! यदि नहीं रुचता तो क्षण मानतो यहां ठहरो जबतक

सिद्धाः क्षणमेकं च तिष्ठत ॥ अपूर्णता भवेत्तावद्यावद्रव्यसमागमः ॥ ७० ॥ क्षीरं दधि मधु द्राक्षाममृतं ये पिबंति च ॥ क्षणमात्र च ते धीरा मूर्छां गच्छंति साधकाः ॥ ७१ ॥ पश्चाच्च साधकाः सर्वे रुद्रतुल्यपराक्रमाः ॥ चतुर्वेदप्रवक्तारः सर्वशास्त्रविशारदाः ॥ ७२ ॥ यदा न रोचते राज्यं देवकन्यास्तथैव च ॥ गच्छगच्छ महासत्त्व यत्र देवो महेश्वरः ॥ ७३ ॥ व्रजंति साधकाः सव चोत्तरस्यां दिशि स्वयम् ॥ ७४ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे विख्यातपुराणे श्रीश्वरकार्त्तिकेयसंवादे पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शने सदेहकैलासगमने श्रुतपालराजपुरीवर्णनं नाम द्वाविंशः पटलः ॥ २२ ॥

भोज्य पदार्थ पूर्ण होत हैं तबतक ठहरा ॥ ७० ॥ तब दूध, दही, शहत, अमृत उन साधकोंने पिया और क्षण मात्रमें वे मूर्छाको प्राप्त हुए ॥ ७१ ॥ पश्चात् वे साधक शिवके तुल्य पराक्रमी हुए और चारों वेदके वक्ता तथा संपूर्ण शास्त्रोंमें विचक्षण हुए ॥ ७२ ॥ राजाने कहा कि यदि राज्य और कन्या नहीं रुचतीं तो हे महासत्त्व ! आप वहां जांय जहां देवताओंके स्वामी महेश्वर उपस्थितहैं ॥७३॥ फिर संपूर्ण साधक उत्तर दिशाको चल दिये ॥ ७४ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे शिवपार्वतीसंवादे भापाटीकायां द्वाविंशःपटलः ॥ २२ ॥

त्रयोविंशः पटलः ।

श्रीश्वर उवाच ॥ ॐ अप्रमादस्य सोपान उत्तीर्य गम्यते ततः ॥ अग्रतो दृश्यते तत्र चंद्रादित्यसमप्रभः ॥ १ ॥ साधकाश्च महा-

श्री ईश्वर वाले तब वे अप्रमाद पर्वतको उतर कर गए तो आगे चन्द्रमा तथा सूर्यके समान प्रकाशमान दिशा दीखी॥१॥वे महा पराक्रमी साधक प्रमाद रहित हो उत्तरकी ओर चले वहां अप्रमाद पर्वतकी सीढ़ियां सुवर्ण और रत्नोंसे

सत्वा गतास्ते उत्तरामुखम् ॥ अप्रमादस्य सोपाने हेमरत्नविभू-
षिते॥ २ ॥ ज्वलंत्यः पद्मरागैश्च वैदूर्यमणिरश्मिभिः॥ चंद्रकांत-
शिलास्तत्र भानुबिंबसमप्रभाः ॥ ३ ॥ महागिरिर्महाशृंगो
ह्यतिरम्यो मनोहरः॥ दिव्यवृक्षैर्महातेजा दृश्यते च दिशो दश
॥ ४ ॥ अप्रमादो गिरिश्रेष्ठ उत्तीर्य गम्यते ततः ॥ अग्रतो दृश्यते
तत्र क्षीरोदसागरोपमः ॥ ५ ॥ शतयोजनविस्तीर्णस्तडागो वि-
पुलोमहान् ॥ सुवर्णपंकजाकीर्णो बहुपुष्पोपशोभितः ॥ ६ ॥
कुमुदोत्पलपद्मैश्च कल्हारैरुपशोभितः ॥ तडागो हेमसोपानैर्वेष्टि-
तश्च दिशो दश ॥ ७ ॥ सुवर्णकर्दमस्तत्र रेणुकांचनशोभितः ॥
इन्द्रनीलमहानीलैर्वैदूर्यमणिरश्मिभिः ॥ ८ ॥ तत्र वृक्षो महा-
दिव्यो हंससारसशोभितः ॥ तस्मिन्स्थाने महातीर्थे धर्मकर्म-
समागमे ॥ ९ ॥ पितॄणामुदकं दत्त्वा पिंडदानं तथैव च ॥ श्राद्धं
कृत्वा विधानेन ते च पंच पृथक्पृथक् ॥ १० ॥ अथ श्राद्धमंत्रः॥
ॐ हुं हुं क्षुं क्षुं रुं रुं हुं हुं ॐ एकोत्तरशतं चैव पितृवंशं समु-

जटित थीं ॥ २ ॥ पद्मराग मणि और वैदूर्य मणियोंकी किरणोंसे प्रकाशित थीं,
और शिलाएँ चन्द्रमाकी तथा सूर्यकी समान कान्तिवाली थीं ॥ ३ ॥ उस महा
पर्वतका शिखर अति रमणीक और मनोहर था, सुन्दर वृक्षोंवाली अति तेज-
युक्त उत्तर दिशा देखपड़ी ॥ ४ ॥ अप्रमाद पर्वतको लांघकर तहां गए, जहां
क्षीरसागरकी समान ॥ ५ ॥ सौ योजन विस्तारवाला बडा सरोवर था जो सुव-
र्णमय कमलोंसे व्याप्त बहुतसे पुष्पोंसे शोभायमान ॥ ६ ॥ बघूले रक्त कमल
नील कमलोंसे मूंगोंके समान देदीप्यमान थ उस सरोवरमें सुवर्णके सोपानोंसे
चारों ओर दशों दिशा घिर रही थीं ॥ ७ ॥ सुवर्णकी कीचड और सुवर्णकी
धूलि तहांपर शोभित थी, इन्द्रनील वैदूर्य महानील मणियोंकी कान्तिसे प्रका-
शित ॥ ८ ॥ और वहांपर बडे सुन्दर २ वृक्ष हंस सारस पक्षियोंसे शोभायमान
थे, उस महातीर्थके स्थानपै धर्म कर्म करनेवालोंका समागम था ॥ ९ ॥
पितरोंका जलदान और पिंडदान करके और विधान सहित श्राद्ध करके शिव
आदि पांचोंको पृथक् २ स्थापन करै ॥ १० ॥ यह श्राद्धका मंत्र है " ओं हुं हुं

द्धरेत् ॥ मातृपक्षेण संयुक्तं श्वश्रूपक्षं समुद्धरेत् ॥ ११ ॥ कल्पकोटिसहस्राणि कल्पकोटिशतानि च ॥ अत्र श्राद्धप्रभावेण पितृभ्यश्चाक्षया गतिः ॥ १२ ॥ साधकाः सह पित्रा च जल्पंति च परस्परम् ॥ प्रत्यक्षं तत्र दृश्यंते पितरोऽपि वदंति च ॥ १३ ॥ प्रसादात्तव भोः पुत्र ह्यक्षया च गतिर्मम ॥ तेन पुण्यप्रभावेण निर्विघ्नो भव पुत्रक ॥ १४ ॥ ब्रह्मणा स्थापितं लिंगं मध्ये पूर्वं महात्मनाम् ॥ शंखमुक्ताप्रवालैश्च हंससारसशोभितः ॥ १५ ॥ चक्रवाकयुगोपेतो मत्स्यकूर्म्मैश्च संश्रितः ॥ कर्पूरगंधवत्तोयाऽमृतस्वादुः सुशीतलः ॥ १६ ॥ दुग्धं दधि घृतं क्षौद्रममृतं खंडशर्कराः ॥ एतैस्तु पूरितो नित्यं क्षीरोदसागरोपमः ॥ १७॥ सहस्रस्तंभविन्यस्तः प्रासादश्चित्रवेष्टितः ॥ ध्वजमालाकुलो दिव्यश्चित्रकर्मोपशोभितः ॥ १८ ॥ गयाकोटिगुणं पुण्यं तत्पुण्यं क्षीरसागरे ॥ प्रत्यक्षं तत्र दृश्यंते पितरोऽपि वदंति च ॥ १९ ॥

क्षुं क्षुं रु रु हुं हुं" इसके करनेसे एकसौएक पिताका वंश उद्धार होता है माताके वंश सहित और सासके वंश सहित एकसौएक वंश उद्धारको प्राप्त होते हैं॥११॥ सहस्र कोटि कल्प तथा शतकोटिकल्प पर्यन्त इस श्राद्धके प्रभावसे पितरोंकी अक्षयगति होती है ॥ १२ ॥ और साधकोंके साथ पितर आपसमें संभाषण करते हैं तहांपर पितर प्रत्यक्ष बोलते दीखते हैं ॥ १३ ॥ हे पुत्रो ! तुम्हारे प्रसादसे हमारी अक्षय गति हुई; हे पुत्र ! इस पुण्यके प्रभावसे निर्विघ्न होओ॥१४॥ प्रथम महात्मा ब्रह्माने इसके मध्यमें शिवलिंग स्थापन किया था, वह शंख मोती मूंगे आदि हंस सारस आदिसे शोभित था ॥ १५ ॥ चकवाओंमें व्याप्त मत्स्य कछुए आदि जल जंतुओंसे सेवित और कर्पूरकी समान सुगंधित और स्वादिष्ट शीतल जलवाला है ॥ १६ ॥ दूध, दही, घी, मधु, अमृत, खंड, शर्करा, आदिसे पूरित, और क्षीर सागरकी समान है ॥ १७ ॥ और हजारों खंभोंसे युक्त चित्रकारियोंसे शोभित महलोंसे वेष्टित है और पताका मालाओंसे शोभायमान है ॥ १८ ॥ यहांपर कोटि गयाके समान पुण्य मिलता है और क्षीर सागरमें जो पुण्य है सो पुण्य मिलता है और यहां पितर प्रत्यक्ष संभाषण करते हैं ॥ १९ ॥

साधकाश्च गतास्तत्र सर्वे ते विस्मयं गताः ॥ स्तुतिं कुर्वंति देवस्य साधकाश्च पृथक्पृथक् ॥ २० ॥ अप्सरोयक्षगंधर्वा अर्चयंति ह्यनेकधा ॥ भेरीमृदंगशब्देन शंखतूर्यरवेण च ॥ २१ ॥ पटहैर्घोषशृंगैश्च मंजीरैस्तालनादितैः ॥ गीतं कुर्वंति गंधर्वा वीणां रणति सुन्दरी ॥ २२ ॥ विलिप्यंति च ते लिंगं कर्पूरागरुचंदनैः ॥ भवभक्त्या महासेन नमस्कृत्य पृथक्पृथक् ॥२३॥ अर्द्धरात्रे च ते देवं स्तुतिं कृत्वा पुनःपुनः ॥ अप्सरोगणगंधर्वा अर्चयंति ह्यनेकधा ॥ २४ ॥ नानाप्रकारभक्त्या च नानापूजा व्यवस्थया ॥ सुवर्णपंकजैस्तत्र पूजयंति सदाशिवम् ॥ २५ ॥ आरार्तिकं प्रकुर्वंति लिंगस्याग्रे निरंतरम् ॥ सरसः पश्चिमे भागे आस्ते वनमनुत्तमम् ॥ २६ ॥ रणितं भृंगराजैश्च रक्तकृष्णं च कर्बुरम् ॥ वनेन तेन तच्चारु शोभते सर उत्तमम् ॥ पीतपंकजशोभाढ्यं रक्तकैरवमंडितम् ॥ २७ ॥ तच्च भ्रमरगुंजारैर्नानापद्मैश्च शोभितम् ॥ चूतचंदनसंयुक्तं कदलीखंडमंडितम् ॥ २८ ॥

सब साधक वहां गए और विस्मयको प्राप्त हुए और वे साधक पृथक् २ देवताओंकी स्तुति करने लगे ॥ २० ॥ जहांपर अप्सरा गंधर्व आदि अनेक प्रकारसे पूजन करते थे, और भेरी मृदंग शंख तुरईके शब्दोंसे गुंजारता ॥ २१ ॥ पटह, घोष, शृंग, तबला, ताल लय आदिके साथ गंधर्व गीत गाते सुन्दरी वीणा बजाती हैं॥२२॥ तथा कर्पूर अगर, चंदन आदिसे शिवलिंगको लेपन करतीं हे महासेन ! प्रेम भक्तिके सहित पृथक् २ नमस्कार करती हैं ॥ २३ ॥ अर्धरात्रितक वे देवको पूजतीं वारम्वार स्तुतिको करके अनेक प्रकार अप्सरा गंधर्व अर्चना करते हैं॥२४॥ अनेक प्रकारकी भक्ति और पूजासे एकाग्र चित्तहो सुवर्णके कमलोंसे सदाशिवको पूजते हैं ॥ २५ ॥ और शिवलिंगके आगे निरंतर आरती करते हैं उस सरोवरके पश्चिम भागमें उत्तम वन है ॥ २६ ॥ गुंजारते हुए भौंरोंके आकारसे लाल काले चित्र कबरे पीले वरणके कमलोंसे विचित्र शोभा हो रही थी और रक्त कुमुदके खंडोंसे शोभायमान ॥ २७ ॥ और किनारेपर भ्रमर शब्द करते और अनेक प्रकारके कमलोंसे शोभित, आम और चंदन तथा केलेके वृक्षोंसे सुशोभित ॥ २८ ॥

सुवर्णकेतकीजातीनानापुष्पोपशोभितम्॥वकुलैश्शतपत्रैश्च तिष्ठंति राजचंपकाः ॥ २९ ॥ कूष्मांडफलरूपेण सर्वे वृक्षाः फलंति च ॥ वनमध्ये महाचार्यैः साधकैः परिवेष्टितः ॥ ३० ॥ सौवर्णकांस्तत्र वृक्षान्दृष्ट्वा चैव दिशो दश ॥ अग्रतो दृश्यते तत्र प्रोत्तुंगश्च महागिरिः ॥ ३१ ॥ तस्य सोपानमार्गेण गंतव्यं च ततः परम् ॥ तस्य शृंगे पुरी रम्या हेमरत्नविभूषिता ॥ ३२ ॥ साधकाश्च गतास्तत्र पश्यंति च हिमालयम्॥नानाविनोदसंयुक्ताः पश्यंति च दिशो दश ॥ ३३ ॥ विवाहोत्सवसंकीर्णा मंगलादपि मंगलम् ॥ दृष्ट्वा तत्र पुरीं रम्यां चन्द्रादित्यसमप्रभाम्॥३४॥ ध्वजमालाकुलां दिव्यां विस्तरे शतयोजने ॥ प्रतोलीद्वारसंयुक्तां हेमप्राकारशोभिताम् ॥ ३५ ॥ वापीकूपतडागाढ्यां प्राकारेण प्रवेष्टिताम् ॥रम्यां मनोहरां दिव्यां वहुगंधादिवासिताम् ॥ ३६ ॥ अग्नितेजःसमोपेतां चित्रकर्मोपशोभिताम् ॥ यस्या मध्ये मुनिश्रेष्ठः पूर्वधन्यो महामुनिः ॥ ३७ ॥ जटामुकुटधारी च दिव्य-

सुवर्णमयी केतकी खिलीहुई तथा नाना प्रकारके पुष्पोंसे देदीप्यमान. केसर शतपत्र और राजचंपिका आदि खिल रहीथीं ॥ २९ ॥ कुम्हडा (गोलकद्दू) के समान फलोंसे वृक्ष फलित होरहेहैं इस वनके मध्यमें आचार्य और साधकोंने ॥ ॥ ३० ॥ सुवर्णके वृक्ष दशों दिशाओंमें देखे, और आगे वडा ऊंचा एक महा पर्वत अवलोकन किया ॥ ३१ ॥ तब वडी सीढियोंके मार्गसे गए तो इसके शिखरपर एक नगरी जो अनेक प्रकारके रत्न और सुवर्णसे भूषित थी ॥ ३२ ॥ देखी साधक वहां गये और वहां परसे हिमालयको देखा और अनेक प्रकारसे आनंदपूर्वक दशों दिशाओंका अवलोकन किया ॥ ३३ ॥ विवाह उत्सवोंसे सुशोभित मंगलसेभी मंगल अति मनोहर सूर्यके समान प्रकाशित पुरी देखी ॥ ॥ ३४ ॥ वह पताकाओं तथा मालाओंसे सुन्दर और सौ योजन विस्तारवाली थी, प्रतोली द्वार तथा सुवर्णके प्राकारोंसे सुशोभित ॥ ३५ ॥ बावडी कूएँ सरोवर आदिसे घिरी तथा रम्य मनोहर और वहुतसुगंधिसे वासित ॥ ३६ ॥ और अग्निके समान तेजवाली चित्र कर्मसे विचित्र थी, जिसके मध्यमें पूर्व धन्य महामुनि ॥ ३७ ॥ जटा और मुकुट धारण किये दिव्य देह और मूर्तिमान तथा

देहश्च मूर्तिमान् ॥ दिव्याभरणशोभाढ्या दिव्यवस्त्रपरिच्छदाः ॥
॥ ३८ ॥ दिव्यपुष्पशिरोबद्धा दिव्यकुंडलभूषिताः ॥ चतुर्वेद-
प्रवक्तारः सर्वशास्त्रविशारदाः ॥ ३९ ॥ अर्द्धयोजनविस्तीर्णं
मंडपं तत्र मंदिरे ॥ सिंहासनानि दिव्यानि हेमरत्नचितानि वै ॥
॥ ४० ॥ तत्र तिष्ठति राजेंद्रः सभायां परिवेष्टितः ॥ साधकाश्च
गतास्तत्र दृष्ट्वा दिव्यं महामुनिम् ॥ ४१ ॥ ऋषिराज उवाच ॥
क्कागता भुवनात्सिद्धाः क्क स्थाने चैव गम्यते ॥ सत्यं वदत भोः
सिद्धा यदि कल्याणमिच्छथ ॥ ४२ ॥ सिद्ध उवाच ॥ शृणु
राजन्प्रवक्ष्यामि मम वाक्यं सुनिश्चितम् ॥ आगता मृत्युलोकाच्च
गंतव्यः शंकरालयः ॥ ४३ ॥ ऋषिराज उवाच ॥ अस्मिन्नेव पुरे
रम्ये नानाभोगसमाकुले ॥ तिष्ठन्तु साधकाः सर्वे भुंजतां विपुलां
श्रियम्॥४४॥ किं करिष्यति कैलासः किं करिष्यति शंकरः॥मम
स्थाने महाभोगा देवदानवदुर्लभाः ॥४५॥ साधक उवाच॥किमत्र
भोग्यमायुष्यं पश्चात्किं च भविष्यति॥कस्य लोके भवेद्वासः सत्यं

सुन्दर वस्त्र पहने दिव्य आभूषण धारे ॥ ३८ ॥ सुन्दर २ फूल सीसपर बांधे सुन्दर कुंडलोंसे प्रकाशित, चारों वेदोंके वक्ता सर्व शास्त्रोंमें निपुण थे ॥ २९ ॥ और उसका मंडप (घेरा) आधे योजन विस्तृतथा और दिव्य सिंहासन जो रत्न जटित व सुवर्णसे आच्छादित थे ॥४०॥ उस सभामें राजेन्द्र सुशोभितथा साधक तहां गए उस दिव्य महर्षिको देखा ॥ ४१ ॥ ऋषिराज बोला हे सिद्धो ! कहांसे आएहो और किस स्थानपर जातेहो ? सो सत्य २ कहो यदि कल्याण चाहतेहो ॥ ॥ ४२ ॥ सिद्ध बोला हे राजन् ! मेरे वचनको सुनो कि हम मृत्युलोकसे आएहैं और शिवके स्थानको जातेहैं ॥ ४३ ॥ ऋषिराज बोला, अनेक प्रकारके भोगोंसे व्याप्त इस मनोहर नगरमें तुम सब साधक रहो और अधिक भोगोंको अनुभव करो ॥ ४४ ॥ कैलास और शंकर क्या करेंगे, ? इस हमारे स्थानपर अधिक भोगहै जो देवता दानवोंकोभी दुष्प्राप्य है ॥ ४५ ॥ साधक बोले, यहां पर क्या भोग और कितनी आयुहै ? और फिर किस लोकमें निवास होताहै सो हे सुव्रत !

कथय सुव्रत ॥ ४६ ॥ ऋषिराज उवाच ॥ कन्याः सप्तसहस्राणि दीयंते च पृथक्पृथक् ॥ तथा लक्षं भवेदायुर्महाभोगसमन्वितम्॥ ॥ ४७ ॥ भुक्त्वा च विपुलान्भोगान्मृत्युलोके च गम्यते ॥ चक्रवर्त्ती भवेद्भूपः पश्चाज्जातिस्मरो भवेत् ॥ ४८ ॥ पुत्रपौत्रसमायुक्तो धनधान्यसमाकुलः ॥ दीर्घायुर्विपुलान्भोगान्पुनस्ते स्वर्गगामिनः ॥ ४९ ॥ साधक उवाच ॥ मृत्युलोको यदि पुनर्गंतव्यः शंकरालयः ॥ मृत्युलोकभयाद्भीता राजन्नत्रागता वयम् ॥ ॥ ५० ॥ मृत्युलोके महादुःखं त्यक्त्वेह समुपागताः ॥ तत्र चैवागताः सर्वा विमानारूढयोषितः ॥ ५१ ॥ साधकाँस्तास्ततो दृष्ट्वा हृष्टपुष्टा वदंति च ॥ दिव्यवस्त्रपरीधाना दिव्यगंधानुलेपनाः ॥ ५२ ॥ कर्णालम्बितताटङ्काः कटिघंटासुशोभिताः॥ शिरःपुष्पैः सुगंधाश्च तांबूलेन मुहुर्मुहुः ॥ ५३ ॥ मृगाक्ष्यो हंसगामिन्यो रूपयौवनगर्विताः ॥ करकंकणसंयुक्ता हारकेयूरभूषिताः ॥ ५४ ॥ संपूर्णचंद्रवदना नूपुरैः समलंकृताः ॥ कस्या मृगे-

सब सत्य २ कहो ॥ ४६ ॥ ऋषिराज बोला, सात सहस्र कन्या पृथक् २ दी जांयगी और लाख वर्षकी अवस्था भोगोंसहित मिलेगी ॥ ४७ ॥ और संपूर्ण भोगोंको भोगकर मृत्युलोकको प्राप्त होओगे, और चक्रवर्ती राजा होओगे, पश्चात् जातिका स्मरण होगा ॥ ४८ ॥ और पुत्र पौत्र सहित धन धान्य समेत अधिक आयुपूर्वक पूर्ण भोग अनुभव करके फिर स्वर्गके गामी होगे ॥ ४९ ॥ साधक बोले हे राजन्! यदि फिरभी मृत्यु लोकको जाना पडताहै तो हम मृत्यु लोकके भयसे व्याकुल हुए यहांपर आएहैं ॥ ५० ॥ मृत्युलोक महा दुःखहै जिस को छोड यहां प्राप्त हुए तब साधकोंके समीप उस स्थानपर सम्पूर्ण विमानपर चढी कन्या प्राप्त हुई ॥ ५१ ॥ और साधकोंके दर्शन करके प्रसन्न हुई मनोहर वचन बोलती हुई सुन्दर वस्त्र पहने सुगंध लगाए ॥ ५२ ॥ कुंडलोंसे कर्ण शोभित थे जिनके कमरपर घंटा स्थितथा और मस्तकपर फूल विराजतेथे पानसे शोभित ॥ ५३ ॥ मृगके समान नेत्रवाली, और हंसके सदृश चलनेवाली, और रूप तथा यौवनमें भरीहुई, जिनके हाथोंमें कंकण धारण होरहेथे, और जो हार बाजूबंदको धारेथीं ॥ ५४ ॥ पूर्ण चन्द्रमाके तुल्य मुखारविन्दवाली, पायजेबोंसे

न्द्रमानिन्यः कुचतालफलैश्शुभाः ॥ ५५ ॥ कन्यका ऊचुः ॥ आगताः स्थ कुतः सिद्धाः क स्थाने चैव गच्छथ ॥ कन्याः पृच्छंति तान्सेन वरार्थं सुन्दरभ्रुवः ॥ ५६ ॥ आचार्य उवाच ॥ शृण्वन्तु कन्यकाः सर्वा मम वाक्यं सुनिश्चितम् ॥ आगता मृत्यलोकाच्च गच्छामः शंकरालयम् ॥ ५७ ॥ कन्यका ऊचुः ॥ अस्मिन्नेव पुरे रम्ये नानाभोगसमाकुले ॥ तिष्ठंतु साधकाः सर्वे भुंजतां विपुलां श्रियम् ॥ ५८ ॥ साधक उवाच ॥ अस्मिन्स्थाने महारम्ये कामिन्यो न रुचिर्मनाक् ॥ अस्माभिस्तत्र गंतव्यं यत्र देवो महेश्वरः ॥ ५९ ॥ एवं वदंति ते सिद्धाः शृण्वतीनां सुयोषिताम् ॥ तस्माच्च साधकास्सर्वे गताश्चैवोत्तरामुखम् ॥ ६० ॥

इति श्रीकेदारकल्पे विख्यातपुराणे श्रीश्वरकार्त्तिकेयसंवादे पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शने सदेहकैलासगमने ऋषिराजतपःपुरीवर्णनं नाम त्रयोविंशः पटलः ॥ २३ ॥

भूषित, जिनकी कमर सिंहकीसी और स्तन तालके फलोंके समान थे ॥ ५५ ॥ कन्या बोलीं हे सिद्धो ! किस स्थानसे आपहो और किस स्थानको जातेहो ? इस प्रकार यह सब सुन्दरी पूंछतीहैं ॥ ५६ ॥ आचार्य बोले हे कन्याओ ! ! तुम सब हमारे वाक्यको सुनो, हम मृत्युलोकसे आए और शिवके आलयको जातेहैं ॥ ५७ ॥ कन्या बोलीं इस रम्य नगरमें जो अनेक प्रकारके भोगोंसे भराहै तुम सब साधक रहो और अधिक भोगोंको भोगो ॥ ५८ ॥ साधक बोले. इस दिव्य-स्थानमें हमको कामिनी नहीं रुचतीं, हमको तो वहां जानाहै जहांपर महेश्वर देव विराजतेहैं ॥ ५९ ॥ हे सुन्दरियो ! ! सुनो ऐसा इन सिद्धोंने कहा और सब साधक फिर उत्तर दिशाको चले ॥ ६० ॥

इति श्रीकेदारकल्पे शिवकार्त्तिकेयसंवादे भाषाटीकायां त्रयोविंशः पटलः ॥ २३ ॥

चतुर्विंशः पटलः ।

श्रीश्वर उवाच ॥ ॐ अग्रतो दृश्यते तत्र कृतरूपांतरो हरः ॥ वृद्धब्राह्मणरूपेण जर्जरीकृतदेहवान् ॥ १ ॥ रूपयौवनहीनश्च क्षीणकुब्जश्च देहिनाम् ॥ मंदान्मंदतरो दीनो वेपमानश्च रोगवान् ॥ २ ॥ कायस्तस्य क्षीणतरः कम्पमानौ करौ तथा ॥ वदन्मंदस्वरश्चैव पीडितश्च क्षुधा तृषा ॥३॥ अस्थिचर्मावशेषश्च क्षुत्तृड्भ्यां प्रपीडितः ॥ ईदृशो ब्राह्मणो वृद्धो दृष्टाचार्यश्च तत्क्षणात् ॥ ॥ ४ ॥ ब्राह्मण उवाच ॥ क्वागताभुवनात्सिद्धाःक्वस्थानेचैवगम्यते ॥ सर्वंकथयवृत्तांतंब्राह्मणाग्रेमहातपः ॥ ५ ॥ साधक उवाच ॥ ॥ आगतामृत्युलोकाच्च गंतव्यं शंकरालये ॥ एतन्मतं द्विजश्रेष्ठ प्रसादेन हरस्य च ॥ ६ ॥ ब्राह्मण उवाच ॥ ॥ नैवदृष्टो महासिद्धारुद्रस्त्रिभुवनेश्वरः ॥ स्वर्गे मर्त्ये च पाताले भ्रमितोहिदिशोदश ॥ ७ ॥ दिव्यवर्षसहस्राणि नैव दृष्टो महामुने ॥ मयानिरीक्षतासिद्धा कनिष्ठात्प्राप्यतेजरा ॥ ८ ॥ कुतस्त्वंगच्छसे सिद्धमागच्छकुरुभाषितम् ॥ रुद्रस्य दर्शनं कुत्र

आगे चलकर क्या देखतेहैं कि दूसरा वेष धारण किये वृद्ध ब्राह्मण जिसका शरीर जर्जरी भूत था देखा ॥ १ ॥ जो कुरूप यौवन रहित था. और अतिक्षीण तन, हीन, कुबडा, दीन, मंदसे भी मंद, रोगीथा ॥ २ ॥ उसकी काया क्षीण और हाथ कांपते और मंदस्वर (धीमी वाणी) से बोलता, क्षुधा तृष्णासे व्याकुल ॥ ३ ॥ केवल हड्डी शेषथी, भूंख प्याससे व्याकुल ऐसा बुड्ढा ब्राह्मण देखा उस समय ॥ ४ ॥ ब्राह्मण बोला हे सिद्धो ! कौन स्थानसे आएहो और किस स्थानको जातेहो हे महातप ! सो मुझ ब्राह्मणके आगे सब वृत्तान्त कहो ॥ ५ ॥ साधक बोले, हम मृत्युलोकसे आए और शंकरके स्थानको जाते हैं, हे द्विजश्रेष्ठ! इतना संमत है ॥ ६ ॥ ब्राह्मण बोला हे महासिद्धो ! तीनों लोकोंके स्वामी रुद्रको हमने नहीं देखा, स्वर्गलोक, मृत्युलोक और पाताललोकमें दशों दिशाओंमें भ्रमण किया ॥ ७ ॥ दिव्य सहस्रवर्ष मैंने देखा बाल्य अवस्थासे बूढा होगया परन्तु शिवको नहीं देखा ॥ ८ ॥ अब तुम कहां जातेहो ? मत जाओ,

देवानामपिदुर्ल्लभम् ॥ ९ ॥ आचार्य उवाच ॥ ॥ यच्च त्वयोदितं विप्र हृदये नैव रुच्यते ॥ अवश्यं तत्र गंतव्यं यत्र देवो महेश्वरः ॥ १० ॥ ब्राह्मण उवाच ॥ कत्र स्थाने वसेद्रुद्रः किं रूपं कीदृशं फलम्॥कथंकायो महादेवः किंफलं किं प्रयोजनम्॥ ॥ ११ ॥ आचार्य उवाच ॥ ॥ दुर्ल्लभः सर्वसंसारे दुर्ल्लभ्यो हीतरेजनः ॥ दुर्ल्लभः सर्वभूतानां संसरतामति दुर्ल्लभः॥ १२॥कस्य चैव समो रुद्रः केन रूपेण दृश्यते ॥ कथं कायो महादेवः कथं वाच्यः स शकरः ॥१३॥ ब्रूहि तन्मे महावीर किं करिष्यति शंकरः ॥ रुद्रस्य दर्शनं दृष्ट्वा कथयामि शृणुष्व तत् ॥ १४ ॥ सिद्ध उवाच ॥ ॥ शृणु विप्रेन्द्र यद्रूपं कथयामि यथाश्रुतम् ॥ नीलकंठं वृषारूढं शूलपाणिं महाबलम् ॥ १५ ॥ त्रिनेत्रं च दशभुजं चंद्रार्द्धकृतशेखरम्॥ भस्मना धूलितं गात्रं सूर्यकोटिसमप्रभम् ॥ ॥ १६ ॥ कर्पूरगौरं शिरसा जटामुकुटभूषणम् ॥ देवदेवं जगन्नाथं भक्तानामभयप्रदम् ॥ १७ ॥ एवमुक्ते साधकेन रुद्रो वै

रुद्र (शिव) का दर्शन देवताओंको भी दुर्लभ है ॥ ९ ॥ आचार्य बोले हे ब्राह्मण ! जो तुमने कहा सो हृदयमें नही रुचता, हमको अवश्य वहां जाना है, जहांपर साक्षात् महेश्वर विराजते हैं ॥ १० ॥ ब्राह्मण बोला कि शिवजी किस स्थानमें रहते हैं उनका कैसा रूप है क्या फल है क्या कार्य है क्या प्रयोजन है ॥ ११ ॥ आचार्य बोले जो संपूर्ण संसारमें दुर्लभ है और तदितर जनोंमें तथा सब प्राणियोंमें दुर्लभ है ॥ १२ ॥ और रुद्र किसके समान है और किस रूपसे दीखता है ? क्यों महादेव है और क्यों शंकर है ? ॥ १३ ॥ हे महावीर ! शंकर क्या करेंगे सो हमसे कहो, हम रुद्रके दर्शनको तुमसे सुनाना चाहते हैं ॥ १४ ॥ सिद्ध बोले हे ब्राह्मणश्रेष्ठ ! सुनो जो रुद्रका रूप मैंने सुना है सो कहता हूं नीलकंठ हैं साक्षात् नंदीपर चढ़े त्रिशूल हाथमें लिये हैं ॥ १५ ॥ तीन नेत्र दश भुजा आधा चंद्रमा माथेपर विराजता है, भस्मसे सारा शरीर लिप्त है, कोटि सूर्योंके समान कान्ति है ॥ १६ ॥ कर्पूरके समान गौरवर्ण सिरपर जटा रखत मुकुट धारे ऐसे देवताओंके तथा जगतके स्वामी और भक्तोंको अभय देनेवाले हैं ॥ १७ ॥ ऐसा साधकके कहनेपर शिवने उस समय दर्शन दिया और

दर्शनं ददौ ॥ विप्ररूपविनाशेन साक्षाद्देवो महेश्वरः ॥ १८ ॥ रुद्रस्य दर्शनं कृत्वा सर्वाभरणभूषितः ॥ दिव्यदेहो महाकायो दिव्यगंधानुलेपनः ॥ १९ ॥ जटामुकुटधारी च चंद्रार्धकृतशेखरः ॥ दिव्यज्योतिर्महामूर्त्तिर्महारूपो महाप्रभुः ॥ २० ॥ नीलकंठो वृषारूढः शूलपाणिः पिनाकधृक् ॥ सर्वलक्षणसंपूर्णो बालार्कस्य समप्रभः ॥ २१ ॥ दशबाहुस्त्रिनयन उमासहितशंकरः ॥ प्रत्यक्षं दर्शनं लब्ध्वा साधका प्रवदंति च ॥ २२ ॥ नमस्कृत्य ततो देवं पिनाकिवृषभध्वजम् ॥ दंडवच्च प्रणम्याथ पततो धरणीतले ॥ २३ ॥ कृतांजलिपुटो भूत्वा प्रणम्याति पुनः पुनः ॥ अद्य मे सफलं जन्म ह्यद्य मे सफलं तपः ॥ ॥ २४ ॥ अद्य मे सफलं जाप्यमद्य मे सफलाः क्रियाः ॥ अद्य मे सफलः पंथा अद्य मे सफलार्चनम् ॥ २५ ॥ अद्य मे सफलं कर्म मया दृष्टः सदाशिवः ॥ नमस्यं चरणं पूज्यं दृष्टः संभाषितः शिवः ॥ २६ ॥ श्रीशिव उवाच ॥ ॥ वरं ब्रूहि महा-

उस वृद्ध ब्राह्मणका रूप दूर कर साक्षात् महेश्वर देव होगए ॥ १८ ॥ रुद्रका दर्शन किया जो सब आभूषण धारे दिव्य देह महाकाय सुन्दर गंध लेपन किये थे ॥ १९ ॥ जटा और मुकुट धारे मस्तकपर आधा चन्द्रमा अवलम्बन किये जो दिव्य तेज और बडी मूर्त्तिवाले सुन्दर रूपवाले थे ॥ २० ॥ नीले कंठवाले वृष (बैल) पर चढे त्रिशूल हाथमें लिये पिनाक (धनुष) को धारण किये सब लक्षणोंसे शोभायमान उदय हुए सूर्यके समान कान्तिमान् ॥ २१ ॥ दश भुजा और तीन नेत्रवाले पार्वतीसहित शिवने साधकोंको दर्शन दिया तब साधक परस्पर बोले ॥ २२ ॥ और वे सब वृषभध्वज साक्षात् शिवको नमस्कार करके भूमिपर गिरे और साष्टांग दंडवत की ॥ २३ ॥ और हाथ जोड बारंबार नमस्कार किया और कहा आज हमारा जन्म सफल हुआ, और आजही तप सफल हुआ ॥ २४ ॥ तथा आज हमारा जप, क्रिया, पंथ, अर्चन, सब सफल हुआ ॥ २५ ॥ तथा आज हमारा कर्म सफल हुआ सदाशिवके दर्शन करके, चरणोंको पूजते हुये और दंडवत करते हुये उनको देखकर शिवजी बोले ॥ २६ ॥ हे

सिद्ध साधकैः परिवेष्टित ॥ तव तुष्टो महादेवो महावीरो महातपाः ॥ २७ ॥ साधक उवाच ॥ ॥ यदि तुष्टो महादेव उमायुक्तस्त्रिलोचनः ॥ गर्भवासं न पश्यामि तादृशं कुरु मां प्रभो ॥ ॥ २८ ॥ कस्मिन्काले तु संप्राप्ते मृत्युलोके न याम्यहम् ॥ गृहीत्वा गम्यते तत्र शिवकल्पं महापथे ॥ २९ ॥ तव मार्गेण गंतव्य रुद्रदेव महेश्वर ॥ एवं देहि वरं देव यदि तुष्टोऽसि शंकर ॥ ३० ॥ एतादृशं वरं लब्ध्वा चित्ते ते ह्यतिहर्षिताः ॥ हृष्टपुष्टमनाः सिद्धाः प्रणमंति महेश्वरम् ॥ ३१ ॥ स्तुतिं कर्युस्ततः सव प्रणमंति मुहुर्मुहुः ॥ साधकानां वरं दत्त्वा शिवलोकं गतो हरः ॥ ३२ ॥ क्षणमेकं च तिष्ठंति साचार्याः साधकाः पुनः ॥ तत्र ते साधकास्तत्र गताश्चैवोत्तरामुखाः ॥ ३३ ॥

इति श्रीरुद्रयामले केदारकल्पे विख्यातपुराणे श्रीश्वरकार्त्तिकेयसंवादे पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शने सदेहकैलासगमने वृद्धब्राह्मणरूपेण रुद्रदर्शनवरप्रदानं नाम चतुर्विंशः पटलः ॥ २४ ॥

साधको ! हे आचार्यो !!! वरदान मांगो हे महातप ! तुमसे हम साक्षात् शिव प्रसन्न हुए ॥ २७ ॥ साधक बोले हे महादेव ! हे त्रिलोचन ! यदि आप पार्वतीके सहित प्रसन्न हैं तो हे प्रभो ! हम गर्भके वासको फिर न देखें ऐसा करो ॥ २८ ॥ और किसी समय हम मृत्युलोकको नहीं प्राप्त होवें और शिव कल्पको ग्रहण करके महापथको जावें ॥ २९ ॥ हे महेश्वर ! तुम्हारे मार्गसे रुद्रदेवको जावें ऐसा वर देवो यदि प्रसन्न हो तो ॥ ३० ॥ इस प्रकार वरको पाकर उनके चित्तमें बड़ा हर्ष हुआ और हृष्टपुष्ट मन होकर महेश्वरको प्रणाम करने लगे ॥ ३१ ॥ और सब वारंवार स्तुति करने लगे तब शिव उन साधकोंको वर देकर शिवलोकको सिधारे ॥ ३२ ॥ क्षणमात्र आचार्य साधकों सहित स्थित हुए फिर आगे उत्तरको और चले ॥ ३३ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे शिवदर्शनवरप्रदे भाषाटीकायां चतुर्विंशः पटलः ॥ २४ ॥

पंचविंशः पटलः ।

श्रीश्वर उवाच ॥ ॥ ॐ अग्रतो दृश्यते तत्र चेन्द्रराजो महानृपः ॥ कृत्वा वै सिंहरूपं च महारौद्रो भयंकरः ॥ १ ॥ पर्वतस्थदरीवक्रो गिरिशृङ्गशिरास्तथा ॥ तस्य शूरनिनादश्च यथा मेघस्य गर्जितः ॥२॥ भूमिश्च स्फोटते क्रोधात्कंपते भुवनत्रयम् ॥ एवं दृष्ट्वा महासिंहं तीक्ष्णदंष्ट्राभयानकम् ॥ ३ ॥ वर्द्धते च ततः सिंहो नखलांगूलवेगतः ॥ जिह्वा चातिचलादिव्या वर्द्धते च पुनःपुनः ॥ ४ ॥ ततो दृष्ट्वा महासेन वने सिंहं भयंकरम् ॥ दृष्ट्वा सिंहं महारूपं तीक्ष्णदंष्ट्रं महाबलम ॥ ५ ॥ साधकाश्च ध्वनिं श्रुत्वा वर्द्धमानं पुनःपुनः ॥ सिंहं दृष्ट्वा महाप्रौढं साधका विस्मयं गताः ॥ ६ ॥ भयभीतास्ततः सिंहादात्मनः शोचयंति हि ॥ अघोरेणैव मंत्रेण सर्वविघ्नः क्षयं गतः ॥ ७ ॥ अथ मंत्रः॥ ॐ हुँ फट् स्वाहा ॥ सिंह उवाच ॥ भुवनात्कुत आयाताः कस्थाने चैव गच्छथ ॥ सत्यं ब्रूत ममाग्रे हि यदि कल्याण-

शिवजी बोले, जब वहांसे आगे चले तब इन्द्रमहाराज जो बडे भयंकर सिंहके रूपको धारण किये हुए दीख पडे ॥ १ ॥ जिनका मुख पर्वतकी गुफाकी सदृश ऊंचा पर्वत शिखरके सदृश था,और शब्द मेघके गर्जनेकी समान था ॥२॥ क्रोधसे भूमिको खोदता हुआ जिससे तीनों लोक कम्पायमान होते थे इस प्रकार तीक्ष्ण दांतोंवाले भयानक सिंहको देखा ॥ ३ ॥ तब वह सिंह नख और पूंछके वेगसे बढ़ने लगा और उसकी जिह्वा बिजलीकी समान चपल थी ॥ ४ ॥ हे महासेन ! वनमें ऐसे महासिंहको देखकर जो भयंकर रूप और बडा बली था तथा जिसकी डाढ़ें बडी तीक्ष्ण थीं ॥ ५ ॥ साधकगण उसकी ध्वनिको सुन और क्षण क्षणमें वृद्धि होती देख तथा विलक्षण रूपको देखकर विस्मयको प्राप्त हुए ॥ ६ ॥ सिंहके भयसे व्याकुल होकर मनमें चिन्ता करनेलगे, तब अघोरमंत्र के जपनेसे सब विघ्न नष्ट हुए ॥ ७ ॥ ॐ हुं फट् स्वाहा यह मंत्रहै, तब सिंह बोला हे सिद्धो ! कहांसे आयेहो और कहांको जातेहो सो मेरे आगे सत्य २ कहो यदि

मिच्छथ॥८॥ सिद्ध उवाच॥आगता मृत्युलोकाच्च गंतव्यं शंकरालये॥ एवं नो हि मतं सिंह तत्रेच्छा पारमेश्वरी॥९॥सिंह उवाच॥ आयान्तु साधकाः सर्वे वांछामि वश्च दर्शनम् ॥ आगंतव्यं समीपे च पातव्यं रुधिरं हि वः ॥ १० ॥ कुतो गच्छेत यूयं हि मम दृष्ट्यावलोकिताः ॥ तृप्तं करोमि आत्मानं मांसेन रुधिरेण च ॥ ११ ॥ सिंहरूपं समाश्रित्य यत्र तिष्ठामि वै सदा ॥ नैव गच्छंति ते स्वर्गे स्वयं देहेन मानवाः ॥ १२ ॥ आचार्यसाधकाः सर्वे मा गच्छत शिवालये ॥ यदि गच्छथ चेत्सिद्धाः स्वयं देहेन जीवता ॥ १३ ॥ षण्मासाभ्यंतरे सिद्धा भोजनं न कृतं मया ॥ मया दैवाच्च भोक्तव्यं मांसं वो साधका ध्रुवम् ॥ ॥ १४ ॥ जीवंतो नैव पश्यंति उमया सहितं हरम् ॥ महापथे महावीरं जपंतश्च शनैः शनैः ॥१५॥ आगता दिव्यमार्गेण दृष्ट्वा सिंहं भयंकरम् ॥ आकर्ण्यागर्जितंघोरंशब्दंत्रैलोक्यव्यापिनम् ॥ ॥ १६ ॥ आचार्यमूचिरे सिद्धाः सिंहत्रासेन व्याकुलाः ॥

अपने कल्याणकी इच्छा करतेहो ॥ ८ ॥ सिद्ध बोले हम मृत्युलोकसे आयेहैं और शिवके स्थानको जातेहैं हे सिंह ! यह हमारी इच्छाहै इस विषयमें शिवजी प्रमाणहैं ॥ ९ ॥ सिंह बोला, हे साधको, तुम सब मेरे निकट आओ मैं तुम्हारा रुधिर पान करूंगा ॥ १० ॥ तुम मेरी दृष्टिके सामनेसे कहां जासकते हो,तुम्हारे मांस और रुधिरसे अपनी आत्माकी तृप्ति करूंगा ॥ ११ ॥ मैं यहां सिंहकारूप धारण किये सदैव निवास करताहूं जिससे मनुष्य संदेह स्वर्गको न जावें ॥१२॥ तुम सब साधक आचार्य शंकरके लोकको मतजाओ, यदि तुम जाओगे तो देह नहीं रहेगा ॥ १३ ॥ हे साधो ! छः महीनेसे मैंने भोजन नहीं किया, इस कारण तुम्हारे मांसको अवश्य भोजन करूंगा ॥ १४ ॥ जीते मनुष्य पार्वतीसहित शिवको नहीं देखसकते, यह सुनकर वे साधक धीरे २ महापंथको जाने और अघोर मंत्रको जपनेलगे ॥१५॥ दिव्यमार्गमें प्राप्त हो उस भयंकर सिंहको देख, जिसके भयंकर गर्जनेका शब्द तीनोंलोकोंमें व्याप्त हुआ था॥१६॥आचार्यगण,सिंहके भयसे

१ [illegible]

आचार्यो वदते तांश्च सिंहान्नैव भयं मम ॥ १७ ॥ अघोरस्तु-
महामंत्रो ह्यघोरो देवदुर्लभः ॥ भीतैश्च जपितो मंत्रः सर्वत्रास-
क्षयंकरः ॥ १८ ॥ अथ मंत्रः ॥ ॐ श्रींश्रींश्रींश्रीं ॐ हुँ फट्
स्वाहा ॥ अघोरश्च महामत्रः सर्वविघ्नविनाशनः ॥ अघोराय
नमस्तस्मै दुर्लभो भुवनत्रये ॥ १९ ॥ अघोराय नमस्तुभ्यं
अघोराय च ते नमः ॥ अघोरः सर्वसिद्ध्यर्थं शिवेन निर्मितः
पुरा॥ २० ॥ अघोरं जपमानश्च पिनाक्येवाभिजायते ॥ मूर्त्ति-
रूपो भवेद्रुद्रः सर्वालंकारभूषितः ॥ २१ ॥ सिंहरूपं परित्यज्य
प्रत्यक्षोऽसौ वभूव च ॥ गजारूढः सहस्राक्षो वज्रायुधसुशोभितः
॥ २२ ॥ इन्द्र उवाच ॥ धन्याधन्या महासिद्धा एकचित्ते व्य-
वस्थिताः ॥ आगता मृत्युलोकाच्च गंतव्यं शंकरालये ॥ २३ ॥
अहं तुष्टो महासिद्धा वरं वृणुत सुव्रताः ॥ तत्सर्वं च प्रदास्यामि
येन श्रेयो ह्यवाप्स्यथ ॥ २४ ॥ आचार्य उवाच ॥ यदि तुष्टोऽसि
मे देव शक्रराज सुरोत्तम ॥ महापथे च यत्किंचिद्विघ्नं माभूत्क-

व्याकुलहुए साधकोंसे वोले,हमको सिंहसे कुछ भय नहींहै॥१७॥ डराहुआ मनुष्य देवताओंको दुर्लभ अघोरमंत्रका जप करे तो उसके सब भय दूर होजातेहैं सो जप कर सब दुःख दूर करो॥१८॥श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं ॐ हुं फट् स्वाहा यह मंत्रहै,यह अघोर महामंत्र सब विघ्नोंका नाशकहै,इस अघोर मंत्रको नमस्कारहै॥१९॥यह मंत्र सब सिद्धियोंके अर्थ पूर्वकालमें स्वयं शिवजीने बनाया था॥२०॥इस अघोरमंत्रको जपकर शिवके तुल्य होजाताहै, साधकोंने ज्योंही मंत्र जपा कि वह सिंह सब अलंकारसे भूषित इन्द्रकी मूर्ति धारण करताहुआ ॥ २१ ॥ और उस सिंहके स्वरूपको त्यागन करके साधकोंके प्रत्यक्ष हुआ, और हाथीपर चढे वज्र शस्त्र धारण किए, इन्द्र शोभित हुआ ॥ २२ ॥ इन्द्र वोला हे सिद्धो ! धन्यहै. आप सब लोग एकाग्रचित्त हो मृत्युलोकसे आये तथा शिवलोकको जाओगे ॥ २३ ॥ हे साधको ! मैं प्रसन्न हुआ आप लोग जो वर मांगोगे उसको मैं प्रदान करूंगा कि जिससे कल्याणको प्राप्त होगे ॥२४॥ आचार्यवोले हे राजा इन्द्र ! यदि आप प्रसन्नहैं तो हम

दाचन ॥ २५ ॥ यत्र स्थाने सुराः सर्वे ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ तत्र स्थाने महाराज न भयं मार्गयायिनाम् ॥ २६ ॥ महापथेन गंतव्यं न विकल्पो भवेत्ततः ॥ तत्र विघ्नं न पश्यामः सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ २७ ॥ साधकेभ्यो वरं प्रार्थ्यमिन्द्रो रात्वा गतस्तदा ॥ तत्पश्चात्साधकैः सर्वैर्गंतव्यमुत्तरादिशम् ॥ २८ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे विख्यातपुराणे श्रीश्वरकार्त्तिकेयसंवादे पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवनमुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शनेसदेहकैलासगमने सिंहरूपेन्द्रराजदर्शनसाधकवरप्रदानं नाम पंचविंशः पटलः ॥ २५ ॥

यह वरदान मांगतेहैं कि महामार्गमें जाते हुए हमको कोई विघ्न न हो ॥ २५ ॥ जिसस्थानमें ब्रह्मा विष्णु शिव आदि सब देवताहैं वहां जानेसे किसीप्रकारका भय नहीं ॥ २६ ॥ महापंथमें विघ्न और विकलता नहीं, यह हम सत्य २ कहतेहैं ॥ २७ ॥ तब साधकोंको वरप्रदान करके राजा इन्द्र अन्तर्धान हुए, और फिर साधक आगेकी ओर चले ॥ २८ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे भाषाटीकायां साधकवरप्रदानं नाम पंचविंशः पटलः ॥ २५ ॥

षड्विंशः पटलः ।

श्रीश्वर उवाच ॥ ॐ अग्रतश्चमहासेनदृश्यते च महापुरी ॥ साधकाश्च गतास्तत्र दृष्ट्वा च विस्मयंगताः ॥ १ ॥ हेमशृंगे महारम्ये नानारत्नविभूषिते ॥ अग्नितेजःसमंरूपंचंद्रादित्यसमप्रभम् ॥ २ ॥ चंद्रवेगातटेचैवपुरीरुद्रेणनिर्मिता ॥ स्थिताकैलासस्वच्छांशेमहागिरिवरोत्तमे ॥ ३ ॥ शतयोजनविस्ती-

हे महासेन ! इसके आगे एक बडी नगरी दीखपडी यहां साधकलोग जाकर विस्मयको प्राप्त हुए ॥ १ ॥ सुवर्णके शिखर बडे शोभायमान और अनेक प्रकारके रत्नजटित अग्निके समान देदीप्यमान तथा चन्द्रमा और सूर्य्यके समान कान्तियाले थे ॥ २ ॥ यह पुरी चन्द्रवेगानदीके किनारे साक्षात् शिवने निर्माण की है, कैलासपर्वतके शिखरपर स्थितहै ॥ ३ ॥ जो सौ योजन विस्तारवाली और

णरत्नकांचनशोभिता ॥ प्रत्यक्ष्यंतत्रदृश्येतेज्वलितौशशिभास्करौ ॥ ४ ॥ इन्द्रनीलमयं रम्यं चंद्रकांतोपशोभितम् ॥ हैमेनरचिताभूमीरुद्रप्राकारतोरणम् ॥ ५ ॥ जलमध्येचशोभंतेनक्षत्राणिचतारकाः ॥ एतस्मिंश्चगृहेरम्येवहुगंधादिवासिते ॥ ॥ ६ ॥ चंपिकास्तत्र तिष्ठंति कन्याकोटिसमावृताः ॥ कोकिलास्वरनादेननागवल्लीविभूपिताः ॥ ७ ॥ नानापुष्पसमाकीर्णा वहुगंधादिशोभिताः ॥ भेरीमृदंगशब्देन शंखवीणास्वनेनच ॥ ॥ ८ ॥ वेणुतालश्च वाद्यंते पटहं तत्र नादितम् ॥ ब्राह्मणा वेदनिर्घोषैः सर्वशास्त्रविशारदाः॥९॥विदग्धास्वरभेदैश्च गायंति क्रीडयंति च॥कुंकुमैर्दिव्यगन्धैश्चदिव्यवस्त्रपरिच्छदाः॥१०॥हारकंकणकेयूरनूपुरैश्च ह्यलंकृताः ॥ पद्मपत्रविशालाक्ष्योरूपयौवनगर्विताः ॥ ११ ॥ उद्गिरंति च ताम्बूलंकर्पूरेण समन्वितम् ॥ केशैर्भ्रमरसंकाशैर्विह्वलागजगामिनी ॥ १२ ॥ प्रोत्फुल्लापद्मवदनाबिंबोष्ठी

रत्नजटित सुवर्णसे शोभित और साक्षात् सूर्य चन्द्रमाके समान प्रकाशित दीखती है ॥ ४ ॥ इन्द्रनील तथा चन्द्रकान्तमणियोंसे शोभायमान तथा सुवर्णकी भूमि और शिवकेद्वारा प्रकार और तोरनोंसे निर्माण हुईहै ॥ ५ ॥ उस नदीके जलके मध्यमें नक्षत्र तारागण शोभायमान होरहेथे और वहांके घर सुगन्धित पदार्थोंसे सुगन्धित थे ॥ ६ ॥ तहां कोटिकन्याओंके सहित चंपिका स्थित थीं, जिनका नाद कोयलके स्वरकेसमान था, और नागवेल, (पान) से भूपित थी ॥ ७ ॥ नानाप्रकारके फूलोंसे सुगन्धित अनेक प्रकारके गन्धोंसे लिप्त और भेरी मृदंग वीणाके शब्द ॥ ८ ॥ तथा वेणुताल पटह आदि वाजोंसे गुंजारित, और वेद पारंगत ब्राह्मणोंद्वारा वेदोंकी ध्वनिसे शब्दायमान होरहाथा ॥ ९ ॥ कहीं चतुर देवांगना अनेक स्वरभेदोंसे गातीहुई क्रीडा करतीहैं, कुंकुम चन्दनादि सुन्दर गंधोंसे तथा दिव्यवस्त्रोंसे वेष्टितहैं ॥ १० ॥ हार, कंकण, वाजूबंद, पायजेब, बिछुएको धारण किये, कमलके समान विशालनेत्रवाली रूप और यौवनसे गर्वितहैं ॥ ॥ ११ ॥ कपूरसहित ताम्बूलको भक्षणकिये भौंरोंके समान केशवाली हाथीकी समान गतिवाली ॥ १२ ॥ कमलके सदृश खिले हुए मुख कन्दूरीके समान

कोकिलस्वराः ॥ मृदुकोमलदेहाश्चदिव्यगंधानुलेपनाः ॥ १३ ॥ सुष्टिग्राह्यसुमध्या च करिकुंभोवतस्तनी ॥ अशाकपल्लवौ हस्तौ नातिह्रस्वौ न लंबतौ ॥ १४ ॥ दृष्ट्वा च तद्विधाःकन्याःसाधका विस्मयं गताः ॥ स्वागतं स्वागतं सिद्धाः कन्यास्तत्रवदंति च॥ ॥१५॥ कन्यका ऊचुः ॥ ॥ वदाचार्यश्च सर्वं मे विस्तरेण महा तपः ॥ क्वभुवनागतासिद्धाः कस्थाने चैवगम्यते ॥ १६ ॥ सिद्ध उवाच ॥ शृणु सुन्दरि यत्नेन एवं वदति साधकः ॥ आगतामृत्युलोकाच्च गंतव्यं शंकरालये ॥ १७ ॥ कन्यकाऊचुः ॥ चंपिकातिष्ठते तत्र कन्याकोटिसमावृता ॥ चंपिकातिष्ठतेतत्र पुष्प दर्शनकारणम् ॥१८॥ चंपिकातिष्ठते तत्र चंपिका अतिहर्षिता ॥ अस्मिन्नेवपुरेरम्ये नानाभोग समाकुले ॥ १९ ॥ तिष्ठंति साधकाः सर्वे भुजन्तु विपुलां श्रियम् ॥ साधकाश्चंपिकां दृष्ट्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ २० ॥ चंपिकोवाच ॥ क्वागता भुवनात्सिद्धा कस्थाने चैवगम्यते ॥ एतद्ब्रूहि महाचार्य

दोनों होंठ, कोपलके समान स्वरवाली अतिकोमल देहकी सुन्दर सुगन्ध लगाये ॥ १३ ॥ अतिसूक्ष्म मुट्ठीमें आनेयोग्य मध्यस्थान (कमर) वाली, और हाथीके कुंभस्थलके समान स्तनवाली, तथा अशोक वृक्षके पत्तोंकी समान लाल हाथोंकी बहुत बडी न छोटी ॥ १४ ॥ साधक लोग इस प्रकारकी कन्याओंको देख बडे विस्मयको प्राप्त हुए । हे सिद्धो ! शुभागमन हो इसप्रकार स्वागत करके कन्या बोलीं ॥ १५ ॥ हे महातप आचार्यो ! आप अपना वृत्तान्त विस्तारसे कहो कि कहांसे आये और कहांको जातेहो ॥ १६ ॥ सिद्ध बोले ! हे सुन्दरि ! सुनो, हम मृत्युलोकसे आये हैं और शंकरके लोकको जाते हैं ॥ १७ ॥ कन्या बोली यहां चम्पा अनेक कन्याओं सहित निवास करती हैं ॥ १८ ॥ अनेक प्रकारके भोगों सहित इस मनोहर नगरमें चम्पा अति प्रसन्न हुई हैं ॥ १९ ॥ हे साधको ! आप लोग यहांपर निवास करो और अधिक भोगोंको भोगो, हे साधकगणो ! चम्पाको देखकर सब पापोंसे छूटते हैं ॥ २० ॥ चम्पिका बोली हे साधको ! कहांसे आयेहो तथा किस स्थानको जाओगे ? हे आचार्यो ! यह सब मेरे सन्मुख

ममाग्रेत्वमशेषतः ॥ २१ ॥ साधक उवाच ॥ ॥ चंपिका वचनं सत्यं कथयामि च तच्छृणु ॥ आगता मृत्युलोका च गंतव्यं शंकरालये ॥ २२ ॥ चंपिकोवाच ॥ तिष्ठतिष्ठ महाचार्य भुक्त्वाभोगसमाकुलाम् ॥ एवमुक्त्वा ततः कन्या साधको वाक्यमब्रवीत् ॥ २३ ॥ साधक उवाच ॥ ॥ किमत्रभोगमायुष्यं पुनःस्थानं क्व लभ्यते ॥ एतत्सर्वं समासेन ममाग्रे शीघ्रमुच्यताम् ॥ २४ ॥ चंपिकोवाच ॥ ॥ कन्याशतसहस्राणि दीयंते च पृथक्पृथक् ॥ कोटिवर्षं च ह्यायुष्यं महाभोगसमन्वितम् ॥ २५ ॥ आचार्य मन्दिरे भोगान्देवानामपि दुर्लभान् ॥ आचार्य उवाच ॥ ॥ चंपिके वचनं सत्यं तव शब्देच्छयाशृणु ॥ २६ ॥ सर्वैर्मया प्रतिज्ञा च गंतव्यं शंकरालये ॥ किं कन्याया च कथ्यंते ह्येकचित्ते व्यवस्थितम् ॥ २७ ॥ किंचित्मात्रा प्रतिष्ठंति किंतुसंख्या च पातने ॥ चंपिकोवाच ॥ ॥ अस्मिन्नेवपुरे रम्ये बहुकन्यासमाकुले ॥ २८ ॥ तिष्ठतिष्ठमहा

निवेदन करो ॥ २१ ॥ साधक बोले हे चंपिके ! तुमसे हम सत्य वचन कहते हैं सुनो, मृत्युलोकसे आते हैं और शिवलोकको जाते हैं ॥ २२ ॥ चंपिका बोली हे महाचार्यो ! इस स्थानपर ठहरो और भोगोंको अनुभव करो,ऐसा कन्याओंके कहनेपर साधकोंने उत्तर दिया ॥ २३ ॥ साधक बोले । इस स्थानपर कितनी आयु और क्या २ भोग हैं फिर कौनसा स्थान प्राप्त होता है, हे देवि ! सब शीघ्र हमारे आगे संक्षेपसे कहो ॥ २४ ॥ चम्पिका बोली शतसहस्र कन्या पृथक् २ दी जायँगी, और करोड वर्षकी अवस्था, सम्पूर्ण भोग आनन्दके सहित भोगोगे ॥ २५ ॥ हे आचार्यो ! इस मंदिरमें जो भोग हैं सो देवताओंको भी दुर्लभ हैं, आचार्य बोले हे चंपिके ! तुम्हारा वचन सत्य है, अब हमारा वचन सुनो ॥ २६ ॥ हमारी यह प्रतिज्ञा है कि शिवलोकको जांयगे, हम एकाग्रचित्त वालोंको यह कन्याओंके वचन नहीं रुचते ॥ २७ ॥ कारण कि कुछ कालतक यहां रहकर फिर भी तो पतनका भय है, चम्पिका बोली हे महासिद्धो ! अनेक कन्याओंसे व्याप्त इस नगरमें ॥ २८ ॥ निवास करो विपुल भोगोंको भोगो इस

सिद्धाभुंजंतुविपुलांश्रियम्॥अस्मिन्नेवपुरेभोगाभोक्तव्याः साधकैः सह ॥ २९ ॥ सर्वैर्देव समंसिद्धोभुंजतु विपुलांश्रियम् ॥ पश्चाच्चमृत्युलोके वै जायंते सर्वसंपदः ॥ ३० ॥ साधक उवाच ॥ किमर्थं चैवतिष्ठामिया गतासत्वयातने ॥ स्थापिता च पुरादिव्या कन्यासहविनिर्मिताः ॥ ३१ ॥ चंपिकोवाच ॥ ॥ तच्छ्रुत्वा वचनं तेषां गच्छाचार्य यथासुखम्॥ अस्मिन्स्थानेन रुच्यंते यत्रेच्छा तत्र गम्यताम् ॥ ३२ ॥ मयात्वं पृच्छताचार्यकामिनो मदविह्वलाः ॥ आराधिता मया पूर्वैःकामांधामदविह्वलाः ॥ ३३ ॥ दिव्य वर्षसहस्राणि तत्र तुष्टो महेश्वरः ॥ महापथनेते सिद्धागच्छंते च सुमध्यतः ॥ ३४ ॥ त्वयापादप्रसादेन गृहमेकं च चंपिकाः ॥ गृहीत्वा चंपिकामेकं प्रस्थितापंचमुत्तमम् ॥ ॥ ३५ ॥ साधकस्तिष्ठते तत्र तस्य चित्ते समुद्भवेत् ॥ साधक उवाच ॥ ॥ ब्रूहि मे चंपिका सत्यं कित्वयासुकृतं कृतम् ॥ ॥ ३६ ॥ एवंतु दिव्य लोकेस्मिन्नुत्पन्नाकामयौवना ॥ गृहीत्वा साधका कन्यातावत् दृष्ट्वा च व्याकुलम् ॥ ३७ ॥ साधक उवाच

रम्य नगरमें ठहरो ॥ २९ ॥ सब देवताओंके समान आनन्दको प्राप्त करो-तत्पश्चात मृत्युलोकमें सब सम्पत्तियों सहित जन्म होगा ॥ ३० ॥ साधक बोले-हम किस निमित्त दुःख यातनाओंमें ठहरें, पहलेही अनेकों कन्या उपस्थित थीं ॥ ३१ ॥ चंपिका बोली अच्छा तो आप सुखपूर्वक गमन करें इस स्थानमें न रहनेकी रुचि है तो जहाँ इच्छाहो वहां जाओ ॥ ३२ ॥ हे आचार्य ! प्रथम मदमें कामान्धहो हमने प्रार्थना की थी कारण कि पहले भी हमने ऐसोंका सेवन किया है ॥ ३३ ॥ सहस्र वर्षोंमें शिवजी प्रसन्न होते हैं, हे सिद्धो ! महापंथसे जो गमन करते हैं उनपर शंकर प्रसन्न होते हैं ऐसाही हमने किया था ॥ ३४ ॥ आपके चरणोंकी कृपासे हमारे गृहमें जो चंपा है उस एकको ग्रहण करके प्रस्थान कीजिये ॥ ३५ ॥ साधक वहां गये । और अपने चित्तमें प्रसन्नहो साधक बोले हे चंपे ! सत्य २ कह तूने क्या पुण्य किया ॥ ३६ ॥ जो इस दिव्य लोकमें सुन्दर यौवनवती उत्पन्न हुई साधक उस कन्याको गृहण करके और देखके व्याकुल हुए ॥ ३७ ॥ साधक बोले यहां क्या पुण्य और क्या फल तथा

कस्थानं कश्चलोकश्च किं पुण्यं फलमाप्यते ॥ कतीर्थं च प्रसादेन किं गृह्णंति च साधकाः ॥ ३८ ॥ चंपिकोवाच ॥ ॥ केदारनामक्षेत्रस्य तत्र मंदाकिनीनदी ॥ केशेहजूपिकानामलोके यदि परमांगतिः ॥ ३९ ॥ लोकेशजपनं कृत्वा भक्तिभावसमन्वितम् ॥ नाचेष्टाका गताज्ञाताः साधकाः सहसास्थिताः ॥ ४०॥ तस्यतीर्थप्रसादेन शिवसोपानमास्थितः ॥ अप्सरसो मया प्राप्ताः पूर्वकामसमन्विताः ॥ ४१ ॥ सर्वदेवसमोपेता राज्यं प्राप्तं मयात्विदम् ॥ महारुद्रप्रसादेन महापंथप्रदायकम् ॥ ४२ ॥ केदारस्यैव पथि च येमृताहैमपूर्णिताः ॥ शूलहस्ताः शिवसमाभुंजंति विपुलांश्रियम् ॥ ४३ ॥ एवं तन्मेऽर्चनं सिद्धा गृह्णंति ह्येकसाधकाः॥ तस्यास्तद्वचनं श्रुत्वा ह्याचार्यैः साधकैः सह ॥ ॥ ४४ ॥ साधक उवाच ॥ ॥ शृणु कामिनि तत्त्वेन कस्ते धर्मः प्रकाशितः॥महापथं गता नैव तिष्ठस्यत्र तपस्विनी ॥४५॥ चंपिकोवाच ॥ ॥ शृणुध्वं साधकाः सर्वे मम वाक्यं तु निश्चि-

आगेको कौनसा स्थान मिलता है और किस तीर्थके प्रसादसे साधकोंको यह सब मिलता है ? ॥ ३८ ॥ चम्पिका बोली केदारक्षेत्रके समीप मंदाकिनी नाम नदी है, केशरजूपिका नामवाली परमगति प्रदान करती है ॥ ३९ ॥ वहां लोकेश शिवका भक्तिभावसहित जप करके सारी कुचेष्टाएँ दूर हो जाती हैं। यह नहीं ज्ञात होता कहां गई ॥ ४० ॥ मुझको उस तीर्थके प्रसादसे शिवके स्थानपर स्थिति हुई तथा अनेक अप्सराएँ कामनाके अनुकूल प्राप्त हुई ॥ ४१ ॥ और समस्त देवताओं सहित यह राज्य मैंने प्राप्त किया। शिवके प्रसादसे महापंथकी प्राप्ति हुई ॥ ४२ ॥ केदारके मार्गमें जो मनुष्य बर्फके पर्वतसे नष्ट होजाँय वे त्रिशूल हाथमें ग्रहण करके शिवके समान बडे भोगोंको भोगते हैं ॥ ४३ ॥ हे साधको ! इस प्रकारके अर्चनसे यह प्राप्त हुआ है, इस प्रकार वचन सुन आचार्योंके सहित साधक बोले ॥ ४४ ॥ हे कामिनी तत्त्वसे मनो तुमने यह क्या धर्म प्रकाशित किया ? तुम महापंथको क्यों न गई यहां कैसे रहगई ? ॥ ४५ ॥ तब चम्पिका बोली हे साधको मेरे वचनोंको सुनो, और निश्चय करो। पृथ्वी-

तम् ॥ पृथिव्यां च बभूवैको राजा वै मंडलेश्वरः ॥ ४६ ॥ उग्रं राज्यं कृतं तेन नानालंकारवेष्टिताः ॥ पृथिव्यां च हि तिष्ठंति राजपत्न्योऽधिकाः शुभाः ॥ ४७ ॥ महालक्ष्मीमहारत्नधन-धान्यसमाकुले ॥ तस्य राज्ञो गृहे रम्ये जाताहं बुधपुत्रिका ॥ ४८ ॥ कामरूपा कलाभिज्ञा यौवने मदविह्वला ॥ पूर्वपुण्या कृतज्ञा च शुभवाक्यं समाचरम् ॥ ४९ ॥ धर्ममार्गहशः सर्वे-मंदभावेन वंचिताः ॥ वाक्यं न रोचते तस्या अभ्यासे ह्यागतो मुनिः ॥ ५० ॥ तस्यार्थे सिद्ध शृणु च मनसा धर्मप्रीतये ॥ तत्फलं भुंजते सर्वे पूर्वकर्मोपभोगिनः ॥ ५१ ॥ देहश्च धार्यते पूर्वैरिद्धते नारिकुंडके ॥ पूर्वजेन च न मां प्राप्तो गृहीत्वा चेह साधकः ॥ ५२ ॥ कामरूपकलाभिज्ञं तेन संराधितेश्वरम् ॥ वासितं च पुरं दिव्यं कोटिसुन्दरिसंगमम् ॥ ५३ ॥ ममपुरी नायकः सोपि तिष्ठते च विनायकः ॥ शिवमापृच्छत्कन्यायै शंकरेण च भाषितम् ॥ ५४ ॥ दातव्या वररुद्राय साधकाय सु-

पर एक मंडलेश्वर (चक्रवर्ती) राजा हुआ ॥ ४६ ॥ उस पृथ्वीपतिके उग्र-राज्यमें अनेक प्रकारके गहनोंसे युक्त अधिक स्त्रियां थी॥ ४७ ॥ वह राज्य बड़ी लक्ष्मी धन तथा धान्य रत्नोंसे व्याप्त था, मुझे उस महाराजाकी पुत्री जानो ॥ ४८ ॥ मैं कामस्वरूपिणी युवती मदमें व्याकुल समस्त पुण्य करनेवाली तथा श्रेष्ठ वचन कहनेवाली हुई ॥ ४९ ॥ मंदभावसे धर्म कहनेवाले मुझे न रुचे, जो मुनि आते उनसे धर्म पूछती ॥ ५० ॥ हे सिद्धो ! मनसे धर्म और प्रीतिका आशय सुनो । जो कुछ मनुष्यने कर्म किये हैं उन सबका फल मिलता है॥५१॥ जैसा पूर्व जन्ममें किया है, उसके अनुसार देह धरता है पूर्वजन्मके फलानुसार एक साधक मुझे ग्रहण करके यहां आया ॥ ५२ ॥ उसने कामरूपी सब कला-ओंसे युक्त ईश्वर परायण करोडों सुन्दरियोंसे व्याप्त दिव्यपुर निर्माण किया ॥ ५३ ॥ यही हमारी पुरीका नायक है, उसका कोई नायक नहीं, उसने कन्या के निमित्त शिवजीसे पूछा तब शिवने कहा ॥ ५४ ॥ इस रक्षित कन्याको उस

राक्षिता ॥ महापथे सदेहोयोह्यागंता पथिदिव्यकः ॥ ५५ ॥ वदते कन्यकासत्यं शृणु वाक्यं शुभावहम् ॥ बलं तव महाश्रेष्ठमस्यास्त्वं रक्षणं कुरु ॥ ५६ ॥ शंकरं वरमिच्छामि साधकं वरवल्लभम् ॥ मृषा न भाषणं मा च समादाय च गच्छ त्वम्॥५७॥ प्रसादऐश्वरः सिद्धः शृणु साधो महातपः ॥ किं करोमि मोहरूपं तस्मात्संवसनं मम ॥ ५८ ॥ प्रकटे ह्यांतरे देशे सहिता शब्दभाषिते ॥ सेवावासादिभक्तिश्च रक्ष्यते च गृहे मया ॥ ५९ ॥ तिष्ठन्तः प्रथमं सिद्धास्ते रोचंते च संगमे ॥ पश्चाच्च ह्यागताः सिद्धास्ते भाषन्ते स्म नायकम् ॥ ६० ॥ पृच्छंतः साधकाः सर्वे भाषिते ह्यामरांगने ॥ त्यक्त्वा तु चंपिकालोकं गतास्ते चोत्तरामुखम् ॥ ६१ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे विख्यातपुराणे श्रीश्वरकार्त्तिकेयसंवादे-
पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे
शिवदर्शने सदेहकैलासगमने चंपिकाराज्ञीपुरीवर्णनं
नाम षड्विंशः पटलः ॥ २६ ॥

रुद्रस्वरूप साधकको देना, जो सदेह इस दिव्य महापंथमें आनेकी इच्छा करै ॥ ५५ ॥ यह कन्या सत्य कहती है तुम इसका भाषण सुनो, तुम्हारा बल महाश्रेष्ठ है। तुम इकलेही रक्षा कर सक्ते हो ॥ ५६ ॥ मैं एक साधक शंकररूप वरकी इच्छा करती हूं मैं असत्य नहीं कहती तुम मुझे लेकर चलो ॥ ५७ ॥ हे साधो ! महातपस्वी सिद्धो ! सुनो, मुझे शंकरका प्रसाद है पर क्या करूं किसी कारणसे मुझे मोह होगया ॥ ५८ ॥ बाहर भीतर प्रगट, शब्द भाषणसे रहित सेवा, वास, आदि भक्ति मेरे घरमें रक्षित हैं ॥ ५९ ॥ पहले सिद्ध रुचन्तिके संगममें स्थित रहते थे चंपाके वचन सुन फिर पीछे सिद्धोंने उस पुरीके नायकसे भाषण किया ॥ ६० ॥ देवांगनाओंके पूछनेपर उन्हें उत्तर दे चम्पिकाको छोड कर वे उत्तरकी ओर चले गये ॥ ६१ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे शिवगौरीसंवादे भाषाटीकायां षड्विंशः पटलः ॥ २६ ॥

सप्तविंशः पटलः ।

ईश्वर उवाच ॥ ॥ ॐ अग्रतो दृश्यते तत्र पुंगिरिर्नामपर्वतः ॥ सूर्यकोटिप्रतिकाशोऽग्निज्वालासमप्रभः ॥ १ ॥ योजनांशतं चैव दृष्टा च पर्वतोत्तमम् ॥ उत्तमं शिखराकारं रक्तकांतिविभूषितम् ॥ २ ॥ सौवर्णकास्तथा वृक्षाः फल पुष्पसमन्विताः ॥ सर्वाभरणसंयुक्ता देवास्तत्र समागताः ॥ ३ ॥ सप्तद्वीपा वसुमती सप्तसागरसंयुता ॥ तस्मिन् तु शिखरारूढः पश्यते सर्वगोचरम् ॥ ४ ॥ सप्तसागरपृथ्वी चगोष्पदं मात्रदृश्यते ॥ पथं भयानकं दृष्ट्वा मंत्रं जप्त्वा च निर्मलम् ॥ ५ ॥ अथ मंत्रः ॥ ॐ हुं क्षीं क्षीं हुं ॐ हुं फट् स्वाहा॥अघोरोयंमहामंत्रो महासिद्धिकरो नृणाम्॥ ॥६॥महाविघ्नहरं नित्यं स्वर्गपंथप्रदायकम् ॥ मेरुशृंगं महारूढं दिव्यमालाकुलध्वजम् ॥ ७ ॥ पश्यतां तस्य शैलस्य कलापूर्णं समापुरी ॥ आपदा कर्महंता च वैतालायक्षराक्षसाः ॥ ८ ॥ गण गंधर्वसंस्थानं पुरीं पंचकलान्विताम् ॥ शतयोजनविस्तीर्णा रत्नकांचनभूषिताम् ॥ ९ ॥ ब्राह्मणावेद निर्घोषैर्वैदूर्यमणिरश्मिभिः ॥

ईश्वर बोले आगे पुंगिरिनामक पर्वत मिला जो कोटि सूर्यके समान प्रकाशित अग्निके लपटकी समान कान्तिमान् था ॥ १ ॥ सैकडों योजनसे उस पर्वतोत्तमको देख जिसके शिखर बडे उन्नत और लालकान्तिमणियोंसे शोभायमान थे ॥ २ ॥ वहां सुवर्णके वृक्ष फल फूलोंसे युक्त थे, देवता लोग सम्पूर्ण आभूषणोंसे व्याप्त थे ॥ ३ ॥ सात द्वीपवाली और सातसमुद्रवाली पृथ्वी उस पर्वतके शिखरपर चढ़के ॥ ४ ॥ गोपद (गायके खुर) के समान दीखती है । उस भयानक मार्गको देखकर सिद्ध अघोर मंत्रको जपने लगे और उसके जपन मात्रसे निर्मल पंथ दीखने लगा ॥ ५ ॥ ॐ हुं क्षीं क्षीं हुं हुं फट् स्वाहा, यह अघोर महामंत्र मनुष्योंको परमसिद्धि करनेवाला है ॥ ६ ॥ बडे २ विघ्नोंका हरनेवाला स्वर्गलोकका देनेवाला है । सुमेरु पर्वतके शिखरपर चढ दिव्यमाला पताकाओं सहित ॥ ७ ॥ उस पर्वतकी कलाकी समानताको नहीं पाया ॥ ८ ॥ आपत्तिमें कर्मका नष्ट करनेवाले वैताल, यक्ष, राक्षसगण, गन्धर्व हैं यह पुरी पांच कलाओं सहित सौ योजन विस्तृत, रत्नोंकरके तथा सुवर्णसे शोभायमान है ॥ ९ ॥ ब्राह्म-

ऋषयो यक्षगंधर्वाः एवंते पुरवासिनः ॥ १० ॥ इन्द्रस्य नगरी दिव्याः श्रूयते कन्यकोत्तमाः॥ ज्वलिता पद्मरागस्य वैदूर्यमणिशोभिताः ॥ ११ ॥ इन्द्रनील महानीलैः दृश्यते च मनोहरम् ॥ तिष्ठंति च ततः सर्वे पुत्रदारासमन्विताः ॥ १२ ॥ क्षीरोदधि यथाविष्णुं संप्राप्ते दीर्घनिद्रया ॥ तत्र स्थाने तथालोके भुंजंति विपुलांश्रियम् ॥ १३ ॥ स्वयंतुष्टोमहादेवउमासार्द्धंत्रिलोचनः॥ अर्चयित्वाऋषिःसर्वेंगणगंधर्वसेविताः ॥ १४ ॥ भेरीमृदंगशब्देनशंखतूर्याचवेणुकाः ॥ गीतंगायंतिगंधर्वाः वीणावाद्यंतिसुन्दरी ॥ १५ ॥ तालवादननिर्घोषैः लिंगस्याग्रेनिरंतरम् ॥ केचित्पक्षोपवासैश्चकेचित्मासोपवासिना ॥ १६ ॥ केचित्पुष्पफलाहारं केचिन्मारुतभोजनम् ॥ अग्निहोत्रेरताकेचित्केचित्पूज्यंतिब्राह्मणम् ॥ १७ ॥ केचित्कामरताशक्तिः केचिद्विपुलभोजनाः ॥ केचिद्यज्ञरताविप्राकेचिल्लोकातपंतिच ॥ १८ ॥ केचिच्चपवनाशक्तिः केचिद्ध्यानतपोरताः ॥ ऊर्द्धपादस्थिताःके-

षोंकी वेदध्वनि तथा वैदूर्य मणियोंकी कान्तिसे व्याप्त ऋषि, यक्ष, गन्धर्वोंसे युक्त ॥ १० ॥ इन्द्रकी दिव्य नगरीमें उत्तम २ कन्या सुनी जाती हैं, पर यहांकी कुमारियां पद्मराग मणियोंकी कान्तिसे प्रज्वलित वैदूर्यमणियोंसे शोभित थीं ॥ ११ ॥ इन्द्रनील महानील मणियोंसे अति मनोहर दीखती थीं । तहां सब मनुष्य पुत्र स्त्री सहित निवास करते हैं ॥ १२ ॥ जिस प्रकार क्षीरसागरमें विष्णु दीर्घ निद्रासे सोते हैं तैसे उस लोकमें विपुल सम्पत्ति सुखको भोगते हैं ॥ १३ ॥ यहां साक्षात् शिव, पार्वती सहित स्वयं सन्तुष्ट हुए हैं, सब ऋषिगण गन्धर्वों सहित अर्चना करते हैं ॥ १४ ॥ भेरी, मृदंग, शंख, वेणु आदि बाजोंसहित गन्धर्व गान करते हैं स्त्रियां बजाती हैं ॥ १५ ॥ शिवलिंगके आगे निरंतर ताल बाजे आदि शब्दोंसे नृत्य करते हैं, कोई पक्षके उपवास तथा कोई मासके व्रतको करते हैं ॥ १६ ॥ कोई फूल, फल, कोई पवन भोजन करते कोई अग्नि होममें तत्पर तथा कोई ब्राह्मणोंको पूजते हैं ॥ १७ ॥ कोई काममें तत्पर कोई अधिक भोजन करनेमें कोई ब्राह्मण विद्या, यज्ञ करनेमें निमग्न, कोई तप करते हैं ॥ १८ ॥ कोई पवनकी समान शक्तिवाले कोई ध्यान तपमें तत्पर, कोई ऊपरको पैर किये

चित्केचिच्चांद्रायणेरताः ॥ १९ ॥ एकपादेस्थिताःकेचित्केचिद्ये- काँगुष्ठया ॥ महाध्यानरतायोगीवायुविन्दुमभागमम् ॥ २० ॥ एवंवहुविधालोकाअर्चयंतिसदाशिवम् ॥भृगुमुनिनारदस्यवाल्मी- किकश्यपस्तथा ॥२१॥ मरीचीमार्कंडेयदुर्वासाव्याससपंडिताः॥ वशिष्ठगौतमश्चैवकृष्णद्वीपाचअंगिराः ॥ २२ ॥ ऋषिकन्यारथा- रूढाहृष्टाकाममयोध्वनिः ॥ गौरीचसदृशासर्वैपद्मनीमृगलो- चनी ॥ २३ ॥ दिव्यवस्त्रपरीधानादिव्यगंधानुलेपना ॥ दिव्य- पुष्पशिरोबध्वादिव्याभरणभूषिताः॥ २४ ॥ दिव्यदेहमहाकाया- दिव्यदेहसमावृता ॥ करकंकणसंयुक्ताहारकेयूरभूषिता ॥ २५ ॥ नातिदीर्घैनातिस्थूलाकारिकुंभौकुचस्तथा ॥ एवंसर्वागुणैर्युक्ता- ऋषिकन्यामनोरमाः ॥ २६ ॥ सिद्धाश्चैवागताहृष्टाआगतासा- धकाश्रये ॥ पश्चाचसाधकाः सर्वैवृंदेवृंदेसहस्रशः ॥ २७ ॥ स्वा- गताभोमहासिद्धाकन्यास्तत्रवदंतिच ॥कन्यका ऊचुः॥ क्वागता- भुवनात्सिद्धाः कस्थानेचैवगम्यते ॥ २८ ॥ एतद्ब्रूहिमहाचार्य-

कोई चान्द्रायण व्रत करनेमें प्रवृत्त थे ॥ १९ ॥ और कोई एक पैरसे स्थित कोई एक अँगूठेसे खडेहुए बडे ध्यानमें निमग्नहैं, पवन तथा जलबिन्दुके खानेवाले योगीहैं ॥ २० ॥ इस प्रकार अनेक प्रकारसे सदा शिवको पूजतेहैं भृगु, मुनिश्रेष्ठ नारद, तथा वाल्मीकि ॥ २१ ॥ मरीचि, मार्कण्डेय, दुर्वासा, व्यासादि पंडित वसिष्ठ गौतम कृष्णद्वैपायन अंगिरा ॥ २२ ॥ तथा रथपर चढीहुई मधुरध्वनि वाली ऋषिकन्या और सम्पूर्ण पार्वतीके सदृश पद्मिनी और मृगके समान नेत्र- वाली ॥ २३ ॥ सुन्दर २ वस्त्र धारण करनेवाली दिव्य सुगंध लिपटाये दिव्य पुष्प सिरपर धारण किये तथा सुन्दर २ वस्त्र सुन्दर आभूषण पहने थीं ॥ २४ ॥ दिव्यशरीरधारी महाकन्यायें हाथमें कंकण धारण किये हार बाजूबंदोंसे शोभाय- मान ॥ २५ ॥ अतिलम्बे, न अतिस्थूल हाथीके कुंभस्थलके समान स्तनवाली इसप्रकार सब गुणोंसे अलंकृत ऋषि कन्याएं थीं ॥ २६ ॥ वे इनसाधकोंके आश्र- ममें आई, पश्चात् सम्पूर्ण कन्यायें सहस्रोंदल समेत स्थित हुई ॥ २७ ॥ हे साध को! स्वागतहै । कन्या बोलीं । आप किस स्थानसे आयेहैं और कहां जाना चा- हतेहैं ? ॥ २८ ॥ हे महाचार्य ! सो आप कृपाकर कहो, साधक बोले हे महाकन्या-

साधकैःपरिवेष्टित ॥ साधक उवाच ॥ कथयामिमहाकन्या-
शृणुमेवचनंपरम् ॥ आगतामृत्युलोकेचगंतव्यंशंकरालये॥२९॥
कन्यका ऊचुः ॥ अस्मिन्स्थानेमहावीरानानाभोगसमाकुलाः ॥
भुंजंतिसास्त्रियासर्वेजरामृत्युविवर्जिताः ॥३०॥ साधक उवाच ॥
ममभोगानरुच्यंतेसत्यंसत्यंवदाम्यहम् ॥अस्माभिस्तत्रगंतव्यंयत्र
ब्रह्माहरोहरिः ॥ ३१ ॥ यत्रस्थानेमहादेवस्तत्रगच्छंतिकामिनी ॥
साधकाःसहसाकन्यागतायत्रमहामुनि ॥ ३२ ॥ ऋषिभिर्महतो-
दृष्ट्वाहर्षंतुष्टोसमाहिताः॥स्वागताभोमहासिद्धाऋषिस्तत्रवदंतिच॥
॥ ३३ ॥ ऋषिरुवाच ॥ कन्यकास्तत्रतिष्ठंतिसंख्याश्चैवनविद्य-
ते ॥ एतानिसर्वरूपाणिक्रीडयंतिदिशोदश ॥ ३४ ॥ साधक
उवाच ॥ किमर्थभोगमायुर्ष्यंपश्चाच किंभविष्यति ॥ एतद्ब्रूहिमु-
निश्रेष्ठकुतःस्थानेपुगम्यते ॥ ३५॥ ऋषिरुवाच ॥ स्वरूपंचततो
कन्याक्रीडयंतियथासुखम् ॥ क्रीडयित्वामहाभोगंयावचंद्रार्कता-
रकाः ॥ ३६ ॥ भुक्त्वाचविपुलान् भोगान् मृत्युलोकेव्रजंतिच ॥

ओ ! ! हम कहतेहैं ! हमारा वचन सुनो ! हम मृत्युलोकसे आयेहैं शिवलोकको जातेहैं ॥ २९ ॥ कन्या बोलीं ! हे महावीर ! इस स्थानपर अनेक प्रकारके भोगों सहित स्त्रियोंसमेत जरामृत्युसे वर्जित होकर आनन्द भोगो ॥ ३० ॥ साधक बोले हमको भोग नहीं रुचते सत्य २ कहतेहैं हम को वहां जानाहैं जहाँ ब्रह्मा, शिव, विष्णु हैं ॥ ३१ ॥ हे कामिनी ! हम उस स्थानको जातेहैं जहां महादेवहैं । तब साधकोंको वह कन्या वहां लगई जहां ऋषिथे ॥ ३२ ॥ ऋषिगण उन साधकोंको देखकर बडे प्रसन्नहुए हे सिद्धो ! शुभागमनहो इसप्रकार ॥ ३३ ॥ ऋषि बोले यह कन्या स्थितहैं कि जिनकी संख्या नहींहै अतिरूपवती दशों दिशाओंमें क्रीडा करतीहैं इनसे आनन्द करो ॥ ३४ ॥ साधक बोले, भोग और आयु किस अर्थ है, पश्चात् क्या होगा? हे मुनिश्रेष्ठ ! यह आप भले प्रकार कहिये कि, फिर किसस्थानपर जाना होगा ॥ ३५ ॥ ऋषि बोले यह शोभायमान रूपवाली कन्या क्रीडा करती हैं इनके साथ सुखपूर्वक जबतक सूर्य चन्द्रमा हैं आनन्द भोगो ॥ ३६ ॥ और अनेक भोगोंको भोगकर फिर मृत्युलोकमें मनुष्य सब इच्छाओंकी

सर्वकामसमृद्धश्चजायतेविपुले कुले ॥ ३७ ॥ सर्वक्रियासमः सिद्धासर्वाचारोभवेच्छुचिः ॥ सर्वशास्त्रेभवेद्वक्तासर्वश्रीकसमृद्धिमान् ॥ ३८ ॥ चक्रवर्तीभवेद्राजाजातोजातिस्मरोभुवि ॥ भुक्त्वाभोगान्महाश्चर्यान्विविधान्मनसेप्सितान् ॥ ३९ ॥ आचार्य उवाच ॥ यदि भूयोमृत्युलोकेचगंतव्यंमहामुने ॥ किंततोराज्यभोगेनशिवलोकोनप्राप्यते ॥ ४० ॥ साधकान्प्रस्थितान्दृष्ट्वा निःस्वसंतिवराननाः॥यौवनस्थामदोन्मत्ताःसर्वशास्त्रविशारदाः॥ ॥ ४१ ॥ सर्वलक्षणसंपूर्णाःसुभोगैर्वस्त्रकुंकुमैः ॥ सुकोमलाश्चंद्रवदनाःसाधकास्तेत्यजन्तिच ॥ ४२॥ तत्रतेसाधकाः सर्वेगतास्तेचोत्तरामुखे ॥ यःशृणोतिमहापंथं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥४३॥ शिवकल्पंपठति च ईश्वरं प्रतिगच्छति ॥ ४४ ॥

इति श्रीकेदारकल्पेविख्यातपुराणे श्रीश्वरकार्त्तिकेय संवादे पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिर्जीवनमुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शनेसदेहकैलासगमनेऽप्सरपुरीवर्णनो नाम सप्तविंशः पटलः ॥ २७ ॥

पूर्तिसहित बडे उच्च कुलमें उत्पन्न होताहै ॥ ३७ ॥ सम्पूर्ण कार्योंमें सिद्धिवाला तथा समस्त आचरणोंमें पवित्र और सब शास्त्रोंका वक्ता तथा समस्त लक्ष्मीसे भरपूर ॥ ३८ ॥ चक्रवर्ती राजा होताहै हे महाचार्य ! अनेकप्रकारके मनोरथ और भोगोंको भोगकर जातिका स्मरण होताहै ॥ ३९ ॥ आचार्य बोले हेमहामुने ! यदि फिरभी मृत्युलोकमें जन्म होताहै तो राज्यभोगसे क्याअर्थहै, हम शिवलोकको जातेहैं ॥ ४० ॥ हे वरानने ! यह कह उन साधक लोगोंने प्रस्थान किया उन यौवनमें उन्मत्त मदविह्वल सब शास्त्रोंमें निपुण ॥ ४१ ॥ सब लक्षणोंसे भरी सुन्दर २ भोग वस्त्र और केसर आदिसे वेष्टित अति कोमल शरीरवाली चन्द्रमाके समान मुखवाली कन्याओंको छोडा ॥ ४२ ॥ तब वे साधक उत्तर (आगे) की ओर चलदिये जो मनुष्य महापंथको श्रवण करतेहैं वह सब पापोंसे छूट जातेहैं ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे शिवकार्तिकेयसंवादे भाषाटीकायां सप्तविंशः पटलः ॥ २७ ॥

अष्टाविंशः पटलः ।

श्रीश्वर उवाच ॥ ॐ अग्रतोदृश्यतेतत्रहेमस्तंभपरिच्छदः ॥ ज्वलंतंपद्मरागं च चंद्रकांतिसमप्रभम् ॥ १ ॥ दर्शनेह्यद्भुतं रूपं दृष्ट्वा तत्र महामुनिः ॥ संप्राप्ताःसाधकाः स्तत्रऋषिं दृष्ट्वा ह्यधोमुखम् ॥ २ ॥ हेमस्तंभंततो दृष्ट्वा नानारत्नविभूषितम् ॥ अर्द्धयोजनविस्तीर्णं उच्छ्रायोदशयोजनम् ॥ ३ ॥ चंद्रादित्यसमंतेजश्छायातस्य सुशीतला ॥ इन्द्रनीलमहानीलैः पद्मरागोपशोभितम् ॥ ४ ॥ ध्वजमालाकुलंदिव्यं चित्रकर्मोपशोभितम्॥ तस्य शृंगेपुरंदिव्यं शोभितंधवलंगृहम् ॥ ५ ॥ तस्यमध्येमहालिंगंअप्सरःस्थापितंपुरा ॥ पूजयंतिततःकन्यास्त्रिकालंभक्तिवत्सलम् ॥ ६ ॥ नृत्यंत्यप्सरसस्तत्रगीतंगायंतियोषितः ॥ प्रेक्षणीयंप्रकुर्वंतिवंशवादित्रनादितम् ॥ ७ ॥ भेरीमृदंगशब्देनशंखतूर्यरवेण च ॥ गानंकुर्वंतिगंधर्वाअर्चयित्वावृषध्वजम् ॥ ॥ ८ ॥ हेमपुष्पैर्महाभक्ताः पूजयंतिह्यनेकधा ॥ पटहोवेणुवंश-

श्रीशिवजी बोले तहां आगे सुवर्णके स्तम्भोंसे युक्त प्रज्वलित पद्मराग चन्द्रकान्त मणियोंसे प्रकाशित भूमि देखी ॥ १ ॥ साधक वहां गये और नीचेको मुख किये एक ऋषिको देखा तथा उसके अद्भुतरूपको देख चकित हुए ॥ २ ॥ और नानाप्रकारके रत्नोंसे जटित सुवर्णके खम्भको देखा जो आधे योजन विस्तृत और दसयोजन ऊँचा था ॥ ३ ॥ उसका तेज सूर्य और चन्द्रमाके समान, तथा छाया बडी ठंडी थी, इन्द्रनील और महानीलमणि व पद्मरागमणियोंसे शोभायमान था ॥ ४ ॥ पताका माला तथा दिव्यचित्रोंसे सजाहुआ उसके शिखरपर स्वच्छ गृह शोभायमान थे ॥ ५ ॥ उनमें शिवलिंग स्थापित थे और अप्सरा व कन्या तीनों समय भक्तिपूर्वक पूजन करतीथीं ॥ ६ ॥ अप्सरायें नृत्य करती स्त्रियां गान करतीथी बाँसुरी आदि बाजोंके शब्द होतेथे ॥ ७ ॥ भेरी मृदंग शंख तोरईके शब्दोंसे गन्धर्व शिवका अर्चन करके गान करतेथे ॥ ८ ॥ अनेक देवता बड़ी भक्तिश्रद्धासे सुवर्णके पुष्पोंसे पूजन करतेथे, पटह वेद बाँसुरी आदि

श्चवाद्यंतेविविधानिच ।।९।। चंदनागरुकर्पूरादिव्यैर्धूपैश्चधूपिताः ॥
तस्यशृंगेमहासेनगतास्तेसर्वसाधकाः ॥ १० ॥ अर्चयित्वामहा-
देवं हेमपुष्पैःसमन्विताः ॥ आरार्त्तिकंप्रकुर्वन्तिलिंगस्याग्रे-
निरंतरम् ॥ ११ ॥ तत्र ते साधकाः सर्वे उत्तीर्णतत्रातिष्ठति ॥
पठंतिसर्वशास्त्राणिचतुर्वेदभवोध्वनिः ॥ १२ ॥ दृष्ट्वा सर्वेप्रव-
क्ष्यन्तिब्रूहितस्यशुभाशुभम्॥ ततो दृष्ट्वा मुनिश्रेष्ठंसाधकोवाक्य-
मब्रवीत् ॥ १३ ॥ साधक उवाच ॥ मया दृष्ट्वा महादुःखमूर्द्ध्व-
पादंह्यधोमुखम् ॥ सत्यंब्रूहिमहासिद्धाः किंदुःखं हि तपः कृतम्॥
॥ १४ ॥ ऊर्द्ध्वपाद उवाच ॥ पूर्वजन्मकृतंपापमूर्द्ध्वपादमधोमु-
खम् ॥ मृत्युलोकेषुमंजातोराजाहंमंडलेश्वरः ॥ १५ ॥ अहर्निशं
शिवध्यानंपूजयित्वा पुनःपुनः ॥ यजंतोहिमहादेवं नविष्णोरर्च्चनं-
कृतम् ॥ १६ ॥ विष्णुधाम महादिव्यंप्रसंगाद्गतवानहम् ॥
विष्णुनाशापितं तत्रमूर्द्ध्वपादमधोमुखम् ॥ १७ ॥ साधक
उवाच ॥ अस्मिन्स्थानेसुराः सर्वेगणगंधर्वसेविता ॥ अप्सरायो-

अनेक प्रकारके बाजे बजतेथे ॥ ९ ॥ चंदन अगर कपूर आदिकी सुन्दर धूपोंसे सुगन्धित उसके शिखरपर वे सब साधक गये ॥ १० ॥ और सुवर्णके पुष्पोंसे महादेवको पूजन कर निरंतर शिवलिंगके आगे आर्ती करनेलगे ॥ ११ ॥ तहां उन साधकोंने स्थितहोकर सम्पूर्ण शास्त्रों व वेदोंका पाठ किया चारोंवेदोंकी ध्वनि होने लगी ॥ १२ ॥ तब साधक यह शुभाशुभ देखनेकी इच्छासे मुनिसे कहने लगे ॥ १३ ॥ हमने आपको बडा दुःखी देखा कि, ऊपरको पैरकिये और नीचेको मुख किये हो, सो सत्य २ कहो कि किसकारण यह दुष्कर तप करतेहो ॥ १४ ॥ ऊर्द्ध्वपाद बोला पूर्वजन्मके पापसे ऊपरको पैर और नीचेको सिर करनेवाला मैं मृत्युलोकमें चक्रवर्ती राजा था ॥ १५ ॥ रातदिन ध्यानसे शिवकी पूजा करता और विष्णुका पूजन नहीं करताथा ॥ १६ ॥ कभी प्रसंग वशमें विष्णुके मंदिरमें गया, तब विष्णुने ऊर्द्ध्वपाद अधोमुख होनेका शाप दिया ॥ १७ ॥ साधक बोले इस सुन्दर स्थानमें सम्पूर्ण देवतागण गन्धर्वसहित अप्सरा स्त्रियें

षितःसर्वाभुंजंतिपुलांश्रियम् ॥ १८ ॥ एकाकीत्वंमुनिश्रेष्ठदुःख-
सागरपीडितः ॥ कस्मिन्कालेभवेन्मोक्षोभविष्यसि महासुखः ॥
॥ १९ ॥ ऊर्द्धपाद उवाच ॥ कोटिसिद्धागमिष्यंतिममोक्षो-
भविष्यति ॥ चांद्रायणंभवेत्कृच्छ्रंतदामोक्षोभविष्यति ॥ २० ॥
आकाशपथमारुढाः पश्यंति च हिमालयम्॥तत्रच्छायांमहाकायं
मेरुशृंगंव्यवस्थितम् ॥ २१ ॥ गच्छंति च महासिद्धाःपथिचैव
हिमालये ॥ तस्यसंदर्शनेनैवममोक्षोभविष्यति ॥ २२ ॥ हेम-
स्तंभंचतेदृष्ट्वासर्वरत्नविभूषितम् ॥ २३ ॥ अर्द्धयोजनविस्तीर्ण-
उच्छ्रायोदशयोजनम् ॥ चंद्रादित्यसमंज्योतिश्छायातस्य सुशी-
तला ॥ २४ ॥ इन्द्रनीलमहानीलैः पद्मरागोपमानिच ॥ ध्वज-
मालाकुलं दिव्यंनानारत्नोपशोभितम् ॥ २५ ॥ ज्वलंतंपद्म-
रागं च स्फुरंतंकिरणैर्यथा ॥ तस्यशृंगेमहादिव्यंशोभितंधवलं
गृहम् ॥ २६ ॥ तस्यमध्येमहालिंगंह्यप्सरःस्थापितंपुरा ॥ पूज-
यंतितथाकन्यास्त्रिकालंभक्तिवत्सलम् ॥ २७ ॥ नृत्यंत्यप्सरस-

आधिक सम्पत्तिको भोगतीहुई निवास करतीहैं ॥ १८ ॥ हे मुनिश्रेष्ठ ! तुम अकेले दुःखसागरमें पीडितहुए स्थितहो, हेमहामुने ! तुम्हारा किसकालमें मोक्ष (इस दुःखसे छुटकारा) होगा ॥ १९ ॥ ऊर्द्धपाद बोला जब करोड़सिद्ध इधरसे शिवलोकको जांयगे तब मोक्ष होगा अथवा चान्द्रायण कृच्छ्रव्रत करनेसे मोक्ष होसकताहै ॥ २० ॥ सिद्धगण आकाशमार्गमें चढ़कर हिमालयपर्वतको देखतेहैं, वहां पर उसकी छायामें महाकाय सुमेरुपर्वत स्थितहै ॥ २१ ॥ जो महासिद्ध हिमालयपंथको जातेहैं उनके अवलोकनसे मेरा अवश्य मोक्ष होगा ॥ २२ ॥ तब चलकर सिद्धोंने तहां सबरत्नोंसे भूषित सुवर्ण का स्तंभ देखा ॥ २३ ॥ जो आधायोजन चौडा तथा दसयोजन ऊंचा था, उज्ज्वल चन्द्रमा व सूर्यके समान प्रकाशित उसकी छाया अतिशीतल थी ॥ २४ ॥ इन्द्रनील महानील पद्मराग मणियोंसे जडी हुई ध्वजा मालाओंसे व्याप्त नानाप्रकारके रत्नोंसे शोभायमान ॥ ॥ २५ ॥ पद्मराग मणियोंकी किरणोंसे प्रकाशित उसके शिखरपर सुन्दर श्वेत गृह शोभित थे ॥ २६ ॥ उनमें शिवकी प्रतिमा स्थापित थी अप्सरा प्र— भक्तिपूर्वक तीनोंसमय शंकरका पूजन करतीथीं ॥ २७ ॥ नृ—

स्तत्रगायंतिताश्चयोपितः ॥ प्रदक्षिणांप्रकुर्वन्तिवेणुवाद्यंचनादितम् ॥ २८ ॥ शंखतूर्यचवीणाश्चभेरीमृदंगशब्दयोः ॥ गीतं गायंतिगंधर्वा अर्चयंतिमहेश्वरम् ॥ २९ ॥ हेमपुष्पैर्महापद्मैरर्चयंतिह्यनेकधा ॥ गुग्गुलैर्धूपितास्तत्रकर्पूरैर्मंत्रितस्तथा ॥ ॥ ३० ॥ धूपितंदेवदेवस्यअतिगंधंमनोरमम् ॥ सर्वप्रकारैः कुर्वीतधूपदीपसमन्वितम् ॥ ३१ ॥ पटहासलवीणाश्चवाद्यंतेवहुनैकधा ॥ कौतूहलंबहुगुणान्नानारंगमनेकधा ॥ ३२ ॥ चंदनंह्यगरंतत्रकर्पूरंचसुवासितम् ॥ तस्यशृंगेमहासेनगतास्ते सर्वसाधकाः ॥ ३३ ॥ अर्चयित्वामहादेवंहेमपुष्पैस्तुपूजितम् ॥ पूजयेद्धूपदीपाद्यैःकर्पूरागुरुचन्दनैः ॥ ३४ ॥ आवासास्तत्र सौवर्णाअग्निज्वालासमप्रभाः ॥ मौक्तिकैःचंद्रकान्तैश्चप्रासादा विविधास्तथा ॥ ३५ ॥ प्रवालैश्चमहामूल्यैःमणिकिरणोपशोभितम् ॥ संप्राप्ताःसाधकाःस्तत्रगृहद्वारमुपस्थिताः ॥ ३६ ॥

इतिश्रीकेदारकल्पेविख्यातपुराणेश्रीश्वरकार्त्तिकेयसंवादेपंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवनमुक्तब्रह्मप्राप्तयेमहापथे शिवदर्शनेसदेहकैलासगमने ऊर्द्धपादतपस्विदर्शनोनामाष्टाविंशः पटलः ॥ २८ ॥

नित्य नृत्य करतीं, स्त्रियां गान करतीं और परिक्रमा करतीं वेणु बाजे बजाते ॥ २८ ॥ शंख तुरई वीणा भेरी मृदंगके शब्दोंके सहित गन्धर्व गीतोंको गाते और शिवका पूजन करते थे ॥ २९ ॥ अनेक प्रकार सुवर्णके पुष्पोंसे पूजते गुग्गलसे धूप करते तथा कपूरसे आरती करतेथे ॥ ३० ॥ देवदेवके सम्मुख अति-सुगंधित मनोहर धूप दीप प्रदान करते ॥ ३१ ॥ अनेक प्रकारके पटह आदि बाजे बजते और अनेकगण वहांपर कौतूहल करते थे ॥ ३२ ॥ अगर तथा सुवासित कपूर चढाते नमस्कार करते थे हे महासेन ! उसके शिखरपर सब साधक गए ॥ ३३ ॥ महादेवकी सुवर्णके पुष्पोंसे तथा धूप दीप कपूर अगर चन्दनसे पूजा करतेथे ॥ ३४ ॥ तहां सुवर्णमय स्थान अग्निकी समान कान्तिमान मोती चन्द्रकान्तमणि जटित शोभायमान भवन देखा ॥ ३५ ॥ मूंगे रत्नोंकी किरणोंसे शोभायमान उस स्थानके द्वारपर साधकलोग उपस्थित हुए ॥ ३६ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे भाषाटीकायामष्टाविंशः पटलः ॥ २८ ॥

एकोनत्रिंशः पटलः।

श्रीश्वरउवाच ॥ ॥ ॐ पश्यंतिदक्षिणेभागेपृथिव्यांतिलकंयथा ॥
हंसस्वरेणदिव्येनवदंतिचसुरोत्तमाः ॥ १ ॥ देवदानवगंधर्वा
पश्यंतेचैवसाधकाः ॥ साधक उवाच ॥ ॥ मनुष्यसदृशंवाक्यं
कस्यसंवदतेगृहः ॥ २ ॥ महारम्यंमहादिव्यंह्यधऊर्द्धदिशोदश ॥
गृहउवाच ॥ ॥ क्वागताभुवनात्सिद्धाःक्वस्थानेचैवगम्यते ॥ ३ ॥
सिद्ध उवाच ॥ ॥ आगतामृत्युलोकेचगंतव्यंशंकरालये ॥ गृह-
स्यवचनंश्रुत्वासाधका..विस्मयंगताः ॥ ४ ॥ नैवदृष्टंश्रुतं वा-
पिकनकंवदतेगृहम् ॥ पृच्छंतिसाधकाः सर्वेगृहमेकाग्रचेतसः ॥
॥ ५ ॥ ब्रूहिवेश्ममममाग्रेणकस्यसंबंधिनोगृहम् ॥ गृह उवाच ॥
ततःप्रीताःस्तुतिंसिद्धाःदृश्यतेनमहागृहम् ॥ ६ ॥ गृहसंबंधि-
नोकस्यसर्वलक्षणसंयुतम् ॥ हेममयंसुविस्तीर्णंसर्वालंकारभूषि-
तम् ॥ ७ ॥ मुक्तादितेमहाभागैर्वैदूर्यमणिशोभिता ॥ गाव-
त्सशतसंकीर्णनानाविहंगसेविता ॥ ८ ॥ नानागंधर्वसिद्धा-

शिवजी बोले उन्होंने पृथ्वीके दक्षिणकी ओर दिव्यस्थान देखा जहां देवता-
गण हंसकी समान दिव्यस्वरसे बोलते हुए ॥ १ ॥ देवता दैत्य गन्धर्वोंको सा-
धकोंने देखा, साधक बोले यहां मनुष्यके समान वाक्य घरोंमें किसका सुनाई
देताहै ॥ २ ॥ अतिमनोहर सुन्दर दशोंदिशा (कोने) समेत गृह बनाहै, गृह
बोला हे सिद्धो ! कहांसे आतेहो और कहांको जातेहो ? ॥ ३ ॥ सिद्धबोले हम
मृत्युलोकसे आतेहैं शिवलोकको जाते हैं, घरका वचन सुन साधकलोग आश्चर्य-
को प्राप्त हुए ॥ ४ ॥ ऐसा न देखा न सुना कि सुवर्णमय गृह बोलताहो, तब सब
साधकोंने एकाग्रचित्तहो घरसे पूछा ॥ ५ ॥ हे गृह! हमारे सामने कहो कि किस
सम्बन्धीका गृहहै, गृह बोला हे सिद्धो ! गृहका स्वामी नहीं दीखपड़ताहै ॥ ६ ॥
किसका यह सबलक्षणोंसे शोभायमान गृहहै जो सुवर्णरचित अति विस्तृत सब
अलंकारोंसे भूषित है ॥ ७ ॥ मोती आदि तथा वैदूर्यमणियोंसे शोभितहै, गाय
बछडे अनेक प्रकारके पक्षियोंसे सेवित है ॥ ८ ॥ नानागन्धर्व सिद्ध नाग आदि-

श्वनागानांसेवितंशिवम् ॥ पुरंदरगृहंचवप्राकारशतमाकुलम् ॥ ॥ ९ ॥ पदंपश्यंतिचाचार्यमेतत्कांचनवद्गृहम् ॥ उच्यतेसाधकाःसर्वैकिमिदंचैवदृश्यते ॥ १० ॥ नमनुष्यानदेवाश्चनयक्षानचराक्षसाः ॥ किन्नरानचगंधर्वाःसंपूर्णैःसदृशैर्भृतः ॥११॥ आस्थिताभुवनेनैवअधऊर्द्धंदिशोदश ॥ ममनाथकुलेगत्वाउदधेर्दक्षिणेतटे ॥ १२ ॥ स्वपाणिभ्योस्तोपथिमहादेवस्यसाधुना ॥ पंथिरुवाच ॥ किमर्थंसाध्यतेदेवंमहादेवेनभोगृहम् ॥ १३ ॥ गृह उवाच ॥ ईश्वरस्यस्वयंलिंगंप्रकाशितंतयोमुनिः समुत्थंवैश्रुतेनित्यंसमुद्रस्यतटेशुभे ॥ १४ ॥ तेनैवक्रीयतेस्वामीगृहस्यशततंवदेत् ॥ नयत्रस्थानेसंक्रोधःएतत्पश्यंतिकारणम् ॥ ॥ १५ ॥ यःस्थित्वायचस्थानेचतत्रासौपार्वतीपतिम् ॥ नन्दनस्यगृहंनामवेदशास्त्रार्थपारगः ॥ १६ ॥ तेनाहंनिर्मितः सिद्धागृहंवैस्फाटिकंवदेव ॥ सोपिसंगतपुष्पार्थंततःक्षीरोदसागरे ॥ १७ ॥ यावद्वदंतितेसिद्धानन्दनोगृहमागतः ॥ कारण्ड

से सेवित सौ प्रकार युक्त यह इन्द्रका गृहहै ॥ ९ ॥ आचार्य इस सुवर्णके घरके पदको देखते हैं और साधक परस्पर कहतेहैं कि यह क्या अद्भुत विषय दीखता है ॥ १० ॥ न मनुष्य, न देवता, न यक्ष, न राक्षस, न किन्नर, न गन्धर्व हैं सब अलक्ष्यहैं ॥ ११ ॥ यह घर ऊपर नीचे दशोंदिशाओंमे स्थित है, सागरके दक्षिणतटमें मानो प्राप्त होकर हमारे स्वामीने ॥ १२ ॥ इसको स्थापित कियाहै यह महादेवजीने पथिकोंके निमित्त रचाहै, यह देख वे पथिक बोले हे गृह ! किस लिये महादेवने यह गृह निर्माण किया ॥ १३ ॥ गृह बोला हे मुने ! ईश्वरका लिंग यहां प्रगटहुआ समुद्रके किनारे प्रकाशित ॥ १४ ॥ उसके स्वामीने यह गृह मोल लिया ॥ १५ ॥ इस स्थानमें पार्वतीपति स्थित हुए, यह नन्दनका गृह है जो वेदशास्त्रमें पारंगतहै ॥ १६ ॥ हे सिद्धो ! उसनेही हमको बनाया स्फटिक मणियों सहित रचा है, और वह पुष्प लेनेको क्षीरसागरको गया है ॥ १७ ॥ गृहके इतना कहनेपर गृहका स्वामी नन्दन गृहको आया, कारंडव (हंस)

हेमपुष्पैश्चमुक्ताचंपकपूरिताः ॥ १८ ॥ कृताञ्जलिपुटोभूत्वा तेषांकृत्वाभिवादनम् ॥ नन्दनोवाच ॥ ॥ स्वागतंचमहासिद्धा दुर्लभंतवदर्शनम् ॥ १९ ॥ कृतंचदुष्कृतंकर्मएकाकीविचरा म्यहम् ॥ साधक उवाच ॥ ॥ ततःपृच्छाम्यहंब्रूहिकिंत्वयादुष्कृतं कृतम् ॥ २० ॥ एकाकीतिष्ठतेचात्रसर्वलोकविवर्जितः ॥ नन्दनोवाच ॥ ॥ अज्ञानाद्बालभावेनपुरापूर्वेव्यवस्थिताः ॥२१॥ पूर्वकर्मविपाकेनएतत्पापंकृतंमया ॥ शुभंवाप्यशुभंवापिभुंक्ते कर्माणिचानघ ॥ २२ ॥ यैर्दृष्टंस्फुटितंलिंगंदग्धखंडंचमेवच॥ समुत्थितंदुच्छ्रितंचापिशिवलिंगंनचालयेत् ॥ २३ ॥ उद्यानजलमाभावः पुरीपंथेनमास्थिताः ॥ पूर्वकर्मविपाकेनलिंगमुत्पाटितंमया ॥ २४ ॥ निस्वासितंयथानागासर्वलोकविवर्जिता ॥ भुजंतिसर्वकर्म्माणिमेकास्तिष्ठाम्यहंवनम् ॥ २५ ॥ ब्रह्महत्यासहस्राणिगोहत्याशतानिच ॥ कोटिकन्याहतेपापंपितृमातृवधेनच ॥ ॥ २६ ॥ यत्पापंप्रभवेत्सिद्धोतत्पापंलिंगभग्नकम् ॥ तेनपापेन

सुवर्ण पुष्पों तथा मोती चंपक पुष्पोंसे पूर्ण ॥ १८ ॥ अंजलि बांधकर उनसे बोला, नन्दन बोला हे सिद्धो! स्वागत है आपका दर्शन दुर्लभ है ॥ १९ ॥ मैं दुखपूर्वक अकेला इस घरमें निवास करताहूं, साधक बोले आपने क्या पाप किया सो हम पूछते हैं ॥ २० ॥ कि सब मनुष्योंसे पृथक अकेले यहां रहते हो, नन्दन बोला पहले बाल्यावस्थामें अज्ञानसे यहां रहता था ॥ २१ ॥ पहले कर्मके फलसे मैंने एक पाप किया है साधो!पूर्व किये हुए शुभ वा अशुभ कर्मोंको अवश्य भोगते हैं ॥ २२ ॥ जिन्होंने टूटा शिवलिंग अथवा जला हुआ या खंडित हुआ देखा उसको उखाडनेसे महापाप होता है ॥ उखडे हुए हिलते हुए शिवलिंगको न उखाडै ॥ २३ ॥ वनमें जलका अभाव था मार्गमें नगरी थी, पूर्व कर्मके फलसे मैंने लिंगको उखाडा ॥ २४ ॥ जैसे सब नागोंका सब संसार विश्वास नहीं करता उसी प्रकार सब कर्मोंको भोगता हुआ अकेला यहां मैं रहता हूं ॥ २५ ॥ सहस्रों ब्रह्महत्या तथा सैकडों गोहत्या और करोडों कन्या मारनेका व माता-पिताके मारनेका ॥ २६ ॥ जो पाप होता है सो लिंगके उखाडनेसे होता

संयुक्तंनगच्छेच्छंकरालये ॥२७॥ साधक उवाच ॥ ॥ एकाकी चमुनिश्रेष्ठदुःखसागरपीडितः ॥ कस्मिन्कालेभवेन्मोक्षस्तन्मे ब्रूहिमहामुने ॥ २८ ॥ नन्दनोवाच ॥ ॥ कोटिसिद्धागमिष्यंन्तिमहापंथस्यदर्शनम् ॥ प्रवक्ष्यामि शैवसर्वेममोक्षो भविष्यति ॥२९॥ पूर्वकर्म्मविपाकेनएतत्पापंकृतंमया ॥ भुनज्मि तेनकर्माणिह्येकस्तिष्ठन्महामुने ॥ ३० ॥ यादृशंस्फुटितंलिंगं दग्धंखंडमहामने ॥ दृष्ट्वाचएवदग्धानिशिवलिंगंनचालयेत् ॥ ॥ ३१ ॥ एवंश्रुत्वाततोसिद्धागंतव्यंपवनोयथा॥तत्पश्चात्साधकाः सर्वेगतावैचोत्तरामुखे ॥ ३२ ॥

इति श्रीरुद्रयामले केदारकल्पे विख्यातपुराणे श्रीश्वरकार्त्तिकेयसंवादे पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शने सदेहकैलासगमने शून्यभवनवर्णनोनाम एकोनत्रिंशः पटलः ॥ २९ ॥

हे हे सिद्धो ! उस पापके कारण मैं शिवलोकको नहीं जाताहूं ॥ २७ ॥ साधक बोले हे मुनिश्रेष्ठ इस वनमें अकेले निवास करते दुःखसागरसे पीडित होतेहो सो किस समयतक तुम्हारा छुटकारा होगा यह मुझसे कहो ॥ २८ ॥ नन्दन बोला, जब करोडों सिद्ध शिवलोकको जांयगे इस मार्गमें दर्शन देंगे तो मेरा मोक्ष होगा ॥ २९ ॥ पूर्व कर्मके फलसे यह पाप मैंने किया, उसका फल भोगताहूं ॥ ३० ॥ चाहे लिंग फूटा हो जलाहो खंड २ हो उसको देखकर भी न उखाडे ॥ ३१ ॥ इस प्रकार वचन सुन सिद्ध पवनवेगसे शीघ्र चल दिये उसके पीछे सब साधक फिर उत्तरकी ओर चले ॥ ३२ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे भाषाटीकायामेकोनत्रिंशः पटलः ॥ २९ ॥

त्रिंशः पटलः ।

श्रीश्वर उवाच ॥ ॥ ॐ अग्रतोदृश्यतेतत्रअपूर्वंचममप्रिये ॥ आकाशेउत्तरेभागेईशानेदिग्विभागके ॥ १ ॥ ज्वलंतपद्मराग श्चसूर्यकांतिसमप्रभम् ॥ ध्वजमालाकुलंदिव्यंनगेन्द्रोरत्नभूषितम् ॥ २ ॥ हेमशृंगेमहाकूटेबद्धंद्दद्वाचकांचनैः ॥ द्वादशादित्यतेजाढ्यंनानारत्नप्रशोभितम् ॥३॥ सहस्रयोजनविस्तीर्णउत्तुंगं चचतुर्गुणम् ॥ तस्यशृंगेपुरीदिव्यंचित्रकर्म्मोपशोभितम् ॥ ४ ॥ अप्सरोभिःस्थापितंलिंगंपद्मरागोमयानिच ॥ पूजयंतिमहा दिव्यंत्रिकालंभक्तिवत्सलम् ॥ ५ ॥ त्रिंशत्कोटिसहस्राणि पूज्यंतेकन्याकोत्तमा ॥ भेरीमृदंगशब्देनशंखकोलाहलंतथा ॥ ६ ॥ दुंदुभिर्वेदनिर्घोषैस्तालशृंगचमर्द्दलैः ॥ वंशवादत्रयंत्रस्थदिव्यैःपुष्पैःसुशोभिता ॥ ७ ॥ चंदनागरकर्पूरैर्देवदारैःफलैस्तथा ॥ कपालैःशंखपालैश्चनानापुष्पैःप्रशोभिता ॥ ॥ ८ ॥ आगताचपुरस्थानेद्वारेतिष्ठंतिसाधकाः ॥ पुरमध्ये

शिवजी बोले हे प्रिये ! आगे एक अपूर्व दृश्य दीखा कि उत्तरकी ओर ईशानदिशामें ॥ १ ॥ पद्मरागमणियोंसे प्रकाशित सूर्यकी समान कान्तिवान् पताका माला आदिसे भूषित रत्नोंसे शोभित एक पर्वत है ॥ २ ॥ सुवर्णमय महाकूट शिखरमें सुवर्णसे बंधा हुआ और बारह सूर्यकी समान तेजयुक्त रत्नोंसे शोभायमान ॥ ३ ॥ सहस्र योजन विस्तृत तथा चार सहस्र योजन ऊंचा उसके शिखर पर चित्रविचित्र कर्मसे शोभित दिव्यपुरी विराजमान थी ॥ ४ ॥ वहां अप्सराओंने पद्मरागमणि जडित लिंग स्थापित किया है. और तीनों समय भक्तिसहित पूजन करती हैं ॥ ५ ॥ तीस सहस्र कोटि कन्या पूजन करती हैं, भेरी, मृदंग, शंखध्वनिसे कोलाहल करती हैं ॥ ६ ॥ दुन्दुभि तथा वेदध्वनि वैताल, शृंग, मर्दल, बाँसुरी, आदि बाजोंसे [illegible] दिव्य-दिव्यपुष्पोंसे शोभायमान ॥ ७ ॥ चन्दन अगर कपूर तथा देवदारु फलोंसे शोभित कपाल शंखपाल आदि अनेक पुष्पोंसे शोभित ॥ ८ ॥ उस भागके द्वार पर साधकगण उपस्थित हुए उस पुरके मध्यमें बालसूर्यके समान एक गृह

गृहंतस्यबालार्कैनसमप्रभा ॥ ९ ॥ उत्तुंगशिखराकारंप्राकारं
तोरणान्वितम् ॥ कपाटार्गलसंयुक्तंवेष्टितंचपुरोत्तमम् ॥ १० ॥
द्वारोत्पाटितशब्देनद्वारपालेनधीमता ॥ महावीरामहातेजामहा-
बलपराक्रमाः ॥ ११ ॥ सकरोतिमहात्रासंसिद्धानांचमहद्बलम् ॥
तत्रतेचभयंदृष्ट्वाभयंतत्रनविद्यते ॥ १२ ॥ द्वारपालस्वरूपंचदृष्ट्वा
भीताश्चसाधकाः ॥ प्रतिहार उवाच ॥ ॥ किमर्थंसाधकाःसर्वे
ह्यस्थानेचैवगम्यते ॥ १३ ॥ अघोरायभयंदृष्ट्वासर्वेतेपापलाय
नम् ॥ तस्यश्रुत्वामहाशब्दमघोरमक्षरंजपेत् ॥ १४ ॥ ॐ श्रीं
श्रीं श्रीं हुं हुं हुं फट् स्वाहा ॥ इतिमंत्रः ॥ ॥ अघोरंचमहा
मंत्रंसर्वविघ्नक्षयंकरम् ॥ भीताजपित्वामहामंत्रमघोरंदेवदुर्लभम् ॥
॥ १५ ॥ अघोरंजपमानश्चप्रतीहारोवदेत्ततः ॥ वदतेचशुभं
वाक्यंविचार्यचपुनःपुनः ॥ १६ ॥ सौम्यरूपामहामूर्तिःसर्वा-
लंकारभूषिता ॥ नानारत्नविचित्रैश्चबहुवस्त्रैश्चशोभिता ॥
॥ १७ ॥ स्वागतंचमहासिद्धाकपाटोत्पाटनंकृतम् ॥ तस्य
तद्वचनंश्रुत्वाकन्यास्तुष्टाहसंतिच ॥ १८ ॥ कन्यकाऊचुः ॥

शित था ॥ ९ ॥ ऊंचे शिखर पर्यन्त प्राकार वंदनवारसे भूषित कपाट मूसला-
आदिसे वेष्टित नगर था ॥ १० ॥ द्वारपर कहे शब्दसे बुद्धिमान् द्वारपालने जो
महातेजस्वी पराक्रमी साहसी था ॥ ११ ॥ वड़ा त्रास (भय) दिखाया तव
सिद्धगण महाभयको देख व्यथित न हुए ॥ १२ ॥ परन्तु साधक द्वारपालके
स्वरूपको देख भयभीत हुए, द्वारपाल बोला हे साधक ! किस कारण तुम सब
इस स्थानमें प्राप्तहुए, और कहां जाते हो ? ॥ १३ ॥ इसप्रकार उसका महाशब्द
सुनकर उन्होंने अघोरमन्त्रको जपा ॥ १४ ॥ ॐ श्रीं श्रीं श्रीं हूं हूं हूं फट् स्वाहा
यह मंत्र है,यह अघोर महामंत्र सबविघ्नोंका विनाशक है॥१५॥अघोर दुर्लभमंत्रको
जपकरतेहुए उन साधकोंसे द्वारपाल शुभवाक्योंको बार २ विचारकर बोला
॥ १६ ॥ सौम्यरूपवती सुन्दर मूर्ति सब आभूषणोंसे तथा अनेक विचित्र रत्नोंसे
भूषित, बहुत वस्त्रोंसे शोभित ॥ १७ ॥ कन्या कपाटोंको खोलती हैं, उसका
[illegible] सुन कन्या सन्तुष्ट हो हँसती हुई ॥ १८ ॥ कन्या बोली हे सिद्धो ! कौन

कभुवनागतासिद्धाकस्थानेचैवगम्यते ॥ एतद्ब्रूहिमहाचार्यसाधकोपरिवेष्टितम् ॥ १९ ॥ साधक उवाच ॥ ॥ कथयामिमहाकन्याशृणुमेवचनंमहान् ॥ आगतामृत्युलोकाच्चगंतव्यंशंकरालये ॥ २० ॥ कन्यका ऊचुः ॥ ॥ श्रुत्वाचार्यमहाप्राज्ञरुद्रभक्त्यामहातपाः॥ देवीपद्मावतीनामइमांभुंजतिसापुरीम् ॥ २१ ॥ प्रवेशंचपुरींरम्यांनादैःस्वभिरलंकृतम् ॥ नृत्यंगीतं तथाकृत्वाआचार्यस्वागतांवदेत् ॥ २२ ॥ देवीपद्मावत्युवाच ॥ कभुवनागतांसिद्धाकस्थानेचैवगम्यते ॥ सर्वमाख्याहितत्त्वेनयदि कल्याणमिच्छसि ॥ २३ ॥ साधक उवाच ॥ ॥ शृणुदेवि समासेन एवं कथतिसाधकाः ॥ आगतामृत्युलोकाच गंतव्यंशंकरालये ॥ २४ ॥ देवीपद्मावत्युवाच ॥ ॥ तिष्ठंतिसाधकाः सर्वेनगंतव्यंमहापथे ॥ कामरूपीस्त्रियासर्वाजरामृत्युविवर्जिताः॥ ॥ २५ ॥ देवोहरिहरोब्रह्माद्दश्यतेस्मिन्पुरेसदा ॥ आगच्छंतिचतुर्द्दश्यांसर्वेभोक्तार्थकारणे ॥ २६ ॥ कार्त्तिकेचाश्विनेमासेह्यमा-

भुवनसे आये और किसस्थानको जातेहो सो सब आप कहो ॥ १९ ॥ साधक बोले हे कन्याओं !! कहते हैं सुनो, हम मृत्यु लोकसे आये हैं शंकरके स्थानको जाते हैं ॥ २० ॥ कन्या बोली हे महाप्राज्ञ ! आचार्य ! शिवकी भक्ति करनेवाली पद्मावती देवी इस नगरीको भोगती है ॥ २१ ॥ इस रम्यपुरीमें अपन शब्दोंसे अलंकृत नृत्य गीत करती वह आचार्योंसे यह स्वागत वचन बोली ॥ २२ देवी पद्मावती बोली हे सिद्धो ! किस भुवनसे आते हो किस स्थानको जाते हो सो सब ठीक २ कहो ? यदि कल्याणको चाहते हो ॥ २३ ॥ साधक बोले, हेदेवि ! संक्षेपसे कहतेहैं सुनो ! हम मर्त्यलोकसे आये और शिवलोकको जातेहैं॥ ॥ २४ ॥ पद्मावती देवी बोली हेसाधको ! तुम सब यहां ठहरो महापंथको मत जाओ, कामकी समान स्वरूपवती स्त्रियां यहां जरामृत्युसे वर्जितहैं ॥ २५ ॥ और इसनगरमें ब्रह्मा, विष्णुमहेश्वर सब चतुर्दशीको भोग करनेको आतेहैं ॥ ॥ २६ ॥ कार्तिक आश्विन मासकी अमावस्याके दिन शिवजी मेरे पुरमें क्रीडा

वस्यायदाभवेत् ॥ तद्दिनेशिवमायांतिमत्पुरेक्रीडनायच ॥ २७ ॥ येत्रजंतिचकेदारंदवानामपिदुर्लभम् ॥ मंदाकिनीमहागंगांस्नात्वा-रेतःपिबंतिच ॥ २८ ॥ पश्यंति च महादेवंकैलासेहरमंदिरे ॥ तस्मात्तिष्ठमहाचार्यभुंजन्भोगान्यथेप्सितान् ॥ २९ ॥ यावद्देवं-नपश्यंति उमासार्धंत्रिलोचनम् ॥ कुतोहंतत्रतिष्ठंतिआचार्य-साधकैः सह ॥ ३० ॥ अवश्यंतत्रगंतव्यंकैलासेहरमंदिरे ॥ तदादेवोविरूपाक्षः पश्यंतिसाधकोत्तमम् ॥ ३१ ॥ प्रतिमाल-क्षणोपेतंचन्द्रादित्यसमप्रभाम् ॥ कटिश्चनागवद्धाश्चकर्णौचहेम-कुंडलौ ॥ ३२ ॥ ततोदृष्ट्वामहाप्राज्ञाममकन्यानरुच्यते ॥ तस्यतद्वचनंश्रुत्वाप्रस्थितासर्वसाधकाः ॥ ३३ ॥ संप्राप्तासा-धकास्तत्रविमानानिदिशोदश ॥ विमानानिसहस्राणिआकाशश्च-समाकुलम् ॥ ३४ ॥ गणगंधर्वसंयुक्तादेवगंधर्वयोषिता ॥ सर्वाभरणशोभाढ्यांनानावस्त्रपरिछदाः ॥ ३५ ॥ इंद्रकन्याब्रह्म-कन्याहरिकन्यास्तथैवच ॥ कुबेरयक्षणीकन्याचंडकन्यात्रिलो-

करनेके निमित्त आतेहैं ॥ २७ ॥ जो मनुष्य देवदुर्लभ केदारको जातेहैं और मन्दाकिनी महागंगामें स्नानकरके जलपान करतेहैं ॥ २८ ॥ और कैलासमें हर मंदिरके विषयमहादेवका दर्शन करतेहैं, तो मनईप्सित भोगोंको भोगतेहैं इससे यहां रहकर भोगोंको भोगो ॥ २९ ॥ साधक बोले जबतक पार्वतीसहित महा-देवको नहीं देखतेहैं, तबतक अन्यस्थानमें हम आचार्य साधक नहीं ठहरसकतेहैं ॥ ३० ॥ अवश्यही वहां हरमंदिरको जावेंगे, उससमय विरूपाक्ष देवको उन साधकोंने देखा॥३१॥उनकी मूर्ति सुन्दर लक्षणोंवाली और जिनकी कान्ति सूर्य चन्द्रमाके समानहै कमर सर्पकेसमान पतली कानोंमें सुवर्णके कुंडल धारण किये ॥३२॥उसे देख वह बोले हमको कन्या नहीं रुचती उसका वचन सुन सम्पूर्ण साधक चलदिये ॥ ३३ ॥ फिर साधक वहां प्राप्तहुए जहांपर विमान स्थितथे सहस्रों विमानोंसे आकाश व्याप्त था ॥ ३४ ॥ गण गन्धर्व सहित देवता गन्धर्वकी स्त्रियां जो सम्पूर्ण आभूषणोंसे शोभित अनेकप्रकारके वस्त्रोंसे आच्छादित थीं ॥ ॥ ३५ ॥ इन्द्रकन्या ब्रह्मकन्या तथा विष्णुकी कन्या कुबेर और यक्षोंकी कन्या चंड

चनी ॥ ३६ ॥ विमानारूढसर्वाश्च अप्सरोगणनेकधा ॥ रत्नबंधाविमानानिकामिनीसर्वकामिकाः ॥ ३७ ॥ आगताश्चततः कन्याविमानैः पुष्पपूरणैः ॥ शंखदुंदुभिनिर्घोषैर्भेरीकाहलमर्दलैः॥ ॥ ३८ ॥ पटहावेणुवंशस्यवाद्यैतैबहुनैकधा ॥ एतैश्चसहितादेवैर्विमानारुढमागताः ॥ ३९ ॥ चामरैर्वीज्यमानस्तुच्छत्रोपरि विराजितम् ॥गीतंगायंतिगंधर्वावीणावाद्यंतिसुन्दरी ॥ ४० ॥ संपूर्णचन्द्रवदनारूपयौवनगर्विताः॥दिव्यवस्त्रपरीधानंदिव्यगंधानुलेपनम् ॥ ४१ ॥ शोभिताःशिरसःपुष्पैर्नागवल्लीविभूषिताः ॥ करकंकणसंयुक्ताहारकेयूरभूषणाः ॥ ४२ ॥ अशोकपल्लवैर्हस्तैर्वदंतिकोकिलास्वरम्॥यौवनस्थामदोन्मत्ताःसर्वशास्त्रविशारदाः॥ ॥ ४३ ॥ यत्रस्थानेमहावीराःसर्वास्तत्रसमागताः ॥ आगताश्चसुराःसर्वेगणगंधर्वयोषितः ॥ ४४ ॥ देवाऊचुः ॥ ॥ शृणुसाधोमहाप्राज्ञएकचित्तोहिमालयम् ॥ दर्शनेनत्वयासर्वे आगताःसुरैनकधा ॥ ४५ ॥ अहंचप्रेपितःसाधोब्रह्माविष्णुमहेश्वरैः ॥

कन्यात्रिलोचनी ॥ ३६ ॥ सब विमानपर चढीं और अनेक अप्सरागणोंसे शोभितथीं विमान रत्नजटित थे कामसे अधिक सुन्दर कामिनी थीं ॥ ३७ ॥ फूलोंसे भरे विमानोंपर चढ़कर आई शंख, दुन्दुभि, भेरीका हल,मर्दल, इनके शब्दोंसे ॥ ॥ ३८ ॥ तथा पटह बेन बाँसुरी आदि अनेक बाजोंसे देवी विमानोंमें प्राप्त हुई ॥ ॥ ३९॥ चवरोंसे चालित छत्रको धारे गंधर्व गीतगाते और सुन्दरी वीणा बजाती थीं ॥ ४० ॥ पूर्णचन्द्रमाकेसमान मुखारविन्दरूप यौवनसे गर्वित, दिव्यवस्त्र धारे सुन्दर सुगंध लगाये ॥ ४१ ॥ शीस फूलोंसे शोभित नागवल्लीसे भूषित हाथमें कंकण पहने हारबाजूबंदसे शोभायमान ॥ ४२ ॥ अशोकके पत्तोंके सदृश हाथवाली कोयलके समान मधुरशब्द बोलतीं, यौवनसे तथा मदमें उन्मत्त सब शास्त्रोंमें निपुण ॥ ४३ ॥ वे सब उस स्थानमें प्राप्त हुई जहां साधक लोग उपस्थित थे, सब देवतागण गन्धर्व स्त्रियोंसहित आये ॥ ४४ ॥ देवता बोले हे महाप्राज्ञ साधो !! सुनो एकचित्तहोके आपके दर्शनोंको सब देखते आये हैं ॥ ४५ ॥ हे साधो ! हमको ब्रह्मा विष्णु महेश्वरने भेजाहै देवदेव जगत्पति शिवके लोकको

देवदेवंजगन्नाथंशिवलोकंव्रजंतिच ॥ ४६ ॥ आरुढाचविमानानि शिवलोकेव्रजाम्यहम्॥तेपांचवचनेनैवविमानारूढसाधकाः ॥ ४७ ॥ साधक उवाच ॥ ॥ विमानंनैवरुच्यंतेसत्यंसत्यंवदाम्यहम् ॥ देवदेवंजगन्नाथंदुर्लभंतवदर्शनम् ॥ ४८ ॥ शंकरस्य प्रसादेनगुरुधर्मबलेनच ॥ वदंतिसाधकाः सर्वे पूजयित्वा-प्रयत्नतः ॥ ४९ ॥ तस्यपादौनमस्कृत्यविमानानिचसर्वदाः ॥ यदाहं शंकरोयात्रासाधकोपरिवेष्टितम् ॥ ५० ॥ तदादेवस्यरुद्रेण-कैलासेगम्यते ध्रुवम् ॥ विमानानिप्रणम्यंचआचार्यसाधकैः सह ॥ ५१ ॥ गतातत्रविमानानियत्रब्रह्माहरोहरिः ॥ पंथानमुद्यताः सिद्धागच्छंतिचोत्तरामुखम् ॥ ५२ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे विख्यातपुराणे श्रीश्वरकार्त्तिकेयसंवादे पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवनमुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शनेसदेहकैलासगमने देवीपद्मावती पुरीवर्णनो नाम त्रिंशः पटलः ॥ ३० ॥

चलिये ॥ ४६ ॥ हमारे संग विमानोंपर चढ़के चलिए उनके यह वचन सुन साधक विमानोंपर न चढ़े ॥ ४७ ॥ साधक बोले हमको विमान नहीं रुचते सत्य २ कहतेहैं देवदेव जगन्नाथका दर्शन परमदुर्लभहै ॥ ४८ ॥ शिवके प्रसादसे तथा गुरुभक्तिसे प्राप्त होतेहैं, यह कह, सब साधकोंने उनका पूजन किया ॥ ४९ ॥ और उनके चरणोंको प्रणामकर और उन विमानोंको पूजके कहा जब हम शिवकी यात्रासे लौटें ॥ ५० ॥ तब कैलासमें रुद्रदेवके पास अवश्य जावेंगे, इस प्रकार आचार्य साधकगणोंने उन विमानोंको प्रणाम किया ॥ ५१ ॥ और विमान वहां गये जहां ब्रह्माविष्णु महेश्वरथे, वे सिद्धभी और आगेको उत्तरकी ओर चलदिये ॥ ५२ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे भाषाटीकायां पद्मावतीपुरीवर्णनो नाम त्रिंशः पटलः ॥ ३० ॥

एकत्रिंशः पटलः ।

श्रीश्वर उवाच ॥ ॥ ॐ अग्रतोदृश्यतेतत्रपुरीघोपावतीतथा॥ शोभिताचपुरंदिव्यमुदितार्कसमप्रभम् ॥ १ ॥ ईदृशीचपुरीयत्र साधकास्तत्र आगताः ॥ तस्मिन्गृहाणिदिव्यानिपद्मरागमयानिच ॥ २ ॥ चंद्रकांतिसमोपेतंवैडूर्यमणिरश्मिभिः ॥ देवतापूजयिष्यामिकामरूपामहाबलाः ॥ ३ ॥ तदाचह्यतिरूपाणि श्रीपतेःपुरमुत्तमम् ॥ तत्र स्थाने च ये वृक्षाःसर्वकालेफलंति च ॥ ॥ ४ ॥ नदीचवहतेतत्रघृतंक्षीरंमधुःसदा ॥ भेरीमृदंगशब्देनशंखकाहलमर्दलैः ॥ ५॥ महागंभीरतरलैर्वाद्यंतेबहुयंत्रिणः ॥ वाद्यंतेतानिनिर्घोषैर्वंशवादित्रनादितम् ॥ ६ ॥ उत्साहंदृश्यतेतत्र पदेपदेमहापथे॥एवंरम्यंस्थलंदृष्ट्वाधवलगृहसंयुतम् ॥७॥ ध्वजमालाकुलंदिव्यंपद्मनीखंडमंडितम् ॥ दिव्यशब्दंमहानादंदीर्घवर्णनिनादितम् ॥ ८ ॥ अग्रतोदृश्यतेतत्रप्रतिहारावदंतिच ॥ महाउग्रंततोदृष्ट्वारुद्रदेवोप्रतीतिच॥९॥ त्रिनेत्रंचदशभुजंचन्द्रार्धकृतशे-

फिर आगे घोपावतीनामक नगरी देखी वह दिव्यपुरी शोभायमान उदय हुए सूर्यके समान कान्तिमान थी ॥ १ ॥ ऐसी नगरीमें साधक प्राप्त हुए जहां सुन्दर पद्मराग मणि जटित घर बने थे ॥ २ ॥ चन्द्रमाकी समान कान्तिसे दीप्तिमान वैडूर्य मणियोंकी कान्तिसे प्रकाशित जहां कामरूप महाबली देवता शिवका पूजन करते थे ॥ ३ ॥ उस समय नगर अति सुन्दर रूपसे शोभित होता था, उस स्थानमें जो वृक्ष थे सो सब ऋतुओंमें फलते थे ॥ ४ ॥ और वहां घी दूध शहदकी नदियां बहती थीं, भेरी, मृदंग, शंखकाहल मर्दल आदि बाजोंके शब्दोंसे ॥ ५ ॥ तथा बडे गंभीर शब्दोंसे अनेक बाजे बजते, बांसुरी आदिकी ध्वनि होती ॥ ६ ॥ उन्हें उस महापथमें पद २ में उत्साह (आनन्द) दीख पडता था, इस प्रकार स्वच्छ गृहोंसे व्याप्त स्थलको देख ॥ ७ ॥ जो ध्वजा मालाओंसे व्याप्त, कमलनीके खंडोंसे शोभित, दिव्य व गंभीर शब्दोंसे गुंजारित था ॥ ८ ॥ आगे वहां द्वारपाल उनको देख बोला जो महातेजस्वी रुद्रदेवके सदृश था ॥९॥ तीन नेत्र, दश भुजा, तथा मस्तकपर आधे चन्द्रमाको धारण किये था. त्रिशूल

खरम् ॥ शूलपाणिर्वृषारूढंमहाबलपराक्रमम् ॥ १० ॥ भयंकरंभया-
द्भीतातस्यदर्शेविलोकितम् ॥ महाउग्रंततोदृष्ट्वामुद्गरंगृह्यताडयत्॥
॥ ११ ॥ तस्यस्वरनिनादेनयथामेघविगर्जितम् ॥ सुमेरोःसम
तुल्येनभुजादृष्टानसंशयः ॥ १२ ॥ यथाभाद्रपदेमासेवर्षावर्षंति
माधवौ ॥ तथाहितस्यदेहेपेनजलधाराःपतंतिच ॥ १३ ॥ प्रति-
हार उवाच ॥ ॥ कभुवनागतासिद्धाकस्थानेचैवगम्यते ॥ एत-
द्ब्रूहिममाचार्यसाधकोपरिवेष्टितम् ॥ १४ ॥ ॥ साधक उवाच ॥
कथयामिमहाबाहोशृणुमेवचनंहितम् ॥ आगतामृत्युलोकाच्चगं-
तव्यंशंकरालये ॥ १५ ॥ देवोहरिर्हरोब्रह्मासदेहोचनिरीक्ष्यते ॥
तत्रस्थानेमहासेनममइच्छागमिष्यति ॥ १६ ॥ प्रतीहार
उवाच ॥ ॥ संग्रामंदेहिमेवीरागमनंतत्रकारयेत् ॥ योमामजि-
त्वासंग्रामेसदेहोनचरक्षति ॥ १७ ॥ मुद्गरंशैलखड्गंचपूरयित्वा
मुहुर्मुहुः ॥ बद्धेनचत्वयासाधोत्यक्त्वादेहविवर्जितः ॥ १८ ॥
वज्रंचपटलंदेयमग्रतोवचनंततः ॥ दैत्यमुष्टितलंचैवहुंकारंवानगा-
डिभीः ॥ १९ ॥ गर्जयंतिपुरद्वारंकंपमानंवसुंधरा ॥ सुमेरुःसहि-

हाथमें धारे बैलपर चढ़े बडे बल और पराक्रम युक्त ॥ १० ॥ भयंकर उसके दर्शन करके साधक भयभीत हुए, वह बडी उग्र आकृति सहित मुद्गरको लेकर ताडन करनेको उद्यत था ॥ ११ ॥ उस शूरका शब्द ऐसा था जैसे मेघ गर्जते हों, सुमेरु पर्वतके समान उसकी भुजा थी ॥ १२ ॥ जैसे भाद्रपद मासमें मेघों की घोर वर्षा होती है उसी प्रकार उसके देहसे जलकी धारा गिरती थी ॥१३॥ द्वारपाल बोला हे सिद्धो ! कौन भुवनसे आये हो?और किस स्थानको जाते हो ? सो सब कह सुनाओ ॥ १४ ॥ साधक बोले हे महाबाहो ! मैं कहता हूं मेरा वचन श्रवण करो हम मृत्युलोकसे आये हैं शिवलोकको जाते हैं ॥ १५ ॥ जहाँ विष्णु शिव ब्रह्मा विराजमान हैं हे महासेन ! हम उस स्थानको जाते हैं ॥१६॥ द्वारपाल बोला हे वीरो ! हमसे संग्राम (युद्ध) करो तब जाना, जो मुझे युद्धमें जीतोगे तो तुम्हारी रक्षा होगी ॥ १७ ॥ मुद्गर पर्वत खड्गको वारंवार पकडकर कहताहूं हे साधो ! तुम्हारा वध करके देह वर्जित करूंगा ॥ १८ ॥ वज्र पटल, ग्रहण कर मुष्टितल तथा हुंकार करके दैत्योंकी समान गर्जता था ॥ १९ ॥ द्वार-

तोदेवाब्रह्माण्डोकंपतेसदा ॥ २० ॥ स्वर्गमृत्युश्चपातालंडोलयं त्यनिलोयथा ॥ नराणांपन्नगानांचवानराह्यामरेश्वरम् ॥ २१ ॥ एवंहष्ट्वामहाउग्रंरुद्ररूपंभयंकरम् ॥ आचार्यसाधकाःसर्वेमूर्च्छों गच्छंतितत्क्षणात् ॥ २२ ॥ त्रासितापतिताभूमौयावद्वोदोहमात्र- कम् ॥ उत्थिताचेतनालुब्धोहष्ट्वामृत्युश्चसंगिनाम् ॥ २३ ॥ आचार्याशंकितास्तत्रस्मरंतिपरमेश्वरम् ॥ तत्क्षणंक्षणमात्रंचह्य- घोरंजपतेमहान् ॥ २४ ॥ अघोरंजपमानश्चसर्वविघ्नक्षयंकरः अथमंत्रः ॥ ॐ हुं हुं नमोनमः फट्स्वाहा ॥ क्रोशमात्रंप्रमाणेन ह्युत्तंगःपंचयोजनम् ॥ २५ ॥ हेमस्तंभसमालग्नंघंटाचामरभूषि- तम् ॥ ध्वजाकरंशतंजाढ्यसर्वरत्नविभूषितम् ॥ २६ ॥ गृहमध्ये चहिंदोलंघंठानूपुरनादितम् ॥ भूषितंदिव्यगंधैश्चदिव्यवस्त्रपरि- च्छदाः ॥ २७ ॥ दिव्यपुष्पशिरोबध्वाहारनूपुरभूषिताः ॥ भूषितं पद्मरागंचहेमस्यकंकणंकरैः ॥ २८ ॥ हिंडोलयंतितेकन्या- जरामृत्युविवर्जिताः ॥ संप्राप्ताःसाधकास्तत्रभापयंतितप-

पर गर्जनेसे सम्पूर्ण पृथ्वी कांप उठी, उस समय सुमेरु पर्वत सहित देवता व सब ब्रह्मांड कांप गया ॥ २० ॥ स्वर्ग, मृत्यु, पाताल लोक सबही डोलेके समान कांप उठे, मनुष्य सर्प वानर देवेश्वर व्याकुल हुए ॥ २१ ॥ इस प्रकारकी उग्ररूप दुर्घटनाको देखके सब आचार्य साधक क्षणमात्रमें मूर्छाको प्राप्त हुए॥२२॥ भयभीतहो क्षणमात्र भूमिपर गिरपड़े फिर उठकर चेतमें आये और आगे इस प्रकार मृत्युको देख ॥ २३ ॥ आचार्यगण परमेश्वरको स्मरण करनेलगे और क्षण- मात्र अघोरमंत्रको जपा ॥ २४ ॥ अघोरमंत्र जपनेसे सारेविघ्न नष्टहुए, द्वारपालने मार्ग देदिया हुं हुं नमो नमः फट् स्वाहा तब एक कोशमात्र चौडा, पाँच योजन ऊंचा स्थान देखा उसमें ॥ २५ ॥ सुवर्णके खंभे लगे घंटाचांवरोंसे भूषित सैकडों ध्वजाएं और रत्नोंसे जटित था ॥ २६ ॥ और उस गृहके मध्यमें हिंडोला घंटा घुँघुरुसे शब्दायमान सुन्दर सुगंधसे तथा दिव्यवस्त्रोंसे वेष्टित था ॥ २७ ॥ दिव्यशीस फलोंको बांध, हार पायजेबसे भूषित पद्मरागमणि जटित सुवर्णके कंकनोंसे अलंकृत हाथवाली ॥ २८ ॥ जरा मृत्यु रहित कन्या हिंडोलेपर झूलती

स्विनीः ॥२९॥ तपश्विन्य ऊचुः ॥ नाम्नाघोपवतीदेवीभुजंतिविपुलांश्रियम् ॥ शतयोजनविस्तीर्णंपुरीकांचनभूपितम ॥ ३० ॥ पुरीमध्येगृहादिव्या बालार्केणासमप्रभाः ॥ तत्रतिष्ठंतिसादेवी शंकरेणविनिर्मिता ॥ ३१ ॥ गौरीचसदृशाकारंसर्वालंकारभूपिता ॥ संप्राप्ताचगृहद्वारेप्रतीहारावदन्तिच ॥ ३२ ॥ प्रतीहार उवाच ॥ ॥ महावीरामहातेजादृश्यंतेचमहातपाः ॥ साधकाश्चप्रवक्ष्यामिसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ३३ ॥ तस्यतद्वचनंश्रुत्वाप्रस्थितासर्वसाधकैः ॥ अभिवाद्यततोदेवीवदेद्घोपवतीतथा ॥ ३४ ॥ देवीघोपवत्युवाच ॥ ॥ क्कगताभुवना सिद्धाक्कस्थानेचैवगम्यते ॥ एतद्ब्रूहिमहाचार्यसाधकापरिवेष्टितम ॥ ३५ ॥ साधक उवाच ॥ ॥ कथयामिमहादेवीशृणुमेवचनंतथा ॥ आगतामृत्युलोकाच्चगंतव्यंशंकरालयम् ॥३६ ॥ देवीघोपवत्युवाच ॥ ॥ शृणुसाधोमहाप्राज्ञममवाक्यंसुनिश्चितम् ॥ राजाचित्ररथोनामचक्रवर्त्तिमहद्बलः ॥ ३७ ॥ पुन-

थीं वहां जाकर साधक उन तपस्विनियोंसे बोले ॥ २९ ॥ तपस्विनी बोलीं महाराज ! यह घोपवती नाम नगरी अधिक लक्ष्मीसे पूर्ण तथा सौयोजन विस्तृत सुवर्णसे शोभायमान है ॥ ३० ॥ इस पुरीके मध्य दिव्यगृह बाल सूर्यके समान कान्तिमान हैं, यहांपर वह देवी स्थित है यह पुरी साक्षात् शंकरने निर्माण की है ॥ ३१ ॥ पार्वतीके समान आकारवाली देवी सब भूषणोंसे शोभित हैं, तब उस गृहके द्वारपर प्राप्त हुए द्वारपालने कहा ॥ ३२ ॥ द्वारपाल बोला हे महावीर महातेज ! हे महातप ! साधक आप सब पापोंसे छूटे॥ ३३ ॥उसका यह वचन सुन साधक लोग वहां देवीके स्थानपर पहुँचे और देवी घोपवतीको प्रणाम किया३४॥ देवी घोपवती बोली हे सिद्धो ! कहांसे आये हो और कहांको जातेहो ? हे आचार्य ! सो सब कहो ॥ ३५ ॥ साधक बोले, हे देवि कहता हूं मेरा वचन सुनो, हम मृत्युलोकसे आये और शिवलोकको जाते हैं ॥ ३६ ॥ देवी घोपवती बोली हे महाप्राज्ञ ! हे साधो ! मेरा वचन सुनो और सत्य २ जानो यहांका चित्ररथनामक चक्रवर्तीराजा महाबली है ॥ ३७ ॥ तुम उसके पास जाओ तब सिद्ध-

स्ततःसिद्धाआगताश्चपुरावृता॥अहमीश्वरपार्श्वेनश्चागताःपृच्छ-यान्कृतम् ॥३८॥ पुरीघोषवतीनामतत्रतिष्ठंतिसाधकाः ॥ सिंहासनानिदिव्यानिहेमरत्नकृतानिच ॥ ३९ ॥ रम्यंतांकन्यकाःसर्वाःसर्वशास्त्रविशारदाः ॥ युवत्यस्तामदोन्मत्ताहारकेयूरभूषिताः ॥ ४० ॥ संपूर्णचन्द्रवदनाबिंबस्फुरातितेजसाः ॥ मत्तमातंगगामिन्योविस्फुरंतिपदेपदे ॥ ४१ ॥ नमंतिमानुभावेनजरामृत्युविवर्जिताः ॥ भुंजंतिसास्त्रियाःसर्वैरूपयौवनगर्विताः ॥४२॥ राजभोगसमोपेतानानाभोगसमाकुलाः ॥ तिष्ठंतिसाधकाःसर्वे भुंजंतिविपुलांश्रियम् ॥ ४३ ॥ साधक उवाच ॥ ॥ तस्मिन्स्थानेनमेकार्यंसत्यंसत्यंवदाम्यहम् ॥ मयाचतत्रगंतव्यंयत्रदेवोमहेश्वरः ॥ ४४ ॥ चित्ररथ उवाच ॥ ॥ स्वर्गलोकेचयेभोगाकैलाससदृशंगृहम्॥ब्रह्मलोकेविष्णुलोकेचन्द्रलोकेचसाधकाः॥ ॥ ४५ ॥ तेनभोगान्महाभोगातत्रभोगायत्रतिष्ठति ॥ तत्रस्थानेमहासिद्धाकिमर्थंतत्रगम्यते ॥ ४६ ॥ देवोहरिर्हरोब्रह्माहश्यतेऽ-

वहां प्राप्त हुए और बोले हम शिवके समीप जांयगे ऐसे पूछा ॥ ३८ ॥ उस घोषवतीमें साधक स्थित हुए वहां दिव्य सिंहासन सुवर्णरत्नोंसे जटित थे ॥ ३९ ॥ रम्य कन्या जो संपूर्ण शास्त्रोंमें निपुण यौवनमें उन्मत्त मदवाली हार बाजूबंदोंसे भूषित॥४०॥सम्पूर्ण चन्द्रमाके समान मुखारविन्दवाली कन्दूरीके समान ओष्ठवाली मतवाले हाथीके समान चलनेवाली पद २ में चलायमान होती थीं ॥४१॥ मानवभावसे प्रणाम करती जरा मृत्यु वर्जित वह स्त्रियां रूपयौवनसे गर्वित भोग करती थीं ॥४२॥उनको बताकर उसने कहा हे साधको! राजभोगसहित तथा अनेक सांसारिक भोगोंसमेत इसस्थानपर ठहरो २ विपुलभोगोंको भोगो ॥ ४३ ॥ साधक बोले इस स्थानमें हमारा कार्य नहीं सो सत्य जानो, हमको वहां जाना है जहां महेश्वर देव हैं ॥ ४४ ॥ चित्ररथ बोले यहांपर स्वर्गलोकके समान भोग हैं और कैलासके सदृश गृह हैं और ब्रह्मलोक, हरिलोक, चन्द्रलोकको समान ॥ ४५ ॥ भोगोंको भोगो और यहांपर निवास करो। हे सिद्धो! उस स्थानपर क्यों जाते हो? ॥ ४६ ॥ निरंतर यहांपरभी ब्रह्मा विष्णु महेशके दर्शन होते हैं और चतु-

स्मिन्पुरेसदा ॥ आगच्छंतिचतुर्दश्यांसर्वेभिक्षार्थकारणे ॥ ४७ ॥
सर्वमेवप्रत्यक्षंतेमैत्रस्यसाधकोत्तमम् ॥ आगताश्चततःकन्याःको-
बेरस्तनयोमहान् ॥ ४८ ॥ सर्वारूढंविमानानिगजअश्वरथ-
स्तथा ॥ निशिवह्निर्यथातेजाउदयेशशिभास्करौ ॥ ४९ ॥
त्रिनेत्रंदशभुजायांचन्द्रार्द्धकृतशेखरम् ॥ दिव्यदेहमहाकायाकोवे-
रेनचनासिकाम् ॥ ५० ॥ दिव्यवस्त्रपरीधानंदिव्यगंधानुलेपनम् ॥
दिव्यपुष्पंशिरोवंध्वादिव्यदेहीस्वरूपकम् ॥ ५१ ॥ हृदयंनाभि-
देशेतुपद्मनीसर्वकन्यकाः॥संपूर्णचन्द्रवदनावदंतिकोकिलाश्वरम्॥
॥ ५२ ॥ मधुरस्वरगंभीरानागवल्लीरचंतिच ॥ षोडशैर्दिव्यशृंगा-
रैस्सर्वांगेसर्वसुन्दरी ॥ ५३ ॥ हेमसूत्रैर्महारम्यैचलनेत्रैश्चशो-
भिताम् ॥ करकंकणसंयुक्तं हारकेयूरभूषिताम् ॥ ५४ ॥ज्योतिवं-
तोशरीरस्यज्ञानध्यानार्थपारगाः ॥ शीलवत्यःसतीसर्वाशिवभ-
क्तिवराननाः ॥ ५५ ॥ एवंसर्वगुणैर्युक्ताराजाराजसुतानिच ॥
तस्यदर्शनमात्रेणसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ५६ ॥ यत्रस्थानेमहा-

दशीको सब भिक्षाके अर्थ आते हैं ॥ ४७ ॥ हे साधकोत्तम ! सब प्रत्यक्षही देखलो इतनेमें कन्या और कुबेरके पुत्र प्राप्त हुए ॥ ४८ ॥ सब विमानों और हाथी घोडे रथोंपर चढ़े थे, जिस प्रकार रात्रिमें अग्नि चन्द्रमा और सूर्यका उदय हो तद्वत् प्रकाशित थे ॥ ४९ ॥ तीन नेत्र दस भुजा अर्ध चन्द्रमाको मस्तकपर धारण किये दिव्य देह सुन्दर नासिका ॥ ५० ॥ दिव्य वस्त्र सुन्दर सुगन्ध लिपटाये दिव्य शीशपर फूल बांधे दिव्य स्वरूपवाली ॥ ५१ ॥ हृदय और नाभिस्थानमें पद्मिनी सम्पूर्ण कन्या पूर्ण चन्द्रमाके समान मुखवाली कोयलकी समान बोलतीं ॥ ५२ ॥ मधुर गंभीरस्वर नागवेल चाव,सोलह शृंगार किये सब अंगोंमें सुन्दर ॥ ५३ ॥ सुवर्णके डोरे (तार) परम रमणीक चंचलनेत्र हाथमें कंकण धारे हार केयूरसे भूषित ॥ ५४ ॥ कान्तिसे प्रकाशित ज्ञान तथा ध्यानमें तत्पर सुशील तथा शिवभक्तिमें परायण ॥ ५५ ॥ इसप्रकार समस्त गुणोंमें पूर्ण राजा और राजपुत्री थीं, उनके दर्शनमात्रसे सम्पूर्ण पापोंसे छूट जाते हैं ॥ ५६ ॥ जिस स्थानपर साधक उपस्थित थे उनके आगे कामिनी अनेक गीत रागोंसे

सिद्धास्तत्रागंताचकांमिनी ॥ अनेकैरागगीतैश्वरमंतिचपठंतिच ॥
॥ ५७ ॥ अंबकंबरदेकन्यामोहनार्थेसमागताः ॥ दिव्यच्छत्र-
शिरतस्यघंटाचामरभूषितम् ॥ ५८ ॥ चन्द्रज्योतिर्यथादीतमाग-
तासाधकाश्रये ॥ स्वागताभोमहासिद्धाःकन्यास्तत्रवदंतिच ॥
॥ ५९ ॥ कन्यका उवाच ॥ ॥ क्कभुवनागतासिद्धाक्कस्थाने-
चैवगम्यते ॥ एतद्ब्रूहिमहाचार्यसाधकोपरिवेष्टितम् ॥ ६० ॥ सा-
धक उवाच ॥ ॥ कथयामिमहाकन्याशृणुमेवचनंहितम् ॥
आगतामृत्युलोकाच्चगंतव्यंशंकरालये ॥ ६१ ॥ कन्यका
उवाच ॥ ॥ ममइच्छामहासिद्धावपैविपुलवर्त्तते ॥ अंबरसुं-
दरीसर्वाअद्यमेवरआगता ॥ ६२ ॥ तपोबलयुताःसर्वामहातपा-
चसाधकाः ॥ उपनिषत्सुवाक्येनप्रजापतिमुखेनच ॥ ६३ ॥
आहुतियज्ञकर्मेणप्रणवेवरसुंदरी ॥ स्वरूपंचततःकन्या भोक्तव्यं-
साधकैः सह ॥ ६४ ॥ साधक उवाच ॥ ॥ मृत्युलोकेमहा-
कन्याराज्यंचविपुलंमम ॥ अश्वैर्गजरथश्चैवनानारत्नैःवसुंधरा ॥
॥ ६५ ॥ मातृपितृतथाधातृचंद्रवदनीचकामिनी ॥ गर्भवासेन-

रमण करतीं और पाठ करती थीं ॥ ५७ ॥ शिवके भक्तोंको सम्मोहनार्थ वे कन्या प्राप्त हुईं, सिरपर दिव्य छत्र घंटा चामरसे शोभित थे ॥ ५८ ॥ जैसे चन्द्रमाकी कान्ति दीप्त हो ऐसी कन्यायें साधकोंके पास आकर बोलीं हे महासिद्धो ! स्वागतहो ॥ ५९ ॥ कन्या बोली हे साधक ! कौन भुवनसे आये और कहांको जाते हो सो सब वृतान्त आद्योपान्त कहो ॥ ६० ॥ साधक बोले हे कन्याओ ! मेरा वचन सुनो कहताहूं हम मृत्यु लोकसे आये हैं और शिवलोकको जाते हैं ॥ ६१॥ कन्या बोली हे सिद्धो ! हमारी इच्छासे यहां विपुल भोगोंको अनुभव करो, अब तुमको सुन्दर अप्सराएँ प्राप्त हैं ॥ ६२ ॥ यह सब सुन्दरी तपस्विनी हैं और आप तपस्वी हैं यह ब्रह्माके मुखसे उत्पन्न हुई हैं ॥ ६३ ॥ उपनिषदके वाक्य, यज्ञ कर्म आहुतिदान ओंकार जपती हुई स्वरूपवती कन्या भोगनी चाहिये ॥ ६४ ॥ साधक बोला मृत्युलोकमें बहुत कन्या तथा अधिक राज्य मेरे यहां है, घोडे हाथी रथ, तथा अनेक प्रकारके रत्न, व पृथ्वी ॥ ६५ ॥ माता, पिता, भृत्य, चन्द्-

दुःखेनत्यक्तासंसारसागरात् ॥ ६६ ॥ कन्यका उवाच ॥ ॥ प्रसन्नोमेमहासिद्धाकिंकरिष्येत्रिलोचनः ॥ किमर्थवदतेसाधोशंकरस्यपुनःपुनः ॥ ६७॥ दिव्यवस्त्रपरीधानंदिव्यगंधानुलेपनम् ॥ भुक्ताचविपुलान्भोगाञ्जरामृत्युविवर्जिताः ॥ ६८ ॥ आचार्य उवाच ॥ ॥ कैलासंप्रथमंदृष्ट्वा उमासार्धंत्रिलोचनम् ॥ गर्भावासविनिर्मुक्तौतस्यदेवेतिगच्छति ॥ ६९ ॥ चित्ररथ उवाच ॥ ॥ पूर्वमेवंप्रतिज्ञायांपवित्रंसाधकैःसह ॥ भुंजंतिविपुलान्भोगान्किंकरिष्यतिशंकरः ॥ ७० ॥ अस्मिन्स्थानेमहाभोगान्क्रीडयंतिमनेऽप्सितान् ॥ कोदेशःकःसुखंडश्चकोमंडलेकोग्रामयोः ॥७१ ॥ क्वस्थानेवसतेब्रूहिसाधकाश्चमहातपाः ॥ साधक उवाच ॥ ॥ पंचखंडदेशश्चैवमंडलंग्रामयोयथा ॥ ७२ ॥ तथाभोमेनाटिकावसतव्यमममालये ॥ महाकल्पंमहाशास्त्रंमहापंथंह्यनुत्तमम् ॥ ॥ ७३ ॥ तादृशंपटनाध्यानंत्यक्तासंसारसागरात् ॥ किमभूमंडलंराजाकिमित्वमत्र आगताः ॥ ७४ ॥ कन्यकासहितं राज्यं

वदनी कामिनी हैं इन सबको गर्भवासके दुःखके कारण संसार सागरसे त्यागा है ॥ ६६ ॥ कन्या बोली हे महासिद्धो ! प्रसन्न हुए शिव क्या करेंगे, हे साधो ! किस लिये वारम्वार शिव२ कहते हो ॥ ६७ ॥ दिव्य वस्त्र पहने दिव्यगंध लगाये जरा मृत्यु वर्जित कन्याओं सहित भोगोंको भोगो ॥ ६८ ॥ आचार्य बोले प्रथम तो कैलासम पार्वती सहित शिवका दर्शन करेंगे जिससे गर्भवासके दुःखको न देखें ॥ ६९ ॥ चित्ररथ बोला प्रथम सम्पूर्ण साधनो सहित विपुल भोगोंको भोगो शंकर क्या करेंगे ? ॥ ७० ॥ इस स्थानपर मनोभिलषित भोगों सहित क्रीडा करो, हे साधको ! आपका कौन देश कौन खंड कौन मंडल कौन ग्राम है ॥ ७१ ॥ और कौन स्थानमें निवास है सो सब कहो, साधक बोले पंचखण्ड देशमें रहते हैं ॥ ७२ ॥ जैसे इस नगरमें दीखती हैं उसी प्रकार सारी कन्या हमारे गृहमें निवास करती हैं, महाकल्प महाशास्त्र है और महापंथ सर्वोत्तम है ॥ ७३ ॥ आप संसारसागरको त्याग किस प्रकार चक्रवर्ती राजा हुए और कैसे यहांपर प्राप्त हुए ७४ ॥ और कन्याओं सहित प्रतिष्ठाको प्राप्त हुए राज्य करते हो, चित्ररथ

शतिष्ठांकिंविधिर्नृप ॥ चित्ररथ उवाच ॥ ॥ पृथिव्यांदक्षिणे खंडेदेशेकालिंजरेतथा ॥ ७५ ॥ तत्राहंकृतवान्राज्यंनरनारीसमद्दशम् ॥ मयाकृतंमहापुण्यंमुनयोर्मठदेवलम् ॥ ७६ ॥ कर्तव्यंतपसाभक्तितन्मेसर्वस्यचिन्तये ॥ ध्यायंतिशंकरंनित्यंश्रुत्वाशास्त्रंशिवात्मकम् ॥ ७७ ॥ भावभक्तिसमायुक्ताः पूजयंतिशिवंपरम्॥शिवभक्तिचसंसारेपणमुखंतिष्टतेसदा ॥ ७८ ॥ अहंमतानभवस्यतेमहतिनगम्यते ॥ यवनारिपेमयाचात्रपुरुषैभेद उच्यते ॥ ७९ ॥ वांच्छितिशोभनंरूपंवासंमध्येसुरांगनाः ॥ स्वप्नंचताहशंहष्टासाधूनांनचसाधनम् ॥ ८० ॥ देवांगनामध्यराज्यंप्रतिष्ठांशिवशंकरम् ॥ सत्यंशान्तंक्षमायांचकन्यासर्वमनोरथा ॥ ८१ ॥ भुंजतेसाधकावीरा जरामृत्युविवर्जिताः ॥ सत्यंशिलंलक्ष्मीश्वविज्ञानंयानस्यगामिभिः ॥ ८२ ॥ स्तुवंतेः भर्त्रासिंधुंचमनवंतास्तानिस्तथा॥नरोनवांछिताभक्तिस्तेजोनास्तिचसुन्दरी ॥ ८३ ॥ विमानानितयोर्मध्येएवंभक्तिसुरांगनाः ॥

बोला पृथ्वीके दक्षिण खंडमें भाल राजदेशमें ॥ ७५ ॥ मैं स्त्री पुरुषों सहित राज्य करता था, अपने पूर्वसंचित पुण्यसे मुनियोंके मठ देवालय बनाता ॥७६॥ भक्तिपूर्वक शिवके ध्यानमें तत्पर रहता सम्पूर्ण शिवात्मक शास्त्रोंको पढता ॥ ॥ ७७ ॥ भाव भक्तिसमेत शंकरकी आराधनासे सदाही सन्मार्गमें स्थित रहता था ॥ ७८ ॥ अभिमानसे रहित था महत्वपन नहीं करता था, मैं महात्माओंमें भेदभाव नहीं करता था ॥ ७९ ॥ एक समय मनमें देवांगनाओंकी वांछा की और स्वप्न भी साधुओं सहित वैसाही दीखा ॥ ८० ॥ देवांगनाओंके मध्यमें शंकरका पूजन होरहा है, सत्य शांत क्षमायुक्त सब मनोहर कन्या हैं जागकर शिवजीकी कृपासे यह सब पाया ॥८१ ॥ हे साधक! वीरो यह सब जरामृत्यु रहित कन्या भोगनी चाहिये सत्य शील ज्ञान विज्ञानवान हैं ॥ ८२ ॥ धनवान इनके निमित्त अनेक प्रार्थना करते हैं, मनुष्य भक्ति नहीं चाहते सुन्दरी चाहते हैं ॥८३॥ और विमानोंके मध्यमें देवताओंकी स्त्रियांरूप यौवनवती हाथीकी समान नीली-

तावत्संख्यावसायुष्यथावच्चंद्रार्कतारकाः ॥ ९३ ॥ क्रीडंतिनिवि-
धाचैषामृत्युलोकेव्रजंतिच ॥ सर्वलक्षणसंयुक्तासर्वशास्त्रविशा-
रदाः ॥ ९४ ॥ तेजस्वीचमहाप्राज्ञापूर्वजातिस्मरोभवेत् ॥
साधक उवाच ॥ यदिपुनःमृत्युलोकेगंतव्यंचमहानृप ॥ ९५ ॥
तदाकिंराज्यभोगेनकैलासेचव्रजाम्यहम्॥सर्वमेवंप्रतिज्ञायामाचा-
र्यसाधकैः सह ॥ ९६ ॥ एवंचसुन्दरीसर्वाजरामृत्युविवर्जिता ॥
यदि न रुच्यतेसिद्धाव्रजंतुयथेच्छयंनशक्यते ॥ ९७ ॥ नानाचित्र-
विचित्राणिपुष्पवस्त्रैश्चशोभितम् ॥ कन्याश्चैवततस्त्यक्ताउत्तराभि-
मुखेगताः ॥ ९८ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे विख्यातपुराणे श्रीश्वरकार्त्तिकेयसंवादे
पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे
शिवदर्शने सदेहकैलासगमने राजचित्ररथपुरवर्णनं
नामैकत्रिंशः पटलः ॥ ३१ ॥

हैं ॥ ९३ ॥ अनेक प्रकारकी क्रीडा भोगोंको भोगकर फिर मृत्युलोकमें प्राप्त होते हैं, सब लक्षणोंसे युक्त सब शास्त्रमें निपुण ॥ ९४ ॥ तेजस्वी महाप्राज्ञ होतेहैं. फिर जातिका स्मरण होताहै. साधक बोले हेमहानृप ! यदि फिरभी मृत्युलोकमें जानाहै ॥ ९५ ॥ तो ऐसे भोगोंसे क्या प्रयोजनहै, हम कैलासको जातेहैं, इस प्रकार कहकर वचन सुन राजा बोले ॥ ९६ ॥ हे सिद्धो ! जरा मृत्यु वर्जित सुन्दरी यदि नहीं रुचतीं तो यथेच्छित देशोंको जाइये ॥ ९७ ॥ अनेक शोभासे भूषित पुष्प वस्त्रोंसे अलंकृत कन्याओंको छोड साधक फिर उत्तरकी ओरको चले ॥ ९८ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे भाषाटीकायां चित्ररथपुरवर्णनं नामैकत्रिंशः पटलः ॥ ३१ ॥

द्वात्रिंशः पटलः ।

श्रीश्वर उवाच ॥ ॥ ॐ तदापथंसमारूढाःपश्यंतितत्रसाधकाः ॥
उत्तरस्यमहाभागेगंतव्यंयोजनत्रयम् ॥ १ ॥ तत्रस्थानेमहातीर्थं

श्रीशिवजी बोले हे महाभागे उस समय पंथपर चढेहुए साधक उत्तरकी ओर तीनयोजन आगे बढकर ॥ १ ॥ देखतेहैं कि, उस स्थानमें महातीर्थहै देवभूमि

रूपयौवनसदृशागजलीलाभिगामिनी ॥ ८४ ॥ जानुबाहुकद-
लीस्तंभऊरुस्थलंचमेखला ॥ डिंभंत्रिलालकिश्चैवगीततिनालि-
नीरसैः ॥ ८५ ॥ दृश्यंते उरस्यवंतीकनकस्थंभवासुकी ॥
कर्दलंशंचकामिन्यांहास्यंपुष्पप्रकाशितम् ॥ ८६ ॥ पाटपटी-
र्घकुंकुमेनकीरचंचितनासिकाः ॥ अशोकपल्लवौहस्तौविद्युत्तेजः-
समप्रभाम् ॥ ८७ ॥ प्रकाशंचन्द्रवदनाबिम्बोष्ठीकोकिलास्वरी॥
पद्मपत्रविशालाक्षीरूपयौवनगर्विताः ॥ ८८ ॥ उद्धृतंचैवतां-
बूलंगमनंहंसगामिनी ॥ मृगाक्षीचन्द्रवदनीअरावलीप्रवालकम्॥
॥ ८९ ॥ करकंकनसंयुक्ताःहारकेयूरभूपिताः ॥ तपस्विनी
महाश्रेष्टामनोवेगामहासती ॥ ९० ॥ सर्वशास्त्रसमायुक्ताः
ज़रामृत्युविवर्जिता ॥ आगच्छंतिचतुर्दश्यांसर्वैभिक्षार्थकांक्षिणः॥
॥ ९१ ॥ साधक उवाच ॥ ॥ कियत्तद्भोगमायुर्ष्यंपश्चात्तु-
किंभविष्यति ॥ तत्सर्ववदमेराजन्महातेजामहातपाः ॥ ९२ ॥
चित्ररथ उवाच ॥ ॥ स्वरूपचारुसंयुक्तं नानाभोगंचभुञ्जते ॥

गतिवाली ॥ ८४ ॥ जंघापर्यन्त लम्बायमान भुजा, केलेके खंभके समान जघा-
वाली मेखला धारण किये सुन्दर अलकों सहित मधुर गीतगान करतीं ॥ ८५ ॥
हृदयमें सुवर्णकी माला सर्पवत् विराजती कर्दल शंखकी समान कामिनी पुष्प-
खिलनेकी समान हास्य ॥ ८६ ॥ कुकुंमसे लिप्त हुई तोतेकी समान रचित ना-
सिका, अशोकके पत्तोंके समान रक्त हाथ, बिजलीकी समान कान्तिवाली ॥
॥ ८७ ॥ चन्द्रमाके समान मुखवाली कन्दूरीके सदृश होंठ, कोयलकेसे बैन,
कमलकेतुल्य फैले नेत्र रूपयौवनमें भरी ॥ ८८ ॥ पान चाबे, हाथीके समान
चलतीं, मृगकेसे नेत्र, चन्द्रवदनी, मूंगेकी माला धारे ॥ ८९ ॥ हाथमें कंकण
पहने हार बाजूबंदोंसे भूपित, तपस्विनी अतिश्रेष्ठ महासती ॥ ९० ॥ सबशास्त्रों-
में निपुण जरामृत्यु वर्जित चतुर्दशीको सब भिक्षाके कारण यहांपर आतीहैं ॥
॥ ९१ ॥ साधक बोले यहां कितना भोग और आयु मिलतीहै पश्चात् क्या होता
है महातप ! हेराजन् ! सो सब कहिये ॥ ९२ ॥ चित्ररथ बोला सुन्दर स्वरूप-
कन्या तथा अनेक भोग और आयु जबतक चंद्रमा तारेहैं तबतक प्राप्त होती

तावत्संख्यावसायुष्ययावचंद्रार्कतारकाः ॥ ९३ ॥ क्रीडंतिविवि-
धाचेष्टामृत्युलोकेव्रजंतिच ॥ सर्वलक्षणसंयुक्तासर्वशास्त्रविशा-
रदाः ॥ ९४ ॥ तेजस्वीचमहाप्राज्ञापूर्वजातिस्मरोभवेत् ॥
साधक उवाच ॥ यदिपुनःमृत्युलोकेगंतव्यंचमहानृप ॥ ९५ ॥
तदाकिंराज्यभोगेनकैलासेचव्रजाम्यहम्॥सर्वमेवंप्रतिज्ञायामाचा-
र्यसाधकैः सह ॥ ९६ ॥ एवंचसुन्दरीसर्वाजरामृत्युविवर्ज्जिता ॥
यदि न रुच्यतेसिद्धाव्रजंतुव्यंनशक्यते ॥ ९७ ॥ नानाचित्र-
विचित्राणिपुष्पवस्त्रंचशोभितम् ॥ कन्याश्चैवततस्त्यक्ताउत्तराभि-
मुखेगताः ॥ ९८ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे विख्यातपुराणे श्रीश्वरकार्त्तिकेयसंवादे पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शने सदेहकैलासगमने राजचित्ररथपुरीवर्णनं नामैकत्रिंशः पटलः ॥ ३१ ॥

हैं ॥ ९३ ॥ अनेक प्रकारकी क्रीडा भोगोंको भोगकर फिर मृत्युलोकमें प्राप्त होते हैं, सब लक्षणोंसे युक्त सब शास्त्रमें निपुण ॥ ९४ ॥ तेजस्वी महाप्राज्ञ होतेहैं. फिर जातिका स्मरण होताहै. साधक बोले हेमहानृप ! यदि फिरभी मृत्युलोकमें जानाहै ॥ ९५ ॥ तो ऐसे भोगोंसे क्या प्रयोजनहै, हम कैलासको जातेहैं, इस प्रकार कहकर वचन सुन राजा बोले ॥ ९६ ॥ हे सिद्धो ! जरा मृत्यु वर्जित सुन्दरी यदि नहीं रुचतीं तो यथेच्छित देशोंको जाइये ॥ ९७ ॥ अनेक शोभासे भूषित पुष्प वस्त्रोंसे अलंकृत कन्याओंको छोड साधक फिर उत्तरकी ओरको चले ॥ ९८ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे भाषाटीकायां चित्ररथपुरीवर्णनो नामैकत्रिंशः पटलः ॥ ३१ ॥

द्वात्रिंशः पटलः ।

श्रीश्वर उवाच ॥ ॥ ॐ तदापथंसमारूढाःपश्यंतितत्रसाधकाः ॥
उत्तरश्चमहाभागेगंतव्यंयोजनत्रयम् ॥ १ ॥ तत्रस्थानेमहातीर्थं

श्रीशिवजी बोले हे महाभागे उस समय पंथपर चढ़ेहुए साधक उत्तरकी ओर तीनयोजन आगे बढकर ॥ १ ॥ देखतेहैं कि, उस स्थानमें महातीर्थहै देवभूमि

देवरमणीयभूमिकाः ॥ मन्दाकिनीमहागंगाअतिरम्यामनोहरा ॥
॥ २ ॥ लहरीतरंगगंभीरंफेनावर्त्तसमाकुलम् ॥ उभयोस्तटपार्श्वे-
तुसर्वेलोकइदंउभा ॥ ३ ॥ तत्रहेममयाभूमौयत्रसावहतेनदी ॥
सुवर्णचेलुकास्तत्रपंकजाविपुलानिच ॥ ४ ॥ तस्यगंगामहातोय-
ममृतंचप्रवाहकम् ॥ घृतक्षीरमधुस्वादंअतिस्वादुसुशीतलम् ॥५॥
जलक्रीडाःप्रकुर्वंतिदेवकन्याह्यनेकधा ॥ यौवनस्थामदोन्मत्ता-
मत्तमातंगगामिनी ॥ ६ ॥ सुरनदीतटेतीरेबहुपुष्पफलैस्तथा ॥
देवतावृक्षरूपेणवदंतिसाधकोत्तमम् ॥ ७ ॥ सुवर्णपक्षिकास्तत्र-
नदीपापप्रणाशिनी॥८॥ वृक्ष उवाच ॥ ॥साधुसाधुमहाप्राज्ञा-
पुनःसाधोमहातपाः ॥ एवंचवदतेवृक्षाबुद्धिंदद्यात्तुसाधकाः॥९॥
इमांमंदाकिनींपुण्यंपूजयित्वामहेश्वरम् ॥ अष्टोत्तरशतंमंत्रमघोरं-
जपतेमहान् ॥ १० ॥ ॐ हुँफट्स्वाहा ॥ जपितातस्यमंत्रेण-
श्रूयतेशंखयोर्ध्वनिः ॥ सन्मुखंपश्यतेस्तत्रदृश्यतेपंथनिर्मलम् ॥
॥ ११ ॥ अग्रेरवंचपश्यंतिईशानीदिशिसन्मुखैः ॥ अघोरंच-
महामंत्रंमहापातकनाशनम् ॥ १२ ॥ महाविघ्नंहरेन्नित्यंमहासिद्धि-

अतिरमणीकहै, मन्दाकिनी महागंगा अतिमनोहरहै ॥ २ ॥ जिसकी लहरें तरंग अतिगंभीरहैं, फेनवालीहैं, उस नदीके दोनों किनारोंपर दाडिम वृक्ष लहलहातेहैं॥ ॥ ३ ॥ वहां सुवर्णकी भूमि थी जहाँपर वह नदी बहतीथी सुवर्णके वृक्ष व कमल लगेथे ॥४॥ उस गंगाका सुन्दर जल अमृतके समान प्रवाहित था, घी दूध शहद की समान स्वादिष्ट शीतल जल है ॥ ५ ॥ देवकन्यायें जलमें अनेकप्रकारकी क्रीडा करतीहैं जो यौवनमें भरी मदसे पूर्ण मदवाले हाथीकी समान गमन शील हैं ॥ ६ ॥ उस देवनदीके किनारे अनेकप्रकारके फूल फल खिलेथे और देवता वृक्षके रूपोंमें उन साधकोंसे बोलतेथे ॥ ७ ॥ सुवर्णके पक्षीथे नदी पापोंकी नाशक थी ॥ ८ ॥ वृक्षबोला हे साधो ! हेमहातप ! महाप्राज्ञ ! इसप्रकार वे वृक्ष बोलतेथे ॥ ९ ॥ सिद्धोंने उस पवित्र मंदाकिनी नदीके तटपर महेश्वरका पूजन करके एकसौ आठवार अघोरमंत्र जपा ॥ १० ॥ ॐ हुं फट् स्वाहा इस मंत्रको जपकर शंखध्वनि सुनी, और सन्मुख निर्मल पंथ देखा ॥ ११ ॥ आगे ईशानकी ओर चले उस अघोर मंत्रके जपनेसे महापातक नष्ट हुए ॥ १२ ॥ नित्य बडे २

प्रदायकम् ॥ स्मृत्वातेनमंत्रेणपंथंतिष्ठंतितत्क्षणात् ॥ १३ ॥
व्रजंतितेनमार्गेणवेगेनपवनोयथा ॥ आश्रमंदृश्यतेतत्रध्वजा-
मालाकुलैर्महत् ॥ १४ ॥ पश्यंतिसाधकाःसर्वेत्रिपथोतत्रदृश्यते
संप्राप्तसाधकास्तत्रक्षणमेकंपतंतिच ॥ १५ ॥ ततःपश्यंति
मार्गेणईशानंचदिशोदिशम् ॥ सन्मुखंतत्रपश्यंतिकैलासंनामपर्व
तम् ॥ १६ ॥ शंकरस्यप्रियोनित्यंसर्वदेवलयंकृतम् ॥ श्वेतवर्ण
गिरिशृंगेसंधिभेदविवर्जितैः ॥ १७ ॥ अधऊर्द्धमंडलाकारंमध्य
स्थूलोमहागिरिः ॥ मृदंगाकृतिरूपेणदृश्यतेपर्वतोत्तमम् ॥
॥ १८ ॥ अशीतिशतसहस्राणिद्युत्तुंगोयोजनंमहान् ॥ त्रिंश-
शतसहस्राणिअधऊर्द्धप्रकीर्तितम् ॥ १९ ॥ पर्वतेचमहारम्ये
सूर्यकोटिसमप्रभा ॥ गृहाणिचसतांतत्रसहस्रंयोजनानिच ॥२०॥
नामधारणदृश्यंतेनानारत्नविभूषितम् ॥ श्वेतपीतंतथारक्तंश्याम-
वर्णंतथैवच ॥ २१ ॥ पंचवर्णपताकाचदृश्यतेपवनेरिता ॥
क्षणैःक्षणैर्वतिष्ठंतिदीपमालाविभूषितम् ॥ २२ ॥ स्तंभेहेमम-

विघ्नोंके नाशक परम सिद्धिके दायक उस मंत्रके जपनेसे तत्क्षण सब मार्ग-
स्मरण हुआ ॥ १३ ॥ उस मार्गद्वारा पवनके समान चले और आगे ध्वजामाला-
ओंसे सुशोभित स्थान देखा ॥ १४ ॥ सब साधकोंने वहां त्रिपथ (तिराहा)देखा
और वहां क्षणमात्रको बैठे ॥ १५ ॥ तब ईशानकी ओर दृष्टि दी तो सामने कै-
लासनामक पर्वत दीख पडा ॥ १६ ॥ जो शिवका प्रिय और निवासस्थान है
स्वच्छ श्वेतवर्ण जिसके शिखर संधिभेद रहितहैं ॥ १७ ॥ नीचे ऊपर मंडलाकार
तथा बीचमें स्थूलपर्वतहै ऐसा मृदंगकी समान आकारवाला दीखा ॥ १८ ॥
अस्सी सहस्र योजन ऊंचा तथा तीससहस्र योजन नीचे ऊपरका घेरा था ॥
॥ १९ ॥ परमरमणीक पर्वतपर कोटिसूर्यकी समान कान्तिथी और वहां सहस्र
योजनमें महात्माओंके घर बनेथे ॥ २० ॥ नामोंसे अंकित नानारत्नोंसे शोभित
श्वेत पीतरक्त तथा श्यामवर्ण ॥ २१ ॥ पाँचवर्णकी पताका पवनसे उडतीहुई दीख
पडीं क्षण २ में दीपमालाके समान शोभा होतीथी ॥ २२ ॥ सुवर्णके स्तंभ चन्द्र-

यासर्वंचन्द्रकान्तिसमप्रभा ॥ कर्मधर्मसमायुक्तस्फुरंतिंकिरणा-
न्वितम् ॥ २३ ॥ सुवर्णकेतकीजातितथाजायीचपाडली ॥
सुवर्णचंपिकास्तत्रपंकजाविपुलानिच ॥ २४ ॥ पंचपुष्पमहा-
मालावेष्टितंधवलगृहम् ॥ इन्द्रनीलमहानीलैर्ध्वजमालाचवेष्टि-
तम् ॥ २५ ॥ यथारुद्रसमर्थस्यतथासर्वंचमन्दिरम् ॥ गृहे
तस्मिंस्थिताकन्यादिव्याभरणभूषिता ॥ २६ ॥ त्रिनेत्रंदश-
भुजंयांचन्द्रार्द्धकृतशेखरम् ॥ गणगंधर्वदेवस्यसर्वशास्त्रविशा-
रदाः ॥ २७ ॥ मुनयःसहितादेवागंधर्वासुरपन्नगाः ॥ दश-
बाहुंत्रिनेत्रंचत्रिशूलंकरपल्लवैः ॥ २८ ॥ अजराअमरावृत्तां
कैलासस्यमहद्बलम् ॥ अतिकौतूहलस्तत्रतस्यवासोनवि-
द्यते ॥ २९ ॥ संप्राप्तासाधकास्तत्रकैलासस्यसमीपथे ॥ दृष्ट्वा
सुतद्रूपंचैवसाधकाविस्मयंगताः ॥ ३० ॥ यावद्गोदोहमात्रेण
मूर्छांगच्छंतिसाधकाः ॥ आचार्यचेतितास्तत्रस्मरंतिचमहेश्वरम्
॥ ३१ ॥ शिवस्मरणमात्रेणदृश्यतेपंथनिर्मलम् ॥ पुनश्चैवततो
चार्यअघोरमक्षरंजपेत् ॥ ३२ ॥ अघोरंचमहामंत्रंसर्वविघ्नक्षयं

माके समान कान्तियुक्तथे, धर्मकर्म सहित किरणोंसहित प्रकाशित होतेथे॥२३॥ सुवर्णकी केतकी जायी पाडली चंपिका अनेक कमल ॥ २४ ॥ पंचपुष्पोंकी मालासे स्वच्छगृह वेष्टित थे, इन्द्र नील महानील मणियोंसे ध्वजा माला आदिसे व्याप्त थे ॥ २५ ॥ जैसे रुद्रके मंदिरथे उसीप्रकार सबके मंदिरथे, उनमें सब आभूषणोंसे भूषित कन्या विराजमान थीं ॥ २६ ॥ तीन नेत्र दस भुजा आधे चन्द्रमाको मस्तकपर धारणकिये गणगन्धर्व देवता सम्पूर्ण शास्त्रोंमें पारंगत ॥ ॥ २७ ॥ मुनिसहित देवता, गन्धर्व, सुर, सर्प,दसभुजा तीननेत्र हाथोंमें त्रिशूल धारे ॥ २८ ॥ अजर अमरहुए फिरतेथे, इसप्रकार कैलास पर्वतका बल था अति कौतूहलसे सब वहां निवास करतेथे ॥ २९ ॥ साधक कैलासके समीपमें गये और उसका स्वरूप देखकर आश्चर्यको प्राप्त हुए ॥ ३० ॥ गोदोहनकालतक साधक मूर्छाको प्राप्तहुए, और महेश्वरका स्मरण किया ॥ ३१ ॥ शिवके स्मरण करतेही पंथ निर्मल दीखपडा, फिर आचार्योंने अघोरमंत्रको जपा ॥ ३२ ॥ अघोर महामंत्र समस्त विघ्नोंका नाशकहै विधिपूर्वक अष्टोत्तर शतजाप

करम् ॥ अष्टोत्तरशतंतत्रजाप्यंकृत्वायथाविधि ॥ ३३ ॥ ॐ हुं फट्स्वाहा ॥ अघोरंचमहामंत्रंदुर्लभंदेवदानवम् ॥ दुर्लभं गणगंधर्वैर्दुर्लभंमुनिपन्नगैः ॥ ३४॥ दुर्लभंतत्पदंसर्वैर्दुर्लभ्यामितरैर्जनैः ॥ सिद्धमंत्रमहामंत्रमहापंथप्रदायकम् ॥ ३५ ॥ येनमंत्रप्रभावेणसदेहंशंकरालये ॥ मोहितादेवदेवेनसंप्राप्ताच त्रिपंथकम् ॥ ३६॥ जपितासिद्धमंत्रेणभुवंपश्यंतितेगिरिम् ॥ जयशब्दंप्रकुर्वन्तिसाधकावदतेध्रुवम् ॥ ३७ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे विख्यातपुराणे श्रीश्वरकार्त्तिकेयसंवादे पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शने सदेहकैलासगमने त्रिपंथदर्शनोनाम द्वात्रिंशः पटलः ॥ ३२ ॥

किया॥३३॥ॐ हुं फट् स्वाहा अघोरमंत्र देवता तथा दैत्योंको परमदुर्लभहै॥३४॥ परम सिद्धि महापंथका देनेहाराहै ॥ ३५॥ जिस मंत्रके प्रभावसे साधकगण देहसहित शिवलोकमें प्राप्त हुए ॥ ३६ ॥ उस सिद्धमंत्रको जपकर पर्वतकी भूमिको देखा, और सबसाधकोंने जय २ ध्वनि उच्चारण की ॥ ३७ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे भाषाटीकायां त्रिपथदर्शनो नाम द्वात्रिंशः पटलः ॥ ३२ ॥

त्रयस्त्रिंशः पटलः ।

श्रीश्वर उवाच ॥ ॥ पृच्छंतिसाधकाःसर्वेह्याचार्यंकथयस्वमे ॥ कुतश्चैवतुगंतव्यंपथंचैवपृथक्पृथक् ॥ १ ॥ आचार्य उवाच॥ ब्रह्माणंशंकरंचैवविष्णुलोकंयथोत्तमम् ॥ दृष्ट्वातथैवेशानस्यत्रयो मार्गाः प्रकीर्तिताः ॥ २ ॥ साधक उवाच ॥ ब्रह्मलोकेचये

शिवजी बोले तब सम्पूर्णसाधक कहने लगे हे आचार्य ! सबमार्ग पृथक् २ जातेहैं किस ओर जाय सो कहिये ? ॥१ ॥ आचार्य बोले यह ईशानकी ओरके तीनों मार्ग ब्रह्मलोक विष्णुलोक तथा शिवलोककेहैं ॥ २ ॥ साधक बोले हे

भोगाआचार्यकथयस्वमे ॥ विष्णुलोकेचयेभोगाःकथनीयंत्वया प्रभो ॥ ३ ॥ रुद्रलोकेचयेभोगाममाग्रेकथितंत्वया ॥ ब्रह्मलोकेचयेभोगारूपवन्तः प्रयत्नतः ॥ ४ ॥ कथयामिविशेषेण कथयामिकथाःशृणु ॥ विष्णुलोकेचयेभोगाकथयामिप्रयत्नतः॥ ॥ ५ ॥ रुद्रलोकेचयेभोगाकथयायिकथामिमाम् ॥ विस्तारं कुरुताचार्यसाधकंवचनंवदेत् ॥ ६ ॥ आचार्य उवाच ॥ ॥ ब्रह्मलोकेविष्णुलोकेशिवलोकेविशेषतः ॥ त्रिपुलोकेपुयेभोगाः कथयामिशृणुतत्त्वतः ॥ ७ ॥ ब्रह्मणासदृशंरूपंमुकुटकुंडलभूपणम् ॥ ८ ॥ चतुर्वक्रंचतुर्बाहुंब्रह्माणीसदृशीस्त्रियः ॥ अप्सराणांतुलक्षैकंविमानारूढकामिनी ॥ ९ ॥ चतुर्वक्रैश्चतुर्वेदानुचरंचमुहुर्मुहुः ॥ अष्टादशपुराणानिनवव्याकरणानि च ॥ १० ॥ रत्नमालापुष्पमालाशिखाकंठप्रशोभिता ॥ श्वेतंपीतंतथाकृष्णंनीलंरक्तंज्वलंतिच ॥ ११ ॥ शिरोमणिसुन्दरेणकनकसूत्रेणकुण्डलाः॥ सर्वांगुणसमोपेताः वर्जन्तेह्यजरामराः ॥१२॥ भंगेनचन्द्ररेखस्यतपंतिप्रचरंतिच॥उद्दालयंतितांबूलंरुपयौवनगर्विताः॥

आचार्य ! ब्रह्मलोकमें जो भोगहैं सो कहो और विष्णुलोकके भोगोंको बताओ ॥ ॥ ३ ॥ और शिवलोकमें जो भोगहैं उनको मेरे सामने वर्णन करो ॥ ४ ॥ आचार्यने कहा मैं कथाको कहताहूं सुनो विष्णुलोकमें जो भोगहैं उनको कहूंगा ॥ ॥ ५ ॥ और जो शिवलोकमें भोगहैं सोभी कहताहूं विस्तारपूर्वक ऐसा साधकोंसे आचार्यने कहा ॥ ६ ॥ आचार्यबोला शिवलोक ब्रह्मलोकमें जो २ कुछ भोगहैं सो सब कहताहूं ॥ ७ ॥ ब्रह्मलोकमें ब्रह्माके समान रूप मनोहर कुंडल धारण किये ॥ ८ ॥ चार मुख, आठभुजाके मनुष्य तथा ब्रह्माणीके सदृश स्त्रियांहैं, तथा एक लक्ष अप्सरा विमानोंपर चढ़ी हुई कामिनी हैं ॥ ९ ॥ चारों मुखोंसे चारों वेद वारम्वार उच्चारण करती हैं और अठारहपुराण व्याकरण ॥ १० ॥ और रत्नोंकी माला फूलोंकी माला शिखा व कंठमें शोभित होरहीहैं, श्वेत,पीली, कृष्ण नील लाल वरणकी कान्तिवाली ॥ ११ ॥ शिरोमणि तथा कुंडल सुवर्णसूत्रोंसे बंधे शोभा देरहेहैं सब गुणोंसे पूर्ण अजर अमर उपस्थितहैं ॥ १२ ॥ भोग सहित माथेपर चन्द्ररेखा धारे तप करतीं ताम्बूल चावे रूपयौवनसे गर्वित

॥ १३ ॥ हिंडोलयंतिताःकन्यासुताश्चचतुराननाः ॥ तासांदर्शनदेहस्यदिव्यकांतिसमप्रभाः ॥ १४ ॥ शतयोजनविस्तीर्णमुत्तुंगोचचतुर्गुणम् ॥ इन्द्रनीलमहानीलैःपद्मरागोपशोभितम् ॥१५॥ ब्रह्मलोकेचयेभोगाब्रह्मणःसममायुषम् ॥ कस्मिन्कालेचसंप्राप्तेमृत्युलोकेव्रजंतिच ॥१६॥ सर्वकामसमृद्धश्चजायतेविपुलेकुले ॥ सर्वैर्गुणैःसमोपेतोराजाप्यथभविष्यति॥१७॥ चक्रवर्त्तीभवेद्राजाजातोजातिस्मरोभवेत् ॥ स्मरंतिपूर्वकर्माणिस्मरंतिचमहापथम् ॥ ॥ १८ ॥ पुत्रपौत्रसमायुक्तवामावर्त्तिसुलक्षणी ॥ एवंभोगंमहाभोगान्ब्रह्मलोकेव्यवस्थिताः ॥ १९ ॥ तिष्ठंतिसाधकाःसर्वेयावद्देवोप्रजापतिः ॥ स्मरंतिपूर्वचरितंस्मरंतिचमहापथम् ॥ २० ॥ उत्तमेचकुलेजन्मब्रह्मलोकेपुनर्व्रजेत् ॥ ब्रह्मलोकेपदेछंतेगंतव्यंपथदक्षिणे ॥ २१ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे विख्यातपुराणे श्रीश्वरकार्त्तिकेयसंवादे पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिर्जीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शने सदेहकैलासगमने ब्रह्मलोकवर्णनो नाम त्रित्रिंशः पटलः ॥ ३३ ॥

॥ १३ ॥ कन्या हिण्डोलोंपर झूलती तथा ब्रह्माकी पुत्री विहार करतीहैं देखनेमें दिव्यदेह सुन्दर शोभावाली हैं ॥ १४ ॥ वह लोक सौ योजन चौडा तथा चौगुनालांबाहै, इन्द्रनील महानील पद्मराग मणियोंसे शोभितहै ॥ १५ ॥ ब्रह्मलोकके यह भोगहैं कि ब्रह्माके समान आयु होतीहै, किसीसमयमें मृत्युलोकको प्राप्त होतेहैं ॥ १६ ॥ सम्पूर्ण कामोंमें सम्पन्न धनवान् श्रेष्ठकुलमें जन्म होता है. सब गुणोंसे युक्त ॥ १७ ॥ चक्रवर्ती राज्य करताहै, पश्चात् जातिका स्मरण होताहै, और पूर्वकर्मोंको तथा महापंथको भी स्मरण करतेहैं ॥ १८ ॥ पुत्र पौत्र सहित लक्षों स्त्रियां होतीहैं इसप्रकारके भोग ब्रह्मलोकमें विद्यमानहै ॥ १९ ॥ और सब साधक तबतक स्थित रहतेहैं, जबतक ब्रह्मा रहते हैं, तथा पूर्वचरित्र और महापंथका स्मरण होताहै ॥ २० ॥ उत्तम कुलमें जन्म तथा वार २ ब्रह्मलोकमें जाते ह, ब्रह्मलोकके मार्गकी इच्छावाले दक्षिणमार्गसे जातेहैं ॥ २१ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे भाषाटीकाया ब्रह्मलोकवर्णनो नाम त्रयस्त्रिंशः पटलः ॥ ३३ ॥

चतुस्त्रिंशः पटलः ।

श्रीसाधक उवाच ॥ ॥ ॐ ब्रह्मलोकेनमेकार्यंसत्यंसत्यंवदा-
म्यहम् ॥ विष्णुलोकेषुयेभोगाकथयस्वमहागुरो ॥ १ ॥ आ-
चार्य उवाच ॥ ॥ विष्णुलोकेषुयेभोगाकथयामितवशृणु ॥
शंखचक्रगदापद्मशारङ्गायुधमुत्तमम् ॥ २ ॥ चतुर्बाहुंमहात्मा-
नंश्यामवर्णंमहाद्युतिम् ॥ विजयंतिसुराःसर्वेयत्रदेवोजनार्दनः
॥ ३ ॥ दशलक्षंचविस्तीर्णमुच्छ्रायोदशयोजनम् ॥ विमानं-
कामिनीदिव्यंपद्मरागोपशोभितम् ॥ ४ ॥ द्वयंलक्षंसहस्रा-
णिकन्यासर्वाचतुर्भुजी ॥ यौवनस्तामदोन्मत्तागतिर्हंसग-
जोगतिः ॥ ५ ॥ लक्ष्मीचसदृशासर्वासर्वाभरणभूपिताः ॥
विष्णुलोकेमहावीराःक्रीडयंतिमहातपाः ॥ ६ ॥ गजारूढासुखा-
सीनारथारूढामहाबलाः ॥ शंखचक्रगदाहस्तंयथाआयुधकेश-
वम् ॥ ७ ॥ विष्णुलोकेषुयेयांतिविष्णुतुल्यमहायुपम् ॥ कस्मि-
न्कालेचसंप्रातेमृत्युलोकेव्रजंतिच ॥ ८ ॥ चक्रवर्त्तीभवेद्राजा-

साधक बोले ब्रह्मलोकमें हमारा कार्य नहीं विष्णुलोकके भोगोंको वर्णन करो ॥ १ ॥ आचार्य बोले, हे साधक! विष्णुलोकमें जो भोगहैं उनको कहताहूं सुनो वहां शंख, चक्र, गदा, पद्म, शार्ङ्गआयुध धारण करतेहैं ॥ २ ॥ चार भुजावाले महात्मा श्यामवर्ण अतिकान्तिमान सम्पूण देवता आनन्द करतेहैं जहां जनार्दन देव (विष्णु) वियमानहैं॥३॥ यह लोक दस लक्ष योजन चौडा तथा दस लाख योजन लंबाहै, दिव्यविमान तथा पद्मरागमणियोंसे शोभायमानहै ॥ ४ ॥ दो सहस्र लक्ष कन्या चतुर्भुज यौवनसे भरी मदमें उन्मत्त हंस व हाथीकी समान गमन शील ॥ ५ ॥ लक्ष्मीकी समान सब आभूषणोंसे भूषितहैं इसप्रकार विष्णु-लोकमें क्रीडा करतीहैं ॥६॥ गजपर तथा सुखपूर्वक रथपर चढी शंख, चक्र, गदा, पद्म हाथमें धारे हैं ॥ ७ ॥ जो विष्णुलोकमें जाते हैं उनको विष्णुलोकके समान आयु मिलती है, और किसी समयही मृत्यु लोकको प्राप्त होते हैं ॥ ८ ॥ चक्रवर्त्ती राजा होकर पश्चात् जातिका स्मरण होता है, पुत्र पौत्र

जातोजातिस्मरोभवेत् ॥ पुत्रपौत्रसमायुक्तंधनधान्यसमाकुलम् ॥ ॥ ९ ॥ कामवंतोतेजवंतोजायंतेविपुलेकुले ॥ दीर्घायुर्विपुलान् भोगान्महाबलपराक्रमम् ॥ १० ॥ द्वारेचतिष्टतेसैन्यमश्वनागश्चनेकधा ॥ सप्तजन्मभवेद्राजाह्यजितोनात्रसंशयः ॥ ११ ॥ नारीचलभतेपुत्रंपूर्णचन्द्रप्रभाननम् ॥ एतानिमहासेनानीसत्यंसत्यंवदाम्यहम् ॥ १२ ॥ एतानिचभवेत्तस्यपुरीविष्णुगतेसती ॥ विष्णुलोकेनमेकार्यमेवंवदंतिसाधकाः ॥ १३ ॥

इति श्रीकेदारकल्पेविख्यातपुराणे श्रीश्वरकार्त्तिकेय संवादे पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवनमुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शनेसदेहकैलासगमने विष्णुलोकवर्णनो नाम चतुस्त्रिंशः पटलः ॥ ३४ ॥

धन धान्य समेत ॥ ९ ॥ कामयुक्त तथा तेजस्वी हो विपुल कुलमे उत्पन्न हो, बडी आयुके अधिक भोग बल पराक्रमी होते है ॥ १० ॥ उनके द्वारपर बडी सेना, घोडा, हाथी, अनेक निवास करते है वे सात जन्मतकँ राजा होते है, इसमे कुछ संशय नहीं ॥ ११ ॥ चन्द्रमाके समान स्त्रियां व पुत्र प्राप्त होते हैं यह विष्णुलोकके भोग कहे है ॥ १२ ॥ विष्णुपुरीमे जानेसे इतने भोग मिलते है, यह सुन साधक बोले विष्णुलोकसे हमारा कुछ कार्य नहीं है ॥ १३ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे भाषाटीकाया विष्णुलोकवर्णनो नाम चतुस्त्रिंश पटल ॥ ३४ ॥

पंचत्रिंशः पटलः ।

साधक उवाच ॥ ॥ ॐ विष्णुलोकेमहाभोगाममभोगानरुच्यते ॥ शिवलोकेचयेभोगाआचार्यकथयस्वमे ॥ १ ॥ ॥ आचार्य

साधक बोले । विष्णुलोकके महाभोग हमको नही रुचते अब हे आचार्य ! शिवलोकके भोगोको कहो ॥ १ ॥ आचार्य बोले, हे सिद्धो ! यह तुमसे कह-

उवाच ॥ एतत्तेकथितंसिद्धरुद्रलोकमतःपरम् ॥ शिवलोकेपुये-भोगान्कथयामिसततंशृणु ॥ २ ॥ त्रिनेत्रंदशभुजंचैवचंद्रार्धकृतशेखरम् ॥ विमानंकामिकादिव्यंचन्द्रादित्यसमप्रभम् ॥ ३ ॥ त्रिशूलंवरदंहस्तंगणगंधर्वसेवितम् ॥ कैलासपीठमध्यस्थंयत्र-देवोमहेश्वरः ॥ ४ ॥ यावद्रूपमहाकायायावत्सुरगणकोटयः ॥ उमाशिवाग्रेक्रीडंतिह्यमराः सुखसमन्विताः ॥ ५ ॥ रमाकोटिस-हस्राणिहारकेयूरभूपिताः॥सर्वशृंगारशोभाढ्यानूपुरारावलंकृताः॥ ॥ ६ ॥ अक्षयंयौवनासर्वाऽमयासदृशोपमम् ॥ दिव्यवस्त्रपरी-धानंमहाभोगपरिच्छदाः ॥ ७ ॥ सर्वभोगसमायुक्ताःक्रीडंति शिवसन्निधौ ॥ यावत्तिष्ठतिमेदिन्यांयावन्माक्षीरसागरे ॥ ८ ॥ ध्रुवोहिनिश्चलोयावद्यावत्स्वर्गेत्रिलोचनः ॥ चन्द्रार्कौगगने यावद्ग्रहनक्षत्रसंयुतेः ॥ ९ ॥ यावद्धिनिश्चलोमेरुर्यावल्लोकत्रय-स्थितिः ॥ तावत्तिष्ठंतितेसर्वेयावद्देवोमहेश्वरः ॥ १० ॥ इच्छा-कालेतुसंप्रातेमृत्युलोकेव्रजंतिच ॥ सर्वकामसमृद्धाश्वजायंतेविपु-

दिया अब शिवलोकमें जो भोग है उनको वर्णन करता हूं ध्यान देकर सुनो ॥ ॥ २ ॥ तीननेत्र, दसभुजा, माथेपर आधा चन्द्रमा धारे, दिव्य विमानोपर सुन्दर कामिनी जो चन्द्रमा वा सूर्यके समान कान्तिवाली विराजती है ॥ ३ ॥ त्रिशूल हाथमें लिये गण गन्धर्वोसे सेवित कैलासपर सिहासनोंमें विराजमान जहांपर महेश्वर देव है ॥ ४ ॥ जबतक अनेक कोटि देवता है, तबतक रूपवाले महाकाय पार्वती शिवके आगे अक्षय सुखपूर्वक अमर हो क्रीड़ा करते है ॥ ५ ॥ सहस्रो कोटि अप्सराए हार बाजूबंद आदिसे भूषित नूपुर (पायजेब) पहने सम्पूर्ण शृंगारकी शोभासे युक्त ॥ ६ ॥ अक्षय यौवनवती पार्वतीके सदृश दिव्य वस्त्र धारण किये महाभोग सहित ॥ ७ ॥ शिवके समीप क्रीडा करती है, जब-तक पृथ्वी तथा समुद्रमें जल रहता है ॥ ८ ॥ जबतक ध्रुव निश्चल है, जबतक स्वर्गमें शिव है, जबतक आकाशमें चंद्रमा व सूर्य है ग्रह नक्षत्र सहित है ॥ ९ ॥ जबतक पवन निश्चल है अक्षय देवता सिद्ध महेश्वर ये जबतक है ये तबतक स्थिर रहते है ॥ १० ॥ इच्छा होनेपर मृत्युलोकमें जाते है, तथा सब कामना-

लेकुले ॥ ११ ॥ सर्वेर्गुणैःसमोपेताराजानोपिभवन्तिवै ॥ पुत्रपौत्रसमायुक्तंधनधान्यसमाकुलम् ॥ १२ ॥ द्वारेचतिष्ठते सैन्याःगजैरश्वैरनेकधा ॥ ज्ञानयुक्तः तेजयुक्तः चक्रवर्तिमहान्नृपः ॥ १३ ॥ सर्वसौभाग्यसंयुक्ताभुजंतिविपुलांश्रियम् ॥ दीर्घायुर्विपुलान्भोगान्पुनस्तेस्वर्गगामिनः ॥ १४ ॥ अजराश्चमहाप्राज्ञापूर्णचन्द्रमुखास्त्रियः ॥ कैलासपीठमध्यस्तुयत्रदेवोमहेश्वरः ॥ १५ ॥ सुवर्णगोपुराट्टालैर्मणिप्रकारवेष्टितम् ॥ इन्द्रनीलमहानीलैःपद्मरागोपशोभितम् ॥ १६ ॥ तत्रस्थानेमहासेनदेवानांचमहाबलम् ॥ ध्वजमालाकुलंदिव्यंदृश्यतेशिखरोपमम् ॥ ॥ १७ ॥ निवासंदेवताःसर्वेसुरेन्द्रस्यचकोटिभिः ॥ शिवस्थाने महासेनशोभितंपुरमुत्तमम् ॥ १८ ॥ निशिवह्निर्यथातेजो दृश्यंतेचदिशोदश ॥ तथाचन्द्रस्यतेजेनह्यग्नितेजःसमप्रभाः ॥ ॥ १९ ॥ नृत्यंतिअप्सरासर्वारंभाद्याअष्टनायिकाः ॥ नित्योत्सवसमाकीर्णंदृश्यंतेचपुरेसदा ॥ २० ॥ वाटिकाःकांचना-

ओं सहित श्रेष्ठ कुलमें उत्पन्न होते हैं ॥ ११ ॥ सब गुणआगर राजा होते हैं, पुत्र पौत्र धन धान्यसे पूर्ण ॥ १२ ॥ द्वारपर सेना उपस्थित होती है, तथा अनेक घोड़े हाथी रथ आदि होते हैं, ज्ञानी, तेजस्वी, चक्रवर्ती, राज्य करता है ॥१३॥ सब सुखपूर्वक विपुल भोगोंको भोगता है, बडी अवस्थासे आनन्दको अनुभव करके फिर स्वर्गको जाता है ॥ १४ ॥ वहां अजर अमर हो चन्द्रमुखी स्त्रियाँ समेत कैलासपर्वतपर विराजमान होते हैं, जहां कि महेश्वर हैं ॥ १५ ॥ सुवर्ण गोपुर मणि आदि प्राकारसे व्याप्त इन्द्रनील महानील पद्मराग मणियोंसे शोभित ॥ १६ ॥ और उस स्थानमें देवताओंकी समान बड़ी सेना होती हैं, ध्वजा मालाओंसे शोभित जो शिखर दीखता है ॥ १७ ॥ वहां सुरेन्द्र सहित अनेक देवता निवास करते हैं, शिवके स्थानमें सुन्दर नगर शोभा देते हैं ॥ १८ ॥ रात्रिमें जिस प्रकार अग्निका तेज हो उसी प्रकार दशों दिशाएँ चन्द्रके तेजसे प्रकाशमान हैं ॥ १९ ॥ रम्भा आदि आठ नायका नृत्य करती हैं तथा उस पुरमें नित्य नवीन उत्सव होते हैं ॥ २० ॥ और सुवर्णकी वाटिका फल फूलोंसे

स्तत्रफलपुष्पोपशोभिताः ॥ कूष्मांडफलरूपेणह्यमृतंतत्रातिष्ठति ॥ २१ ॥ चूतचंदनसंयुक्तंकदलीखंडमंडितम् ॥ एवंपुरेमहारम्ये सर्वेदेवादिवासितम् ॥ २२ ॥ एकविंशसहस्राणिदृश्यंतेधवला गृहाः ॥ तत्रहेममयादिव्याबहुरत्नोपशोभिता ॥ २३ ॥ नदीच वहतेतत्रघृतक्षीरमधुस्यदा ॥ देवगंधर्वसंकीर्णदेवकन्यासमाकुलम् ॥ २४ ॥ चन्द्रादित्यसमंतेजोदृश्यतेचपुरेसदा ॥ इन्द्रनीलैर्महानीलैःपद्मरागोपशोभितम् ॥ २५ ॥ तस्यमध्येमहारम्ये ह्यग्निज्वालासमप्रभा ॥ हेम्नावसुंधरातत्रस्फुरंतिकिरणानिच ॥ ॥ २६ ॥ साधकाश्चगतास्तत्रयत्रदेवोमहेश्वरः ॥ लोकद्वारे गताश्चैवचंडीश्वरउवाचह ॥ २७ ॥ चंडीश्वर उवाच ॥ ॥ कुभुवनागतासिद्धाकस्थानेचैवगम्यते ॥ एतद्ब्रूहिमहाचार्यसाधकोपरिवेष्टितम् ॥ २८ ॥ साधक उवाच ॥ ॥ कथयामि महाचंडशृणुमेवचनंमहान् ॥ आगतामृत्युलोकाच्चगंतव्यंशंकरालये ॥ २९ ॥ देवा उचुः ॥ ॥ दिव्यंविमानकामिन्यांपश्यंतिसर्वसाधकाः ॥ आरूढांचभवेतिसिद्धावेष्टितासर्वसाधकाः ॥ ३० ॥

शोभित हैं, कूष्माण्डके फल रूपसे मानों वहां अमृत स्थित है ॥ २१ ॥ आम चन्दनसे युक्त केलोंसे मंडित उस नगरमें सम्पूर्ण देवता निवास करते हैं ॥ २२ ॥ इक्कीस सहस्र स्वच्छ सुन्दर गृह दीखते हैं, और वहां व सुवर्णमय दिव्यरत्नजटित होनेसे अति शोभा देते हैं ॥ २३ ॥ वहां घृत, दूध, मधुकी नदी बहती है, देवता गन्धर्व सहित देवकन्याओंसे व्याप्त ॥ २४ ॥ चन्द्रमा सूर्यके समान उस पुरमें प्रकाशित इन्द्रनील, महानील, पद्मराग, मणियोंसे शोभा होरही है ॥ २५ ॥ परमरमणीक उसके मध्यमें अग्निकी लपटकी समान प्रकाशित भूमि सुवर्णसे आच्छादित होरही है ॥ २६ ॥ यह सुन साधकगण वहां पहुँचे जहां महेश्वर थे उस समय द्वारपर उपस्थित चण्डीश्वर बोला ॥ २७ ॥ चण्डीश्वर बोला हे सिद्धो ! कौन स्थानसे आये और कौन स्थानको जाते हो ? हे आचार्य मो सावधान होकर कहो ॥ २८ ॥ साधक बोले हे चंडीश्वर ! हमारा वचन सुनो जो कहते हैं कि हम मृत्युलोकसे आये और शिवलोकको जाते हैं ॥ २९ ॥ देवता बोले दिव्य विमानपर चढी कामिनी उपस्थित हैं ॥ ३० ॥

दिव्यचीरपरीधानैर्दिव्यगंधानुलेपनैः॥दिव्यपुष्पाशिरो बद्धादिव्य
रत्नसमाकुलम् ॥ ३१ ॥ विमानारूढभोसिद्धायत्रेच्छातत्रगम्य-
ताम् ॥ आरूढंतवविप्रेन्द्रयथोयंतत्रगच्छति ॥ ३२ ॥ इच्छावरं
चभुंक्तव्यंयावच्चन्द्रार्कतेजसा ॥ सुवर्णकेतकीजातितिष्ठंतिराज-
चंपिकाः ॥ ३३ ॥ बकुलैःशतपत्रैश्चबिल्ववृक्षैश्चपाटलैः ॥ एवं
पुरेमहारम्येबहुगंधादिवासिते ॥३४॥ यौवनादिमहाकायंमहारूपं
महद्बलम् ॥ साधक उवाच ॥ ॥ तस्मिन्स्थानेनमेकार्यंनमे-
भोगप्रयोजनम् ॥ ३५ ॥ मयाचतत्रगंतव्यंयत्रदेवोमहेश्वरः ॥
तत्रस्थानेमहासेनचंडरूपंधृतंमहान् ॥ ३६ ॥ ओष्ठमेकंभुजौद्वौ-
चद्वितीयेगगनेस्थितः ॥ रक्तनेत्रंमहाक्रूरंतीक्ष्णदंष्ट्राभयानकम् ॥
॥ ३७ ॥ तस्यासुरनिनादेनयथामेघेनगर्जिता ॥ जिह्वास्फु-
रतिविस्तीर्णसाधकाविस्मयंगताः ॥ ३८ ॥ आचार्यशंकितास्तत्र
ह्यघोरंजप्यतेमहान् ॥ अष्टोत्तरंशतंचैवह्यघोरंजप्यतेक्षणात् ॥
॥ ३९ ॥ अघोरंजप्यमानस्तुह्यदृश्योजायतेभयात् ॥ ॐ हुं

दिव्य वस्त्र धारे सुन्दरसुगन्ध लगाये दिव्यपुष्पोंको सिरपर बांधे जो सुन्दर रत्नोंसे जटितहैं ॥३१॥ हेसिद्ध॥ विमानोंपर चढ़ो,जहां इच्छा हो वहां जाओ हेविप्रेन्द्र ! इसपर चढके चाहे जहां जाओ ॥ ३२ ॥ और मनइच्छित भोगोंको चन्द्रसूर्यकी स्थितितक भोगो, यहां सुवर्णकी केतकी राजचंपिका ॥ ३३ ॥ बकुल शतपत्र बेलपत्र, पर्वल आदिसे शोभायमान सुन्दर नगरहै, इसनगरमें अधिकसुगन्धित ॥ ३४ ॥ यौवनोन्मत्त सुन्दर शरीरवाली कामिनीहैं, साधक बोले हमारा ऐसे स्थानमें कुछ काम नहींहै, न भोगोंसे कुछ प्रयोजनहै ॥ ३५ ॥ हम वहां जायँगे जहां महेश्वर देवताहैं, हे महासेन ! तब उसस्थानमें चण्डीश्वरने बडा भयंकर रूप धारण किया ॥ ३६ ॥ एक ओंठ आठ भुजा थीं लम्बाईमें मानो दूसरा आकाशहै लालनेत्र महाक्रूर तीव्र दृष्टि भयानक ॥ ३७ ॥ मेघकी समान गर्जन प्रकाशमान अतिविस्तृत जिह्वाको देख साधक विस्मयको प्राप्त हुए ॥ ३८ ॥ और शंकित हुए आचार्योंने अघोरमंत्रको जपा, तत्क्षण एकसौ आठ आवृत्ति मंत्रजप किया ॥ ३९ ॥ अघोरमंत्रके जपनेसे भय छूटगये, 'हुं फट् स्वाहा' यह

फट्स्वाहा ॥ हर्षंतुष्टामहासिद्धाप्रणम्यपरमेश्वरम् ॥ ४० ॥ तत्क्षणंदृश्यतेरूपंचंडीश्वरमहाबलम् ॥ सत्यंचवदतेयावत्तावचंडीश्वरःपुनः ॥ ४१ ॥ रत्नमालाकरेतस्यकर्णेचहेमकुंडला ॥ चतुर्बाहुंत्रिनेत्रंचशूलहस्तंधृतस्तदा ॥ ४२ ॥ दिव्यवस्त्रपरीधानंदिव्यदेहस्वरूपकम् ॥ दिव्याभरणशोभाढ्यंदिव्यगंधानुलेपनम् ॥ ४३ ॥ चंडीश्वर उवाच ॥ ॥ सिद्धसिद्धमहाप्राज्ञकृत कर्म्मसुदुस्तर ॥ क्षणमेकंस्थितोवीरयावद्रुद्रःसमागतः ॥ ४४ ॥

इतिश्रीकेदारकल्पेविख्यातपुराणेश्रीश्वरकार्त्तिकेयसंवादेपंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवनमुक्तब्रह्मप्राप्तयेमहापथे शिवदर्शनेसदेहकैलासगमने गिरिकैलासवर्णनंचंडीश्वरदर्शनोनाम पंचत्रिंशः पटलः ॥ ३५ ॥

मंत्रहै, तब वे महासिद्ध हर्षसे संतुष्ट होकर परमेश्वरको प्रणाम करनेलगे ॥४०॥ तब उसीसमय चंडीश्वरने अपना पूर्वरूप धारण किया और फिर कहने लगा ॥ ॥ ४१ ॥ उसके हाथमें रत्नकी माला कानोंमें कुंडल चारभुजा तीन नेत्र त्रिशूल हाथमें धारे था ॥ ४२ ॥ सुन्दर वस्त्र पहने दिव्यदेह स्वरूप धारण किये तथा दिव्यआभरणोंकी शोभायुक्त, सुन्दर गन्ध लगायेहुए दर्शन दियाथा ॥ ४३ ॥ चंडीश्वर बोला हेमहाप्राज्ञ ! सिद्धो ! आपने बडा दुष्कर सुकर्म किया है वीरो ! क्षणमात्र यहां स्थितहो जबतक रुद्र आवें ॥ ४४ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे भाषाटीकायां पंचत्रिंशः पटलः ॥ ३५ ॥

षट्त्रिंशः पटलः ।

ॐ हर्षंतुष्टस्ततश्चंडःसाधकानांप्रबोधितः ॥ एवमुक्त्वाततश्चंडः यत्रदेवोमहेश्वरः ॥ १ ॥ चंडीश्वर उवाच ॥ कृतांजलिपुटोभूत्वापृच्छतिपरमेश्वरम् ॥ साधकामृत्युलोकाच्चह्यागतादेव

तब चंडीश्वरने अतिप्रसन्नहो साधकोंको समझाया, और जहां महेश्वर देव थे वहां सब गये ॥ १ ॥ चंडीश्वरने अंजलि बाँध परमेश्वरसे कहा कि यह सा

दर्शने ॥ २ ॥ श्रीपरमेश्वर उवाच ॥ ॥ शृणुचंडमहा
प्राज्ञह्येकचित्तोव्यवस्थितः ॥ मृत्युलोकेमहातीर्थकेदारोनामदैव
तम् ॥ ३ ॥ तत्रैवललितागंगाह्यर्चयित्वातुशंकरम् ॥ तत्र
कालेतिचंडस्यसाधकाह्वदयंतथा ॥ ४ ॥ आगच्छंतुमहा-
चार्योविलंबंनैवकारयेत् ॥ इर्षंतुष्टोमहाचंडःयत्रतिष्ठंतिसाध-
काः ॥ ५ ॥ चंडीश्वर उवाच ॥ ॥ युष्मत्तुष्टोमहादेवो
उमासार्धंत्रिलोचनः ॥ उत्तिष्ठगम्यतांसिद्धतुष्टस्तेपरमेश्वरः ॥
॥ ६ ॥ नंदीस्कंदमहाकाल आगता रथगामिनः ॥ त्रिनेत्रा
दशभुजाश्चैवत्रिशूलंकरपल्लवैः ॥ ७ ॥ तदासिद्धासमारूढास्कं-
दस्तत्रसमागमत् ॥ स्वागताश्चमहातेजोइच्छंतिचरथोत्तमम् ॥८॥
साधक उवाच ॥ ॥ प्रणम्यदेवदेवस्यआरूढंचरथोत्तमान् ॥
तपुसर्वेसमारूढाःसर्वकामैःप्रपूरिताः ॥ ९ ॥ दिव्यदेहामहा-
कायासर्वभोगसमाश्रिताः ॥ तावत्पश्यंतितेचंडंवदंतिसाधको-
त्तमाः ॥ १० ॥ पृच्छतेदेवदेवस्यआरूढंचरथोत्तमैः ॥ सर्वे
कन्यासमायुक्ताआगतारथगामिनी ॥ ११ ॥ तावत्पश्यंति

धक मृत्युलोकसे देवके दर्शन करनेको आयेहैं ॥ २ ॥ श्रीपरमेश्वर बोले हेचण्डे-
श्वर ! हे महाप्राज्ञ ! एकचित्त होकर सुनो, मृत्युलोकमें केदारनामक परमतीर्थ है
॥ ३ ॥ तहांही ललिता गंगाहै यह वहांपर शिवका अर्चन करें उससमय चंड
इश्वरने साधकोंसे कहा ॥ ४ ॥ हे आचार्य ! आओविलंब मतकरो यह कह चंडे-
श्वर बडा प्रसन्न हुआ ॥ ५ ॥ चंडेश्वर बोला आपके समीप पार्वतीसमेत महादेव
हैं, उठके चलिये तुमसे परमेश्वर संतुष्ट हुएहैं ॥ ६ ॥ नंदी स्कंद महाकाल रथपर
प्राप्तहुएहैं, तीन नेत्र दस भुजा हस्तपल्लवमें त्रिशूल धारेहैं,॥७॥ तब सिद्धोंके समीप
रथपर चढे स्कंद प्राप्तहुए और बोले हेमहातेजस्विन् ! स्वागतहै उत्तम रथकी
इच्छा करो ॥ ८ ॥ साधक बोले उत्तम रथोंपर चढेहुए देवदेवोंको प्रणामहै यह
कह आपभी सब कामनासे पूर्णहुए उनपर चढे ॥ ९ ॥ दिव्य महाशरीरधारे
सबभोगोंसे आनन्दित साधकोत्तम चंडेश्वरसे संभाषण करते ॥ १० ॥ उत्तम
रथपर चढेहुए देवदेवको पूछतेथे, रथपर चढी सम्पूर्ण कन्या आई ॥ ११ ॥
चंडेश्वर साधकोंकी ओर देखकर कहने लगा, देखो स्वर्गके शिखरपर कैसी शोभा

तेचंडवदंतिसाधकोत्तमाः ॥ किमेवदृश्यतेस्वर्गेशिखरेश्चैवशोभितम् ॥ १२ ॥ यस्यदेवस्ययःस्थानंयादृशंयस्यभूषणम् ॥ प्रतिवंधंचभोचंडीवदंतिसाधकोत्तमाः ॥ १३ ॥ एषांस्थानंच नामानिसुस्थानंशोभनानिच ॥ तत्रस्थानंचनामानितत्सर्वंकथयामिते ॥ १४ ॥ चंडीश्वर उवाच ॥ ॥ दृश्यंतेकांचना वृक्षाः पारिजातकपंकजाः ॥ तत्रहेमप्रभादिव्यंनानारत्नविभूषितम् ॥ १५ ॥ इन्द्रनीलमहानीलैःपद्मरागोपशोभितम् ॥ तेषांस्थानानिदिव्यानितत्सर्वंकथयाम्यहम् ॥ १६ ॥ अमरावतीपुरीरम्यापूर्वभागेव्यवस्थिता ॥ सर्वदेवस्यराजोयंदैत्यारिः शक्रनामतः ॥ १७ ॥ आग्नेय्यांयाचदिग्भागेपुरीतेजोवती चसा ॥ हुतभुग्वसतेतत्रयोमुखंपितृदेवताः ॥ १८ ॥ याम्यां चैवादिशांसिद्धापुरीज्योतिष्मतीशुभा ॥ धर्माधर्मनिरीक्षार्थंधर्मराजोरवेःसुतः ॥ १९ ॥ नैर्ऋत्यांचैवदिग्भागेपुरीयक्षवती शुभा ॥ निवासोयक्षरक्षानांमहादेवेननिर्मितः ॥ २० ॥ वारु-

दीखतीहै ॥ १२ ॥ जिस देवताका जो स्थान जो दिशा जो भूषणहै सो सब कहनेके लिये साधकोंने चंडेश्वरकी प्रेरणाकी ॥ १३ ॥ इनके स्थान नाम आभूषण आदि सबमें कहताहूं यह कहकर ॥ १४ ॥ चंडीश्वर बोला, देखो यह सुवर्णके वृक्ष पारिजातक पुष्प कमल दीखतेहैं,वहांपरही सुवर्णकी कान्तिसे दिव्य अनेक रत्नोंसे भूषित ॥ १५ ॥ इन्द्रनील पद्मरागसे शोभित उनके दिव्यस्थान आदिके नाम सब कहताहूं ॥ १६ ॥ अमरावती रमणीक नगरी पूर्वभागमें स्थितहै, वहां सबदेवताओंका राजा दैत्योंका शत्रु इन्द्र निवास करताहै ॥ १७ ॥ और आग्नेय दिशाकी ओर तेजोवती पुरीहै, वहां अग्निदेवता रहतेहैं, जो पितृ देवताओंके दूत हैं ॥ १८ ॥ हेसिद्धो ! दक्षिणदिशामें जोतिष्मती नगरीहै तहां धर्म और अधर्मके फल देनेको साक्षात सूर्यपुत्र धर्मराज रहतेहैं ॥ १९ ॥ और नैर्ऋत दिशाके भागमें यक्षवती पुरीहै वहां यक्ष और राक्षसोंका निवासहै यह साक्षात् शिवने निर्माण कीहै ॥ २० ॥ पश्चिमदिशामें वरुणकी महापुरीहै, वहां जल जन्तुओंका

णेनैवदिग्भागवरुणस्यमहापुरी ॥ पश्चिमेजलजंतूनांनाथोवरुण
एवच ॥ २१ ॥ वायवीयेचदिग्भागेपुरीगंधर्वसेविता ॥ यत्रै
रुद्रसभामध्येनृत्यंतिचहसंतिच ॥ २२ ॥ कौबेर्य्यांदिचादिग्भागे
महादनीपुरीशुभा ॥ यत्ररुद्रस्यवसतिरमात्योधनदस्तथा ॥
॥ २३ ॥ यशोवतीपुरीरम्याचैशान्यांचसमाश्रिता ॥ मध्येलिंगं
भवेद्दिव्यंशंखकुन्देन्दुसन्निभम् ॥ २४ ॥ कोटिद्वादशविस्तीर्णं
उच्छ्रायश्चचतुर्गुणम् ॥ कैलासशिखरेरम्येनानारत्नविभूषितम्
॥ २५ ॥ संप्राताःसाधकास्तत्रपश्यंतिचहिमालयम् ॥ विमानं
कामिकादिव्यंमणिरत्नसमाकुलम् ॥ २६ ॥ सर्ववाद्यमथो-
पेतंदुंदुभिःपटहानिच ॥ शंखकोलाहलंपूर्णमहामर्दलसंयुतम् ॥
॥ २७ ॥ वेणुवंशमृदंगानांमहानादैःसुनादितम् ॥ नृत्यंत्यप्स-
रसःसर्वारंभाद्याःसुमनोहराः ॥ २८ ॥ श्रुत्वाचसाधकाःसर्वेहर्ष-
यंतिपुनःपुनः ॥ नमस्तेशिवरूपायनमस्तेब्रह्मयोगिने ॥ २९ ॥
शतयोजनविस्तीर्णंशोभितंहरमंदिरम् ॥ देवगंधर्वसंकीर्णमुत्तुंगो

स्वामी वरुण निवास करता है ॥ ॥ २१ ॥ और वायुकोणमें गन्धर्वोंसे सेवित नगरी है जो गन्धर्व रुद्रकी सभामें नृत्य करते और हर्ष करते हैं ॥ २२ ॥ कौबेर्य (उत्तर) दिशामें महादनीपुरी है जहांपर रुद्रदेवताका अमात्य कुवेर रहताहै ॥ २३ ॥ और ईशान दिशामें यशोवती नगरी है. जहांके बीचमें शिवलिंग. शंख कुन्द चन्द्रमाके समान सुन्दर है ॥ ॥ २४ ॥ जो बारहकोटि योजन विस्तृतहै तथा इसके चौगुना ऊंचाहै. कैलास पर्वतके शिखरपर अनेकप्रकारके रत्न शोभायमानहैं ॥ २५ ॥ साधकगण वहां प्राप्त हुए और हिमालयको देखतेहैं उनके विमान दिव्यमणि रत्नजटितये ॥ २६ ॥ सम्पूर्ण बाजे गाजे दुन्दुभि पटह शंख आदिका शब्द गूंजता था ॥ २७ ॥ वेणु बांसुरी मृदंग आदिके नादसे शब्दायमान रंभा आदि सम्पूर्ण अप्सरायें मधुर ध्वनिसे गाती नृत्य करती थीं ॥ २८ ॥ यह सब साधक श्रवण करके वारम्बार हर्षको प्राप्त हुए और बोले शिवरूप आपको नमस्कार है ॥ २९ ॥ यहां सौ योजन विस्तृत शिवका मंदिर शोभित है और चौगुना ऊंचा जहां देवता गन्धर्व

हिचतुर्गुणम् ॥ ३० ॥ हेमरत्नसमायुक्तंप्राकारमपिशोभितम् ॥ तत्रस्थानेमहारम्येह्यग्निज्वालासमप्रभा ॥ ३१ ॥ मौक्तिकंचन्द्रकान्तश्चप्रस्फुरंतिह्यनेकधा ॥ मेरुशृंगेसमारूढानानारत्नविचित्रिताः ॥ ३२ ॥ प्रतोलीद्वारसंयुक्तंवेष्टितंशिवशासनम् ॥ हेमरत्नसमायुक्तंतोरणेनप्रशोभितम् ॥ ३३ ॥ षोडशकलासमायुक्तंदिव्यंज्योतिमनोहरम् ॥ लक्षयोजनविस्तीर्णंहरस्थानंचमंडपम् ॥ ३४ ॥ स्तंभाःहेममयाःसर्वेचन्द्रकांतिसमप्रभाः ॥ हैमेनरचिताभूमिर्नानारत्नविभूषिता ॥ ३५ ॥ क्षणेक्षणेचतिष्ठंतिसूर्य्यकोटिसमप्रभा ॥ तस्यमध्येमहादेवःसभायांपरिवेष्टितः ॥ ॥ ३६ ॥ सिंहासनानिदिव्यानिहेमरत्नकृतानिच ॥ भूषिताकनकांताचपद्मरागंततःपरम् ॥ ३७ ॥ मुक्ताफलप्रवालैश्चचन्द्रकांतिसमप्रभम् ॥ तत्र तिष्ठतिदेवेशोजगन्नाथोमहेश्वरः ॥ ३८ ॥ चामरैर्व्यज्यमानैस्तुधनदोवासुकीतथा ॥ नंदीचण्डःप्रतीहारास्तिष्ठंतेद्वारसंस्थिताः॥३९॥ सोमेनधारितंछत्रंरुद्रस्योपरिचाश्रितम्॥

विराजमान हैं ॥ ३० ॥ सुवर्णरत्न जड़ित प्राकार शोभा देरहा था, उस परम रमणीक स्थानमें अग्निकी कान्तिकी समान चमक थी ॥ ३१ ॥ मोती चन्द्रकान्तमणि अनेक प्रकारकी शोभा देरहीहैं, और सुमेरु पर्वतपर चढ़करतहां अनेक रत्नोंकी सुन्दरता देखी ॥ ३२ ॥ प्रतोली और द्वारपर शिवके शासक लोग चारों ओर उपस्थित थे, सुवर्णरत्न जड़ित बंदरवालोंसे शोभायमान ॥ ३३ ॥ सोलह कला समेत दिव्य ज्योतिसे मनोहर लक्ष योजन विस्तारवाला शिवस्थानका मंडप था ॥ ३४ ॥ सम्पूर्ण खंभे सुवर्णमय तथा चन्द्रमाकी कान्तिके समान थे, वह भूमि स्वर्णसे आच्छादित अनेक रत्नोंसे शोभित ॥ ३५ ॥ क्षण २ में कोटि सूर्यकी कान्तिके सदृश उपस्थित थी उसके मध्यमें सभाके बीच साक्षात् महादेव विराजमान हैं ॥ ३६ ॥ दिव्यसिंहासन सुवर्णरचितहै चन्द्रकान्त पद्मराग मणियोंसे भूषित ॥ ३७ ॥ मोती मूँगोंके रहनेसे जो चन्द्रमाकी समान प्रकाशमान है । वहां जगत्पति महादेव विराजमान हैं ॥ ३८ ॥ कुवेर और वासुकी (सर्पराज) चामर झालते, और नन्दी द्वारपाल द्वारपर स्थित हैं ॥ ३९ ॥ और रुद्रके छत्रको चन्द्रमा धारण किये तथा पवन सुन्दर ध्वनिपूर्वक

पवनैर्वाद्यतेवीनामहानादादिपूरिता ॥ ४० ॥ देवदेवंसुरश्रेष्ठंसर्वा-
भरणभूषितम् ॥ दिव्यवस्त्रपरीधानंचंदनागरुलेपनम् ॥ ४१ ॥
नीलकंठंमहातेजोसूर्य्यकोटिसमप्रभम् ॥ त्रिनेत्रंदशभुजंचैव-
चन्द्रार्धकृतशेखरम् ॥ ४२ ॥ महादेवंवृषारूढंशूलहस्तधरं-
तथा ॥ सर्वाभोगसमायुक्तंभस्मगात्रविलेपनम् ॥ ४३ ॥ कपा-
लखड्ग धरंदेवंपंचवक्त्रंपिनाकिनम् ॥ चन्द्रंचव्यालशोभाढ्यंदेवदेवं-
वरप्रदम् ॥ ४४ ॥ देवगंधर्वसंकीर्णरुद्रकन्यासमाकुलम् ॥ देव-
देवंमहादेवंसर्वदेवशिरोमणिम् ॥ ४५ ॥ विश्वनाथंजगन्नाथंमहा-
पानांप्रहाणकम् ॥ तिष्ठंतिमुनयःसर्वेतिष्ठंतेसर्वदेवताः ॥ ४६ ॥
लोकनाथंजगन्नाथंसर्वव्यापिनमीश्वरम् ॥ जिह्वाग्रेचचतुर्वेदा-
हृदयेभुवनत्रयम् ॥ ४७ ॥ रोमाग्रेसुनयःसर्वेतिष्ठंतेसर्वदेवताः ॥
सप्तपातालपादौचह्याकाशेमस्तकंतथा ॥ ४८ ॥ लोचनेचमहा-
सेनवह्निचन्द्रार्कतेजसा ॥ तिष्ठंतचसुराःसर्वेब्रह्माद्यादेवतागणाः ॥
॥ ४९ ॥ सभायांपरितिष्ठंतिब्रह्मविष्णुपुरंदराः ॥ प्रेक्षणीयंप्रकु-

वीणा बजाता है ॥ ४० ॥ इसप्रकार सब आभूषणोंसे भूषित देवदेव शिवको देखा, जो दिव्य वस्त्र धारे, चन्दन अगर लिपटाये ॥ ४१ ॥ नीलकंठ, महातेजस्वी कोटि सूर्यकी समान कान्तिमान् त्रिनेत्र दशभुजा, माथेपर अर्धचन्द्रमा धारण किये ॥ ४२ ॥ बैलपर चढ़े, त्रिशूल धारण किये, महादेव सब भोगों सहित शरीरपर भस्म लेपन किये ॥ ४३ ॥ कपाल तथा खड्ग धारण किये. पिनाक धारे, चन्द्रमा तथा सर्पोंको अवलम्बन दिये हैं, ऐसे देवदेव शिवको देखा ॥ ४४ ॥ जो देवता गन्धर्वोंसे घिरे रुद्रकन्याओं सहित सब देवोंके शिरोमणि शिव हैं ॥ ४५ ॥ विश्वनाथ जगन्नाथ, बडे पापोंको दूर करनेवाले, तथा जिनके समीप सब ऋषि मुनि व देवता स्थित हैं ॥ ४६ ॥ लोकनाथ जगन्नाथ, सर्व व्यापी ईश्वर जिनकी जिह्वाके आगे चारों वेद रहते हैं हृदयमें तीनों लोक हैं ॥ ४७ ॥ जिनके रोमाग्र भागमें सब मुनि व देवता हैं सात पाताल जिनके चरण हैं आकाश मस्तक है ॥ ४८ ॥ अग्नि चन्द्रमा सूर्य नेत्र हैं, ब्रह्मा आदि देवतागन समीप स्थित हैं ॥ ४९ ॥ सभाके बीचमें ब्रह्मा विष्णु इन्द्र उपस्थित

वैतिवाद्यंतेवादनंवहु ॥ ५० ॥ शंखदुंदुभिनिर्घोषैःकाहलेभे-
रिमर्द्दलैः ॥ पटहावेणुवंशस्यगर्जितैर्द्धनिनादितम् ॥ ५१ ॥
नृत्यंत्यप्सरसस्सर्वारंभाद्याःसर्वनायिकाः ॥ पताकातोरणानीहरं-
गमालातथाकृता ॥ ५२ ॥ स्वस्तिकैःपद्मशंखैश्चलिपितास्तत्र
कन्यकाः ॥ विद्युत्तेजसमोभूत्वाहेमरत्नविभूषिताः ॥ ५३ ॥
दिव्यवस्त्रपरिधानंचंदनागरुलेपनैः ॥ सर्वलक्षणसंपूर्णनूपुराद्यैरलं-
कृताः ॥ ५४ ॥करकंकणसंयुक्ताहारकेयूरभूषिताः ॥ संपूर्णचन्द्र-
वदनाकुण्डलाभरणोज्ज्वलाः॥५५॥ रूपयौवनसंयुक्तानागवल्लि-
विभूषिताः ॥ शिरपुष्पैःसुगंधाश्चवदंतिकोकिलास्वरम् ॥ ५६ ॥
नृत्यंतिशंकरस्याग्रेवाद्यतेवह्वनेकधा ॥ पठंतिविविधंस्तोत्रंसे-
वितंसुरनेकधा ॥ ५७ ॥ नानारत्नसमायुक्तंपुष्पमालाभिशो-
भितम् ॥ चन्दनागरुकर्पूरंत्र्यम्बकेनप्रशोभिताः ॥ ५८ ॥ रत्न-
पुष्पसमायुक्तंद्वारेचगणदेवताः ॥ दर्पणैःचामरैस्तत्रवासितैर्वि-
पुलानिच ॥ ५९॥ पारिजातपंकजास्तत्रनागपुष्पोपशोभिताः॥

मंदारकल्पवृक्षस्यपुष्पावल्यनेकधा ॥ ६० ॥ केतकीशतपत्रैश्च-
बिल्ववृक्षैश्चपाटलैः ॥ एवंवृक्षसमाकीर्णैर्देवदारैर्फलैस्तथा ॥६१॥
पुष्पगंधाकुलंचैवकांचनराजचंपिका ॥ मोगरामालतिवृक्षैर्गुला-
बैर्गुलचंदनैः ॥ ६२ ॥ चूतचंदनसंयुक्तंकदलीखंडमंडितम् ॥
वासितंराचेतंसर्वैर्नागपुष्पोपशोभितम् ॥ ६३ ॥ संप्राप्तासाधका-
स्तत्रपृच्छंतिचाशिवालयम् ॥ सर्वदासर्वसिद्धिश्चहृष्टपुष्टाश्च-
साधकाः ॥ ६४ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे विख्यातपुराणे श्रीश्वरकार्त्तिकेयसंवादे
पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवनमुक्तपरब्रह्मप्राप्तयेमहापथे शि-
वदर्शनेसदेहकैलासगमनं नामषट्त्रिंशः पटलः॥३६॥

पुष्पोंसे शोभायमान मंदार, कल्प वृक्षके फूलोंकी भेंट चढ़ती है ॥ ६० ॥ केतकी, शतपत्र, बिल्ववृक्ष, पाडुल, तथा देवदारु वृक्षोंसे व्याप्त ॥ ६१ ॥ पुष्पगंध, कांचनराज, चम्पिका, मोगरा, मालतीवृक्ष, गुलाब, चंदन आदि ॥ ६२ ॥ आमसे संयुक्त केलेके खंभोंसे मंडित, सुवासित नाग पुष्पोंसे शोभित हैं ॥ ६३ ॥ उस स्थानपर साधक गये, और शिवालयको देखने लगे और सब प्रकार हृष्ट पुष्ट प्रसन्न हुए ॥ ६४ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे भाषाटीकायां षट्त्रिंश पटल. ॥ ३६ ॥

सप्तत्रिंशः पटलः ।

शौनक उवाच ॥ ॥ वदसूतमहाप्राज्ञशिवमाहात्म्यमुत्तमम् ॥
कैलासेसाधकोगत्वाकिंचकारततःपरम् ॥ १ ॥ सूत उवाच ॥
शृणुभार्गवयत्नेनयत्पृष्टोऽसित्वयामुने ॥ तत्सर्वंकथयिष्यामि-

शौनक बोले हे सूतजी ! आप उत्तम शिवमाहात्म्यको वर्णन कीजिये, कि कैलासपर जाकर साधकोंने क्या किया ? ॥ १ ॥ सूतजी बोले ! हे भार्गव ! यत्नपूर्वक सुनो, जो तुमने मुझसे पूछा है सो सब कहता हूं जिसप्रकार सेनापतिसे

यथारुद्रेणभाषितम् ॥ २ ॥ श्रीशिव उवाच॥ अतःपरंप्रवक्ष्यामि-
शृणुकार्तिकयत्नतः॥रहस्यंभुवनंदृष्ट्वासिद्धाश्चविस्मयंगताः ॥३ ॥
सर्वेदशभुजायस्तुचन्द्रार्धकृतशेखरः ॥ ब्रह्माविष्णुस्तथाशक्र-
ग्रहनक्षत्रसंयुतैः ॥ ४ ॥ नंदीश्चंडमहाकालभृंगीकूष्मांडएव
च ॥ सिद्धविद्याधरानागाशूलपाणिर्महेश्वरः ॥ ५ ॥ भुजंग-
कंकणैश्चैवपुष्पहस्तंतथैवच ॥ वृषभोवासुकीचैवयेचान्येत्रिदशाः
सुराः ॥ ६ ॥ तेनदृष्ट्वामहाप्राज्ञाःसाधकाविस्मयंगताः ॥ तत्र-
स्थानेमहासेनकथयामितवशृणु॥ ७ ॥ साधक उवाच ॥ पृच्छंति
साधकाःसर्वेकुत्रदेवोमहेश्वरः ॥दृश्यतेचसमंरूपंसर्वेदेवाव्यवस्थि-
ताः ॥ ८ ॥ चंडीश्वर उवाच ॥ ॥ ब्रह्माचदक्षिणेभागेवामेवि-
ष्णुःसमाश्रितः ॥ ९ ॥ अर्धनारीश्वरोदेवासर्वाभरणभूषिता ॥
भस्मनाधूलितंगात्रमर्धकुंकुमचर्चितम् ॥ एवंदेवोह्युमासार्द्धंत्रिदशैः
सुरपूजितम् ॥ १० ॥ एवंपश्यंतितेसिद्धादेवदेवं महेश्व-
रम् ॥ दंडवत्प्रणमन्तिचपतंतिधरणीतले ॥ ११ ॥ कृताञ्जलि-

रुद्रने कहा है ॥ २ ॥ श्रीशिवजी बोले हे स्वामिकार्त्तिक ! सुनो इसके आगे कहता हूं, उस रहस्यमय भुवनको देखकर साधक विस्मयको प्राप्त हुए ॥ ३ ॥ नन्दी, चंड, महाकाल, भृंगी, कूष्मांडसिद्ध, विद्याधर, नागों सहित त्रिशूल धारे ॥ ४॥५ ॥ साक्षात् शिवसर्पके कंकण पहने, पुष्प हाथमें लिये,वृषभ वासुकी तथा और देवता आदि सहित दर्शन देते हुए ॥ ६ ॥ हे महाप्राज्ञ ! यह विचित्र वृत्त देख साधक आश्चर्यको प्राप्त हुए, अब उस स्थानका वर्णन करताहूं सुनो ॥ ७ ॥ साधक बोले महेश्वरदेव कहां हैं, क्योंकि सब देवताओंका एकसारूप था ॥ ८ ॥ चंडीश्वर बोला दाहिनी ओर ब्रह्मा और वामभागमें विष्णु स्थित हैं ॥ ९ ॥ अर्धनारीश्वर महादेव सब आभूषणोंके सहित हैं. जिनका शरीर भस्मसे धूलित है, आधा तन कुंकुमसे चर्चित है, यहां पार्वती समेत महादेव देवताओंसे पूजित हैं ॥ १० ॥ इस प्रकार सिद्ध देवदेव महेश्वरका दर्शन करके दंडवत प्रणाम करके भूमिपर गिरे ॥ ११ ॥ अंजलि बांधकर वारम्वार प्रणाम करके साधक बोले !

दुत्याभूत्वाप्रणमन्तिपुनःपुनः ॥ साधक उवाच ॥ ॥ अद्यमे सफलंजन्मअद्यमेसफलंतपः ॥ १२ ॥ अद्यमेसफलंजाप्यमद्य मेसफलाःक्रियाः ॥ १३ ॥ अद्यमेसफलंपंथमद्यमेसफलार्च- नम् ॥ अद्यमेसफलंकर्मंमयादृष्टःसदाशिवः ॥ १४ ॥ नमन्य चरणंपूज्यंदृष्ट्वासंभाषितंशिवम् ॥ दृष्ट्वासंभाषितंशंभोःप्रसिद्धः साधकोत्तमः ॥ १५ ॥ नमस्कृत्वाततोदेवंपिनाकिवृषभध्व- जम् ॥ अद्यमेसफलंकृत्यंदृष्ट्वादेवंमहेश्वरम् ॥ १६ ॥ नमस्कृत्वा जगन्नाथंपन्नगंसपिनाधृकक् ॥ वरंदेहिमहादेवउमावचनमब्रवीत् ॥ १७ ॥ श्रीपार्वत्युवाच ॥ ॥ वरंदेहिमहादेवसाधकानां यथोत्तमम् ॥ एवमुक्त्वासुरेशानांततोह्याज्ञाप्रदीयते ॥ १८ ॥ श्रीश्वर उवाच ॥ ॥ नंदीस्कंदमहाकालःसर्वेचगणनायकाः ॥ जयंचविजयंचैवनर्म्मदाचसरस्वती ॥ १९ ॥ गंगाचयमुना चैवकावेरीसागरेणच ॥ स्नात्वाहेमकुंभेनपठंतेसिद्धचारणाः ॥ ॥ २० ॥ जयशब्देनदेवस्यशंखतूर्यरवेणच ॥ दिव्याभरण-

आज हमारा जन्म सफल हुआ आज हमारा तप सफल भया, आज हमारा जप तथा समस्त क्रिया सफल हुई ॥ १२ ॥ १३ ॥ आज हमारा पंथ और पूजन सफल हुआ। आज हमारा सब काम सफल हुआ, जो शिवका दर्शन किया ॥ ॥ १४ ॥ तब साधकोंने शिवके चरणोंको नमस्कार करके संभाषण किया ॥ १५ ॥ देवपिनाकी वृषभध्वज देवको नमस्कार करके कहा, आज शिवके दर्शन करके हमारे जन्म सफल हुए ॥ १६ ॥ जगन्नाथ, सर्प. तथा पिनाक धारण करनेवाले महादेवको नमस्कार है। हे देव ! वरदान दो इस प्रकार शिवजीसे पार्वती वचन बोली ॥ १७ ॥ हे देव ! इन उत्तम साधकोंको वरदान दो. ऐसा कहकर देवताओं को आज्ञा दी ॥ १८ ॥ ईश्वर बोले नंदीस्कन्द महाकाल तथा सब गण जयविजय नर्मदा सरस्वती नदी ॥ १९ ॥ गंगा, यमुना, कावेरी नद समेत समुद्र इनमें सुव- र्णके कलसोंसे स्नान करके सिद्ध चारण पाठ करके ॥ २० ॥ जय २ शब्द करके शंख वेणु बाजने बजाते, दिव्य आभूषण वस्त्र धारण किये तथा नानारत्नोंसे विभू-

वक्षस्यनानारत्नविभूषितम् ॥ २१ ॥ रत्नमालाशिरेतस्यल-
लाटेचन्द्रशेखरम् ॥ प्रकाशसदृशोरूपंसौख्यकामरूपानिच ॥
॥ २२ ॥ देवीस्मरणमात्रेणह्यानंदमुत्तमोत्तमम् ॥ पद्मंचदृश्यते
रूपंसाक्षात्रैलोक्यगामिनः ॥ २३ ॥ देविसुवर्णपात्रेणदधारामृत-
मुत्तमम् ॥ पीयंतेयेमृतंसिद्धायोनिगर्भान्निवर्तते ॥ २४ ॥ उमया
सहितोरुद्रंवरंदत्वातुसाधका ॥ पश्चाच्चसाधकासर्वेयत्रेच्छातत्र
गम्यताम् ॥ २५ ॥

इति श्रीरुद्रयामले केदारकल्पे विख्यातपुराणे श्रीश्वरकार्त्तिकेय-
संवादे पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिर्जीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे
शिवदर्शने श्रीश्वरपार्वतीदर्शनप्राप्तिवर्णनोनामसप्त-
त्रिंशः पटलः ॥ ३७ ॥

पित ॥ २१ ॥ जिनके सिरपर रत्नोंकी माला और ललाटमें अर्धचन्द्र था प्रकाशके समान सुन्दर स्वरूपवाले जय बोले ॥ २२ ॥ जिस देवीके स्मरण मात्रसे मृत्यु-दुःख छूटता है, अत्यानंदप्राप्ति होती है जिनका रूप कमलके सदृश है ॥ २३ ॥ वह देवी सुवर्णके पात्रमें अमृतको धारण किये लाई, तब सिद्धोंने उस अमृतको पान किया और योनि गर्भवासके दुखसे छूटगये ॥ २४ ॥ पार्वती समेत शिव उन साधकोंको वरदान देकर अन्तर्ध्यान हुए, पश्चात् साधक यथेच्छित देशको गए ॥ २५ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे भाषाटीकायां सप्तत्रिंशः पटलः ॥ ३७ ॥

अष्टात्रिंशः पटलः ।

श्रीश्वर उवाच ॥ ॥ चण्डेश्वरसहितासिद्धाप्रेप्सितंपुरमुत्त-
मम् ॥ पूर्वादिशिमहादिव्यापुरीशक्रस्यशोभिता ॥ १ ॥ साध-

: तब चंडेश्वरके साथ सिद्धोंको उत्तम पुरीमें भेजा, पूर्वदिशाके शिखरपर इन्द्र-नगरी शोभायमान थी ॥ १ ॥ साधक इन्द्रपुरीको गए, जिसका विस्तार लक्ष-

काश्वगतास्तत्रयत्रइन्द्रपुरीमहान् ॥ द्वादशलक्षविस्तीर्णमुच्छ्रायंश्चचतुर्गुणम् ॥ २ ॥ द्वादशादित्यतेजाढ्यंहेमप्राकारवेष्टितम् ॥ मणिरत्नसमाकीर्णंप्रासादगृहमाकुलम् ॥ ३ ॥ शतयोजनविस्तीर्णंमंदिरस्यचमंडपम् ॥ प्रतोल्याद्वारसंयुक्तंदिव्यकांचनशोभितम् ॥ ४ ॥ ध्वजमालाकुलंदिव्यंतोरणैरुपशोभितम् ॥ नानारत्नसमायुक्तंदिव्यंकांचनवेष्टितम् ॥५॥ सिंहासनानिदिव्यानिहेमरत्नकृतानिच ॥ तत्रतिष्ठंतिराजेन्द्रइन्द्रराजोमहानृपः ॥ ६ ॥ दिव्यवस्त्रपरीधानोदिव्यगंधानुलेपनः ॥ दिव्यपुष्पाशिरोवध्वादिव्याभरणभूषितः ॥ ७ ॥ करेवज्रंगृहीत्वाचसहस्रनयनोज्ज्वलः ॥ जटामुकुटधारीचकुंडलानिज्वलंतिच ॥ ८ ॥ निर्जरारिसभामध्ये शोभितःपाकशासनः ॥ सूर्यचंद्रानिलेन्दूनांयमस्यवरुणस्यच ॥ ॥ ९ ॥ गणगांधर्वदेवस्यऋषयोसुरपन्नगाः ॥ सभायांपरितिष्ठंतिसिद्धयक्षंचयोषितः ॥ १० ॥ साधकाश्वगताद्दष्ट्वाइन्द्रराजस्य सम्मुखम् ॥ इन्द्र उवाच ॥ ॥ विमानारूढभोसिद्धाइन्द्रोवचनमब्रवीत् ॥ ११ ॥ विमानारूढदेवस्यदेवकन्यासमाकुलम् ॥ चा-

योजन तथा ऊंचा उसकी अपेक्षा चौगुना था ॥ २ ॥ बारह सूर्यके समान तेजयुक्त सुवर्णके प्राकार वेष्टितमणि रत्नोंसे व्याप्त प्रासाद गृह थे ॥ ३ ॥ शतयोजन विस्तृत उस मन्दिरका मण्डप था, प्रतोली द्वारसहित दिव्य कांचनसे शोभित था ॥ ४ ॥ उत्तम पताका मालाओंसे व्याप्त, तोरण (वंदनवार) से शोभायमान, अनेक रत्नोंसे समाकुल सुन्दर सुवर्णसे वेष्टित ॥ ५ ॥ तथा दिव्य सिंहासन सुवर्णरत्न जटित थे, वहां राजा इन्द्र विराजमान थे ॥ ६ ॥ दिव्यवस्त्र धारे सुन्दर सुगन्ध लगाये दिव्य पुष्प सिरपर बांधे,सुन्दर आभूषणोंसे भूषित॥७॥हाथमें वज्र ग्रहण किये, सहस्रनेत्र समेत जटा मुकट धारण किये कुंडलोंसे प्रकाशित ॥ ८ ॥ देवताओंकी सभामें राजा इन्द्र शोभित थे, सूर्य, चन्द्र, पवन, यम, वरुण ॥ ९ ॥ गण, गन्धर्व, ऋषि, सुर, सर्प, सिद्ध, यक्ष तथा स्त्रियां उस सभामें विद्यमान थीं ॥ १० ॥ साधक राजा इन्द्रके सन्मुख गये, इन्द्र बोले हे सिद्धो ! विमानपर चढ़ो । इस प्रकार इन्द्रने कहा ॥ ११ ॥ विमानपर चढ़े इन्द्रदेवके चारों ओर देव-

मेर्गेवीज्यमानास्तुस्तुतिंकुर्वंतियोपितः ॥ १२ ॥ प्रेक्षणीयंप्रकुर्वंतिच्छत्रचामरशोभितम् ॥ भोजनैःपूरितास्तत्रमणिवैदूर्य्यमौक्तिकैः ॥ १३ ॥ आगताश्चततःकन्यावदंतिसाधकान्प्रति ॥ कन्यका उवाच ॥ ॥ दिव्यवस्त्रंपरीधानंदिव्यगंधानुलेपनम् ॥ ॥ १४ ॥ दिव्यपुष्पशिरोबध्वाहारकेयूरभूपिता ॥ करकंकण संयुक्ताकिंकिणीभिरलंकृता॥ १५ ॥इन्द्रनीलमहानीलैःपद्मरागगोपशोभिता ॥ संपूर्णचन्द्रवदनासर्वाभरणभूपिता ॥ १६ ॥ सर्वलक्षणसंयुक्तानानाविद्यापरायणाः ॥ कन्यकाआगतास्तत्रह्यर्चयंतिचसाधकाः ॥ १७ ॥ चंदनैर्कुंकुमैर्युक्तंपुष्पमालामनोहरम् ॥ गीतंगायंतिताःकन्यावाद्यंतेवहुनेकधा ॥ १८ ॥ शंखदुन्दुभिनिर्घोषैकाहलैर्भेरिमर्दलैः ॥ साधकास्तत्रसहिताजल्पन्तिचपरस्परम् ॥ १९ ॥ इन्द्र उवाच ॥ ॥ अस्मिन्स्थानेपुरेरम्येनानाभोगसमाकुले ॥ यत्रस्थानेमहासिद्धायावच्चन्द्रार्कतारकाः॥२०॥ यावद्गंगाचरेवाचगोदावरिसरस्वती ॥ यमुनासिंधुकावेरीयावन्नी-

कन्या स्थित थीं और झूलती हुई स्तुति कररही थीं ॥ १२ ॥ इधर अधर निरीक्षण करते छत्र शोभासे सुशोभित पात्रोंमे मणि वैदूर्य मोती सम्मिलित थे ॥ १३ ॥ व कन्या साधकोंके पास आई और बोली, दिव्य वस्त्र पहने सुन्दर गन्ध लगाये ॥ ॥ १४ ॥ दिव्यपुष्प सिरमे बांधे, हार बाजूबंदोंसे भूपित हाथोंमे कंकण पहने किंकिणी भूपणोंसे अलंकृत ॥ १५ ॥ इन्द्रनील, महानील, पद्मराग मणियोंसे शोभित सम्पूर्ण चन्द्रमाकी समान मुखारविन्द, सब आभूपणोंसे भूपित ॥ १६ ॥ सब लक्षणोंसे संयुक्त अनेक विद्याओंकी पारंगत वे कन्या आई, और साधकोंका अर्चन किया ॥ १७ ॥ चंदन कुंकुम पुष्पमालाओंसे मनोहर वे कन्या गीत गाती, अनेक वाजे बजाती ॥ १८ ॥ शंख, दुन्दुभि, काहल, भेरी, मर्दलके शब्दों सहित साधकोंसे वहां इन्द्र संभापण करने लगे ॥ १९ ॥ इन्द्र बोला । इस स्थानमे नानाप्रकारके भोग मिलतेहैं, हे सिद्धो ! जबतक चन्द्रमा सूर्य तारे है ॥ २० ॥ जबतक गंगा रेवा, गोदावरी, सरस्वती, यमुना, सिन्धु, कावेरी, तथा समुद्रमे

रंचसागरे ॥ २१ ॥ यावत्तिष्ठंतिमेदिन्यांग्रहनक्षत्रतारकाः ॥ यावदस्मिन्पुरेरम्येतावत्तिष्ठंतिसाधकाः ॥ २२ ॥ साधक उवाच ॥ ॥ यत्रस्थानेनरुच्यंतेसत्यंसत्यंवदाम्यहम् ॥ विनारुद्रेणभोशक्रपुरीमह्यंनरुच्यते ॥ २३ ॥ इन्द्रनीलैर्महानीलैःपद्मरागोपशोभितम् ॥ मणिरत्नसमाकीर्णामिन्द्रनगरीसुशोभिता॥ ॥ २४ ॥ देवदेवजगन्नाथंदुर्लभंतवदर्शनम् ॥ पुरीध्यानंततः कृत्वाशृणुशक्रमहानृपः ॥ २५ ॥ नमेभोगस्यकार्य्यंवैदर्शनार्थं समागतः ॥ विष्णुसंदर्शनार्थंचतत्रगच्छामिदेवराट् ॥ २६ ॥ नमस्कारं ततः कृत्वागंतव्यंपंथमुत्तमम्॥ साधकाश्चगतास्तत्रविष्णोःपुरिमनोहरम् ॥ २७ ॥

इति श्रीकेदारकल्पेविख्यातपुराणे श्रीश्वरकार्त्तिकेयसंवादे-पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शने सदेहकैलासगमने शक्रपुरींद्रसमागमो नामाष्टात्रिंशः पटलः ॥ ३८ ॥

जल है ॥ २१ ॥ जबतक पृथ्वी गृह नक्षत्रतारे उपस्थितहैं हे साधको ! इसनगर में तबतक स्थित रहतेहैं ॥ २२ ॥ साधक बोले । इस स्थानमें निवास करनेकी इच्छा नहींहै, यह सत्य २ कहतेहैं, विनारुद्रके यह आपकी नगरी नहीं रुचती ॥ ॥ २३ ॥ इन्द्रनील महानील पद्मराग मणियोंमे शोभित, मणिरत्न जटित इन्द्र पुरी शोभायमान है ॥ २४ ॥ हे देवदेव ! हेजगन्नाथ ! आपका दर्शन परमदुर्लभ है इन्द्रपुरीका ध्यान करके साधक बोले हे महानृपशक्र ! ॥ २५ ॥ हमें भोगसे कुछ प्रयोजन नहीं आपके दर्शनोंकी अभिलाषासे यहां आयेहैं, फिर साधक विष्णुके दर्शन करनेको आये ॥ २६ ॥ परस्पर नमस्कार करके साधक विष्णु लोकमें प्राप्त हुए ॥ २७ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे भाषाटीकायामष्टात्रिंशः पटलः ॥ ३८ ॥

एकोनचत्वारिंशः पटलः ।

श्रीश्वर उवाच ॥ ॥ तत्पश्चात्साधकाःसर्वेंगताविष्णुपुरंमहत् ॥ दशयोजनलक्षाणिउच्छ्रायोपिचतुर्गुणम् ॥ १ ॥ विष्णुपुरीमहादिव्यासूर्यकोटिसमप्रभा ॥ तेजोमयंद्योतितंसंततप्तकांचनसन्निभम् ॥२॥ हैमैनरचिताभूमिःप्रासादगृहमाकुलम्॥ध्वजमालाकुलंदिव्यंचित्रकर्मोपशोभितम् ॥ ३ ॥ सिंहासनानिदिव्यानिहेमरत्नविभूषितम् ॥ तत्रतिष्ठतिदेवेशोजगन्नाथोजनार्दनः ॥ ४ ॥ अग्रतोदृश्यतेतत्रवाद्यंतेविमनेकधा ॥ शंखदुंदुभिनिर्घोषैःकाहलैर्भेरिमर्दलैः ॥ ५ ॥ पटहावेणुवंशस्यवाद्यंतेविविधानिच ॥ नृत्यंत्यप्सरसस्तत्रदेवगंधर्वयोषितः ॥ ६ ॥ वशिष्टगौत्तमश्चैवदुर्वासाव्यासपंडिताः॥ अनेकैर्ऋषिभिः सर्वैर्वेदयोध्वनिर्गीयते ॥ ७ ॥ साधकाश्चगतास्तत्रयत्रदेवोजनार्दनः ॥ दृष्ट्वाचसाधकाःसर्वेंवदंति स्वागतंप्रिये ॥ ८ ॥ श्रीविष्णुरुवाच ॥ ॥ अस्मिन्नेवपुरेरम्येव-

इसके पीछे साधक विष्णुलोकमें गये वह दस लाख योजन विस्तृत तथा उस से चौगुना ऊंचाथा ॥ १ ॥ विष्णुपुर परमदिव्य, कोटिसूर्यकी समान तेजयुक्त, कान्तिमान सुवर्णके समान प्रकाशित था ॥ २ ॥ वहांकी भूमि सुवर्णसे आच्छादित और सुन्दर गृहरत्नादिसे युक्त थे ध्वजा मालाओंसे शोभित, चित्रकर्मसे चित्रित ॥ ३ ॥ दिव्यसिंहासन सुवर्णरत्नोंसे भूषितथे, वहांपर जगन्नाथ जनार्दन देव विराजमान थे ॥ ४ ॥ जिनके आगे अनेक बाजे बजते दीखे शंख दुन्दुभि काहल, भेरी, मर्दल, ॥ ५ ॥ पटह वेणु तथा वंशी आदि अनेक बाजे बजतेथे, अप्सरा देव गंधर्वकी स्त्रियां नृत्य करती थीं ॥ ६ ॥ वशिष्ठ, गौतम, दुर्वासा, व्यास पंडित आदि अनेक ऋषि वेदध्वनिपूर्वक गान करते थे ॥ ७ ॥ साधक वहां गये जहां विष्णु देव उपस्थित थे, जब साधकोंनें स्तुतिकी तब यह देववाणी कि हे भिषजनो ! स्वागत है ॥ ८ ॥ विष्णु बोले बहुत कन्याओंसे व्याप्त

हुकन्यासमाकुलम् ॥ तिष्ठंतिसाधकाःसर्वेयावदिन्द्राश्चतुर्दश॥९॥
श्रीसाधक उवाच ॥ ॥ देवदेवमहाविष्णोश्रूयतांवचनंमम ॥
आगताचमयादृष्टः दुर्लभंतवदर्शनम् ॥ १० ॥ दुर्लभंसर्वभूतानां-
देवानामपिदुर्लभम् ॥ अद्यमेसफलंजन्मअद्यमेसफलंतपः ॥
॥ ११ ॥ अद्यमेसफलंजाप्यमद्यमेसफलाःक्रियाः ॥ अद्यमेसफ-
लंवासअद्यमेसफलार्चनम् ॥ १२ ॥ अद्यमेसफलंभाग्यंमुक्ता-
मेवंविधानतः ॥ आदिदृष्ट्वाचगोविंदंसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ १३ ॥
अद्यमेसफलंपंथानमस्तेस्तुजनार्दनः ॥ श्रीविष्णुरुवाच ॥ ॥
सिंहासनानिदिव्यानिदिव्यरत्नयुतानिच ॥ १४ ॥ अत्रतिष्ठंतु-
भोसिद्धामहावीरामहातपाः ॥ भुंजंतुसाधकाः सर्वेतिष्ठंतुगरुडा-
सने ॥ १५ ॥ दिव्यवस्त्रपरीधानंदिव्यगंधानुलेपनम् ॥ दिव्य-
पुष्पाशिरोबध्वाचंदनागरलेपनम् ॥ १६ ॥ अस्मिन्तिष्ठंतुभो-
सिद्धाभुजंतुंविपुलांश्रियम् ॥ आचार्य्यसाधकाःसर्वेभुक्त्वाभोगान्

इसनगरमें सम्पूर्ण साधक तुम तबतक निवास करो जबतक चौदह इन्द्रहैं ॥ ९ ॥ साधक बोले । हेदेवदेव ! हे विष्णो ! आपका वचन सत्य है हम आपके दर्शन करनेको आयेहैं क्योंकि आपका दर्शन बडा दुर्लभहै ॥ १० ॥ सब प्राणियों व देवताओंकोभी दुर्लभहै आज हमारा जन्म तथा तप सुफल हुआ ॥ ॥ ११ ॥ आज हमारा जप तथा क्रिया सफल हुई, और आज हमारा निवास तथा पूजन सब सफल हुआ ॥ १२ ॥ आज हमारा भाग्य सफल हुआ, और बंधनसे छूटे यह प्राणी आदिदेव गोविन्दको देखकर सबपापोंसे छूटजाताहै ॥ ॥ १३ ॥ आज हमारा पंथ सुफल हुआ आपके चरणकमलोंको नमस्कारहै, विष्णु बोले ! यह दिव्यसिंहासन रत्नजटितहै ॥ १४ ॥ हेमहावीर ! हेमहातपस्वियो ! इनमें बैठो, और तुम सब साधक अनेक भोग भोगो तथा गरुडासनपर बैठो ॥ १५ ॥ दिव्यवस्त्र पहनो सुगंध लगाओ, दिव्यपुष्प सिरपर धारो, चंदन अगरका लेप करो ॥ १६ ॥ और यहां निवास करके सब आचार्य साधक मने-

मनेप्सितान् ॥ १७ ॥ आचार्य्य उवाच ॥ ॥ अस्मिन्स्थाने-
नमेकार्य्यंसत्यंसत्यंवदाम्यहम् ॥ नमस्कारंततःकृत्वागतास्ते-
पंथमुत्तमम् ॥ १८ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे विख्यातपुराणे श्रीश्वरकार्त्तिकेयसंवादे
पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे
शिवदर्शने सदेहकैलासगमने विष्णुपुरीश्रीविष्णु-
दर्शनो नामैकोनचत्वारिंशः पटलः ॥३९॥

प्सित भोगोंको भोगो ॥ १७ ॥ आचार्य बोले इस स्थानमें हमारा कुछ कामनहीं
यह सत्य २ जानो, यह कह नमस्कार करके उत्तम पंथको गये ॥ १८ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे भाषाटीकायामेकोनचत्वारिंशः पटलः ॥ ३९ ॥

चत्वारिंशः पटलः ।

श्रीश्वर उवाच ॥ ॥ पश्चाच्चसाधकाःसर्वेब्रह्मलोकेगतास्तथा ॥
सप्तलक्षंचविस्तीर्णंब्रह्मस्थानंचपुरीमहत् ॥ १ ॥ ब्रह्मस्थानं महा-
दिव्यमुच्छ्रायोचचतुर्गुणम् ॥ द्वादशादित्यतेजाढ्यंसूर्य्यकोटि-
समप्रभम् ॥ २ ॥ नानारत्नसमाकीर्णवैदूर्य्यमणिरश्मिभिः ॥
रम्यंमनोहरंदिव्यमुदितार्कसमप्रभम् ॥ ३ ॥ अग्निज्वालासमो-
पेतंहेमप्राकारवेष्टितम् ॥ पठंतिविविधंस्तोत्रंवाद्यंतेचपुनःपुनः ॥
विविधानिचरंगाग्निस्तोत्रमंत्राह्यनेकधा ॥ ४ ॥ स्वराणिचमहा-

पश्चात् वे साधक ब्रह्मलोकमें गये जो सातलाख योजन विस्तृत और उससे
चौगुना लंबा था ॥ १ ॥ ब्रह्मलोक बडा सुन्दर था, बारह सूर्यकी समान तेज
युक्त ॥ २ ॥ अनेक रत्नोंसे जडित, वैदूर्यमणियोंकी कान्तिसे शोभित मनोहर
उदय होते सूर्यकीसमान कान्तिमान् ॥ ३ ॥ अग्निकी लपटके तुल्य देदीप्तमान्,
सुवर्णप्राकारसे आच्छादित अनेक स्तोत्रपाठतथा बाजोंकी ध्वनिसे गुंजारित, विवि-
धरंग तथा स्तुतिमंत्रोंसे शब्दायमान॥४॥ दशोंदिशाओंमें स्वरोंका महानाद होत.

नादंदृश्यतेचदसोदेशः ॥ चूतंचन्दनसंयुक्तंकदलीखंडमण्डितम् ॥
॥ ५ ॥ देवगंधर्वसंकीर्णंदेवकन्यासमाकुलम् ॥ ध्वजामालाकुलं-
दिव्यंप्रासादगृहमाकुलम् ॥ ६ ॥ वापीकूपतडागानिदृश्यंतेच-
मनोहराः ॥ वेदध्वनिचनिर्घोषैःपठंतिचद्विजोत्तमाः ॥ ७ ॥
नारदश्चभृगुश्चैववसिष्ठःगौतमस्तथा ॥ कश्यपोवामदेवश्चशुकश्च-
व्यासपंडिताः ॥ ८ ॥ अन्याश्चऋषयःसर्वेवेदयोध्वनिर्गीयते ॥
ब्रह्मलोकेमहासेनवेष्टिताऋषिरुत्तमाः ॥ ९ ॥ सिंहासनानिदि-
व्यानिहेमरत्नयुतानिच ॥ तत्रतिष्ठतिदेवेशःदेवदेवःप्रजापतिः ॥
॥ १० ॥ त्रयोदेवासमायुक्तंब्रह्माविष्णुंमहेश्वरम् ॥ साधकाश्च-
गताद्दृष्ट्वावदंतिस्वागतंप्रियम् ॥ ११ ॥ सन्मुखश्चागतास्तत्र-
देवदेवःपितामहः ॥ ततःपश्यंतितेसिद्धाब्रह्मावैवाक्यमब्रवीत् ॥
॥ १२ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ ॥ भोभोसिद्धामहाप्राज्ञास्थिता-
अस्मिन्पुरेसदा ॥ अत्रस्थानेपुरेरम्येमहाभोगसमन्विताः ॥१३॥
इच्छावरंचभोक्तव्यंब्रह्मलोकेचसाधकाः ॥ एवंभोगामहावीराब्रह्मलो-
केव्यवस्थिताः ॥ १४ ॥ इदंपंचमहासेनयावदिन्द्राश्चतुर्दश ॥

या, आम, चंदन, खंभोंसे मंडित ॥ ५ ॥ देवता गन्धर्व देवकन्याओंसे परिपूर्ण, ध्वजामालाओंसे अलंकृत सुन्दर प्रासाद गृहोंसे संयुक्त ॥ ६ ॥ वापी कूप सरोवर आदि दीख रहेथे, स्वरपूर्वक उत्तम ब्राह्मण वेदपाठ करतेथे ॥ ७ ॥ भृगुमुनि, नारद वशिष्ठ, गौतम, कश्यप, कृष्णद्वैपायन, शुक, व्यास, आदि पंडित ॥ ८ ॥ परस्पर सब ऋषि वेदोंका गान करतेथे हे महासेन ! ब्रह्मलोकमें उत्तम ऋषि विराजमान थे ॥ ९ ॥ दिव्यसिंहासन सुवर्णरत्न जटित थे, वहांपर देवेश प्रजापति (ब्रह्मा) विराजमान थे ॥ १० ॥ ब्रह्मा, विष्णु, शिव, तीनों देवता विराजमान थे, साधक वहां गये, उनका स्वागत हुआ ॥ ११ ॥ उनके सन्मुख साक्षात् पितामह ब्रह्मा उपस्थित हुए और उन साधकोंने दर्शन किये, ब्रह्मा यह वचन बोले ॥ १२ ॥ हे सिद्धो ! हे महाप्राज्ञ ! इस नगरमें नित्य निवास करो, और इसी जगह अनेक भोगोंको अनुभव करो ॥ १३ ॥ हे साधको ! ब्रह्मलोकमें इच्छापूर्वक वरग्रहण करो, और इस २ प्रकारके महाभोग हैं ॥ १४ ॥ हे महासेन !

साधकाश्चमहासत्यंवदंतिब्रह्मणोयदि ॥ १५ ॥ यदिपंचमहासेन-
उपुर्धचविधीयते ॥ तिष्टन्त्वत्रपुरींरम्यांभुक्तान्भोगान्यथे-
प्सितान् ॥ १६ ॥ शृणुसिद्धामहाप्राज्ञाभुक्तभोगाननेकधा ॥
हेमवद्धामहास्थानमेकचित्तोव्यवस्थिता ॥ १७ ॥ त्रिसंध्यंच-
भवेन्नित्यंकुर्वन्तिचमहाप्रभो ॥ एवंब्रह्मपुरंदिव्यंभुक्ताभोगान्म-
नेप्सितान् ॥ १८ ॥ साधक उवाच ॥ ॥ देवदेवप्रजानाथ-
शृणुत्वंवचनंमम ॥ आगताचमयादृष्टादुर्लभंतवदर्शनम् ॥ १९॥
अद्यमेसफलंजन्मअद्यमेसफलंतपः ॥ अद्यमेसफलंजाप्यमद्यमे
सफलंक्रिया ॥ २० ॥ त्वांदृष्ट्वाचप्रजानाथसर्व्वपापैःप्रमु-
च्यते ॥ अद्यमेसफलंभाग्यंमुक्तोहंभवबंधनात् ॥ २१ ॥ गर्भ-
वासेनदुःखेनत्यक्त्वासंसारसागरात् ॥ गर्भवासविनिर्मुक्तौतस्य-
दोषेतिगच्छति ॥ २२ ॥ तेनदुःखभवाद्भीताकैलासेगमनंकृतम्॥
विनारुद्रंमहाप्राज्ञनरुच्यंतेपुरीतव ॥ २३ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ ॥
ब्रह्मलोकसमोलोकासुरश्रेष्ठसमोसुरः ॥ ब्रह्माणीसदृशानारीकथं-

पांच आवृत्ति जबतक चौदह इन्द्र हों तबतक यहांकी आयु है इस प्रकार सत्य २ ब्रह्माने कहा ॥ १५ ॥ हे भाग्यवानो ! पांच कल्पतक ऊपरके भोग भोगो, तबतक अत्यन्त भोगोंको सुखपूर्वक भोगो ॥ १६ ॥ हे महाप्राज्ञ ! सुवर्णसे आच्छादित इस स्थानमें एकाग्र चित्तसे निवास करके सुखोंको भोगो ॥ १७ ॥ हे प्रभो ! नित्य त्रिसंध्या करो, इस प्रकार ब्रह्मपुरीमें दिव्य भोग हैं ॥ १८ ॥ साधक बोले हे देवदेव ! हे प्रजानाथ ! आप हमारे वचनको सुनो, आपके दर्शनार्थ हम आये हैं आपका दर्शन परम दुर्लभ है ॥ १९ ॥ आज हमारा जन्म सफल हुआ, आज हमारा तप सफल हुआ, तथा आज हमारा जप और क्रिया सफल हुई ॥ २० ॥ आदिदेव प्रजानाथ आपका दर्शन कर सब पापोंसे छूटे, आज हमारा भाग्य सफल हुआ और संसार बंधनसे छूटे ॥ २१ ॥ गर्भवासके दुःखसे तथा संसार सागरसे छूटे ॥ २२ ॥ उस दुःखके भयसेही कैलासको आये थे, हे ब्रह्मन् ! विना रुद्रके आपकी पुरी नहीं रुचती ॥ २३ ॥ ब्रह्मा बोले ब्रह्म-
लोकके समान लोक, ब्रह्माके समान देवता, ब्रह्माणीसी स्त्री, यहांकेसे भोग, हे आर्य ! आप

चार्य्यैनरुच्यते ॥ २४ ॥ अष्टाशतसहस्राणिऋषयोवेदपारगाः ॥ नौकुलौपन्नगाःसर्वेदेवत्रिदशकोटिभिः ॥ २५ ॥ रतिसर्वमहाश्रेष्ठंदेवदेवःप्रजापतिः ॥ कथंभोगानरुच्यंतेइच्छायांचपुनःपुनः॥ ॥ २६ ॥ आचार्य उवाच ॥ अश्वरत्नमहाभोगास्तिष्ठंतेचगृहे मम ॥ रथनागसमायुक्तैर्विमानानिह्यनेकधा ॥ २७ ॥ सेनाकोटिसहस्राणिपूर्णचन्द्रमुखास्त्रियः ॥ सत्यंसत्यंपुनःसत्यंविनारुद्रेनरुच्यते ॥ २८ ॥ श्रुत्वाधर्मपुराणानित्यक्त्वाचात्रसमागताः ॥ नमस्कारंततःकृत्वाप्रजानाथंनमाम्यहम् ॥ २९ ॥ एवमुक्त्वाततःश्रुत्वावेगेनपवनोयथा ॥ धर्म्मराजपुरींगत्वाआचार्यसाधकैःसह ॥ ३० ॥

इति श्रीकेदारकल्पेविख्यातपुराणे श्रीश्वरकार्तिकेय संवादे पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवनमुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शनेसदेहकैलासगमनो नामब्रह्मपुरीब्रह्मदर्शनो नाम चत्वारिंशः पटलः ॥४०॥

को क्यों नहीं रुचते ॥ २४ ॥ यहां अठारह सहस्र ऋषि वेद पारंगत हैं तीस कोटि देवता और श्रेष्ठ कुलके सर्प रहते हैं ॥ २५ ॥ इसप्रकार जहां महाश्रेष्ठ प्रजापति देवदेव हैं, रमणीक नगरमें रहकर इच्छा करनेपर प्राप्त होनेवाले भोग क्यों नहीं रुचते ? ॥ २६ ॥ आचार्य बोले हमारे घरमें भी अनेकों भोग स्थित हैं, हाथी घोडा रथ विमान आदि अनेक ॥ २७ ॥ कोटि सहस्र सेना पूर्णचन्द्रमुखवाली स्त्रियां हैं, परन्तु विना रुद्रके नहीं रुचते यह हम सत्य २ ही कहते हैं ॥२८॥ धर्मपुराण आदि श्रवण करके उनको छोड यहांपर प्राप्त हुए हैं, तब प्रजानाथ ब्रह्माको नमस्कार करके ॥ २९ ॥ वे साधक पवनके समान धर्मराजकी नगरीको गये और उनके साथ आचार्य भी गये ॥ ३० ॥

इति श्रीकेदारकल्पे भाषाटीकायां चत्वारिंशः पटलः ॥ ४० ॥

एकचत्वारिंशः पटलः ।

श्रीश्वर उवाच ॥ ॥ तत्पश्चात्साधकाःसर्वेधर्म्मराजपुरींगताः ॥ कैलासदक्षिणेभागेतिष्ठतिअंतिकापुरी ॥ १ ॥ द्वादशलक्ष विस्तीर्णमुच्छ्रायश्चचतुर्गुणम् ॥ शोभतेचमहादिव्यंयोजनश्चपुरी महान् ॥ २ ॥ हेमरत्नसमायुक्तंलोहप्राकारवेष्टितम् ॥ रम्यं मनोहरंदिव्यंसर्वेपांचभयापहम् ॥ ३ ॥ सिंहासनानिदिव्यानि हेमरत्नजटानिच ॥ तत्रतिष्ठतिदेवेशधर्म्मराजोमहानृपः ॥ ४ ॥ तिष्ठंतिकिंकराःसर्वेचित्रगुप्तश्चातिष्ठति ॥ पापंपुण्यंचलोकानांलिख्यतेतत्रपत्रिका ॥ ५ ॥ सुकृतंदुष्कृतंकिंचित्भुंजंतिचसुखं दुखम् ॥ महानर्कोचभोक्तव्यकृतंकर्म्मशुभाशुभम् ॥ ६ ॥ ऊर्द्धपादाःस्थिताःकेचित्तप्ततैलंपुनःपुनः॥केचित्तुरौरवेघोरेकुंभीपाकेतथैवच ॥ ७ ॥ केचित्तुक्रमिणःस्थानेकेचिन्मुद्गरचूर्णिताः ॥ हस्तिचरणस्थिताःकेचित्तप्तांगारेषुलोहिताः ॥ ८ ॥ गण्डपाके स्थिताःकेचित्तप्ताङ्गारेसिभर्जिता ॥ आरण्येचस्थिताःकेचित्स्थि-

श्री ईश्वर बोले तत्पश्चात् सम्पूर्ण साधक धर्मराजकी पुरीको गये, वह अवन्तिका पुरी—कैलासके दक्षिण भागमें स्थित है ॥ १ ॥ बारह लाख योजन विस्तारवाली, उसकी अपेक्षा चौगुना लम्बाव है, इस प्रकार वह दिव्य नगरी शोभा पाती थी ॥ २ ॥ सुवर्ण रत्नजटित लोह प्राकारसे वेष्टित, रमणीक दिव्य सबके भय दूर करनेहारी है ॥ ३ ॥ वहां दिव्य सिंहासन सुवर्णरत्नसे जटित है, वहांपर श्रीमान् राजा धर्मराज विराजमान थे ॥ ४ ॥ तथा सब किंकर (दास) चित्रगुप्त आदि उपस्थित थे, संसारके पाप और पुण्योंको पत्रपर लिख रहे थे ॥ ५ ॥ प्राणी जो कुछ सुकृत और दुष्कृत करते हैं, उनका सुख और दुःखरूप फल भोगते हैं, तथा पापोंसे महानर्क भोगना होता है, शुभ तथा अशुभ कर्म करनेवाले ॥ ६ ॥ कोई ऊर्ध्वपाद (ऊपरको पैर किये हुए) कोई तपाये हुए तैलमें गिरे हैं, कोई घोर रौरवमें पड़ेहैं, तथा कोई कुंभी पाकमें पडे हैं ॥ ७ ॥ कोई कृमि कीट आदिमें स्थित हैं, कोई पैरोंसे चूर्ण २ किये हैं, कोई हाथीके पैरोंसे ... रहे हैं कोई तप्त अंगारोंसे लाल किये जाते हैं ॥ ८ ॥ कोई गंडपाकमें स्थित

ताःकेचिन्महार्णवे ॥९॥ केचिद्बद्धाश्चपाशेनकेचिद्धन्यंतिअंकुशैः॥
पाशबद्धाःस्थिताःकेचित्केचिद्दण्डेनपीडिताः ॥ १० ॥ आलि-
ङ्गितास्ततस्तंभे रुदन्तिदुःखपीडिताः ॥ खङ्गेनछेदिताःकेचि-
त्केचिन्मुशलपीडिताः ॥ ११ ॥ केचिल्लोहातप्तपाशैर्वज्रशक्ति-
प्रच्छेदिता ॥ संस्थिताचकृतंकायंक्रियंतेपापकर्म्मणा ॥ १२ ॥
सप्तजन्मकृतंपापंभुंजंतेचपृथक्पृथक् ॥ पाषाणैःपेषिताःकेचिन्ना-
नादुःखैश्चपीडिताः ॥ १३ ॥ पुण्यंधर्मकृतंयैस्तुभुंजंतेसुकृ-
तं महान् ॥ वालुकायांचतप्तायांकुंभीपाकेपुनपुनः ॥ १४ ॥
केचिच्चकंटकैस्तीक्ष्णैस्तप्तलोहकमेवच ॥ केचित्क्रिमिराशिस्थाने
केचिच्चाररुदंतिच ॥ १५ ॥ बहुधावेदनांप्राप्ताभुंशुंडीचपृथक्
पृथक् ॥ अस्मिन्स्थानेमहाघोरेसर्वजन्तुप्रपीडिताः ॥ १६ ॥
केचित्तुतैलयंत्रैस्तुलौहपात्रैस्तथैवच ॥ केचित्तुशाल्मलिवृक्षेके-
चिद्विकटसंकटे ॥ १७ ॥ भुंजंतेदुष्कृतंकर्मकृतंयच्चशुभाशुभम्॥
यैःपूर्वंनिन्दितंशास्त्रंदुष्कृतंचकृतंमहान्॥ १८ ॥ तेनरानरकंयां-

हुए, तथा कोई बडे समुद्रमें पडे डूबते थे ॥ ९ ॥ कोई पाशोंसे बांधे गये, कोई अंकुशसे प्रहार किये गये, कोई रस्सोंमें बँधे, कोई दंडसे पीडित देखे ॥ १० ॥ कोई तपाये हुए खंभोंमें लिपटाये हुए दुःखी रोते थे, कोई खड्गसे काटे जाते कोई मूसलसे पीडित हो रहे थे ॥ ११ ॥ कोई तप्त लोहके पिंजरेमें बंद किये गये कोई वज्रशक्तिसे छेदित इस प्रकार पाप कर्म करने वालों की कायाको कष्टदिया जाताथा ॥ १२ ॥ सातजन्मका किया पाप पृथक् २ भोगतेथे, नानादुःखोंसे पीडित नर शिलाओंसे पीसे जातेथे ॥ १३ ॥ और जिन्होंने पुण्यकर्म कियाथा वह सुखफल भोगतेथे, कोई पापी तप्तरेतमें स्थित, तथा कोई कुंभीपाकमें पडेथे ॥ १४ ॥ कोई तीखे कांटोंमें पडे तथा कोई तपाए लोहेसे पीडित होते, कोई क्रमिके स्थानमें स्थित, कोई दुःखीहुए रोतेथे ॥ १५ ॥ अनेक प्रकारकी वेदनाओंसे ग्रस्त पृथक् २ भुशुंडी (बन्दूक) आदिसे पीडित, उस महा घोरस्थानमें सब जन्तु पीडितथे ॥ १६ ॥ कोई तैलपात्र तथा लोहपात्रमें स्थित, कोई शाल्मलीके वृक्षमें बँधे कोई विकट संकटमें पडेथे ॥ १७ ॥ अनेकप्रकारके शुभाशुभ कर्मोंको भोगतेथे, जिसने पूर्वमें शास्त्रोंकी निन्दाकी ॥ १८ ॥ वह मनु-

तिमहद्दुःखंपुनःपुनः ॥ अनेकनरकांश्चैवभुंजंतेचपृथक्पृथक ॥
॥ १९ ॥ व्रजंतिरौरवेघोरेयत्रधर्म्मपुरेसदा ॥ साधकाश्चागता-
स्तत्रयत्रधर्म्मपुरीमहान् ॥ २० ॥ दृष्ट्वासमागतान्सिद्धान्धर्म्मो-
वचनमब्रवीत् ॥ धर्मराज उवाच ॥ ॥ सिद्धसिद्धमहाप्राज्ञ
तुष्टोहंतवसाधकाः ॥ २१ ॥ इच्छानुरूपंसदृशंवरंयाचन्तु
सत्तमाः ॥ साधक उवाच ॥ ॥ यादतुष्टोसिमेधर्मश्रूयतांवचनं
मम ॥ २२ ॥ गर्भवासभयाद्भीतात्यक्त्वासंसारसागरम् ॥
तत्रस्थानेचयंयांतिमहानर्कैप्रपीडिताः ॥ २३ ॥ यदितुष्टासि
मेदेवधर्मराजोमहाप्रभुः ॥ पंचवर्षशतांदिव्यंमोक्षंचकुरुदुःखतः ॥
॥ २४ ॥ धर्ममोक्षंतदाकृत्वागताःस्वर्गौचयंतवः ॥ सर्वेषां
तुभवेन्मोक्षःस्वर्गेक्रीडापृथक्पृथक् ॥ २५ ॥ धर्मेणमोक्षणं
कृत्वाधर्मोवचनमब्रवीत् ॥ धर्म्मराज उवाच ॥ ॥ शृणुसाध-
कतत्त्वेनममवाक्यंसुनिश्चितम् ॥ २६ ॥ अन्तरेस्थापितःशंभुः
भजनीयःसुरैर्यदा॥ सत्यंसत्यंवदाम्येतत्कुंडमस्त्यतिभैरवम् २७॥

प्यभी नरकमें प्राप्त हुएथे, इसप्रकार अनेक नरक पृथक् २ भोगतेथे ॥ १९ ॥ घोर रौरवनरकभी महाभयानकथा, साधक वहां गये जहां महती धर्मपुरीथी ॥ २० ॥ धर्मपुरीमें देखकर धर्मराजने कहा, धर्मराजबोले हेसिद्धो ! हे महाप्राज्ञ ! हम तुमसे संतुष्ट हुएहैं ॥ २१ ॥ अपनी इच्छाके अनुकूल उत्तम वर मांगो. साधक बोले हे धर्मराज ! यदि आप प्रसन्न हुए तो हमारा वचन सुनो ॥ २२ ॥ गर्भ-वासके दुःखसे भयभीतहुए संसारसागरसे डरके यहां आयेहैं कि इसस्थानमें आने वाले महानरकसे पीडितहैं ॥ २३॥ हेप्रभो ! हे धर्मराज ! हे महाप्रभो ! यदि आप हमसे प्रसन्नहैं तो दिव्य पांचसौवर्ष पर्यंत हम कोई क्रूरकर्म न करें और मोक्ष हो ऐसा वर दो ॥ २४ ॥ तब धमराज मोक्षप्रदान करके स्वर्गलोकको गये॥ २५ ॥ धर्मपूर्वक हमारी मोक्षहो यह सुनकर धर्मराजबोले धर्मबोले हे साधको ! ! तत्त्व से हमारे निश्चित वचनोंको सुनो ॥ २६ ॥ इसके अन्तरमें , शिवजीकी स्थापना है, जो जगत्के कारणहैं यह हमारे वचन सत्यहैं इसके आगे महान् भयंकर

एवंचभुंजतेसर्वेपापंपुण्यंपृथक्पृथक् ॥ मोक्षंभवतितस्यैवनि-
यतीयोगमध्यगः ॥ २८ ॥ आगमंविधिसहितंविस्तरे-
णहितण्डुलम् ॥ सुखंदुःखंहानिवृद्धिराधारंप्रतिपालयेत् ॥
॥ २९ ॥ शतवर्षंचह्यायुर्य्यंमहाभोगेनसंयुतम् ॥ प्रथमं
अविरोविंत्रपितापिण्डस्यमध्यतः ॥ ३० ॥ नाडिकायांत्रिकं
मध्यंसंचरेतेचप्राणिनः ॥ विंदुमध्येकृतंवामंलभतेचयथेप्सितम्
॥ ३१ ॥ दशपंचचदिवसंपितापींडप्रपीडिताः ॥ ऋतुकाले
कृतंभोगंरजोयुक्ताचकामिनि ॥ ३२ ॥ समंयोनिंचपतितो
विन्दुवीर्य्यसमंभवेत् ॥ रजंमातुःपितुर्वीर्य्यंपिन्सीचदशमास-
कौ ॥ ३३ ॥ तत्सर्वंभवरेरूपंनारीपुरुषउच्यते ॥ चतुरस्या-
पितेपिंडावालुतरुणवालयोः ॥ ३४ ॥ वृद्धिंचभवतेपश्चाद
वस्यास्थादृश्यमानवः ॥ सुकृतंदुष्कृतंकर्म्मलिख्यंतेतत्रपत्रिकाः
॥ ३५ ॥ आयुष्यंसर्वभुक्तंचज्ञात्यौचित्रिचित्रकौ ॥ भाषन्ते
धर्म्मवृत्तस्यह्यायुष्यंसर्वभुक्तये ॥ ३६ ॥ भाषंतेधर्म्मराजस्य

कुंडहै॥ २७ ॥ पापकरनेवाले नरक भोगते हैं और पुण्यवाले पृथक् २ पुण्य भोगतेहैं, जैसे इन्द्रियोंसे पापपुण्य कियेहैं, भोगनेको वही मिलतेहैं ॥ २८ ॥ विधि के सहित आगम सुखदुःख हानि वृद्धि आधार इनका पालन करना चाहिये ॥ ॥ २९ ॥ यहां दिव्य शतवर्षकी आयु होतीहै, पुण्यात्माओंको यहां बडे भोगहैं, पहले अम्बरका त्रिम्बपरदादेका पिण्डहै पीछे पितासे पहलेमध्यपिंडदादेकाहै ॥ ॥ ३० ॥ यहां प्राणीजन नाडीके त्रिकस्थानमध्यमें विचरतेहैं, जो योगी बिन्दुनादका दर्शन करतेहैं वह यथेच्छ वरका लाभ करतेहैं॥ ३१ ॥ दस पन्द्रह दिन तक पिंड न मिलनेसे पिंडअदाताके पिताको पीडा होती है। ऋतुकालमें जिन्होंने रजस्वलाहोनेके पीछे भोग कियाहै ॥ ३२ ॥ जिस समय वह वीर्य उस स्थानमें पतितहोताहै, तो माताके रज और पिताका बीर्य मिलकर पिंड बनताहै ॥३३॥ वही रूपवाला होकर नारी वा पुरुष होताहै, वह पिंड क्रमसे बढताहै ॥ ३४ ॥ और वृद्धिहोकर मनुष्यादि अवस्थाको प्राप्त होताहै, सुकृत वा दुष्कृत कर्म सब चित्रगुप्तकी पुस्तकमें लिखाजाताहै ॥ ३५ ॥ तथा चित्रगुप्त उनकी समस्त आयुषाभी लिखतेहैं, और आयुके भोग और धर्मभी सब कहे जातेहैं ॥ ३६ ॥ धर्म-

किंकराचतुर्प्रेषितम् ॥ किंकराःपटचतुश्चैवपृथिवीचतुमध्यतः ॥
॥ ३७ ॥ रसनामंडितामायासाधकारस्यमेवच ॥ तेनजानन्ति-
ममाकायापितुःपिंडनचर्चितम् ॥ ३८ ॥ धर्म्माधर्म्मेणलिंगंच-
आगतापृच्छकामया ॥ चित्रंविचित्रैर्व्यक्तंधर्म्मंभापितमुत्थितौ ॥
॥ ३९ ॥ दुःस्थंविचारितंमंत्रिउपदेशंचजंतवः ॥ प्रथमेकुरुते-
धर्मपश्चाद्धर्म्मंप्रपीडिताः ॥ ४० ॥ पापंपुण्यंसमंकृत्वापुण्यपापौ-
हन्यते ॥ पापंपुण्यंफलंयुग्मंनवांच्छतियेप्राणिनः ॥ ४१ ॥
वांञ्छाफलसाधकस्ययत्रभवतिसिद्धये ॥ किञ्चित्प्रकाशितंपुण्यं-
फलंद्वयंचवाञ्छति ॥ ४२ ॥ वांछितंधर्म्मप्रकाशंवांछिताय-
स्वर्गपुरी ॥ सगुणंनिर्गुणंपुण्यंपदंतस्यप्रतिष्ठितम् ॥ ४३ ॥
एकमानात्मनोयस्यस्वर्गवासःप्रतिष्ठितः ॥ ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रस्य-
ध्यायंदेवंनिरञ्जनम् ॥ ४४ ॥ द्वादशइन्द्रियाःसर्वैव्यापितेजन-

राजके भेजेहुए किंकर सब कथन करते हैं वे किंकर ६४ पृथिवी अन्तरिक्षके मध्यमें निवास करतेहैं वडे चतुरहैं ॥ ३७ ॥ मनुष्यमायाके बंधनमें पडेहुए साधन न करनेसे मेरी आज्ञा और पिंडार्चनको नहीं जान्तेहैं ॥ ३८ ॥ धर्माधर्मके विचारसे पूछते यहां आतेहैं यहां धर्मकी गति चित्रविचित्र देखी जातीहै ॥३९॥ यहांके दुःख विचारकर मंत्रविर्य उपदेश करतेहैं, लोग पहले धर्मकरके पीछे धर्ममें पीडा करतेहैं ॥४०॥ जब इसके पापपुण्य बराबर होजातेहैं, तब यह पापपुण्योंसे हनन होजाते हैं, अर्थात् प्राणियोंमें पापपुण्य नहीं रहते, जो प्राणी पाप और पुण्य दोनोंकी इच्छा नहीं करते ॥ ४१ ॥ वह साधकके फलकी वांछा सिद्ध करनेको समर्थ होतेहैं जिनका पुण्य फल कुछ प्रकाशितहै, जो दोनों फलकी इच्छा करतेहैं ॥ ४२ ॥ जो धर्मका प्रकाश और धर्मपुरीकी वांछा करते हैं, सगुण निर्गुण पुण्यका फल उनको प्राप्त होताहै ॥ ४३ ॥ जो सर्वथा पुण्यात्मा हैं उनका निश्चय स्वर्गवास होताहै, जो विष्णु, ब्रह्मा, रुद्र इन निरंजन देवका ध्यान करतेहैं ॥ ४४ ॥ वह परमपद पातेहैं, जो दुर्मतिइन्द्रियभोगोंमें लीनहैं,

-दुर्म्मतिः ॥ शंभुनामनजानन्तिमधुर्राणिनह्युच्चरेत् ॥ ४५ ॥ मोहितामन्मथामायारौरघोरेपतंतिते ॥ शृणुसिद्धामहावीरामहायोगीमहातपाः ॥ ४६ ॥ आगतावरमिच्छायाददातुवरमुत्तमम् ॥ साधकं उवाच ॥ ॥ पृच्छंतिसाधका सेनश्रृणुधर्म्मनृपस्तथा ॥ चित्तंमनोवचोधर्म्मध्यायंतेमननिर्मलम् ॥४७॥ हृदयंध्यानयोधर्म्मआवर्त्तंचममालये ॥ सदातुष्टोसिमेधर्म्मधर्म्मराजप्रकाशितम् ॥ ४८ ॥ मुंचवर्षशतंपुण्यंपंचमोक्षंचकुरुधर्म्मयोः ॥ मोक्षंचक्रियतेसर्वेगताःस्वर्गंचजंतवः ॥ ४९ ॥ धर्म्म उवाच ॥ ॥ अस्मिन्स्थानेमहाभोगादेवदानवदुर्ल्लभाः ॥ तिष्ठंतिसाधकासर्वेजरामृत्युविवर्ज्जिताः ॥ ५० ॥ साधक उवाच ॥ ॥ नवयंभोगकार्यार्थीह्यागतादेवदर्शनम् ॥ नवक्तव्यंमहाराजन्धर्म्मराजोमहानृपः ॥ ५१ ॥ वयंचतत्रगच्छामोयत्रदेवोमहेश्वरः॥ तवपुरीध्यानंकृत्वासत्यंसत्यंवदाम्यहम् ॥ ५२ ॥ अवश्यंतत्रगंतव्यं-

जो शिवका नाम नहीं जानते जिन्होंने मधुर वाणीसे शिवका नाम न जपा॥४५॥ जो काम कीमायासे मोहितहैं वह घोर रौरवमें पडतेहैं हे वीरो! महायोगी महातपस्वी सिद्धो सुनो ॥ ४६ ॥ तुम वरकी इच्छासे आयेहो तो मैं तुमको उत्तम वर देताहूं, साधक बोले तब सब साधक पूछने लगे हे धर्मराज! सुनिये, मन वचनकर्मसे जो निर्मल धर्मका ध्यान करतेहैं ॥ ४७ ॥ हृदयसे ध्यान धर्म कर्मवाला आपके स्थानमें आगमन करताहै यदि आप हमारे ऊपर प्रसन्न हैं और आपने हमपर कृपाकर धर्म प्रकाशित कियाहै, ॥४८॥ तो पांचसौ वर्षतक जीवों यहांसे छुटकारा दो अर्थात् यहांके सब प्राणी स्वर्गको चलेजाँय ॥४९॥ धर्मराज बोले यहांके भोग देवता और दानवोंको दुर्लभहैं यहां साधक जरामृत्युसे रहित होकर स्थित रहसकतेहैं ॥ ५० ॥ साधक बोले हमको भोगकी इच्छा नहीं हम तो केवल आपका दर्शनकरने आयेथे ॥ ५१ ॥ हम तो जहां महेश्वरदेवहैं वहां जायगे हम सत्य कहतेहैं आपकी पुरीका ध्यान करके ॥ ५२ ॥ अवश्य वहां

यत्रदेवोमहेश्वरः ॥ आचार्य्यस्यप्रसंगेनसिद्धासर्वागतापुरी ॥ ॥ ५३ ॥ भूयश्चसाधकाःसर्वेशिवलोकेयथानिच ॥ प्रतिदृष्ट्वापुरीसर्वायत्रगास्तत्रआगताः ॥ ५४ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे विख्यातपुराणे श्रीश्वरकार्त्तिकेयसंवादे पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे शिवदर्शने सदेहकैलासगमनो नाम धर्म्मपुरीवर्णनो नाम एकचत्वारिंशः पटलः॥४१ ॥

जांयगे जहां महेश्वरदेवहैं आचार्यके प्रसंगसे सबकोई पुरीमें आये ॥ ५३ ॥ तब फिर वे सब साधक शिवलोकके मार्गको उसीपुरीमें होकर चले कि जहांसे सब आयेथे ॥ ५४ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे धर्मपुरीवर्णनोनामैकचत्वारिंशः पटलः ॥ ४१ ॥

द्विचत्वारिंशः पटलः ।

श्रीश्वर उवाच ॥ ॥ पश्चाच्चसाधकाह्येतेआगताशिवशासने ॥ उमयासहितोरुद्रोवरंदत्वापुनःपुनः ॥ १ ॥ सप्तकोटिस्ततः कन्याएकैकस्यप्रदीयताम् ॥ गौरीचसदृशामूर्त्तिःसर्वालंकारभूषिताः ॥ २ ॥ सर्वभोगसमोपेतास्तिष्ठंतेसाधकोत्तमाः ॥ इच्छारूपधरासर्वेस्त्रियः स्वच्छंदगामिनि ॥ ३ ॥ क्रीडयंतिमहाभोगान् यावद्देवोमहेश्वरः ॥ कैलासभुवनेचैवशिवशक्तिश्चतिष्ठति ॥ ४ ॥

ईश्वर बोले पीछे वे सब साधक शिवके शासनसे वहां आये उमाकेसहित रुद्रने इनको वारंवार वरदिया ॥ १ ॥ कि एकएक को सात आठ कोटि कन्या दी जांय, जो गौरीकी मूर्तिकी समान सब अलंकारोंसे भूषितहों ॥ २ ॥ यह उत्तम साधक यहां सब भोगोंके सहित स्थित हों और यह सब स्त्रियें अपनी इच्छाकी समान रूपधारण करतीं और स्वच्छन्द गामिनींहैं ॥ ३ ॥ जबतक देव महेश्वर स्थितिहै तबतक यह महाभोगोंसे युक्त क्रीडा करतीहैं कैलासस्थानमें शिव

उत्तमंपतितंविश्वेश्रेष्ठंचतारयेच्छिवम्॥ ससिलांस्त्रियासर्वानिवसत-
चनिर्यौवने ॥ ५ ॥ सामुद्रीकलक्षणाःसर्वेयत्रगोत्रसमन्विताः ॥
दिव्यांगवस्त्रधारिण्यादिव्यकांचनरत्नयोः ॥ ६ ॥ षोडशशृंगार-
संयुक्ताभूषितामणिरश्मिभिः ॥ अष्टगंधोदकैस्तत्रमिश्रितंयक्ष-
कर्दमैः ॥ ७ ॥ अष्टपुष्पासुगंधेनमुकुटैर्मस्तकैःशुभैः ॥ मुक्तरक्तां-
चतांबूलैर्नासामुक्तिकरंवपुः ॥ ८ ॥ नेत्रखांशुचज्वालाललाटे-
तियक्षणा ॥ मृगाक्षीहंसगामिन्योदिव्यजातिसमप्रभाः ॥ ९ ॥
कृष्णावेनीशिरश्चैवकुंडलाभरणोज्ज्वलाः ॥ कृष्णवेनीशिरश्चैवअ-
ग्रेचरत्नरक्षका ॥ १० ॥ वपुःसुवर्णस्थंभंशोभंतेवहुतेजसा ॥
शोभंतेकेशपृष्ठौचचटतेचभुजंगमा ॥ ११ ॥ मुखंचन्द्रकला-
षोडशवर्दितौशशिभास्करौ नासामुक्तिकरंचैवयुतंतादाडमीकुले॥
॥ १२ ॥ रसानाह्यमृतंवाचावाचंमधुरवेणुका ॥ कोकिलासुर-
नादेनभासयंतिपरंपदम् ॥ १३ ॥ करकंकणसंयुक्ताहारकेयूर-

शक्तिके सहित क्रीडा करतीहैं ॥ ४ ॥ यह समस्त ससारमें श्रेष्ठहैं यह श्रेष्ठ होने से शिवसे तारितहैं सब स्त्रियें सरल और सोलह सिंगारकियेहुएहैं ॥ ५ ॥ सामुद्रिक लक्षणोंसे सब लक्षितहैं, सब कुलीन हैं दिव्यवस्त्र और दिव्यरत्न धारण कियेहैं ॥ ६ ॥ सोलह सिंगार किये मणियोंकी प्रभासे सब अलंकृतहैं जहां अष्ट गंधसे युक्त जलकी कर्दमहै॥ ७ ॥ और आठ सुगंधियोंसे युक्त जिनके मुकुट हैं मुक्तामणिपहरे लाल तांबूलकी गंधसे नासिका तृप्त होजातीहै ॥ ८॥ जिनके नेत्र बडे बडे उज्ज्वलललाट शोभायमान,मृगोंकी समान नेत्र हंसकी समान चालवाली, दिव्यजातिकी समान कांतिवाली॥९॥शिरपर शोभायमान काली वेनी कुंडल और आभूषणोंसे उज्ज्वल तथा कर्णभूषण मानो दोनों ओरके रक्षकहैं ॥१०॥ सुवर्णकी समान शरीर मानो सुवर्णका स्तंभहीहै बहुत तेजसे शोभायमानहैं और पीठकेऊपर वेणी सर्पराजकी समान शोभा पातीहै ॥ ११ ॥ मुखचंद्र सूर्यकी समान है, नासा तिलप्रसूनकी समान दाडिमीकी समान दांत ॥ १२ ॥ रसना अमृतकी समान वचनोंमें मानो वंसी बजरहीहै अथवा मानों कोकिला बोलकर परमपद देरहीहै ॥ १३ ॥ हाथोंमें कंकण हैं हार और केयूरोंसे भूषित हैं, हृदयस्थान फलके

भूपिताः ॥ उरःस्थलंफलाकारंकिंकिणीउच्छ्रमेखला ॥ १४ ॥ गंभीरनाभिकेनमिहरंघटिकारूपा ॥ जानुबाहुंकदलीस्थंभंपंथमानोजआसनम् ॥ १५ ॥ हिंडोलतिहंसगामिन्योपादौनूपुरलंकृतौ ॥ गुणलक्षणसंपन्नाज्ञानध्यानस्यचिन्तयेत ॥ १६ ॥ चिन्तामणिजनिस्वर्णंमनपेगानहासति ॥ गुह्यपृष्टतःहृदयश्रूयतेभवतिद्वयम् ॥ १७ ॥ भुंजंतिचस्त्रियःसर्वाजरामृत्युविवर्ज्जिताः ॥ स्थापितंपदकैलासंयोनिगर्भविवर्ज्जिताः ॥ १८ ॥ साधकासंगमंकन्यासंगतिः समउच्यते ॥ श्रीश्वर उवाच ॥ ॥ देवतासमप्रीत्यंचप्रतिष्टायत्रशेखरे ॥ १९ ॥ क्रीडंतिसाधकास्तावद्यावद्वोमहेश्वरः ॥ साधक उवाच ॥ ॥ देवदेवजगन्नाथदुर्ल्लभंतवदर्शनम् ॥ २० ॥ मह्यंभोगानरुच्यंतेसत्यंसत्यंसदाशिव ॥ तवचरणेसदावासदीयतांगिरिजापति ॥ २१ ॥ देवेशपार्व्वतीनाथसर्वदेवीवशंभरम् ॥ महाकैलासगंतव्यंयत्रदेवोपरंशिवः॥२२॥ त्वंध्यानस्मरणंकृत्वापूजयित्वापुनःपुनः ॥ उमयाशंकरंदेवहृदयं-

आकार किंकणी मेखला शोभायमान है ॥ १४ ॥ गंभीर नाभि ह्रदके आकारवाली है जानु कदलीके स्तंभ भुजा कनक लता, नाभितल मानो कामका आसन है ॥ १५ ॥ हिंडोलकी समान गति हंसकी समान चाल चरण नूपुरोंसे शोभायमान, गुणलक्षणोंसे सम्पन्न ज्ञान ध्यानसे संयुक्त हैं ॥ १६ ॥ चिन्तामणिकी समान कामनादायक गान, हासविलासमें तत्पर हृष्ट पुष्ट शरीरसे जिनकी गति शोभायमान है ॥ १७ ॥ यह सब स्त्रियें जरा मृत्युसे रहित ही भोग करती हैं, यह सब ज्योति गर्भवाले कैलासमें स्थित हैं ॥ १८ ॥ यहां साधक कन्याओंके संग निवास करैं श्रीईश्वर बोले इस पर्वतके शिखरपर स्थित होनेमे देवताकी समान होता है ॥ १९ ॥ महेश्वरकी स्थितितक यहां साधकों की स्थिति है साधक बोले हे देवदेव! जगन्नाथ आपका दर्शन दुर्लभ है ॥ २० ॥ हे सदाशिव ! यह हम सत्य कहते हैं, कि हमको भोग नहीं रुचते हैं हम यही चाहते हैं कि आपके चरणोंमें हमारा सदा निवास हो ॥ २१ ॥ हे नाथ ! हम तो आपके समीप ही सदा स्थित रहना चाहते हैं, हम महादेवजीके समीप और [illegible] जाना चाहते हैं ॥ २२ ॥ आपका ध्यान स्मरणकर और वारंवार

चव्यवस्थितम् ॥२३॥ जग्माताजगत्त्रीश्चत्रैलोक्येशचराचरम्॥
त्वंमातासर्वभूतेषुप्रसादंकुरुईश्वरि॥ २४ ॥श्रीदेव्युवाच ॥ ॥
सिद्धसिद्धमहाप्राज्ञमहावीरामहाबलाः ॥ तुष्टाहंचमहासिद्धाव्रणी-
ध्वंवरमुत्तमत् ॥ २५ ॥ हृदयेच्छायथादद्याद्वरंब्रूहिचसाधकः ॥
साधक उवाच ॥ ॥ त्वंमातासर्वलोकानांअहंचशरणंतव ॥
॥ २६ ॥ महापंथेचगंतव्यंपंथंदेहिसुरेश्वरि ॥ ईश्वरस्यमहादेवि-
वरंदत्वाचसाधकाः ॥ २७ ॥ महापंथेचगंतव्यंनविघ्नंस्यात्कदा-
चन ॥ हृष्टपुष्टंमहादेवंसाधकानांपुनःपुनः ॥ २८ ॥ गच्छा-
चार्यमहापंथेमत्प्रसादैश्चपंथिकः ॥ जयजयप्रकुर्व्वन्तिगच्छंतिच-
महापथम् ॥ २९ ॥ अग्रेचदृश्यतेतत्रमहावैकुंठमंदिरम् ॥
महाकाशंमहादिव्यंमहाधर्म्मप्रवर्त्तते ॥ ३० ॥ द्वादशकोटि-
विस्तीर्णंउच्छ्रायोचचतुर्गुणम् ॥ मणिरत्नसमाकीर्णहेमप्रकारवेष्टि-
तम् ॥ ३१ ॥ पद्माकारंसमायुक्तंअष्टदलैश्चशोभितम् ॥ कोटि-

पूजन करके उमा और शंकरको सदाही हृदयमें धारण करना चाहते हैं ॥२३॥ आप जगत्के माता पिता त्रिलोकीक पिता चराचरके पिता हैं। हे भगवती! तुम सब प्राणियोंकी माता हमारे ऊपर कृपा करो ॥ २४ ॥ श्रीदेवी बोली, हे महापंडित सिद्धो तुम थोडी देर ठहरो मैं तुमसे प्रसन्न होकर तुमको वर देनेको इच्छा करती हूं ॥ २५ ॥ हे साधको! जो तुम्हारे हृदयमें इच्छा हो सो वर मांगो! साधक बोले, आप सब लोगोंकी माता हो हम सब तुम्हारी शरणमें हैं ॥ २६ ॥ हे महेश्वरि हम महापंथमें जाना चाहते हैं, सो आप हमको मार्ग दीजिये, हम साधक ईश्वरका महापंथ चाहते हैं ॥ २७ ॥ हम चाहते हैं महापंथ जाते समय हमको कोई विघ्न नहो यह साधक महादेवके दर्शन पर्यंत हृष्ट पुष्ट रहैं ॥ २८ ॥ आचार्य भी तुम्हारे प्रसादसे आनन्दपूर्वक गमन करें, जयजय करते हुए महापंथको गमन करें ॥ २९ ॥ आगे महावैकुण्ठ मंदिर दिखाई देता है, जो महाकाश महादिव्य महाधर्म वर्तता है ॥ ३० ॥ बारह-कोटि योजन विस्तीर्ण और चौगुना इससे ऊंचा है, मणि रत्नोंसे आकीर्ण और सुवर्णके प्राकारसे वेष्टित है ॥ ३१ ॥ पद्मके आकारसे युक्त आठ दलोंसे शोभित

मध्येचवैकुंठंदलेयुपुरिशोभितम् ॥ ३२ ॥ अष्टद्वारंचवैकुंठप्रति-
हारंचषोडशम् ॥ जयंचविजयंचैवमहायोधस्यवेष्टितम् ॥ ३३ ॥
मध्येलिंगंचवैकुंठंतत्रगत्वाचसाधकाः ॥ हेमरत्नमयाकीर्णतोरणे-
द्वारशोभितम् ॥ ३४ ॥ इन्द्रनीलमहानीलैःपद्मरागोपशोभि-
तम् ॥ कोटिसूर्य्यप्रतिकाशंकोटिचन्द्रस्यशीतल ॥ ३५ ॥
प्रस्फुरंतिमहाकाशमग्निज्वालासमप्रभा ॥ लक्षयोजनविस्तीर्णे-
मुच्छ्रायेचचतुर्गुणम् ॥ ३६ ॥ स्तंभेहेममयाःसर्वेमणिरत्नयुता-
निच ॥ सिंहासनानिदिव्यानिहेमरत्नंकृतानिच ॥ ३७ ॥ तत्र-
तिष्ठंतिदेवेशपरमशिवजगद्गुरुः॥तिष्ठंतिचसुराःसर्वेब्रह्माविष्णुःमहे-
श्वरम् ॥ ३८ ॥ इन्द्रवरुणवैकुंठधर्म्मराजसुशोभितम् ॥ सभायां-
तत्रतिष्ठंतिवाद्यतेवहुनेकधा ॥ ३९ ॥ प्रदक्षिणंप्रकुर्व्वन्तिनाना-
विधिह्यनेकधा ॥ शंखदुन्दुभिनिर्घोषैःकाहलैर्भेरिमर्दलैः ॥ ४० ॥
पटहैर्वेणुवंशश्चगर्जितोधुनिनातितम् ॥ नृत्यंतेअप्सरारंभासर्वा-
भरणभूपिता ॥ ४१ ॥ हेमरत्नंभूपिताचविद्युत्तेजःसमप्रभाः॥

जिसकी कोटिके मध्यमें वैकुण्ठ शोभायमान है ॥ ३२ ॥ वैकुण्ठके आठ द्वार और सोलह प्रतिहार हैं जय विजय महायोधा द्वारपाल स्थित हैं ॥ ३३ ॥ मध्यमें वैकुण्ठ है महासाधक जाकर स्थित हुए जो सुवर्ण और रत्नोंसे जटित और जिसके द्वारे तोर्ण शोभा पाती हैं ॥ ३४ ॥ इन्द्रनील, महानील, पद्मराग मणियोंसे शोभायमान कोटि सूर्यकी समान निर्मल कोटिचन्द्रमाकी समान निर्मल ॥ ३५ ॥ अग्निज्वालाकी समान आकाशमें प्रकाशमान, लाखयोजनके विस्तारमें और चौगुने उंचाईमें स्थित ॥ ३६ ॥ मणिरत्नके जडे हुए सब सुवर्णके खम्भे दिव्य सिंहासन सुवर्ण रत्नोंके बने हुए ॥ ३७ ॥ उसके ऊपर जगद्गुरु परम शिव स्थित हैं, जहां ब्रह्मा, विष्णु आदि सब देवता महेश्वरके समीप स्थित हैं ॥ ॥ ३८ ॥ इन्द्र वरुण कुबेर धर्मराज उस सभामें स्थित हैं अनेक प्रकारके मनोहर बाजे बजतेहैं ॥ ३९ ॥ अनेकप्रकारसे सब कोई शिवजीकी प्रदक्षिणा करतेहैं। शंख दुंदुभी काहलभेरिका तथा मर्दलबाजोंका जहां शब्द होरहाहै॥ ४०॥ पटह वेणु, वंशोंका शब्द होरहाहै और अप्सरायें अनेक आभूषण धारे नृत्य कररहीहैं॥४१॥ सुवर्णरत्नोंके गहने पहरे बिजलीके तेजकी समान कांति दिव्य वस्त्र पहरे दिव्य

दिव्यवस्त्रपरिधानादिव्यगंधानुलेपनाः ॥ ४२ ॥ सर्वलक्षण
संयुक्तान्नूपुराभिरलंकृताः ॥ करकंकणसंयुक्ताहारकेयूरभूषिताः ॥
॥ ४३ ॥ संपूर्णचंद्रवदनाकुंडलाभरणोज्ज्वलाः ॥ शिरपुष्पसुगं-
धाश्चनागवल्लीविभूपिताः ॥ ४४ ॥ रूपयौवनसंपूर्णागायंतिको-
किलास्वरम् ॥ पठंतिविविधास्तोत्राःसर्वशास्त्रविशारदाः॥४५॥
पठंतिविविधंस्तोत्रंमंत्रशास्त्रमनेकधा ॥ मणिरत्नसमोपेताःपुष्प-
माल्यैःप्रशोभिताः ॥ ४६ ॥ चंदनागुरुकर्पूरैर्वासितंचपुरंमहत् ॥
चूतचन्दनसंयुक्तंकदलीखण्डमण्डितम् ॥४७॥ केतकीशतपत्रै-
श्चतिष्ठंतेयत्रगायका॥दृश्यंतेपुरिसर्वनानाविधमनेकधा ॥४८॥
इति श्रीरुद्रयामले केदारकल्पे विख्यातपुराणे श्रीश्वरकार्त्तिकेय-
संवादे पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथे
शिवदर्शने सदेहकैलासगमने महाकैलासवैकुंठे परम-
शिवदर्शनोनामद्विचत्वारिंशःपटलः ॥ ४२ ॥

गंध और अनुलेपन लगाये ॥ ४२ ॥ सब लक्षणोंसे सम्पन्न नूपुरादिसे अलंकृत हाथोंमें कंकण और हार बाजूबंदोंसे भूषित ॥ ४३ ॥ सम्पूर्णही चंद्रमुखी कुंडल आभरणोंसे उज्ज्वल शिरसफूल और सुगंधिधारे पान चाबे ॥ ४४ ॥ रूपयौवनसे सम्पूर्ण कोकिलास्वरसे गातीहुई सब शास्त्रविशारद अनेक स्तोत्रपाठ करती मणिरत्न और पुष्पोंकी मालासे शोभायमानहैं ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ चंदन अगर और कपूरसे वह पुर सुगंधितहै आम चंदनसे संयुक्त केलेके खण्डसे मंडितहैं ॥ ४७॥ केतकी शतपत्रोंसे शोभायमान वह पुरी अनेक प्रकारसे शोभायमानहै ॥ ४८ ॥

इति श्रीकेदारकल्पे भाषाटीकाया द्विचत्वारिंशः पटलः ॥ ४२ ॥

त्रिचत्वारिंशः पटलः ।

श्रीश्वर उवाच ॥ ॥ ॐ साधकास्तेगतास्तत्रदर्शतेपरमे-
श्वरम् ॥ दंडवत्प्रणताःसर्वेपतंतिधरणीतले ॥ १ ॥ कृतांजलि-

श्रीईश्वर बोले, वहां साधकोंने जाकर परमेश्वरका दर्शन किया और पृथिवीपर लेटकर दंडवत् प्रणाम किया ॥ १ ॥ और हाथ जोडकर साधक प्रणाम करने

पुटाभूत्वासाधकाःप्रणमंतिच ॥ देवदेवंजगन्नाथंदुर्लभंतवदर्शनम्॥
॥ २ ॥ प्राप्यतेपरमंधर्म्मंदृश्यतेपरमेश्वरम् ॥ साधक उवाच ॥
अद्यमेसकलंजन्मअद्यमेसफलंतपः ॥ ३ ॥ अद्यमेसफलंकार्य्यं-
दृश्यतेपरमेश्वरः ॥ अद्यमेसफलंजन्मअद्यमेसफलंतपः ॥ ४ ॥
अद्यमेसफलंध्यानंदृष्ट्वाचपरमेश्वरम् ॥ अद्यमेसफलंविद्याअद्यमे-
सफलंयशः ॥ ५ ॥ अद्यमेसफलंपंथायदिदृष्ट्वापरःशिवः ॥
अद्यमेसफलंज्ञानंदृष्ट्वाचपरमेश्वरम् ॥ ६ ॥ त्रयोदेवाश्चभापंते-
वरंदेहिमहेश्वरम् ॥ ईश्वरस्यत्रयोदेवावरंदद्याच्चसाधकाः ॥ ७ ॥
अमृतंपिबतेसिद्धाजरामृत्युविवर्जिताः ॥ अजराअमरंचैवयोनि-
गर्भेनवर्जिताः ॥ ८ ॥ पुनःपुनःसाधकानांमृत्युलोकेनगच्छति ॥
पश्चात्तुसाधकानांचअजराअमरावति ॥ ९ ॥ कस्मिन्कालेषु-
संप्रातेमहापंथेनगम्यते ॥ महापंथेमहास्थानेदेवदानवदुर्लभे ॥
॥ १० ॥ गुह्याद्गुह्यतरंगोप्यंयदिस्थानंनउच्यते ॥ तत्रगत्वामहा-
सेनपुनर्जन्मनविद्यते ॥ ११ ॥ मयावगोप्यंकृत्वाचकृत्वाब्रह्मा-

लगे, हेदेवदेव ! जगन्नाथ ! आपका दर्शन दुर्लभहै ॥ २ ॥ हेपरमेश्वर ! आपके दर्शनसे परमधर्म प्राप्त होताहै । साधक बोले आज हमारा जन्म और तप सफल हुआ ॥ ३ ॥ आज परमेश्वरका दर्शनकर सब कार्य सफल हुए आज जन्म और तप सफलहै ॥ ४ ॥ आज परमेश्वरको देखकर हमारा ध्यान सफल हुआ । आज विद्या और यश सफल हुआ ॥ ५ ॥ आज भाग्यसे शंकरका दर्शन कर हमारा पंथ सफल हुआ, आज परमेश्वरको देख हमारा ज्ञान सफल हुआ ॥ ॥ ६ ॥ तीनों देवता महेश्वरसे वर देनेको कहतेहैं साधकोंको ईश्वरकी कृपासे तीनों देव वर देतेहैं ॥ ७ ॥ हेसिद्धो ! जरा मृत्युसे रहित हो अमृतपान करो अजर अमर होकर योनिगर्भसे रहितहो ॥ ८ ॥ इससे फिर साधक मृत्युलोकमें नहीं जांयगे पीछे साधकोंको अजर अमरता प्राप्त होगी ॥ ९ ॥ किसीसमय जो महा पंथमें जातेहैं, यह महापंथ महास्थान देवदानवोंको दुर्लभहै ॥ १० ॥ यह गुप्तसे गुप्त स्थान किसीको प्राप्त नहीं होता, हेमहासेन यहां प्राप्त होकर फिर जन्म नहीं ॥ ११ ॥ मैं ब्रह्मा हरिहर इसबातको गुप्त रखतेहैं, यह महापंथ गुप्त रखना

हरोहरिः ॥ गोपनीयंप्रयत्नेननदेयंयस्यकस्यचित् ॥ १२ ॥ दुर्लभंत्रयलोकानांतस्मिन्स्थानेषुगच्छते ॥ सिद्धसाध्याकदेवानां-केचिज्जानंतिसाधकाः ॥१३ ॥ साधकानांवरंदत्वातिष्ठतेचयथा-सुखम् ॥ महाविशालेवैकुंठेयत्रेच्छातत्रतिष्ठताम् ॥ १४ ॥ महाकल्पंमहापथंशृणुस्कंदमहातपाः ॥ कोटिमध्येषुसिद्धास्ते-गंछंतिचमहापथम् ॥ १५ ॥ चतुर्युगेसाधकानांतस्यसंख्या-विधीयते ॥ सप्तलक्षम् ॥ ७००००० कृतयुगेसत्यंसत्यंवदाम्य-हम् ॥ १६ ॥ त्रेतायांपंच ॥ ५००००० लक्षंचगच्छंतिचमहा-पथम् ॥ द्वापरेचत्रयोलक्ष्यम् ॥ ३००००० ॥ कलौलक्षैक-साधकाः ॥ १००००० ॥ १७ ॥ कैलासभुवनेचैवाशिवशक्ति-चतिष्ठति ॥ समुद्रलक्षणाःसर्वेयत्रगात्रादिसंक्षयः ॥ १८ ॥ दिव्यांगवस्त्रधारिण्योनानाभरणभूपिताः ॥ अष्टगंधोदकेनैवमि-श्रितंयक्षकर्दमम् ॥ १९ ॥ कुंकुमागुरुकस्तूरीकर्पूरंचन्दनंतथा ॥ महासुगंधिमित्युक्तंनामतोयक्षकर्दमम् ॥२०॥ दिव्यपुष्पसुगंधेन-कुंकुमाक्रान्तमस्तकाः॥उद्गिरंतिचताम्बूलंनेत्रेरेखाचकज्जलैः २१॥ ललाटेतिलकंयस्यदिव्यजातिसमप्रभाः॥मृगाक्षीहंसगामिन्यःकुं-

चाहिये जिस किसीको न देनाचाहिये ॥ १२ ॥ इस स्थानमें लोकोंका आना दुर्लभहै सिद्ध साधक देवताओंमें कोईही इसको जातेहैं ॥ १३ ॥ साधक वर प्राप्त होकर वहां यथासुख बैठे और उनसे कहागया महाविशाल वैकुंठमें जहां इच्छा हो वहां विचरो ॥ १४ ॥ हेस्कंद ! यह महाकल्प महापंथ है करोडोंमें कोई एक सिद्ध यहां पहुंचतेहैं ॥ १५ ॥ चारयुगोंमें साधकोंकी संख्या कही जातीहै मैं सत्य कहताहूं सतयुगमें सातलाख, ॥ १६ ॥ त्रेतामें पांचलाख, द्वा-परमें तीनलाख और कलिमें एक लाख साधक पहुंचतेहैं ॥ १७ ॥ कैलासभुवन में शिवशक्तिस्थित रहतीहैं सब सामुद्रिक लक्षणोंसे युक्त महाप्रसन्नहैं सम्पत्तिमान-हैं ॥ १८ ॥ दिव्यवस्त्र धारण किये, अनेक आभरणोंसे भूषितहैं जहां अष्टगंधसे युक्त जलकर्दमहै ॥ १९ ॥ कुमकुम, अगर, कस्तूरी कपूर, चंदन, यह महा सुगंधियुक्त यक्ष कर्दम कहाताहै ॥ २० ॥ दिव्यपुष्पकी सुगंध और कुमकुम मस्तकपर लगाये नेत्रोंमें कज्जल लगाये ताम्बूल चाबे ॥ २१ ॥ जिनके ललाटमें

डलाभरणोज्ज्वलाः॥२२॥मुखेचंद्रकलाश्चैवकलाभिःशीशभास्करैः नासिकाचैवकीरस्यदंतदाडिमभूषणैः॥२३॥रसनायामृतंचैवकोकिलास्वरनादिनी ॥ करकंकणसंयुक्ताहारकेयूरभूपिताः ॥ २४ ॥ उरूस्तनफलाकारंताटंककटिमेखला॥गंभीरनाभिकूपाचकटिसिंहस्यलंकृता ॥ २५ ॥ गुणलक्षणसंपूर्णज्ञानध्यानसमाकुला ॥ जातिस्मरक्षमोपेतागुह्यकादिसमाश्रिता ॥ २६ ॥ गुह्यंपृष्ठति हृदयंश्रोपिताभवसिद्धये ॥ भुंजंतिचास्त्रियाःसर्वाजरामृत्युविवर्जिताः॥ २७ ॥ स्थापितंपदकैलासंयोनिमार्गनिवृत्तये ॥ साधकासंगमेकन्यामार्गतोपरिभापणम् ॥ २८ ॥ श्रीश्वर उवाच ॥ ॥ देवतासससंप्राप्ताशिवस्यवचनंतथा ॥ मद्रूपाभव तेसिद्धासत्यंसत्यंवदाम्यहम् ॥ २९ ॥

इति श्रीकेदारकल्पेविख्यातपुराणे श्रीश्वरकार्त्तिकेयसंवादे-पंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तये महापथेशिव दर्शने सदेहकैलासगमने महाकैलासोअजरामरपरमशिववरप्राप्तये चतुर्वर्गसाधकपंथनिर्गमनो नामत्रिचत्वारिंशः पटलः॥ ४३ ॥

दिव्यजातिका तिलक बिजलीकी समान कांति, मृगनेत्री, हंसगामिनी, कुंडल आभरणोंसे उज्ज्वल ॥ २२ ॥ मुखपर चंद्रकला चंद्रभास्करकी समान मनोहर कीरकी समान नासिका दाडिमकी समान दांत भूषण धारे ॥ २३ ॥ रसनामें अमृत कोकिलाकी समान स्वर हाथोंमें कंकण हारकेयूरोंसे भूपित ॥ २४ ॥ फलके आकार स्तन करणफूलधारे कमरमें मेखला नाभिगंभीर सिंहकी समान कमर ॥ २५ ॥ सम्पूर्ण गुणलक्षणोंसे युक्त ज्ञानध्यानमें तत्पर, जातिस्मरणके ज्ञानवाली गुह्यकादिसे सेवित ॥ २६ ॥ जिनका गुह्य हृदय अतिपवित्र संसारसे पृथक्पृथक् सिद्धिसेयुक्त ऐसी स्त्रियोंको जरामृत्युसे रहित होकर भोगतेहैं ॥ ॥ २७ ॥ यह कैलासस्थल योनिमार्गकी निवृत्तिकेलिये स्थापितहै यहां साधक कन्याओंसे सानन्द भाषण करतेहैं ॥२८॥ ईश्वर बोले शिवके वचनसे यहां देवताओंकी समान होतेहैं सिद्ध मेरे रूपको प्राप्त होतेहैं यह मैं सत्य कहताहूं॥२९॥

इति श्रीकेदारकल्पे भाषाटीकायां साधकपंथनिर्गमो नाम त्रिचत्वारिंशः पटलः ॥ ४३ ॥

चतुश्चत्वारिंशः पटलः ।

श्रीश्वर उवाच ॥ ॥ ॐश्रुत्वाकल्पंक्रतंध्यानंविनाकल्पेनसि
ध्यति॥नानासिद्धिप्रदास्थानंसिद्धंसिद्धिचहेतवे॥ १ ॥पश्चादौसा
धकाःसर्वेएकविंशतिमेवच॥एतन्मध्येमहासिद्धभावंतत्रैवासिध्यति
॥२॥पठंतेचसहस्रद्वयंमहापथेनगम्यते॥दिव्यमार्गंदेवास्कंदसत्यं
सत्यंवदाम्यहम् ॥ ३ ॥महादेवमहासेनमहाकल्पंमहापथ ॥
महासिद्धमहाभोगादुर्लभंभुवनत्रये ॥ ४ ॥ महापंथेमहापुण्यं-
सत्यंसत्यंपडानन ॥ भावेनपठतेनित्यंगंगास्नानंफलंभवेत् ॥
॥ ५ ॥ शिवनिन्दाचयेमूढाःयेचशास्त्रंशिवात्मकम् ॥ निंदंतेच
गुरुश्चैवतेषांसिद्धिश्चदुर्लभा॥ ६ ॥गृहेयस्यसदातिष्ठेच्चशिवकल्पं-
महापथे ॥ ब्रह्महत्यादिकंपापंतस्यसर्वंव्यपोहति ॥ ७॥ यद्गोप्यं-
चसुराःसर्वेयद्गोप्यंमुनिमानवैः ॥ यद्गोप्यंगणगंधर्वायेचशास्त्रं-
कथितंमया ॥ ८ ॥ तेषांरुद्रपदेवासोकल्पकोटिसहस्रकम् ॥ ९ ॥
अन्तकालेमनुष्याणांमहाकल्पंशृण्वंतिच ॥ तेषांतुष्टोमहादेवो

ईश्वर बोले, इसबातको श्रवण और ध्यान करके जो विनाही कल्पके सिद्ध होजाताहै अनेक सिद्धिके देनेवाले स्थान सिद्धिके निमित्त सिद्धहैं ॥ १ ॥ जिसमें आदिमें एकही सिद्ध प्रवेश करतेहैं हे सिद्धो! इनके बीचमें भावही सिद्ध होतेहैं ॥ ॥ २ ॥ दो सहस्र इसके पाठ करनेसे महापंथसे जायाजाताहै हेस्कंद! दिव्यदेवता वहां स्थितहैं, यह मैं सत्य २ कहताहूं ॥ ३ ॥ महादेव महासेन महाकल्प महापंथमें महासिन्धु महाभोगके देनेवाले हैं, यह मैं सत्य २ कहताहूं त्रिभुवनमें यह दुर्लभहै ॥ ४ ॥ महापंथसे महापुण्य होताहै यह मैं सत्य २ कहताहूं । जो भावसे नित्य पढतेहैं उनको गंगास्नानका फल होताहै ॥ ५ ॥ जो मूढ शिवकी निन्दा करतेहैं, जो शिवात्मक शास्त्रकी निन्दा करतेहैं तथा जो गुरुकी निन्दा करतेहैं उनको सिद्धि दुर्लभहै ॥ ६ ॥ जिसके घरमें महापंथ शिवकल्प ग्रंथ स्थित है उन के ब्रह्महत्यादि पाप सब छूटजातेहैं ॥ ७ ॥ जो देवताओंमें गोपनीयहै जिन मुनि मनुष्योंमें गोपनीयहै जो गणेश्वरसेभी गोपनीयहै जो गणगंधर्वोंसे गुप्तहै वह शास्त्र मैंने तुमसे कहाहै ॥ ८ ॥ जो अन्तकालमें महाकल्प सुनतेहैं उनका सौ कोटिकल्पतक रुद्रस्थानमें वास होताहै॥९॥उनपर प्रसन्नहोकर महादेव शिवलोकमें

शिवलोकेवसंतिच ॥ १० ॥ गयायांपिंडदानेनकाशिदर्शनमुत्तमम् ॥ दिव्ययोगेश्वरस्थानंकेदारंसचदर्शनम् ॥ ११ ॥ दृष्ट्वा चबद्रिकास्थानंसर्वदाचशिवालयम् ॥ गवांकोटिसहस्राणिस्नानं भागीरथीतटे ॥ १२ ॥ यज्ञंचसहस्रैकंगवांदत्वासमाहिता ॥ एतेप्राप्तेभवेभक्तिमोक्षकालेतुमोक्षदा ॥ १३ ॥ एतेप्राप्तेभवेत्पुण्यंकथाश्रृण्वंतियेनराः ॥ इच्छासिद्धिर्भवेत्तस्यसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ १४ ॥ ध्रुवश्चचलतेमेरुःसागरेचमहार्णवे ॥ यदेवंध्रुवंचल तेकल्पेनअन्यथाभवेत् ॥ १५ ॥ येनिन्दासर्वदासर्वक्रोधश्च मदमत्सरः ॥ तेनरानरकंयांतियावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥ १६ ॥ गृहेयस्यसदाकल्पंराजलीलासदाभवेत् ॥ आपदाहरतेनित्यं ईश्वरंप्रतिगच्छति ॥ १७ ॥ यज्ञंपुण्यंधार्म्मिकाणांतीर्थस्नानंच यत्फलम् ॥ तस्यसंख्याचजानातिकल्पसंख्याविधीयते ॥१८॥ पश्चिमेचदिशांगत्वाउदयंतांशशिभास्करौ ॥ विपरीतंभवेत्सर्वैः कल्पश्चनान्यथाभवेत् ॥ १९ ॥ अनेकधर्म्मततःकृत्वाव्रतो

निवास देतेहै ॥ १० ॥ गयामें पिंडदानकरने और काशीमें शंकरदर्शनका जो फलहै, वह दिव्य योगेश्वरस्थान केदारेश्वरके दर्शनका फलहै ॥ ११ ॥ बद्रिकाश्रम और शिवालयका दर्शन करके महाफल होतेहै, कोटिसहस्रगायोका जो फल है भागीरथीके तटमें स्नानका जो फलहै ॥ १२ ॥ यज्ञमें सहस्रगोदानका जो फल है, इन सबके करनेसे मोक्षकी भक्ति प्राप्त होतीहै ॥ १३ ॥ इनका जो पुण्य है वह इस कथाके सुननेसे प्राप्त होताहै उसको इच्छासिद्धि प्राप्त होतीहै और वह सब पापोंसे छूटजाताहै ॥ १४ ॥ निश्चयही वह संसारसागरसे पार हो जाताहै चाहे सुमेरु चलजाय समुद्र मर्यादा छोडदे पर कल्पका फल अन्यथा नहीं होता ॥ १५ ॥ जो सदा सबकी निन्दा करते बडा क्रोध और मदमत्सरता करतेहै, वह मनुष्य जबतक सूर्य चन्द्रमाहै तबतक नरकमें जातेहै ॥ १६ ॥ जिसके यहां यह केदारकल्प है राजलीला उसके सदा होतीहै. उसकी आपत्ति सदा हरी जाती और वह ईश्वरके प्रति गमन करताहै ॥ १७॥ धर्मात्माओंको यज्ञका पुण्य होताहै, तीर्थस्नानका जो फलहै उसकी संख्या जो जानताहै, वही कल्पके फलकी संख्या जानताहै ॥ १८ ॥ चाहे चंद्रसूर्य पश्चिममें जाकर उदय हो जाय सबही विपरीत होजाय परन्तु कल्पका फल अन्यथा नहीं होता ॥ १९ ॥ अनेक

वानशमेवच ॥ नभवंतिसमतुल्यंकल्पंश्रृण्वंतियत्फलम् ॥ २० ॥ वह्निश्वशीतलंयातिनैवकल्पोमृषाभवेत् ॥ दानंपुण्यंवहिकृत्वाहोम यज्ञस्तथैवच ॥ २१ ॥ नभवंतिसमंतुल्यंकल्पंश्रृण्वंतियत्फलम् ॥ सर्वतीर्थतपःकृत्वास्नात्वाचभुवनत्रयम् ॥ २२ ॥ नभवंतिसमंतुल्यंकल्पंश्रृण्वंतियत्फलम् ॥ दानंयज्ञंतपस्तीर्थंकायक्लेशशुचिक्रियाः ॥ २३ ॥ नभवंतिसमंतुल्यंकल्पंश्रृण्वंतियत्फलम् ॥ दानंयज्ञंतपस्तीर्थंकल्पंपठतिनित्यशः ॥ २४ ॥ हरते कर्मदुःखंचभक्तानात्रनसंशयः ॥ महाकल्पंमहापंथंमहातीर्थसमन्वितम् ॥ २५ ॥ महेशान्नापरोदेवोमहिम्नोनापरास्तुतिः ॥ अघोरान्नापरोमंत्रोनास्तितत्त्वंगुरोःपरम् ॥ २६ ॥ यदक्षरंपद भ्रष्टंस्वरभेदविवर्जितम् ॥ तत्सर्वंक्षम्यतांनाथत्वंगतिःपरमेश्वरः ॥ २७ ॥ काव्यकर्त्तायदाव्यासोलेखकोगणनायकः ॥ तदापि चलतेबुद्धिःकाकथाइतरेजनाः ॥ २८ ॥ रैन्यादिचयथास्वप्नंअभ्रच्छायायथारविः ॥ जलेचबुद्बुदाकारंतथासंसारिणोजनाः ॥

धर्मकरके वा व्रत करके जो फलहै वह फल कल्पसुननेकी बराबरी नहीं करसकते॥२०॥चाहे अग्नि शीतल होजायपर कल्पका फल वृथा नहीं होता अनेक दान जप होम पुण्य करकेभी ॥ २१ ॥ कल्पकी बराबर पुण्य नहीं होता सब तीर्थोंमें तप करके और सबभुवनोंमें स्नान करके ॥ २२ ॥ कल्पमाहात्म्य सुननेके समान फल नहीं होता दान यज्ञ तप तीर्थ काय क्लेश शुचिक्रिया ॥ २३ ॥ कल्प माहात्म्य सुननेकी बराबर फल नहीं होता, दान यज्ञ तप तीर्थसे विशेष फल कल्पसुननेका होताहै ॥ २४ ॥ इन सबसे कर्मदुःख हरेजातेहैं इसमें सन्देह नहीं महाकल्प महापंथ महातीर्थोंसे युक्त ॥ २५ ॥ महेशानही परमदेवहैं उनके समान दूसरेकी महिमा नहींहै महिम्नकी समान स्तुति नहीं अघोरकी समानमंत्र और गुरुकी समान दूसरा तत्त्व नहींहै ॥ २६ ॥ जो अक्षर पदभ्रष्ट तथा स्वरभेदसे वर्जितहैं हेनाथ ! वह सब क्षमाकरो हेपरमेश्वर ! तुमही सबकी गतिहो॥ २७ ॥ जैसे काव्यकर्ता व्यास वैसेही उनके लेखक गणेशजीहैं तौभी उनकी बुद्धि चलाय मान होजातीहै दूसरोंकी तो बातही क्याहै ॥ २८ ॥ जैसे रात्रिका स्वप्न क्षण भंगुरहै जैसे मेघके छायामें रवि क्षणमात्रको ढकताहै जैसे जलमें बुदबुदे क्षणमात्र

॥ २९ ॥ जलात्तैलात्तथारक्षेत्रक्षेत्शिथिलबंधनात् ॥ मूर्ख हस्तेनदातव्यंएवंवदंतिपुस्तकम् ॥ ३० ॥ भग्नपृष्ठकटिग्रीवाबद्धमुष्टिरधोमुखम् ॥ कष्टेनलिखितंग्रंथंयत्नेनप्रतिपालयेत् ॥ ॥ ३१ ॥ इदंकल्पंमहापुण्यंयेशृण्वंतिपठंतिच ॥ सर्वपापविनिर्मुक्ताःशिवसायुज्यमाप्नुयुः ॥ ३२ ॥ यादृशंपुस्तकंदृष्ट्वातादृशंलिखितंमया ॥ यदिशुद्धमशुद्धंवाममदोषोनदीयते ॥ ३३ ॥

इतिश्रीकेदारकल्पेविख्यातपुराणेश्रीश्वरकार्त्तिकेयसंवादेपंचयोगेन्द्रेच्छासिद्धिजीवन्मुक्तपरब्रह्मप्राप्तयेमहापथे शिवदर्शनेसदेहकैलासगमने केदारतीर्थफलश्रुतिवर्णनो नामचतुश्चत्वारिंशः पटलः ॥ ४४ ॥

कोहैं वैसेही संसारीजन हैं ॥ २९ ॥ जलसे तेलसे शिथिलबंधनसे पुस्तककी सद रक्षा करे मूर्खके हाथमें पुस्तक न देनी चाहिये ऐसा पंडितजन कहतेहैं ॥ ३० ॥ पीठ कमर, गरदन, टेढी करनी पडतीहै मुट्ठी बांधनी होतीहै नीचेको मुख करना होताहै बहुत कष्टसे ग्रंथ लिखना होताहै इसकी यत्नसे रक्षा करनी चाहिये ॥ ३१ ॥ यह कल्प महापुण्य देनेवालाहै, जो इसको पढते और सुनतेहैं वह सब पापोंसे छूटकर शिवके सायुज्यको पातेहैं ॥ ३२ ॥ जैसी पुस्तक मैंने देखी वैसी लिखी यदि शुद्ध अशुद्ध हो तो मुझे दोष न देना चाहिये ॥ ३३ ॥

इतिश्रीकेदारकल्पे विख्यातपुराणे भाषाटीकायां केदारतीर्थफलश्रुतिवर्णनोनाम चतुश्चत्वारिंशःपटलः ॥ ४४ ॥

दोहा-जगत्पिता शंकर विमल, जगन्माय सुखदान ॥
वालक जान दया करो, सकल सुमंगल खान ॥ १ ॥
लाभ पदारथ चारको, जो सुमिरै दिन रैन ॥
प्रजा समान सुपालही, देत सदा सुखचैन ॥ २ ॥
साम्बशिवहि नित ध्यानधर, टीका कियो विचार ॥
दया भाव नित भक्तपर, करहु भक्त निस्तार ॥ ३ ॥
उन्निससै त्रेसठ सुभग, पौष शुक्र शशिवार ॥
द्वितीयाको टीका कियो, मिश्र सुमंगलचार ॥ ४ ॥
शिव शिव रटिये प्रेमसे, मिटै सकल जंजाल ॥
श्रीकामेश्वर नाथजी, सन्तत रहैं दयाल ॥ ५ ॥

पुस्तक मिलनेका पता-खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालय-बंबई.